वैदिक कर्मकाण्ड में प्रमाण पत्र

CVK-17

पत्र कोड - सी0वी0के0 – 02

द्वितीय पत्र - पूजन एवं संस्कार परिचय

खण्ड – 1

संस्कार एवं स्तोत्र पाठ परिचय

इकाई – 1 संस्कार परिचय, महत्व एवं प्रचलित संस्कार

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 संस्कार परिचय
1.3.1 संस्कार शब्द की परिभाषा
1.3.2 लोकप्रिय प्रयोजन
1.4 संस्कारों का महत्व एवं प्रचलित संस्कार
1.5 सारांशः
1.6 पारिभाषिक शब्दावली
1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
1.8 बोधप्रश्नों के उत्तर
1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई वैदिक कर्मकाण्ड में प्रमाण पत्र **(CVK-17)** पाठ्यक्रम के द्वितीय प्रश्न पत्र **(CVK-02)** की प्रथम इकाई **'संस्कार परिचय, महत्व एवं प्रचलित संस्कार'** से सम्बन्धित है। इसके पूर्व आपने कर्मकाण्ड एवं पंचांग से जुड़े कई विषयों का अध्ययन कर लिया है। अतः अब आपको कुछ संस्कारों के विषय में भी ज्ञान कराया जायेगा जो मानव जीवन के अति महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं तथा जिनके बिना मानव जीवन की पूर्णता सम्पन्न नहीं होती है।

प्रस्तुत इस इकाई में पूर्व प्रतिज्ञात-विषय के अनुसार संस्कार शब्द की परिभाषा, संस्कारों की उपयोगिता (प्रयोजन) एवं उसके महत्त्वपूर्ण-पक्ष तथा संख्या आदि के विषय में आपको ज्ञान कराया जायेगा। जो वर्तमान समाज के लोगों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आपको संस्कारों के स्वरूप एवं महत्त्व तथा विविध प्रयोजनों का भी ज्ञान स्वतः हो जायेगा। आप जिसे समाज के सामने प्रस्तुत कर सनातन धर्म की रक्षा के साथ-साथ सम्पूर्ण मानवता के पथ को प्रशस्त करेंगे।

1.3 संस्कार विमर्श

अभी सर्वप्रथम संस्कारों के मूलस्रोत पर आपसे चर्चा करते हैं क्योंकि मूलस्रोत के विषय में जिज्ञासा स्वाभाविक है। तो देखें! संस्कारों का मूल स्रोत हमारे भारतीय वैदिक गृह्यसूत्र हैं । यहीं से यह धारा प्रवाहित होते हुए क्रमशः धर्मसूत्र, स्मृतिग्रन्थ, पुराणग्रन्थ, महाकाव्यों आदि में भी प्रवाहशील है । इसके बाद पद्धति, प्रयोगों, टीकाग्रन्थों के माध्यम से तथा आचार्य पुरोहितों के सुकण्ठ से प्रसृत वाणी के रूप में उसका आज भी हम कानों से रसास्वादन करते हैं।

1.3.1 संस्कार शब्द की परिभाषा

किसी भी शब्द के प्राथमिक अर्थज्ञान के लिए सामान्यतः व्याकरण-शास्त्र के अनुसार धातु प्रत्यय आदि का विचार करना आवश्यकता है उसी प्रकार यहाँ भी सम् उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु से 'घञ्' प्रत्यय करने पर संस्कार शब्द निष्पन्न होता है। परन्तु इतने अर्थ से आप को सन्तुष्ट नहीं होने देंगे । इसके लिए हम और आगे चलते हैं। यहाँ हम कुछ शास्त्रों की और आप को ले चलेंगे जहाँ भिन्न-भिन्न अर्थों में संस्कार शब्द का प्रयोग हुआ है।

पूर्वाचार्यों के द्वारा संस्कार शब्द का प्रयोग विभिन्न शास्त्रों में भिन्न-भिन्न रूपों में देखा जाता है। जैसे उदाहरण के लिए आप देखें! मीमांसाशास्त्र में यज्ञ के अंगभूत पुरोडाश की शुद्धि के लिए ही संस्कार

शब्द का प्रयोग किया गया है।

'प्रोक्षणादिजन्यसंस्कारो यज्ञांगपुरोडाशेष्विति द्रव्यधर्मः'।

अद्वैतवेदान्त के आचार्य जीव पर शारीरिक क्रियाओं के मिथ्या आरोप को संस्कार मानते हैं। जैसा कि - 'स्नानाचमनादिजन्याः संस्कारा देहे उत्पद्यमानानि तदभिधानानि जीवे कल्प्यन्ते'।

न्यायशास्त्र के आचार्य भावों को व्यक्त करने की आत्मव्यंजक शक्ति को संस्कार मानते हैं। जिसका परिगणन वैशेषिक दर्शन में 24 गुणों के अन्तर्गत किया गया है। जैसे - **रूपरसगन्ध स्पर्शसंख्यापरिमाणपृथक्त्वद्रव्यत्वस्नेहषब्दबुद्धिसुखदुःखेच्छाद्वेषप्रयत्नाधर्माधर्मसंस्कारा ष्चतुर्विंशतिर्गुणाः।**

उपरोक्त इन अर्थों से हमारा प्रयोजन यहाँ सिद्ध नहीं होता दीख रहा है अतः अब हम शास्त्रों से हटकर आधुनिक संस्कृत साहित्य में प्रवेश करते हैं, क्योंकि वहाँ भी संस्कार शब्द की चर्चा सुनी जाती है।

संस्कृत साहित्य में 'शुद्धि' के अर्थ में संस्कार शब्द का प्रयोग महाकवि कालिदास ने अपने कुमारसंभव नामक ग्रन्थ में किया है। यथा - **'संस्कारवत्येव गिरामनीषी तया स पूतष्च विभूषितश्च'**। इसी प्रकार आभूषण के अर्थ में भी संस्कार शब्द का प्रयोग देखा जाता है। जैसा कि अभिज्ञानशाकुन्तल नामक ग्रन्थ में कहा गया है-

स्वभाव सुन्दरं वस्तु न संस्कारमपेक्षते। इसके अतिरिक्त प्रभाव या छाप इन अर्थों में भी इसका प्रयोग देखा जाता है। जैसा कि 'यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भवेत्'।

उपर्युक्त अर्थों के अलावा मनुस्मृति का एक वचन हम प्रस्तुत करते हैं, शायद जो अर्थ हम चाहते हैं उसके निकट पहुँच जाये।

'कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्य चेह यः'

अर्थात् शरीर को पावन (पवित्र) बनाने के लिए धार्मिक अनुष्ठान की विधि ही संस्कार है। इस प्रकार इन अर्थों पर गंभीरतापूर्वक विचार करने से यही बात सामने आती है कि जिस संस्कार की चर्चा हम करने जा रहे हैं उसका तात्पर्य यह है कि संस्कार, मानव के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का परिष्कार एवं पूर्णता का प्रतीक है। शास्त्रोक्त विधि से अनुष्ठित संस्कार मानव में मानवता प्रदान करते हुए उसे समाजोपयोगी बनाते हैं। इसी बात का समर्थन वीरमित्रोदय नामक ग्रन्थ भी करता है। जैसा कि – **'आत्मशरीरान्तरनिष्ठो विहितक्रियाजन्योऽतिशयविशेषः संस्कारः।'** इस प्रकार मानवता की पूर्णता, शुद्धि एवं उसका समाज के लायक योग्यता संस्कार से ही सम्पन्न होती है। यही निष्कर्ष है।

इसी बात को हम और स्पष्ट करने के लिए एक सुन्दर सा उदाहरण देते हैं धैर्यपूर्वक आप श्रवण करें। संस्कार में दो प्रकार की वस्तुएँ देखने में आती है, एक प्राकृत दूसरी संस्कृत। प्रकृति ने जिस रूप में जिस वस्तु को पैदा किया वह उसी रूप में बनी रहे तो उसे प्राकृत वस्तु कहेंगे। जैसे पर्वत, जंगल के वृक्ष, नदी आदि। किन्तु प्रकृति के द्वारा पैदा की हुई वस्तु का अपने उपयोग में लाने के लिए जब हम कुछ सुधार करते हैं तब उस सुधरी हुई वस्तु को संस्कृत कहा जाता है। वह सुधार ही संस्कार है। अर्थात् अपने लिए तथा समाज के लिए उपयोगी बनाना ही संस्कार है तथा संस्कृत होकर वह व्यक्ति अपने में पूर्ण हो जाता है। उसे अन्य गुणों की अपेक्षा अब नहीं रह जाती है। यह संस्कार (सुधार) तीन प्रकार से होता है - दोषमार्जन, अतिशयाधान, हीनांगपूर्ति। इसें हम उदाहरण के साथ आगे बतायेंगे । जैसे -

लोहा जिस प्रकार खान से निकलता है ठीक उसी प्रकार उसका उपयोग हम आप नहीं कर सकते हैं क्योंकि वह अति-मलिन होता है । यदि उससे तलवार बनानी हो तो उसका संस्कार करना पड़ता है। इसी प्रकार एक दूसरा उदाहरण जैसे - धान जिस प्रकार खेत से निकलता है ठीक उसी प्रकार हम उसका उपभोग (भोजन) नहीं कर सकते हैं उससे भूँसी उसका अलग करना ही पड़ेगा, फिर चावल बनाकर उसके साथ अन्य द्रव्यों के संयोग से हम उसे ग्रहण करते हैं।

इस प्रकार हम पहले कह चुके हैं कि संस्कार में तीन बातें अति महत्त्वपूर्ण की हैं।

क. दोषमार्जन - अर्थात् उसे साफ करना (प्रकृति के द्वारा पैदा किए हुए पदार्थ में यदि कोई दोष हो तो अपने उपयोग में लाने के लिए सुधार करते हैं, जिसका नाम दोषमार्जन है)।

ख. अतिशयाधान - उपयोगी बनाने के लिए कुछ विशेषता उत्पन्न कर देना ही अतिषयाधान है।

ग. हीनांगपूर्ति - फिर उपयुक्तता में कोई त्रुटि हो तो अन्य पदार्थ को मिलाकर उसकी पूर्ति करना ही हीनांगपूर्ति है।

एक और उदाहरण से इसे समझे - कपास के वृक्ष से प्राप्त मलिन कपास को साफ करना दोषमार्जन है, उससे कपड़ा (कुर्ता) बना लेना अतिशयाधान है, और बटन आदि लगाकर पहनने लायक बनाना यह हीनांगपूर्ति है । इसी प्रकार धान से भी भूसी अलग करना दोषमार्जन है। शुद्ध चावल को जल में मिलाकर अग्नि पर पकाना अतिशयाधान है अर्थात् खाने लायक रूप गुण उसमें लाना तथा उसे दाल सब्जी आदि के साथ भोजन करना यहीं हीनांगपूर्ति है।

ये ही बातें संस्कारों पर भी लागू होती है। गर्भाधान, जातकर्म, अन्नप्राश आदि संस्कारों के द्वारा मानव का दोषमार्जन होता है। चूडाकरण, उपयनयन आदि संस्कारों के द्वारा अतिशयाधान

(विशेष गुण की स्थापना) होता है तथा विवाह, अग्न्याधान आदि संस्कारों के द्वारा हीनांगपूर्ति होती है।

गार्भैर्हामैर्जातकर्म चौडमौंजी निबन्धनैः।
बैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामपमृज्यते।।
वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैः निषेकादिद्विजन्मनाम्।
कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च।।

इस प्रकार संस्कारों के इन्हीं तीनों गुणों से मानव अपने जीवन को पूर्ण करता है। तथा इस लोक में सुख शान्ति का अनुभव करते हुए शान्ति से परलोक सुख का भी आनन्द लेता है।

आज सभी मानव अपने को पूर्ण बनने की अभिलाषा रखते हैं और रखना भी चाहिए, जो वर्तमान समाज के लिए एवं स्वयं के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं महत्त्पूर्ण है।

मित्रों! संसार में सभी वस्तुओं की यही दशा है। लोहा जिस रूप में खान से निकलता है उसे देखकर कोई आशा भी नहीं कर सकता, कि यह वस्तु हमारे बड़े काम की होगी, किन्तु बड़े बड़े कारखानों द्वारा पहले जिसका दोषमार्जन होता है तथा कुशल-कारीगरों से भिन्न-भिन्न रूप दिलवाकर तेज धार आदि दिलाकर अतिशयाधान अर्थात् विशेषता उसमें उत्पन्न की जाती है, फिर भी उपयोग में लाने के लिए तलवार में मूंठ (लकड़ी का पकड़ने के लिए) आदि लगाकर हीनांगपूर्ति जब कर ली जाती है, तब वह सुसंस्कृत लोहा हमारे लिए सभी प्रकार से उपयोगी सिद्ध होता है। जिस प्रकार आज अनुदिन नये नये आविष्कार बड़े गर्व के साथ भारतीय कौशल सम्पन्न कारीगर करते हैं, ठीक उसी प्रकार प्राचीन भारतीयों को भी यह अभिमान था कि हम संस्कार से मनुष्य को जैसा चाहे वैसा बना सकते हैं। अस्तु।

विषय को हम यहीं संक्षेप करते हैं अन्यथा विस्तृत हो जायेगा।

इस प्रकार हमारे जीवन में इन संस्कारों का आध्यात्मिक महत्त्व तो अत्यन्त उत्तम है, परन्तु इस वैज्ञानिक तथा तार्किक युग में उत्पन्न मानव-जाति के लिए भी इसे समझना एवं समझाना अत्यन्त आवश्यक है। जिसका दायित्व इस पाठ्यक्रम के अध्येता को है। अस्तु।

यहाँ संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि संस्कार, दोषमार्जन, अतिशयाधान, हीनांगपूर्ति रूप तीन गुणों से व्यक्ति को पूर्ण मानव की संज्ञा से विभूषित करता है।

संस्कार की परिभाषा के बाद हम इन संस्कारों का प्रयोजन क्या है? इसे आपको बताने जा रहे हैं। क्योंकि बिना प्रयोजन (उद्देश्य) के संसार में कोई भी व्यक्ति किसी भी काम में प्रवृत्त नहीं होता

है। आप देखें। वेद के भी आदेशवाक्यों को मानने के लिए तथा उसमें मनुष्य को प्रवृत्त होने के लिए अर्थवाद वाक्य (प्रशंसावाक्य) ब्राह्मणग्रन्थों में भरे पड़े हैं, तथा जिनका उपयोग या प्रयोजन मात्र विधिवाक्य की स्तुति या प्रशंसा करके मानव को उस कर्म में लगाना है। उसी तरह यहाँ पर हम कहते हैं कि संस्कार एक शास्त्रीय विधि है जिसे सभी मनुष्यों को अपनी पूर्णता के लिए करनी चाहिए, फिर भी आज वर्तमान समाज में विवाह एवं उपनयन के अलावा कोई भी संस्कार दिखाई नहीं देता है। अब तो कछ लोग कुल परम्परा को मानकर विवाह में ही उपनयन (जनेऊ) संस्कार कर देते हैं। जिसका फल विवाह संस्कार तक वह मनुष्य पतित हो जाता है। इन संस्कारों में भी केवल नाम मात्र की ही शास्त्रीय विधि रह गई है शेष आप सब जान ही रहे हैं, जिस के कारण ही आज वर्तमान भारत की दुर्दषा हमें देखनी पड़ रही है। आज कोई भी मानव संस्कारों से संस्कृत नहीं है। जिसका फल उसका नारकीय-जीवन या पशुओं की तरह जीवन जीने के लिए वह बाध्य है। द्रव्योपार्जन में तो अपना सम्पूर्ण जीवन लगा ही देता है, फिर भी सुख या शान्ति उसे नहीं मिलती। वह चैन के लिए हमेशा बेचैन रहता है। कितना भी दुख कहा जाय कम ही है अस्तु।

अतः अब कुछ नई चर्चा संस्कारों के प्रयोजन से सम्बद्ध करने जा रहे हैं। ध्यान से देखें।

4.3.2 लोकप्रिय प्रयोजन

लोकप्रिय प्रयोजन पर विचार करते समय हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि मानव समाज में प्राचीन काल से ही यह धारणा थी कि कुछ ऐसे भी अमंगल तत्त्व है जिनसे रक्षा करना हमारा परम दायित्व है । लोगों की धारणा थी कि किसी भी महत्त्वपूर्ण अवसर पर व्यक्ति के जीवन में वे अमंगल तत्त्व (भूत-प्रेतादि) हस्तक्षेप कर सकते हैं अतः अमंगलजनक प्रभावों के निराकरण के लिए तथा हितकर प्रभावों की प्राप्ति के लिए प्राचीन लोग प्रयत्न किया करते थे, जिससे मनुष्य बिना किसी बाह्य विघ्न के अपना विकास और अभिवृद्धि कर सके और देवों तथा दिव्य शक्तियों से सामयिक निर्देश एवं सहायता प्राप्त कर सके। संस्कारों के अनेक अंगों के मूल में यही विश्वास रहे हैं। आइए कुछ उदाहरण से इसे हम और स्पष्ट करने का प्रयत्न करते हैं ।

हमारे यहाँ संस्कारों में अवांछित प्रभावों का निराकरण के लिए गृह्यसूत्रों में संस्कारों के अन्तर्गत, अनेक साधनों का अवलम्बन करने का निर्देश मिलता है। इनमें प्रथम-स्थान, आराधना का है। आराधना सबसे पहले अशुभ निवारण शक्तियों की जाती है। जैसे तत्कालीन समाज में अशुभ शक्तियों के प्रभाव से मुक्त रहने के लिए उन्हें बलि तथा भोजन दिया जाता था जिससे वे तृप्त होकर बिना किसी प्रकार की क्षति पहुँचाए लौट जाये। गृहस्थ अपनी पत्नी और बच्चों की रक्षा के लिए

सदा चिन्तित रहता था। तथा भूतप्रेतादिकों की निवृत्ति अपना परम कर्तव्य समझता था। जैसे स्त्री के गर्भिणी रहने के समय या शैशव काल में बालक के ऊपर होने वाली बाधाओं के समय पिता कहता था कि ‘‘शिशुओं पर आक्रमण करने वाले कूर्कुर सकुर्कूर शिशु को मुक्त कर दो। हे सीसर मैं तुम्हें बलि देकर अपनी स्तुति से प्रसन्न करना चाहता हूँ जिससे इस बालक का अनिष्ट दूर हो जाय। पारस्करगृह्यसूत्र के टीकाकार आचार्य गदाधर कहते हैं ‘‘ततस्तुष्टः सन् एनं एनं कुमारं मुंचय’ आदि मन्त्र पढ़े जाते थे।

इसी तरह जातकर्म संस्कार के समय शिशु का पिता कहता है कि हे! शण्डामर्क उपवीर शौण्डिकेय, उलूखल मलिम्लुच द्रोणास और च्यवन तुम सभी यहाँ से अदृश्य हो जाओ। ऐसा मन्त्र पढ़कर स्वाहा अर्थात् घृत से आहुति देता है।

गृहस्थ देवताओं से भी अशुभ प्रभावों के निवारण के लिए प्रार्थना करता था। चतुर्थी-कर्म के अवसर पर नव विवाहिता पत्नी के घातक तत्त्वों के निवारण के लिए अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र, गन्धर्व आदि देवों का आवाहन एवं पूजन करता था। इस तरह के असंख्य उदाहरण है। हमारा प्रयोजन यहाँ प्रसंगवश संकेत कर देने से है।

जिस प्रकार अवांछित प्रभावों के निराकरण के लिए संस्कार किये जाते थे, ठीक उसी प्रकार अभीष्ट प्रभावों के आकर्षण के लिए भी संस्कारों का विधान बताया गया है शास्त्रों में।

हम सामान्य रूप से देखते हैं कि प्राचीन लोगों का यह विश्वास था कि जीवन का प्रत्येक क्षण किसी न किसी देवता द्वारा अधिष्ठित है। अर्थात् उस काल में अमुक देवता उसकी रक्षा करते हैं। अतः अवसर उपस्थित होने पर उस देवता की स्तुति या आराधना अवश्य की जाती थी। जैसे गर्भाधान के समय विष्णु प्रधान देवता है, विवाह के समय प्रजापति और उपनयन के समय बृहस्पति इत्यादि। तत् तत् कालों के उपस्थित होने पर इनकी पूजा की जाती थी। यही नहीं शुभ वस्तुओं के स्पर्श से भी वे मंगल परिणाम की आशा करते थे। जैसे सीमन्तोन्नयन संस्कार के समय उदुम्बर वृक्ष की शाखा का पत्नी के गले से स्पर्श कराया जाता था क्योंकि यह विश्वास था कि उसके स्पर्श से स्त्री में उर्वरता (सन्तति प्रजनन) की क्षमता आयेगी। जैसे - औदुम्बरेण त्रिवृतमाबध्नाति - अयमूर्जावतो वृक्षः उर्ज्जीव फलिनी भव’ इसी प्रकार सन्तति प्रजनन के लिए पत्नी की नाक के दायें छिद्र में दूरव्यापी जड़वाले विशाल वटवृक्ष के कोपल का रस छोड़ा जाता था।

4.4 संस्कारों का भौतिक उद्देश्य

संस्कारों का भौतिक उद्देश्य धन-धान्य-पशु-सन्तान-दीर्घजीवन-सम्पत्ति-समृद्धि-शक्ति और बुद्धि की प्राप्ति। चूँकि संस्कार गृह्यकृत्य थे, और स्वभावतः उनके अनुष्ठान के समय घरेलू जीवन के लिए आवश्य सभी वस्तुओं की प्रार्थना देवताओं से की जाती थी। हमारे भारतीय जनों का यह विश्वास था कि आराधना एवं प्रार्थना के माध्यम से उनकी इच्छाओं को देवता जान लेते हैं, तथा समय पर प्रदान भी करते हैं। क्योंकि वे (देवता) सर्वज्ञ होते हैं। अतः संस्कारों में प्रायः इससे सम्बद्ध बहुत सारी प्रार्थनायें आती हैं। जैसे विवाह में सप्तपदी के अवसर पर ‘‘एकमिषे विष्णुस्त्वा नयतु, द्वे उर्ज्जे त्रीणि रायस्योषाय चत्वारि मायोभवाय, पंच पंषुभ्यः षड् ऋतुभ्यः’।

इस प्रकार भौतिक सुख-समृद्धि की प्राप्ति भी एक प्रकार से संस्कारों का मुख्य प्रयोजन था।

अब हम आपको कुछ आचार्यों के पास ले चलेंगे जिन्होंने भी संस्कारों के प्रयोजन के विषय में कुछ कहा है जिन्हें संक्षेप में उनके भावसौरभ की सुगन्ध आप तक चहुँचाने का प्रयत्न करता हूँ।

सांस्कृतिक प्रयोजन

संस्कारों के लोकप्रिय प्रयोजन को पूर्णतः स्वीकार करते हुए महान् लेखकों एवं धार्मिक विधिनिर्माताओं ने उनमें उच्चतर धर्म और पवित्रता का समावेश करने का प्रयास किया है। जिसमें सर्वप्रथम आचार्य मनु की चर्चा प्रस्तुत की जा रही है। आचार्य मनु कहते हैं कि गार्भहोम (गर्भाधान के अवसर पर किये जाने वाले होम आदि) जातकर्म चूडाकर्म (मुण्डन) और मौंजीबन्धन (उपनयन) संस्कार के अनुष्ठान से द्विजों के गर्भ तथा बीज सम्बन्धी दोष दूर हो जाते हैं।

गार्भैहोमैर्जातकर्म चौडमौंजी निबन्धनैः।
बैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामपमृज्यते।।

आचार्य याज्ञवल्क्य भी ठीक इसी मत का समर्थन करते हैं।

प्राचीन लोगों का विश्वास था कि बीज और गर्भाधान, अपवित्र अर्थात् अशुद्ध होता है। इनकी पवित्रता जातकर्म आदि संस्कारों से ही सम्भव है। जैसा कि आज भी हमलोग संस्कार के शुभ संकल्प के सुअवसर पर ‘‘बीजगर्भसमुद्भवैनोनिवर्हणोजातकर्मादिजन्य’ इसी मूल वाक्य का पदान्तर प्रक्षेप के साथ पाठ करते हैं। इस प्रकार यह भी एक संस्कार का परम प्रयोजन था। आचार्य अंगिरा भी इसे प्रकारान्तर से इस प्रकार कहते हैं-

चित्रकर्म यथानेकैरंगैरुन्मील्यते षनैः।

ब्राह्मण्यमपि तद्वत् स्यात् संस्कारैर्विधिपूर्वकम्।।

अर्थात् चित्र निर्माण करते समय विविध रंगों की आवश्यकता होती है तत् तद् अंगों के निर्माण के लिए, ठीक उसी प्रकार विविध संस्कारों के द्वारा ही मानव की पूर्णता सम्पन्न होती है।

आचार्य शंख लिखते हैं कि संस्कारों से संस्कृत आठ आत्मगुणों से युक्त व्यक्ति ब्रह्मलोक में पहुँचकर ब्रह्मपद को प्राप्त कर लेता है। जिससे वह कभी गिरता नहीं है।

संस्कारैः संस्कृतः पूर्वैरुत्तरैरनुसंस्कृतः।
नित्यमष्टगुणैर्युक्तो ब्राह्मणो ब्राह्मलौकिकः।
ब्राह्मं पदमवाप्नोति यस्मान्नच्यवते पुनः।।

इससे यह सिद्ध होता है कि संस्कारों का प्रयोजन स्वर्ग तथा मोक्ष लाभ भी था। हो भी क्यों न, मोक्ष को तो जीवन का चरम उद्देश्य हमारे ऋषियों ने माना है। मोक्षप्राप्ति में पहले स्वस्वरूप ज्ञान, गुरु के 'तत्त्वमसि' आदि महावाक्यों के उपदेश से होता है, फिर 'अहं ब्रह्मास्मि' का बोध होता है इसके बाद जीव संसार से मुक्त होकर परमपद (मोक्ष) को प्राप्त करता है। क्योंकि मोक्ष में भी कारण, ज्ञान ही है। 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः'। यह ज्ञान ब्रह्मनिष्ठ गुरु के उपदेश से ही संभव है। अस्तु।

4.4.1 नैतिक प्रयोजन

हमारे भारतीय संस्कारों का एक नैतिक प्रयोजन भी है जिसकी आज के समाज में अत्यन्त आवश्यकता है।

आचार्य गौतम चालीस-संस्कारों को गिनाने के पश्चात् आत्मा के (मनुष्य) आठ गुणों का उल्लेख करते हैं - क. दया, ख. क्षमा, ग. अनुसूया, घ. शौच ङ. शम, च. उचित व्यवहार, छ. निरीहता, ज. निर्लोभता।

वे आगे कहते हैं के जिस व्यक्ति ने 40 संस्कारों का अनुष्ठान तो किया है, किन्तु आठ आत्मगुणों का जिसमें अभाव है उसके सारे 40 संस्कार निरर्थक हैं।

अर्थात् आचार्य गौतम के अनुसार संस्कारों का नैतिक प्रयोजन ही सर्वश्रेष्ठ है। जिसका अनुभव हम आज के समाज में अनुदिन करते हैं। व्यक्ति पढ़-लिखकर साक्षर तो हो जाता है पर नैतिक दायित्वों के अभाव में शुद्ध रूप से मनुष्य भी उसे नहीं कहा जा सकता है। इसलिए संस्कारों का परम प्रयोजन नैतिक गुणों की प्राप्ति से है जिन्हें विकसित करना वर्तमान समाज में अत्यन्त आवश्यक है। आज भी इन संस्कारों से हम नैतिक सद्गुणों की वृद्धि की अपेक्षा अवश्य ही रखते हैं।

4.4.2 व्यक्तित्व का निर्माण और विकास

आज देश को सबसे बड़ी आवश्कयता चरित्रवान्, व्यक्ति या समाज की है। उसे हम व्यक्तित्व के निर्माण की भी संज्ञा प्रकारान्तर से दे सकते हैं। वास्तव में देखा जाय तो इस देश में जितना ही संस्कारों का ह्रास हुआ, उतना ही चरित्र या व्यक्तित्व का पतन हुआ। वह दिन दूर नहीं जब लाखों व्यक्ति में कोई एक चरित्रवान् होगा। प्राचीन काल में आधुनिक सुविधा के अभाव में लोग भले ही वैभव सम्पन्न कम होते थे, साक्षर कम होते थे, लेकिन चरित्रहीन पथभ्रष्ट कम होते थे उनमें संस्कारों का ही प्रभाव था, जिससे कभी भी वे अपने स्थान से या अपने सिद्धान्त से हट नहीं सकते थे। तथा ये संस्कार उनके चरित्र की रक्षा सदैव करते थे।

आइये हम एक दो उदाहरण से इसे और भी स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं।

आप अनुभव करेंगे, संस्कार जीवन के प्रत्येक भाग को व्याप्त कर लेते हैं। ये संस्कार इस प्रकार व्यवस्थित किये गये है कि जीवन के आरम्भ से ही व्यक्ति उनके प्रभाव में आ जाता है। आदिकाल से ही संस्कार जीवन में मार्गदर्शन का कार्य करते थे। जो आयु बढ़ने के साथ व्यक्ति के जीवन की एक निर्दिष्ट दिशा की ओर ले जाते थे। उसका परिणाम होता था कि एक संस्कृत (संस्कारवान्) मनुष्य के लिए अनुशासित जीवन व्यतीत करना आवष्यक होता था, तथा उसकी शक्तियाँ सुनियोजित एवं सोद्देश्य धारा में प्रवहमान रहती थी जिससे वह चरित्रवान् होता थ।

हम शास्त्रों में देखते हैं कि गर्भाधान संस्कार उस समय किया जाता था जब पति पत्नी दोनों शारीरिक दृष्टि से पूर्णतः स्वस्थ होते थे तथा परस्पर एक दूसरे के हृदय की बात जानते और दोनों में सन्तान प्राप्ति की वेगवती इच्छा होती थी। उस समय उनके समस्त विचार गर्भाधान की ओर केन्द्रित होते और होम के साथ वैदिकमन्त्रों के उच्चारण से शुद्ध तथा हितकर वातावरण तैयार कर लिया जाता था। स्त्री जब गर्भिणी होती तो दूषित शारीरिक व मानसिक प्रभावों से उसे बचाया जाता और उसके व्यवहार को इस प्रकार अनुशासित किया जाता था कि जिसका प्रभाव गर्भस्थ शिशु पर पड़े। यहाँ प्रसंगवश कश्यप अदिति के संवाद का एक सूक्ष्म भाग आप से कहने जा रहा हूँ। अन्यथा आप सोचेंगे कि प्राचीनकाल में गर्भिणी के लिए कौन सा अनुशासन था ? यह कथा पद्मपुराण में आयी है-

कश्यप अदिति से कहते हैं - गर्भिणी को अपवित्र स्थान चूने बालू आदि पर नहीं बैठना चाहिए। नदी में स्नान नहीं करना चाहिए। उसे मानसिक अशान्ति से सदैव अपने आपको बचाना चाहिए। उसे सदा निद्रालु या आलस्य नहीं करना चाहिए। अपने केश को खुले नहीं छोड़ने चाहिए।

सोते समय उत्तर की ओर सिर नहीं करना चाहिए। अमंगल शब्दों का व्यवहार, अधिक हँसना सायंकाल में भोजन, आदि गर्भिणी को नहीं करना चाहिए। इन नियमों के पालन से ही जन्म लेने वाला बालक भी अपने जीवन में अनुशासित एवं चरित्रवान उत्पन्न होता है।

एक बात और अच्छी है कि, न केवल गर्भिणी के लिए ही ये नियम बनाये गये थें अपितु उसके पति के लिए भी कुछ नियम है जो अनिवार्यतः पालनीय होते थे। जैसे -

वपनं मैथुनं तीर्थं वर्जयेद् गर्भिणीपतिः।

श्राद्धं च सप्तमान्मासदूर्ध्वं चान्यत्र वेदवित्।।

अर्थात् क्षौरकर्म, मैथुन तीर्थ सेवन श्राद्ध आदि गर्भिणी के पति को नहीं करना चाहिए। अस्तु।

इस प्रकार के नियम यदि आज भी लोग करें तो अवश्य ही अच्छी सन्तान उत्पन्न होगी।

हाँ तो हमलोग संस्कारों की वर्तमान सन्दर्भ में उपयोगिता की चर्चा कर रहे थे, परन्तु कुछ दूर भी चले गये थे। आइए हम अपने विषय पर फिर से आते है ।

शिशु के जन्म होने पर आयुष्य तथा प्रज्ञाजनन कृत्यों का अनुष्ठान किया जाता था और नवजात शिशु को पत्थर के समान दृढ एवं परशु की तरह शत्रुनाशक, बुद्धिमान तथा चरित्रवान् होने का आशीर्वाद दिया जाता था।

शैशव में प्रत्येक अवसर पर आशापूर्ण जीवन के प्रतीक आनन्द और उत्सव मनाये जाते थे । चूडाकरण या मुण्डन संस्कार के पश्चात् जब शिशु बालक की अवस्था में पहुँच जाता, तो उसे बिना ग्रन्थो के अर्थात् श्रुतिपरम्परा से अध्ययन तथा विद्यालय के कठोर नियन्त्रण में ही उसके कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्वों से उसका परिचय कराया जाता था।

उपनयन तथा अन्य शिक्षा सम्बन्धी संस्कार ऐसी सांस्कृतिक अग्नि का काम करते थे, जिसमें तपाकर बालक के अपनी अभिलाषाओं इच्छाओं को पिघलाकर अभीष्ट साँचे में ढाल दिया जाता था और अनुशासित, किन्तु प्रगतिशील और परिष्कृतजीवन व्यतीत करने के लिए उसे तैयार किया जाता था।

इस प्रकार निःसन्देह संस्कारों में अनेक ऐसी विधियाँ हैं जिनकी उपयोगिता मेरे विश्वास पर ही अवलम्बित नहीं है। किन्तु संस्कारों के मूल में निहित सांस्कृतिक उद्देश्यों के माध्यम से व्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभाव को आज भी कोई अस्वीकार नहीं कर सकता, भले ही किसी पूर्ण वैज्ञानिक व व्यवस्थित योजना में उनकी गणना न हो सके।

इन संस्कारों के नियमों को कठोर बनाने की अनिवार्यता का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति को संस्कृत

एवं चरित्र की दृष्टि से समाज का एक रूप विकास तथा उसे समान आदर्श से अनुप्राणित करना था। इस प्रयास में वे बहुत दूर तक सफल भी रहे। आज भी जिसका परिणाम कहीं यत्र तत्र देखने को मिलता है।

अब हम आपसे संस्कारों के एक और महत्त्व आध्यात्मिक महत्त्व की चर्चा भी अत्यन्त संक्षेप में करेंगे क्योंकि संस्कारों के आध्यात्मिक महत्त्व ही हमें जीवन में विशेष रूप से अनुभव होते हैं एवं धर्म पथ पर आरूढ होकर हमारे आगे की जीवन यात्रा को सुगम बनाते हैं।

आज भी संस्कार एक प्रकार से आध्यात्मिक शिक्षा की क्रमिक सीढ़ियों का कार्य करते हैं। इनके द्वारा संस्कृत व्यक्ति यह अनुभव करता था कि सम्पूर्ण जीवन वस्तुतः संस्कारमय है और सम्पूर्ण दैहिक क्रियाएँ आध्यात्मिक ध्येय से अनुप्राणित है। यही वह मार्ग था जिससे क्रियाशील सांसारिक जीवन का समन्वय आध्यात्मिक तथ्यों के साथ स्थापित किया जाता था। जीवन की इस पद्धति में शरीर और उसके कार्य बाधक नहीं, पूर्णता की प्राप्ति में सहायक हो सकते थे। इन संस्कारों के अनुष्ठानों से सात्विक भावों के उदय होते ही जीव मनुष्यभाव से देवभाव की ओर अग्रसर हो जाता है, जो जीवन का वास्तविक सुगम पथ है।

इस प्रकार हमारे भारतीयों का यह दृढ विष्वास था कि सविधि संस्कारों के अनुष्ठान से वे जीव दैहिक बन्धन से मुक्त होकर मृत्युसागर को पार कर लेते हैं । शायद इसीलिए ईषोपनिषद् में कहा गया है-

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।।

अर्थात् जो विद्या तथा अविद्या दोनों को जानता है, वह अविद्या से मृत्यु को पारकर विद्या से अमरत्व को प्राप्त कर लेता है। यहाँ अविद्या का अर्थ संस्कार, यज्ञादि अनुष्ठानों से है। तथा विद्या का तात्पर्य देवता ज्ञानरूपाविद्या।

इसका सार यह है कि (अविद्या) अर्थात् कर्म से चरित्र की शुद्धि और विद्या अर्थात् ज्ञानेन्द्रिय मन तथा बुद्धि की वृत्तियों से सदसद्विवेक, उपासना, श्रवण, मनन आदि के द्वारा अन्तःकरण की शुद्धि को प्राप्त कर जीव अमृतत्व को प्राप्त करता है। चरित्रशुद्धि तथा अन्तःकरण की शुद्धि होने पर ही ज्ञानोपलब्धि होती है जिससे जीव संसार से मुक्त होकर ब्रह्मभाव को प्राप्त करता है।

इस प्रकार यहाँ विविध संस्कारों से व्यक्ति की चारित्रिक शुद्धि तथा अन्तःकरण की शुद्धि होती है। यही इसका आध्यात्मिक महत्त्व है।

यहाँ आप संस्कारों के विषय में बहुत कुछ जान चुके हैं क्यों न आपसे कुछ प्रश्न कर लिया जाय क्योंकि आप भी बताने के लिए उत्सुक नजर आ रहे हैं तो लीजिए आपके लिए कुछ बोधप्रश्न नीचे दिये जा रहे हैं, जिनका उत्तर आपको देना है-

बोधप्रश्न

1. संस्कारों के मूल स्रोत कौन से ग्रन्थ हैं?
2. संस्कार शब्द में कौन सा उपसर्ग है?
3. 'आत्मव्यंजक शक्ति ही संस्कार है' यह मत किस शास्त्र का है?
4. 'कुमारसंभव' ग्रन्थ में संस्कार शब्द का क्या अर्थ है?
5. संस्कार में कौन सी तीन बातें अतिमहत्त्वपूर्ण की हैं?

4.5 संस्कारों की संख्या

संस्कारों के महत्त्व ज्ञान के बाद, इन संस्कारों की संख्या के विषय में भी जानना आवश्यक है । क्योंकि शास्त्रों में संस्कारों की संख्या को लेकर भिन्न-भिन्न मत देखे जाते हैं। आइये! हम संस्कारों की संख्या के विषय में शास्त्रों का मत जानते हैं।

यह तो हम जानते ही हैं कि मुख्य रूप से संस्कारों का उद्भव गृह्यसूत्रों से हुआ है। अतः इसी क्रम से सर्वप्रथम आश्वलायन गृह्यसूत्र में प्रवेश करते हैं। यह आश्वलायन गृह्यसूत्र ऋग्वेद से सम्बद्ध हैं । इसमें चार अध्याय हैं, जिनमें संस्कारों, कृषिकर्मों एवं पितृमेघ आदि धार्मिक कृत्यों का प्रधान रूप से वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त अन्य भी गृह्यसूत्र ऋग्वेद से सम्बद्ध है । परन्तु संस्कारों की चर्चा अल्पमात्रा में ही वहाँ देखी जाती है। अतः आश्वलायन गृह्यसूत्र में 11 संस्कारों का वर्णन मिलता है जो निम्नलिखित हैं।

1. विवाह, 2. गर्भाधान, 3. पुंसवन, 4. सीमन्तोन्नयन, 5. जातकर्म, 6. नामकरण, 7. चूडाकरण, 8. अन्नप्राशन, 9. उपनयन, 10. समावर्तन, 11. अन्त्येष्टि।

बौधायन गृह्यसूत्र के अनुसार

यह गृह्यसूत्र कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध है। इस गृह्यसूत्र में 13 संस्कारों का वर्णन मिलता है। जो निम्नलिखित है-

1. विवाह, 2. गर्भाधान, 3. पुंसवन, 4. सीमन्तोन्नयन, 5. जातकर्म, 6. नामकरण, 7. उपनिष्क्रमण, 8. अन्नप्राशन, 9. चूडाकर्म, 10. कर्णवेध, 11. उपनयन, 12. समावर्तन, 13. पितृमेघ।

यह प्रायः दक्षिण भारत में प्रसिद्ध है। जो कृष्णयजुर्वेदी है उनके लिए ये संस्कार हैं। उसी प्रकार आश्वलायन गृह्यसूत्र में वर्णित संस्कार ऋग्वेदीय शाखा वालों के लिए है, परन्तु हमलोगों के यहाँ उत्तरभारत में शुक्लयजुर्वेद की ही प्रधानता है। जिसके गृह्यसूत्र का नाम पारस्करगृह्यसूत्र हैं। हमलोगों का यही एक गृह्यसूत्र है। इसी गृह्यसूत्र में वर्णित संस्कारों का अनुपालन हमलोग अक्षरशः करते हैं। अतः अन्य गृह्यसूत्रों से हमारा कोई विशेष प्रयोजन यहाँ नहीं है मात्र जानकारी के लिए आपको यहाँ दिखाया गया है। अतः हमें तो पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार ही संस्कार करना या कराना चाहिए। यह पहले भी होता था, आज भी हो रहा है, जिसके लिए आचार्यों द्वारा पद्धतियाँ बना दी गई है, जिनका अनुपालन कर्मकाण्डियों या पुरोहितों के द्वारा समाज में हो रहा है।

पारस्कर गृह्यसूत्र के रचयिता महर्षि पारस्कर है। यह गृह्यसूत्र, शुक्लयजुर्वेद के दोनों शाखाओं (काण्व एवं माध्यन्दिन) का प्रतिनिधित्व करता है। यह सम्पूर्ण ग्रन्थ तीन काण्डों में विभक्त है। पुनः प्रत्येक काण्ड का अवान्तर विभाजन कण्डिकाओं में है। कण्डिकाओं की कुल संख्या 51 हैं।

इसमें प्रधान रूप से 13 संस्कारों का वर्णन प्राप्त होता है। जो निम्नलिखित हैं।

1. विवाह, 2. गर्भाधान, 3. पुंसवन, 4. सीमन्तोन्नयन, 5. जातकर्म, 6. नामकरण, 7. निष्क्रमण, 8. अन्नप्राशन, 9. चूडाकर्म, 10. उपनयन, 11. केशान्त, 12. समावर्तन, 13. अन्त्येष्टि।

ये जितने संस्कार विभिन्न गृह्यसूत्रों में बताये गये हैं वे सब सूत्रषैली में निबद्ध हैं। इनके विशेष नियम धर्मसूत्रों में भी यत्र- तत्र कहे गये हैं। अब आप पूछेंगे कि धर्म सूत्र क्या है?

कल्पसूत्र या कल्पशास्त्र (जो वेद के हस्त रूप अंग है, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते)। वेद के हस्तस्थानिक अंग है। इसीलिए कल्पशास्त्र की परिभाषा करते हुए आचार्य कहते हैं - 'कल्पो वेदविहितानां कर्मणामानुपूर्व्येण कल्पनाशास्त्रम्' अर्थात् जिनमें वेदविहित कर्मों का सुव्यवस्थित रूप से वर्णन हैं उसे कल्पशास्त्र कहते हैं।

इसी कल्पशास्त्र का वर्गीकरण प्रमुख रूप से चार श्रेणियों में किया गया है - श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र और शुल्बसूत्र।

हम यहाँ गृह्यसूत्र में संस्कारों पर चर्चा आपसे की जो सूत्ररूप में निबद्ध हैं। इसके बाद कुछ धर्मसूत्रों की भी यात्रा हम करेंगे। पहले गृह्यसूत्र एवं धर्मसूत्र का भेद समझे।

विषयवस्तु एवं प्रकरणगत साम्य देखकर दोनों (गृह्यसूत्र एवं धर्मसूत्र) में घनिष्ठ सम्बन्ध और अभिन्नता जैसी प्रतीति होती है किन्तु वस्तुतः इनमें सूक्ष्म अन्तर है। गृह्यसूत्र प्रायः गृहस्थजीवन की चर्चा से सम्बद्ध है इनमें मानवीय आचारों, अधिकारों, कर्तव्यों, उत्तरदायित्वों की ओर बहुत कम

ध्यान दिया गया है। इसके विपरीत धर्मसूत्रकारों का मुख्य उद्देश्य है आचार, विधि, नियम, क्रिया एवं संस्कारों की विधिवत् चर्चा करना। यद्यपि धर्मसूत्रों में भी विवाह प्रभृति संस्कारों, अनध्याय दिनों, श्राद्ध, मधुपर्क आदि के विषय में नियम पाये जाते हैं, तथापि गृह्यजीवन के क्रियाकलापों की चर्चा बहुत न्यून है।

अब हम धर्मसूत्रगत कुछ संस्कारों की संख्या पर विचार करेंगे।

गौतमधर्मसूत्र में आठ आत्मगुणों के साथ 40 संस्कारों का वर्णन है। (चत्वारिंशत् संस्काराः अष्टौ आत्मगुणाः) जो अधोलिखित है-

गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, चौल, उपनयन, चार वेदव्रत, स्नान, सहधर्मचारिणी संयोग, 5 महायज्ञ, सात पाकयज्ञ (अष्टका पार्वण श्राद्ध श्रावणी आग्रहायणी चैत्री आष्वयुजी) सात हविर्यज्ञाः (अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, चातुर्मास्य, आग्रहायणेष्टि, निरुढपषुबन्ध, सौत्रामणी) सप्तसोमसंस्था (अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थ, षोडषी, वाजपेय, अतिरात्र, आप्तोर्याम) इत्येते चत्वारिंषत् संस्काराः। यस्यैते चत्वारिंशत् संस्कारा अष्टावात्मगुणाष्च स ब्राह्मणो ब्रह्मणे सायुज्यमाप्नोति।

इन चालीस संस्कारों में आपको सन्देह होगा कि कुछ तो संस्कार है, परन्तु कुछ याग विशेष है तो क्या याग एवं संस्कार एक ही वस्तु है। या याग एवं संस्कार में कोई अन्तर है? इसके समाधान के लिए स्मृतिग्रन्थों को देखना चाहिए। संस्कार दो प्रकार के हैं - ब्राह्म एवं दैव। इसकी व्याख्या अभी किया जा रहा है।

स्मृति ग्रन्थों में संस्कारों की संख्या

हारीत स्मृति के अनुसार - दो प्रकार के संस्कार कहे गये हैं 1. ब्राह्म 2. दैव। गर्भाधान आदि ब्राह्मसंस्कार हैं तथा (सप्तपाकसंस्था आदि याग) दैवसंस्कार हैं।

आगे चलकर स्मृतियों में यज्ञों का समावेश दैवसंस्कारों के अन्तर्गत माना गया। क्योंकि न केवल ब्राह्म (गर्भाधानादि) संस्कारों को ही यथार्थ संस्कार समझना चाहिए। निःसन्देह यज्ञ भी परोक्षरूप से पवित्र करने वाले संस्कार स्वरूप माने जाते हैं। यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्। किन्तु उनका (यागों) मुख्य प्रयोजन था देवों की आराधना, जबकि संस्कारों का प्रधान ध्येय संस्कार्य व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा जीवन को संस्कृत करना। जैसा कि **मनु ने कहा है - 'संस्कारार्थं शरीरस्य'।**

बाद में चलकर स्मृतियों में संस्कार शब्द का प्रयोग केवल उन्हीं धार्मिक कृत्यों के अर्थ में

किया गया है, जिनका अनुष्ठान व्यक्ति के व्यक्तित्व की षुद्धि के लिए किया जाता था। आचार्य मनु के अनुसार भी गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यन्त 13 संस्कारों का वर्णन मिलता है। जो निम्नलिखित है - गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, उपनयन, केशान्त, समावर्तन, विवाह।

आचार्य अंगिरा के अनुसार संस्कारों की संख्या 25 होनी चाहिए। यथा-

गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तो बलिरेव च।
जातकृत्यं नामकर्म निष्क्रमोऽन्नाषनं परम्।।
चौलकर्मोपनयनं तद्व्रतानां चतुष्टयम्।
स्नानोद्वाहौ चाग्रयणमष्टकाष्च यथायथम्।।
श्रावण्यामाष्वयुज्यां च मार्गषीर्ष्यां च पार्वणम्।
उत्सर्गष्चाप्युपाकर्म महायज्ञाष्च नित्यषः।।
संस्कारा नियता ह्येते ब्राह्मणस्य विषेषतः।
पंचविंशति संस्कारैः संस्कृता ये द्विजातयः।।

ते पवित्राश्च योग्याश्च श्राद्धादिषु सुयन्त्रिताः इति।

इस प्रकार महर्षि अंगिरा के अनुसार भी सामान्यतः संस्कारों में कुछ याग विशेषों को समाविष्ट कर संस्कारों की 25 संख्या निर्धारित की गई है। अस्तु।

संस्कारों की संख्या के क्रम में हमें अभी तक 11, 13, 25, 40 आदि संख्या गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, स्मृतिग्रन्थों के आधार पर हमने निर्धारित की, जिनका हमने सप्रमाण नाम गिनाये । परन्तु वर्तमान समाज में 16 संस्कारों की प्रसिद्धि प्रायः लोगों से सुनी जाती है । उसका मूल क्या है **?** इसके उत्तर में हम आपको व्यास स्मृति की ओर ले चलते हैं।

महर्षि व्यास के अनुसार संस्कार मुख्य रूप से सोलह (16) है।

गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तो जातकर्म च।
नामक्रिया निष्क्रमोऽन्नप्राषनं वपनक्रिया।।
कर्णवेधो व्रतादेषो वेदारम्भ क्रियाविधिः।
केशान्तः स्नान उद्वाहो विवाहोऽग्नि परिग्रहः।।
त्रेताग्नि संग्रहश्चैव संस्काराः षोडशस्मृताः।

इस प्रकार संस्कारों की संख्या में भेद होने पर यह कैसे निश्चित होगा कि कितने संस्कार है तथा हमें

कितनी करनी चाहिए? इस प्रश्न के उत्तर के लिए महर्षि अंगिरा का यह वचन अत्यन्त प्रामाणिक है।

स्वे स्वे गृहे यथा प्रोक्तास्तथा संस्कृतयोऽखिलाः।
कर्तव्या भूतिकामेन नान्यथा भूतिमृच्छति।।

अर्थात् अपने अपने गोत्र परम्परा शाखा के अनुसार अपने अपने गृह्यसूत्र में जितने संस्कार वर्णित है उन्हीं संस्कारों को करना चाहिए। इसका अभिप्राय यह है कि शुक्लयजुर्वेद के माध्यन्दिन शाखा वाले के द्विजातियों को पारस्करगृह्यसूत्र के अनुसार 13 संस्कार करना चाहिए। अतः मुख्य रूप से हमारे यहाँ 13 संस्कार सरलतया आचार्यों के द्वारा सम्पन्न कराये जाते हैं। यदि हम दूसरी शाखा के अनुसार 40, 11, 25 आदि संस्कारों को करते हैं तो हमारी हानि होगी। इसके लिए आचार्य वसिष्ठ ने स्पष्ट ही लिखा है-

न जातु परशाखोक्तं बुधः कर्म समाचरेत्।
आचरन् परशाखोक्तं शाखारण्डः स उच्यते।।

अर्थात् जो अपनी शाखा के संस्कारों को छोड़कर दूसरे की शाखा में वर्णित संस्कारों को करता या कराता है वह शाखारण्ड दोष युक्त हो जाता है। अर्थात् कुल परम्परा प्राप्त शाखा के विरुद्ध नहीं करना चाहिए। इससे यही बात स्पष्ट हुई कि उत्तर भारत में प्रसिद्ध शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिनशाखा वालों को 13 संस्कार ही करना चाहिए। जिसका विधान पारस्करगृह्यसूत्र में हुआ है। भिन्न भिन्न (शाखा भेद) वेद शाखा के अनुसार ही आचार्यों द्वारा कहा गया संस्कारों की संख्या में भेद है। अतः अपनी कुल परम्परा प्राप्त वेदशा शाखा के अनुसार संस्कार करना चाहिए। प्रसंग में एक बात और जान लीजिए कि किनका किनका संस्कार होना चाहिए अर्थात् इन संस्कारों के अधिकारी कौन लोग है। इसके लिए याज्ञवल्क्य का वचन प्रमाणरूप में उपस्थित करता हूँ -

ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा वर्णास्त्वाद्यास्त्रयो द्विजाः।
निषेकाद्याः ष्मषानान्तास्तेषां वै मन्त्रतः क्रिया।।

अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैष्य को द्विज कहा जाता है। अतः इनका गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक का संस्कार मन्त्रपाठपूर्वक करना चाहिए। एवं शूद्र तथा स्त्रियों का जाकर्मादि संस्कार मन्त्र रहित करना चाहिए। अर्थात् ये स्वयं संस्कृत होते हैं इनके संस्कार की आवश्यकता नहीं है। रही बात मन्त्रपाठ की तो शास्त्र आदेश देता है-'तूष्णीमेताः क्रियाः स्त्रीणां विवाहस्तु समन्त्रकः'। लिखा गया है।

स्त्रियों का विवाह मन्त्रसहित तथा शेष संस्कार कुल परम्परानुसार मन्त्ररहित होंगे।

दूसरी बात यह है कि यदि किसी को गन्ना चूसने के लिए दिया जाय तो पहले यह देखा जाता है कि गन्ना सूनने में वह समर्थ है कि नहीं? यदि गन्ना किसी वृद्ध (दन्तविहीन) को दे दिया जाय तो देने वाले की ही हँसी होगी। ऐसा ही विचार कर लोक में भी सामर्थ्यहीन व्यक्ति के लिए गन्ने से ही बनी चीनी के रस से युक्त गुलाब जामुन खिलाते हैं तो वह उसे अच्छा लगता है। उसी प्रकार महर्षियों के द्वारा भी धनादि से सामर्थ्यहीन अत्यन्त कोमल आदि भावों को देखकर ही दयावश स्त्रियों एवं शूद्रों के लिए इतने जटिल कर्कश, अधिक धन व्ययजन्य संस्कारों को करने में छूट दी गई है। अर्थात् ये स्वयं में संस्कृत है। इनके संस्कार की कोई आवश्यकता नहीं है। अस्तु!

अब तक हम संस्कारों की संख्या के विषय में भिन्न-भिन्न ऋषियों के अनुसार जानकारी प्राप्त कर चुके हैं, साथ ही इनमें मतभेद क्यों है? इसका भी समाधान आप जान चुके हैं। संस्कार के अधिकारी कौन-कौन लोग है? एवं मन्त्रों के साथ किनका संस्कार होगा एवं बिना मंत्र के भी कुछ लोगों का संस्कार करने की आज्ञा शास्त्र देता है क्यों? इन सभी विषयों पर ऊहापोह के साथ संक्षिप्त रूप से यहाँ चर्चा की गयी है।

अब आप से कुछ प्रश्न पूछे जायेंगे जिसका उत्तर आपको देना है। ये प्रश्न है-

बोध-प्रश्न

1. आश्वलायन गृह्यसूत्र किस वेद से सम्बद्ध है?
2. आश्वलायन गृह्यसूत्र में कितने संस्कारों का वर्णन मिलता है?
3. बौधायन गृह्यसूत्र किस वेद से सम्बद्ध है?
4. 13 संस्कारों का वर्णन किस गृह्यसूत्र में प्राप्त होता है?
5. शुक्लयजुर्वेद का कौन सा गृह्यसूत्र है?
6. किसके मत में 16 संस्कार वर्णित है?
7. पारस्कर गृह्यसूत्र में कितने संस्कार वर्णित है?

1.6 सारांश

इस संस्कार विमर्श नामक इकाई में संस्कार के मूलस्रोत एवं संस्कार शब्द की व्युत्पत्ति तथा संस्कार शब्द का प्रयोग एवं अर्थ विभिन्न शास्त्रों में किस किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, उसका सोदाहरण स्वरूप परिचय आपके सामने प्रस्तुत किया गया है।

इसी क्रम में संस्कार के वैज्ञानिक पक्षों को ध्यान में रखते हुए उसके तीन महत्त्वपूर्ण अर्थ

आपको बताये गये, क. दोषमार्जन, ख. अतिशयाधान, ग. हीनांगपूर्ति।

इसके बाद हम आगे संस्कारों की प्रयोजन की तरफ बढ़ते हैं और भिन्न-भिन्न प्रयोजनों को दर्शाते हुए मुख्य प्रयोजन पर भी कुछ चर्चा की गई।

आज के समय में जो अत्यन्त आवश्यक प्रयोजन है वह चरित्र निर्माण एवं नैतिक ज्ञान का जो संस्कार से ही सुलभ है। इसके साथ ही संस्कारों के आध्यात्मिक प्रयोजन पर भी दृष्टि डाली गई। एवं बोध प्रश्न के साथ हुए पहले खण्ड का समापन एवं दूसरे उपखण्ड में संस्कारों की संख्या से सम्बद्ध बातें भिन्न-भिन्न गृह्यसूत्रों, धर्मसूत्रों, स्मृतियों के आधार पर आपके सामने रखी गई। साथ ही संस्कार के अधिकारी आदि की भी चर्चा करते हुए अन्त में बोधप्रश्न के साथ इस उपखण्ड का समापन होता है।

1.7 शब्दावली

1. धातु = क्रिया जैसे भू, पठ्, गम् आदि
2. पुरोडाश = श्रौतयाग में दिया जाने वाला हवि विशेष
3. भाजन = बरतन या पात्र
4. वपनम् = क्षौर कर्म कराना
5. संज्ञा = नाम
6. अर्थवाद = विधिवाक्यों की प्रषंसा करने वाले वाक्य
7. विट् = वैष्य
8. ब्रह्म = ब्राह्मण

अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उपखण्ड - 1 के प्रश्नोत्तर

1. संस्कारों के मूलस्रोत प्रधानरूप से गृह्यसूत्र हैं।
2. संस्कार शब्द में सम् उपसर्ग है।
3. न्यायशास्त्र के विद्वानों का (नैयायिकों का)
4. कुमारसंभव में संस्कार शब्द का अर्थ शुद्धि (पवित्रता) है।
5. संस्कार में अधोलिखित तीन बातें अति महत्त्वपूर्ण की है-

   (क) दोषमार्जन

(ख)अतिशयाधान

(ग) हीनांगपूर्ति

उपखण्ड - 2 के प्रश्नोत्तर

1. आश्वलायन गृह्यसूत्र ऋग्वेद से सम्बद्ध है।
2. आश्वलायन गृह्यसूत्र में ग्यारह (11) संस्कारों का वर्णन है।
3. बौधायन गृह्यसूत्र कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध है।
4. 13 संस्कारों का वर्णन बौधायन गृह्यसूत्र में है।
5. शुक्लयजुर्वेद का गृह्यसूत्र पारस्करगृह्यसूत्र है।
6. महर्षि व्यास के मत में 16 संस्कार है।
7. पारस्करगृह्यसूत्र में 13 संस्कार वर्णित है।

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

ग्रन्थनाम	लेखक	प्रकाशन
हिन्दूसंस्कार	डॉ. राजबलीपाण्डेय	चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी
पारस्करगृह्यसूत्र	आचार्य पारस्कर सम्पादक डॉ. सुधाकर मालवीय	चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
वीरमित्रोदय	मित्रमिश्र	चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
मनुस्मृति	आचार्यमनु	श्रीकृष्णदास मुम्बई
याज्ञवल्क्यस्मृति	आचार्ययाज्ञवल्क्य	श्रीकृष्णदास मुम्बई
भगवन्तभास्कर	श्रीनीलकण्ठभट्ट	श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रिसंस्कृतविद्यापीठम् नवदेहली

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. संस्कारों के प्रयोजनों को विस्तार से लिखें।
2. संस्कारों की संख्या के विषय में विविध आचार्यों के मतों का उल्लेख करें।
3. संस्कारों के महत्त्व पर एक निबन्ध लिखें।

इकाई – 2 षोडश संस्कार विधि

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 षोडश संस्कार का परिचय
2.4 षोडश संस्कारों का नाम व विधि
बोध प्रश्न
2.5 सारांशः
2.6 पारिभाषिक शब्दावली
2.7 बोधप्रश्नों के उत्तर
2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

द्वितीय इकाई में आपका स्वागत है। इस इकाई का शीर्षक है – षोडश संस्कार विधि। **संस्कार शब्द का अर्थ है - शुद्धिकरण**। भारतीय सनातन परम्परा में प्राचीन आचार्यों ने जातक के सर्वतोमुखी विकासार्थ संस्कारों की बात कही है। प्राचीन समय में संस्कारों की संख्या चालीस थी। कालान्तर में इनकी संख्या में कमी आई और वह षोडश संस्कार के रूप में व्यवहार में रह गया। वर्तमान में तो षोडश संस्कारों में भी कमी आ रही है। प्रस्तुत इकाई में यहाँ आचार्यों द्वारा प्रतिपादित षोडश संस्कार की चर्चा की गई है।

षोडश संस्कार का अर्थ है – सोलह संस्कार। गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि संस्कार तक महत्वपूर्ण षोडश संस्कार होते है।

इससे पूर्व की इकाईयों में आपने संस्कार क्या है। उसके विभिन्न स्वरूपों का अध्ययन किया है। यहाँ अब इस इकाई में महत्वपूर्ण षोडश संस्कार का अध्ययन करेंगे ।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

1. षोडश संस्कार को परिभाषित करने में समर्थ हो सकेंगे।
2. षोडश संस्कार के महत्त्व को समझा सकेंगे।
3. षोडश संस्कार के विभेद का निरूपण करने में समर्थ होंगे।
4. षोडश संस्कार का स्वरूप वर्णन करने में समर्थ होंगे।
5. षोडश संस्कार के सम्बन्ध को निरूपित करने में समर्थ होंगे।

2.3 षोडश संस्कारों का परिचय

संस्कार शब्द सम् पूर्वक कृ-धातु से घञ् प्रत्यय करके निष्पन्न होता है। संस्कार शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है। संस्कृत वाङ्मय में इसका प्रयोग शिक्षा, संस्कृति, प्रशिक्षण, सौजन्य पूर्णता, व्याकरण संबंधी शुद्धि, संस्करण, परिष्करण, शोभा आभूषण, प्रभाव, स्वरूप, स्वभाव, क्रिया, फलशक्ति, शुद्धि क्रिया, धार्मिक विधि विधान, अभिषेक, विचार भावना, धारणा, कार्य का परिणाम, क्रिया की विशेषता आदि व्यापक अर्थों में किया जाता है। अतः संस्कार शब्द

अपने विशिष्ट अर्थ समूह को व्यक्त करता और उक्त सम्पूर्ण अर्थ इस शब्द में समाहित हो गये हैं। अतः संस्कार, शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक शुद्धि के लिए किये जाने वाले अनुष्ठानों का श्रेष्ठ आचार है। इस अनुष्ठान प्रक्रिया से मनुष्य की बाह्याभ्यन्तर शुद्धि होती है जिससे वह समाज का श्रेष्ठ आचारवान नागरिक बन सके।

संस्कार के दो रुप होते हैं - एक आंतरिक रुप और दूसरा बाह्य रुप। बाह्य रुप का नाम रीतिरिवाज है। यह आंतरिक रुप की रक्षा करता है। हमारा इस जीवन में प्रवेश करने का मुख्य प्रयोजन यह है कि पूर्व जन्म में जिस अवस्था तक हम आत्मिक उन्नति कर चुके हैं, इस जन्म में उससे अधिक उन्नति करें। आंतरिक रुप हमारी जीवन- चर्या है। यह कुछ नियमों पर आधारित हो तभी मनुष्य आत्मिक उन्नति कर सकता है।

हिन्दू संस्कारों में अनेक वैचारिक और धार्मिक विधियां सन्निविष्ट कर दी गयी हैं जिससे बाह्य परिष्कार के साथ ही व्यक्ति में सदाचार की पूर्णता का भी विकास हो सके। सविधि संस्कारों के अनुष्ठान से संस्कृत व्यक्ति में विलक्षण तथा अवर्णनीय गुणों का प्रादुर्भाव हो जाता है।

आत्मशरीरान्यतरनिष्ठो विहित क्रियाजन्योऽतिशय विशेषः संस्कारः ।

वीर मित्रोदय पृ. **191**

कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्यचेहच - म. स्मृ. **2/26**

संस्कारों की संखया-संस्कारों के शास्त्रीय प्रयोग के सम्बन्ध में गृह्यसूत्रों को ही प्रमाण माना गया है । प्राचीन गृह्य सूत्रों में पारस्कर गृह्य सूत्र, अश्वलायन गृह्य सूत्र,बोधायन गृह्य सूत्र विशेष रूप से प्रामाणिक रूप से संस्कारों के अनुष्ठानों का विवरण, महत्त्व और मंत्रों का विवरण प्रस्तुत करते हैं। इनके अतिरिक्त पुराण सहित्य और विभिन्न स्मृतियां भी संस्कारों के आचार के संबंध तथा उनके महत्त्व का प्रतिपादन करती हैं। धर्म सूत्रों और धर्मशास्त्रों में भी इनके समन्वित रूपों का प्रतिपादन किया गया है। विभिन्न गृह्यसूत्रों एवं स्मृतियों में संस्कारों की संखया में मतैक्य नहीं हैं तदपि परवर्ती काल में संस्कारों की संखया का निर्धारण कर दिया गया। इन संस्कारों में जन्मपूर्व सलेकर बाल्यकाल के **10** संस्कार और शेष **6** शैक्षणिक तथा अन्त्येष्टि पर्यन्त के संस्कार परिगणित हैं।

2.3.1 षोडश संस्कारों का नाम व विधि -

षोडश संस्कारों का क्रम निम्नलिखित रूप से है -

1.	गर्भाधान	**2.**	पुंसवन
3.	सीमन्तोन्नयन	**4.**	जात कर्म
5.	नामकरण	**6.**	निष्क्रमण
7.	अन्नप्राशन	**8.**	चूड़ाकरण
9.	कर्णवेध	**10.**	विद्यारम्भ
11.	उपनयन	**12.**	वेदारंभ

13. केशान्त **14.** समावर्तन

15. विवाह **16.** अन्त्येष्टि

कालक्रमानुसार प्राप्तभेद से अनुष्ठान पद्धतियों की रचना हो गई है। श्री दयानन्द सरस्वती के अनुयायियों एवं अन्य मतावलम्बियों ने भी अपने सम्प्रदायानुसार पद्धतियां बना ली हैं किन्तु देशज प्रक्रिया में भिन्नता रहते हुए भी शास्त्रीय विधि और मंत्रा प्रयोग यथावत् मिलते हैं। अनेक संस्कार काल वाह्य भी हो गये हैं तदपि उनकी कौल परम्परा अभी जीवित है। अतः इन संस्कारों का संक्षिप्त रूप से विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। हिन्दू संस्कारों के समय मुहूर्त निर्धारण में ज्योतिष की भी मुख्य भूमिका रहती है अतः प्रत्येक संस्कार के लिए नक्षत्र - योग के अनुसार ज्योतिष शास्त्रों में मुहूर्तों का निर्धारण कर दिया है प्रचलित पंचाङ्गों में चक्रानुक्रम से उसका विवरण उपलब्ध रहता है। ज्योतिष के संक्षिप्त संकलन ग्रंथ भी इसमें सहायक हैं। संस्कारों के मुहूर्तों से सम्बन्धित सारिणी भी संलग्न कर दी जा रही है जिसमें संक्षेप में मुहूर्तों का विवरण है। मनु ने 'जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्द्विज उच्यते' कहकर संस्कार की महत्ता का प्रतिपादन कर दिया है। संस्कार से ही द्विजत्व प्राप्त होता है। इसी वाक्य को आधार मानकर आर्य समाज के अधिष्ठाता स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सम्पूर्ण आर्य जाति को संस्कार से द्विजत्व प्राप्ति का सिद्धान्त प्रतिपादित किया।

षोडश संस्कारों का उल्लेख क्रमशः निम्नलिखित रूप में दिया जा रहा है –

1. गर्भाधान संस्कार

गृह्यसूत्र गर्भाधान के साथ ही संस्कारों का प्रारंभ करते हैं क्योंकि जीवन का प्रारम्भ इसी संस्कार से शुरू होता है –

निषिक्तो यत्प्रयोगेण गर्भः संधार्यते स्त्रिया तद्गर्भालम्भनंनाम कर्म प्रोक्तं मनीषिभिः।

वीर मित्रोदय

स्त्री-पुरुष के संयोग रूप इस संस्कार की विस्तृत विवेचना शास्त्रों में मिलती है जिसमें अनेक विधि-निषेधों की चर्चा है जो मानव जीवन के लिए और आगे आने वाले संतति परम्परा की शुद्धि के लिए अत्यावश्यक है। दिव्य सन्तति की प्राप्ति के लिए बताये गये शास्त्रीय प्रयोग सफल होते हैं सन्तति-निग्रह भी होता है।

2. पुंसवनं संस्कार -

गर्भधारण का निश्चय हो जाने के पश्चात् शिशु को पुंसवन नामक संस्कार के द्वारा अभिषिक्त किया जाता था। इसका अभिप्राय-पुं-पुमान् (पुरुष) का सवन (जन्म हो)।

पुमान् प्रसूयते येन कर्मणा तत् पुंसवनमीरितम् - बीरमित्रोदय

गर्भधारण का निश्चय हो जाने के तीसरे मास से चतुर्थ मास तक इस संस्कार का विधान बताया जाता है। अधिकांश स्मृतिकारों ने तीसरा माह ही गृहीत किया है।

तृतीये मासि कर्तव्यं गृष्टेरन्यत्रा शोभनम्।
गृष्टे चतुर्थमासे तु षष्ठे मासेऽथवाष्टये। -वीरमित्रोदय

यह संस्कार चन्द्रमा के पुरुष नक्षत्रा में स्थित होने पर करना चाहिए। सामान्य गणेशार्चनादि करने के बाद गर्भिणी स्त्री की नासिका के दाहिने छिद्र मे गर्भ-पोषण संरक्षण के लिए लक्ष्मणा, बटशुङ्ग, सहदेवी आदि औषधियों का रस छोड़ना चाहिए। सुश्रत नें सूत्र स्थान में कहा है -

''सुलक्ष्मणा-वटशुङ्रग, सहदेवी विश्वदेवानाभिमन्यतमम् क्षीरेणाभिद्युष्टय त्रिचतुरो वा विन्दून दद्यात् दक्षिणे-नासापुटे''-सुश्रत संहिता।

उपर्युक्त प्रक्रिया से जाहिर है कि इस संस्कार में वैज्ञानिक विधि का आश्रय है जिससे शिशु की पूर्णता प्राप्त हो और उसकी सर्वाङ्ग रक्षा हो।

(3) सीमन्तोन्नयन संस्कार -

गर्भ का तृतीय संस्कार सीमतोन्नयन है। इस संस्कार में गर्भिणी स्त्री के केशों (सीमन्त) को ऊपर करना'' **सीमन्त उन्नीयते यस्मिन् कर्मणि तत् सीमन्तोन्नयनम्** - वी.मि.

विधि- किसी पुरुष नक्षत्र में चन्द्रमा के स्थित होने पर स्त्री-पुरुष को उस दिन फलाहार करके इस विधि को सम्पन्न किया जाता है। गणेशार्चन, नान्दी, प्राजापत्य आहुति देना चाहिए। पत्नी अग्नि के पश्चिम आसन पर आसीन होती है और पति गूलरके कच्चे फलों का गुच्छ, कुशा, साही के कांटे लेकर उससे पत्नी के केश संवारता है -महाव्याहृतियों का उच्चारण करते हुए।

अयभूर्ज्ज स्वतो वृक्ष ऊर्ज्ज्वेव फलिनी भव - पा.गृ. सूत्र

इस अवसर पर मंगल गान, ब्राह्मण भोजन आदि कराने की प्रथा थी।

बाल्यावस्था के संस्कार

(4) जातकर्म संस्कार

जातक के जन्मग्रहण के पश्चात् पिता पुत्र मुख का दर्शन करे और तत्पश्चात् नान्दी श्राद्धावसान जातकर्म विधि को सम्पन्न करे-

जातं कुमारं स्वं दृष्ट्वा स्नात्वाऽनीय गुरुम् पिता।
नान्दी श्राद्धावसाने तु जातकर्म समाचरेत्॥

विधि- पिता स्वर्णशलाका या अपनी चौथी अंगुली से जातक को जीभ पर मधु और घृत महाव्याहृतियों के उच्चारण के साथ चटावें। गायत्री मन्त्र के साथ ही घृत बिन्दु छोड़ा जाय। आयुर्वेद के ग्रंथों में जातकर्म-विधि का विधान चर्चित है कि पिता बच्चे के कान में दीर्घायुष्य मंत्रों का जाप करे। इस अवसर पर लग्नपत्र बनाने और जातक के ग्रह नक्षत्रा की स्थिति की जानकारी भी प्राप्त करने की प्रथा है और तदनुसार बच्चे के भावी संस्कारों को भी निश्चित किया जाता है।

(5) नामकरण संस्कार

नामकरण एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण संस्कार है जीवन में व्यवहार का सम्पूर्ण आधार नाम पर ही निर्भर होता है

नामाखिलस्य व्यवहारहेतुः शुभावहं कर्मसु भाग्यहेतुः
नाम्नैव कीर्तिं लभेत मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नामकर्म ।-बी.मि.भा. **1**

उपर्युक्त स्मृतिकार बृहस्पति के वचन से प्रमाणित है कि व्यक्ति संज्ञा का जीवन में सर्वोपरि महत्त्व है अतः नामकरण संस्कार हिन्दू जीवन में बड़ा महत्त्व रखता है।

शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख है कि

तस्माद् पुत्रस्य जातस्य नाम कुर्यात्
पिता नाम करोति एकाक्षरं द्वक्षरंत्रयक्षरम् अपरिमिताक्षरम् वेति -वी.मि.
द्वक्षरं प्रतिष्ठाकामश्चतुरक्षरं ब्रह्मवर्चसकामः ।।

प्रायः बालकों के नाम सम अक्षरों में रखना चाहिए। महाभाष्यकार ने व्याकरण के महत्व का प्रतिपादन करते हुए नामकरण संस्कार का उल्लेख किया है -

याज्ञिकाः पठन्ति-''दशम्युतरकालं जातस्य नाम विदध्यात्
घोष बदाद्यन्तरन्तस्थमवृद्धं त्रिापुरुषानुकम नरिप्रतिष्ठितम्।
तद्धि प्रतिष्ठितमं भवति। द्वक्षरं चतुरक्षरं वा नाम कुर्यात् न तद्धितम् इति। न चान्तरेण व्याकरणकृतस्तद्धिता वा शक्या विज्ञातुम्। - महाभाष्य

उपर्युक्त कथन में तीन महत्त्वपूर्ण बातों का उल्लेख है-

(1) शब्द रचना (**2**) तीन पुस्त के पुरखों के अक्षरों का योग (**3**) तद्धितान्त नहीं होना चाहिए अर्थात् विशेषणादि नहीं कृत् प्रत्यान्त होना चाहिए।

विधि- विधान-गृह्य सूत्रों के सामान्य नियम के अनुसार नामकरण संस्कार शिशु के जन्म के पश्चात् दसवें या बारहवें दिन सम्पन्न करना चाहिए -

द्वादशाहे दशाहे वा जन्मतोऽपि त्रायोदशे।
षोडशैकोनविंशे वा द्वात्रिंशेवर्षतः क्रमात्।।

संक्रान्ति, ग्रहण, और श्राद्धकाल में संस्कार मंगलमय नही माना जाता। गणेशार्चन करके संक्षिप्त व्याहृतियों से हवन सम्पन्न कराकर कांस्य पात्रा में चावल फैलाकर पांच पीपल के पत्तों पर पांच नामों का उल्लेख करते हुए उनका पद्द्रचोपचार पूजन करे। पुनः माता की गोद में पूर्वाभिमुख बालक के दक्षिण कर्ण में घरके बड़े पुरुष द्वारा पूजित नामों में से निर्धारित नाम सुनावे। हे शिशो ! तव नाम अमुक शर्म-वर्म गुप्त दासाद्यस्ति'' आशीर्वचन निम्न ऋचाओं का पाठ -

''वेदोऽसि येन त्वं देव वेद देवेभ्यो वेदोभवस्तेन मह्यां वेदो भूयाः। अङ्गादङ्गात्संभवसि हृदयादधिजायते आत्मा वै पुत्रा नामासि सद्द्रजीव शरदः शतम्'। गोदान-छाया दान आदि कराना चाहिये। लोकाचार के अनुसार अन्य आचार सम्पादित किये जायें।

बालिकाओं के नामकरण के लिए तद्धितान्त नामकरणकी विधि है। बालिकाओं के नाम विषमाक्षर में किये जायें और वे आकारान्त या ईकारान्त हों। उच्चारण में सुखकर, सरल, मनोहर मङ्गलसूचक आशीर्वादात्मक होने चाहिए।

स्त्रीणां च सुखम्क्रूरं विस्पष्टार्थं मनोहरम्।
मत्त्ल्यं दीर्घवर्णान्तमाशीर्वादाभिधानवत्। - वी.मि.

2.4 बोध प्रश्न -

1. संस्कार शब्द का अर्थ है -

क. अशुद्धिकरण ख. शुद्धिकरण ग. निजीकरण घ. करण

2. संस्कार शब्द में कौन सा प्रत्यय है?

क. घञ प्रत्यय ख. मतुप प्रत्यय ग. सम प्रत्यय घ. उरट प्रत्यय

3. प्राचीन समय में संस्कारों की संख्या थी?

क. 30 ख. 40 ग. 50 घ. 16

4. षोडश संस्कारों में प्रथम संस्कार है?

क. पुंसवनं संस्कार ख. जातकर्म संस्कार ग. गर्भाधान संस्कार घ. सीमन्तोन्नयन

5. षोडश का अर्थ है?

क. 14 ख. 15 ग. 16 घ. 17

(6) निष्क्रमण संस्कार -

प्रथम बार शिशु के सूर्य दर्शन कराने के संस्कार को निष्क्रमण कहा गया है।

ततस्तृतीये कर्तव्यं मासि सूर्यस्य दर्शनम्।
चतुर्थे मासि कर्तव्य शिशोश्चन्द्रस्य दर्शनम्।।

अनेक स्मृतिकारों ने चतुर्थ मास स्वीकार किया है। इस संस्कार के बाद बालक को निरन्तर बाहर लाने का क्रम प्रारंभ किया जाता है।

विधि-भलीभांति अलंकृत बालक को माता गोद में लेकर बाहर आये और कुल देवता के समक्ष देवार्चन करे। पिता पुत्र को-तच्चक्षुर्देव .....आदि मंत्र का जाप करके सूर्य का दर्शन करावे -

ततस्त्वलंकृता धात्री बालकादाय पूजितम्।
बहिर्निष्कासयेद् गेहात् शङ्ख पुण्याहनिः स्वनैः। - विष्णुधर्मोत्तर

आशीर्वाद - **अप्रमत्तं प्रमत्तं वा दिवारात्रावथापि वा।**
रक्षन्तु सततं सर्वे देवाः शक्र पुरोगमाः॥

गीत, मंगलाचरण और बालक के मातुल द्वारा भी आशीर्वाद दिलाया जाय।

(7) अन्नप्राशन -

विधिपूर्वक बालक को प्रथम भोजन कराने की प्रथा अत्यन्त प्राचीन है। वेदों और उपनिषदों में भी एतत् सम्बन्धी मंत्र उपलब्ध होते हैं। माता के दूध से पोषित होने वाले बालक को प्रथम बार अन्नप्राशन कराने का प्रचलन प्रायः प्राचीन काल से ही है जो एक विशेष उत्सव के रूप में सम्पन्न किया जाता है।

जन्मतो मासि षष्ठे स्यात सौरेणोत्तममन्नदम्
तदभावेऽष्टमे मासे नवमे दशमेऽपि वा।
द्वादशे वापि कुर्वीत प्रथमान्नाशनं परम्
संवत्सरे वा सम्पूर्णे केचिदिच्छन्ति पण्डिता:॥ - नारद, वी.मि.

षण्मासद्द्रचैनमन्नं प्राशयेल्लघु हितञ्च - सुश्रुत (शं. स्थान)

विधि- अन्नप्राशन संस्कार के दिन सर्वप्रथम यज्ञीय भोजन के पदार्थ वैदिक मन्त्रों के उच्चारण के साथ पकाये जायें। भोजन विविध प्रकार के हों तथा सुस्वादु हों। मधु-घृत-पायस से बालक को प्रथम कवर (ग्रास) दिया जाय। पद्धतियों में एतत् संबंधी मंत्रा उपलब्ध हैं। गणेशार्चन करके व्याहृतियों से आहुति देकर एतत् संबंधी ऋचाओं से हवन करके तत्पश्चात् बालक को मंत्रापाठ के साथ अन्नप्राशन कराया जाय पुनः यथा लोकाचार उत्सव सम्पन्न किया जाय।

(8) चूड़ाकरण (मुण्डन) संस्कार -

मुण्डन संस्कार के संदर्भ में वैदिक ऋचाओं, गृह्यसूत्रों एवं स्मृतियों में मंत्रा, विधि प्रयोग, समय निर्धारण के सम्बन्ध में व्यापक चर्चा मिलती है। पद्धतियों में इसका समावेश किया गया है। तदपि लोकाचार कुलाचार से अनेक भेद दिखाई देते हैं। अनेक कुलों में मनौती के आधार पर मुण्डन किये जाते हैं किन्तु मुहूर्त निर्णय के लिए सभी ज्योतिष का आधार प्रायः स्वीकार करते हैं। मुण्डन में विधि पूर्वक शास्त्रीय आचार केवल उपनयन कराने वाले कुलों में उसी समय

किया जाता है जबकि शास्त्रीय विधान दूसरे वर्ष से बताया गया है यथा -

प्राङ्वासवे सप्तमे वा सहोपनयनेन वा। (अश्वलायन)
तृतीये वर्षे चौलं तु सर्वकामार्थसाधनम्।
सम्बत्सरे तु चौलेन आयुष्यं ब्रह्मवर्चसम्। - वी. मि.
पद्द्रचमे पशुकामस्य युग्मे वर्षे तु गर्हितम् ।।

निषिद्ध काल-गर्भिण्यां मातरि शिशोः क्षौर कर्म न कारयेत्-इसके अतिरिक्त भी मुहूर्त निर्णय के समय-निषिद्ध काल को त्यागना चाहिए।

शिखा की व्यवस्था

मुण्डन संस्कार के कौल और शास्त्रीय आचार तो किये जाते हैं किन्तु शिखा रखने की प्रथा का प्रायः उच्चाटन होता जा रहा है। जबकि शिखा का वैज्ञानिक महत्त्व है और शास्त्रों में शिखाहीन होना गंभीर प्रायश्चित्त कोटि में आता है ।

शिखा छिन्दन्ति ये मोहात् द्वेषादज्ञानतोऽपि वा।
तप्तकृच्छ्रेण शुध्यन्ति त्रायो वर्णा द्विजातयः- लघुहारित

चूड़ाकरण का शास्त्रीय आधार था दीर्घायुष्य की प्राप्ति। सुश्रुत ने (जो विश्व के प्रथम शीर्षशल्य चिकित्सक थे) इस सम्बन्ध में बताया है कि -

(11) मस्तक के भीतर ऊपर की ओर शिरा तथा सन्धि का सन्निपात है वहीं रोमावर्त में अधिपति है। यहां पर तीव्र प्रहार होने पर तत्काल मृत्यु संभावित है। शिखा रखने से इस कोमलांग की रक्षा होती है।

मस्तकाभ्यन्तरोपरिष्टात् शिरासम्बन्धिसन्निपातो
रोमावर्त्तोऽधिपतिस्तत्रापि सद्यो मरणम् - सुश्रुत श. स्थान

विधि-विधान-गणेशार्चन अग्निस्थापन-पद्द्रचवारूणीहवन-नन्दी के बाद पिता केशों का संस्कार यथाविधि करके स्वयं मंत्रा पाठ करता हुआ केश कर्त्तन करता है और उनका गोमयपिन्ड में उत्सर्ग करता है पुनः दही उष्णोदक शीतोदक से केशों को भिगोता और छुरे को अभिमन्त्रित करके नापित को वपन (मुण्डन) का आदेश देता है। क्रमशः

(9) कर्णवेध संस्कार

आभूषण पहनने के लिए विभिन्न अंगों के छेदन की प्रथा संपूर्ण संसार की असभ्य तथा अर्द्धसभ्य जातियों में प्रचलित है। अतः इसका उद्भव अति प्राचीन काल में ही हुआ होगा ।

आभूषण धारण और वैज्ञानिक रूप से कर्ण छेदन का महत्त्व होने के कारण इस प्रक्रिया को संस्कार रूप में स्वीकारा गया होगा। कात्यायन सूत्रों में ही इसका सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है। सुश्रुत ने इसके

वैज्ञानिक पक्ष में कहा है कि कर्ण छेद करने से अण्डकोष वृद्धि, अन्त्रा वृद्धि आदि का निरोध होता है अतः जीवन के आरंभ में ही इस क्रिया को वैद्य द्वारा सम्पादित किया जाना चाहिए।

शङ्खो परि च कर्णान्ते त्यक्त्वा यत्नेन सेवनीयम्
व्यत्यासाद्वा शिरां विध्येद् अन्त्राबृद्धि निवृत्तये - सुश्रुत चि. स्थान

भिषग् वामहस्तेन-विध्येत्-सुश्रुत संहिता में षष्ठ अथवा सप्तम मास में शुक्ल पक्ष में शुभ दिन में वैद्य द्वारा माता की गोद में मधुर खाते बालक का अत्यन्त निपुणता से कर्ण वेध करना चाहिए। जब कि वृहस्पति जन्म से **10-12-16**वें दिन करने को कहते है।

विधि - वर्तमान बालिकाओं का कर्णवेध तो आभूषण धारण के लिए अनिवार्यतः होता है किन्तु पुरुष वर्ग के वेध का प्रतीकात्मक ही संस्कार हो पाता है।

गणेशार्चन, हवन आदि करके निम्न मंत्रों से क्रमशः दक्षिण-वाम कर्णों की वेध की प्रक्रिया सम्पन्न की जाती है - भद्रं कर्णेभिः.....आदि मंत्रों से सम्पन्न किया जाय।

(10) विद्यारम्भ एवं अक्षराम्भ

इस महत्त्वपूर्ण संस्कार के संबंध में गृह्य सूत्रों में काफी स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता और न ही किसी विशेष विधि-विधान की चर्चा ही मिलती है। किन्तु अनेक आकर ग्रंथों, प्राचीन काव्य नाटकों में इसका स्पष्ट उल्लेख आता है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र रघुवंश, उत्तररामचरित आदि में इसकी चर्चा है इससे स्पष्ट है कि

उपनयन और वेदारंभ

के पूर्व अक्षरों का सम्यक् ज्ञान अपेक्षित था और अक्षर ज्ञान के समय कुलाचार के अनुसार विधि-विधान किये जाते थे। विधि-परवर्ती संग्रह ग्रंथों में इसकी विधि व्यवस्था प्राप्त है।

उत्तरायण सूर्य होने पर ही शुभ मुहूर्त में गणेश-सरस्वती-गृह देवता का अर्चन करके गुरु के द्वारा अक्षरारंभ कराया जाय। द्वितीय जन्मतः पूर्वामारभेदक्षरान् सुधीः। -बी.मि. (बृहस्पति)

"पद्द्रचमे सप्तमेवाद्वे"-संस्कारप्रकाश-भीमसेन

तण्डुल प्रसारित पट्टिका पर-

श्री गणेशाय नमः, श्री सरस्वत्यै नमः, गृह देवताभ्योनमः श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः लिखकर उसका पूजन कराया जाय और गुरु पूजन किया जाय और गुरु स्वयं बालक का दाहिना हाथ पकड़कर पट्टिका पर अक्षरारंभ करा दे। गुरु को दक्षिणा दान किया जाय।

(11) उपनयन संस्कार -

भारतीय मनीषियों ने जीवन की समग्र रचना के लिए जिस आश्रम व्यवस्था की स्थापना की जिससे मनुष्य को सहज ही पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति हो, किया गया प्रतीत होता है। ब्रह्मचर्य काल में धर्म

का अर्जन एवं गृहस्थ जीवन में अर्थ-काम का उपभोग गीता के शब्दों में 'धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ'' धर्म-नियंत्रित अर्थ और काम तभी संभव था जब प्रारंभ में ही धर्म-तत्वों से मनुष्य दीक्षित हो जाय। इसके बाद जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करने के लिए भी यौवन काल में अभ्यस्त धर्म ही सहायक होता है। इस प्रकार पुरुषार्थ चतुष्टय और आश्रम चतुष्टय में अन्योन्याश्रय प्रतीत होता है या दोनों आधाराधेय भाव से जुड़े है।

वर्तमान युग में उपनयन संस्कार प्रतीकात्मक रूप धारण करता जा रहा है। विरल परिवारों में यथाकाल विधि-व्यवस्था के अनुरूप उपनयन संस्कार हो पाते हैं। एक ही दिन कुछ घण्टों में चूड़ाकरण, कर्णवेध, उपनयन, वेदारंभ और केशान्त कर्म के साथ समावर्तन संस्कार की खानापूरी करदी जाती है। बहुसंखय परिवारों में विवाह से पूर्व उपनयन संस्कार कराकर वैवाहिक संस्कार करा दिया जाता है जबकि गृह्यसूत्रों के अनुसार विभिन्न वर्णों के लिए आयु की सीमा का निर्धारण किया गया है -

ब्रह्मवर्चसकामस्य कार्यं विप्रस्य पद्द्रचमे
राज्ञो बलार्थिनः षष्ठे वैश्यस्येहार्थिनोऽष्टमे। -मनुस्मृति 2 अ. **37**

सत्राहवीं शताब्दी के निबन्धकारों ने परिस्थितियों के अनुरूप ब्राह्मण का **24** क्षत्रिय का **33** और वैश्य का **36** तक भी उपनयन स्वीकार कर लेते हैं। - बी.मि.भा. **1 (347)**

यौवन के पदार्पण करने के पूर्व किशोरावस्था में संस्कारित और दीक्षित करने का अनुष्ठान सार्वकालिक और विश्वजनीन है। सभी सम्प्रदायों में किसी न किसी रूप में दीक्षा की पद्धति चलती है और उसके लिए विशेष प्रकार के विधि विधानों के कर्मकाण्ड आयोजित किये जाते हैं। इन विधि-विधानों के माध्यम से संस्कारित व्यक्ति ही समाज में श्रेष्ठ नागरिक की स्थिति प्राप्त कर सकता है। इसी उद्देश्य से उपनयन संस्कार की परम्परा भारतीय मनीषा में स्थापित की थी।

'हिन्दू संस्कार'-वास्तव में उपनयन संस्कार आचार्य के समीप दीक्षा के लिए अभिभावक द्वारा पहुंचना ही इस संस्कार का उद्देश्य था। इसी लिए इसके कर्मकाण्ड में कौपीन; मौञ्जी, मृगचर्म और दण्ड धारण करने का मंत्रों के साथ संयोजन है। सावित्री मंत्रा धारण द्विज को अपने ब्रह्मचारी वेष में अपनी माता से पहली भिक्षा और फिर समाज के सभी वर्ग से भिक्षाटन करने का अभ्यास इस संस्कार का वैशिष्ट्य है। इस व्यवस्था से ब्रह्मचारी को व्यष्टि से समष्टि और परिवार से बृहत् समाज से जोड़ा जाता था जिससे व्यक्ति अपनी सत्ता को समष्टि में समाहित करें और अपनी विद्या बुद्धि शक्ति का प्रयोग समाज की सेवा के लिए करें।

वास्तव में यज्ञोपवीत के सूत्र धारण करने को ब्रतवंध कहते हैं जिससे ब्रह्मचारी की पहचान और उसको धारण करने वाले को अपनी दीक्षा संकल्प का सदा स्मरण रहे। सूत्र धारण कराकर उत्तरीय रखने की अनिवार्यता बताई गई है।

विधि - उपनयन संस्कार से संबंधित प्रान्तीय और विभिन्न सम्प्रदायों के स्तर पर उपनयन पद्धतियां प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं तदनुसार उनका आश्रय लेकर संस्कारों का संयोजन सम्पादन करना चाहिए

(12) वेदारम्भ -

वेदारंभ उपनयन संस्कार के बाद किया जाता है जो अब प्रतीकात्मक ही रह गया है। वास्तव में यह संस्कार मुख्य रूप से वेद की विभिन्न शाखाओं की रक्षा के लिए उसके अभ्यास की परम्परा से जुड़ा है। अपनी कुल परम्परा के अनुसार वेद, शाखा सूत्र आदि के स्वाध्याय की पद्धति थी। जिसे अनिवार्य रूप से द्विजातियों को उसका अभ्यास करना पड़ता था। कालान्तर में मात्रा पुरोहितों के कुलों में सीमित हो गई और अब उसका प्रायः लोप हो गया है। यही कारण है कि वेद की बहुत सी शाखायें उपलब्ध नहीं हैं क्योंकि श्रुति परम्परा से ही इसकी रक्षा की जाती थी। महर्षि पतद्द्रजलि ने भी महाभाष्य में इसकी चर्चा करते हुए कहा है कि अनेक शाखा-सूत्रों का लोप हो गया है।

वर्तमान पद्धतियों में चतुर्वेदों के मंत्रों का संग्रह कर दिया गया है जिसे उपनयन के बाद सावित्री सरस्वती-लक्ष्मी गणेश की अर्चना के बाद उपनीत बटु से उसका औपचारिक उच्चारण मात्रा करा दिया जाता है। अतः अब यह संस्कार उपनयन का अंगभूत भाग रह गया है।

(13) केशान्त संस्कार

केशान्त का अर्थ लम्बी अवधि तक केशधारण करने वाले युवा ब्रह्मचारी का केश वपन। विधि पूर्वक मंत्रोच्चारण के साथ यह गोदान के साथ सम्पन्न होता था। इस संस्कार के बाद ही 'युवक' को गृहस्थ जीवन के योग्य शारीरिक और व्यावहारिक योग्यता की दीक्षा दी जाती थी। आगोदानकर्मणः-ब्रह्मचर्यम्-भा.यू.सू.।

(14) समावर्तन संस्कार

समावर्त्तन का अर्थ है विद्याध्ययन प्राप्त कर ब्रह्मचारी युवक का गुरुकुल से घर की ओर प्रत्यावर्त्तन।

तत्र समावर्त्तनं नाम वेदाध्यनानन्तरं गुरुकुलात् स्वगृहागमनम् - वीर मित्रोदय

विष्णुस्मृति के अनुसार-कुब्ज, वामन, जन्मान्ध, बधिर, पंगु तथा रोगियों को यावज्जीवन ब्रह्मचर्य में रहने की व्यवस्था है-

कुब्जवामनजात्यन्धक्लीब पङ्वार्त रोगिणाम्
ब्रतचर्या भवेत्तेषां यावज्जीवमनंशतः।

समावर्त्तन संस्कार गृहस्थ जीवन में प्रवेश की अनुमति देता है। उपनयन संस्कार से प्रारंभ होने वाली शिक्षा की पूर्णता के बाद ब्रह्मचर्य का कठोर जीवन व्यतीत करने वाले संस्कारित युवक को इस संस्कार के माध्यम से गार्हस्थ्य जीवन जीने की शिक्षा दी जाती थी। ऐसे संस्कारित युवक की स्नातक संज्ञा थी। स्नातक तीन प्रकार के होते थे **(1)** विद्या स्नातक **(2)** व्रत स्नातक **(3)** विद्याव्रत स्नातक। इनमें तीसरे प्रकार के स्नातक को ही गृहस्थ जीवन में प्रवेश का अधिकार मिलता था।

क्योंकि ऐसा ही ब्रह्मचारी विद्या की पूर्णता के साथ ब्रह्मचर्य्य व्रत की भी पूर्णता प्राप्त कर लेता था। वर्तमान काल में भले **10-12** वर्ष के बालक का उपनयन संस्कार के तत्काल समावर्त्तन का अधिकारी बना दिया जाता है। आश्रमहीन रहना दोषपूर्ण होता है अतः समावर्त्तन के बाद गृहस्थ बनना अथ च दारपरिग्रह अपरिहार्य है, अन्यथा प्रायश्चित्त होता है।

अनाश्रमी न तिष्ठेच्च क्षणमेकमपि द्विजः।
आश्रमेण विना तिष्ठन् प्रायश्चित्तीयते हि सः॥ दक्षस्मृति (**10)**

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि समावर्त्तन संस्कार अति महत्वपूर्ण आचार प्रक्रिया थी जिससे संस्कारित और दीक्षित होकर युवक एक श्रेष्ठ गृहस्थ की योग्यता प्राप्त करता था। वर्तमान काल में उपनयन संस्कार के साथ ही कुछ घंटों में इसकी भी खानापूरी कर दी जाती है। इसके विधि विधान का विवरण उपनयन पद्धतियों से यथा प्राप्त सम्पन्न कराना चाहिए।

(15) विवाह संस्कार -

विवाह संस्कार हिन्दू संस्कार पद्धति का अत्यन्त महत्वपूर्ण संस्कार है । प्रायः सभी सम्प्रदायों में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। विवाह शब्द का तात्पर्य मात्र स्त्री-पुरुष के मैथुन सम्बन्ध तक ही सीमित नहीं है अपितु सन्तानोत्पादन के साथ-साथ सन्तान को सक्षम आत्मनिर्भर होने तक के दायित्व का निर्वाह और सन्तति परम्परा को योग्य लोक शिक्षण देना भी इसी संस्कार का अंग है । शास्त्रों में अविवाहित व्यक्ति को अयज्ञीय कहा गया है और उसे सभी प्रकार के अधिकारों के अयोग्य माना गया है -

अयज्ञियो वा एष योऽपत्नीक:-वै.प्रा.

मनुष्य जन्म ग्रहण करते ही तीन ऋणों से युक्त हो जाता है, ऋषि ऋण, देव ऋण, पितृऋण और तीनों ऋणों से क्रमशः ब्रह्मचर्य, यज्ञ, सन्तानोत्पादन करके मुक्त हो पाता है-जायमानो ह वै ब्राहणस्त्रिर्ऋणवान् जायते-ब्रह्मचर्येण ऋषिभ्यो, यज्ञेन देवेभ्यः प्रजया पितृभ्यः-तै. सं. **6-3**

गृहस्थाश्रम सभी आश्रमों का आश्रम है। जैसे वायु प्राणिमात्रा के जीवन का आश्रय है, उसी प्रकार गार्हस्थ्य सभी आश्रमों का आश्रम है -

यथा वायुं समाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्वजन्तव:
तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमाः।
यस्मात् त्रायोऽप्याश्रमिणो ज्ञानेनान्नेन चान्वहम्
गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्मा ज्येष्ठाश्रमो गृही। -मनुस्मृति (3)

विवाह अनुलोम रीति से ही करना चाहिए-प्रातिलोम्य विवाह सुखद नहीं होता अपितु परिणाम में

कष्टकारी होता है -

त्रायाण्यमानुलोम्यं स्यात् प्रातिलोम्यं न विद्यते
प्रातिलौम्येन यो याति न तस्मात् पापकृत्तरः। द. स्म्. (9)
अपत्नीको नरो भूप कर्मयोग्यो न जायते।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यः शूद्रोऽपि वा नरः।

विवाह के प्रकार

प्राचीन काल से ही यौन सम्बन्धों में विविधता के वृत्त प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं अतः स्मृतियों ने इस प्रकार के विवाहों को आठ भागों में विभक्त किया है -

(1) ब्राह्म (**2)** दैव (**3)** आर्ष (**4)** प्राजापत्य (**5)** आसुर (**6)** गान्धर्व (**7)** राक्षस (**8)** पैचाश।

इनमें प्रथम चार प्रशस्त और चार अप्रशस्त की श्रेणी में रखे गये हैं। प्रथम चार में भी ब्राह्म विवाह सर्वोत्तम और समाज में प्रशंसनीय था शेष तरतम भाव से ग्राह्य थे। किन्तु दो सर्वथा अग्राह्य थे।

आच्छाद्य चार्चयित्वा च श्रुतिशीलवते स्वयम्
आहूय दानं कन्याया ब्राह्मो धर्मः प्रकीर्तितः। मनु. (**3)**

सक्षेप में विवाह संस्था के उद्देश्य और उसके प्रकार का विवरण दिया गया है। विवाह के विविध-विधान के लिए देश-काल-प्रान्तभेद से पद्धतियां उपलब्ध हैं तदनुसार वैवाहिक संस्कार सम्पन्न किया जाना चाहिए।

(16) अन्त्येष्टि संस्कार -

हिन्दू जीवन के संस्कारों में अन्त्येष्टि ऐहिक जीवन का अन्तिम अध्याय है। आत्मा की अमरता एवं लोक परलोक का विश्वासी हिन्दू जीवन इस लोक की अपेक्षा पारलौकिक कल्याण की सतत कामना करता है। मरणोत्तर संस्कार से ही पारलौकिक विजय प्राप्त होती है -

जात संस्कारेणेमं लोकमभिजयति
मृतसंस्कारेणामुं लोकम् - वी.मि. **3-1**

विधि-विधान आतुरकालिक दान, वैतरणीदान, मृत्युकाल में भू शयनव्यवस्था मृत्युकालिक स्नान, मरणोत्तर स्नान, पिण्डदान, (मलिन षोडशी) के **6** पिण्ड दशगात्रायावत् तिलाञ्जलि, घटस्थापन दीपदान, दशाह के दिन मलिन षोडशी के शेष पिण्डदान एकादशाह के षोडश श्राद्ध, विष्णुपूजन शैय्यादान आदि। सपिण्डीकरण, शय्यादान एवं लोक व्यवस्था के अनुसार उत्तर कर्म आयोजित कराने चाहिए। इन सभी कर्मों के लिए प्रान्त देशकाल के अनुसार पद्धतियां उपलब्ध हैं तदनुसार उन कर्मों का आयोजन किया जाना चाहिए।

2.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जाना कि संस्कार शब्द सम् पूर्वक कृ-धातु से घञ् प्रत्यय करके निष्पन्न होता है। संस्कार शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है। संस्कृत वाङ्मय में इसका प्रयोग शिक्षा, संस्कृति, प्रशिक्षण, सौजन्य पूर्णता, व्याकरण संबंधी शुद्धि, संस्करण, परिष्करण, शोभा आभूषण, प्रभाव, स्वरूप, स्वभाव, क्रिया, फलशक्ति, शुद्धि क्रिया, धार्मिक विधि विधान, अभिषेक, विचार भावना, धारणा, कार्य का परिणाम, क्रिया की विशेषता आदि व्यापक अर्थों में किया जाता है। अतः संस्कार शब्द अपने विशिष्ट अर्थ समूह को व्यक्त करता और उक्त सम्पूर्ण अर्थ इस शब्द में समाहित हो गये हैं। अतः संस्कार, शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक शुद्धि के लिए किये जाने वाले अनुष्ठानों का श्रेष्ठ आचार है। इस अनुष्ठान प्रक्रिया से मनुष्य की बाह्याभ्यन्तर शुद्धि होती है जिससे वह समाज का श्रेष्ठ आचारवान नागरिक बन सके । यह आंतरिक रुप की रक्षा करता है। हमारा इस जीवन में प्रवेश करने का मुख्य प्रयोजन यह है कि पूर्व जन्म में जिस अवस्था तक हम आत्मिक उन्नति कर चुके हैं, इस जन्म में उससे अधिक उन्नति करें। आंतरिक रुप हमारी जीवन चर्या है -। यह कुछ नियमों पर आधारित हो तभी मनुष्य आत्मिक उन्नति कर सकता है। जीवात्मा जब एक शरीर को त्याग कर दूसरे शरीर में जन्म लेना है, तो उसके पूर्व जन्म के प्रभाव उसके साथ जाते हैं। इन प्रभावों का वाहक सूक्ष्म शरीर होता है, जो जीवात्मा के साथ एक स्थूल शरीर से दूसरे स्थूल शरीर में जाता है। इन प्रभावों में कुछ बुरे होते हैं और कुछ भले। बच्चा भले और बुरे प्रभावों को लेकर नए जीवन में प्रवेश करता ह। संस्कारों का उद्देश्य है कि पूर्व जन्म के बुरे प्रभावों का अन्त कर उनमें उत्तरोत्तर सुधार हो। इसी बात को ध्यान में रखते हुये आचार्यों ने षोडश संस्कार की चर्चा की है षोडश संस्कार अर्थात् गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि क्रिया संस्कार तक के प्रमुख सोलह संस्कार।

2.6 पारिभाषिक शब्दावली

संस्कार - सनातन परम्परा में मानवमात्र का उसके जीवन को संयमित व संतुलित रखने हेतु आद्योपान्त किया जाने वाला कार्य।

षोडश संस्कार - 16 संस्कार

गर्भाधान – प्रथम संस्कार। इस संस्कार में जातक गर्भ में आता है।

सीमन्तोन्नयन – यह गर्भस्थ शिशु के रक्षार्थ किया जाने वाला संस्कार है।

पुंसवनं - यह भी गर्भस्थ शिशु के रक्षार्थ किया जाने वाला संस्कार है।

नामकरण – जन्म से एकादश वा द्वादश दिन में जातक का नाम रखा जाने वाला संस्कार

चूड़ाकरण – मुण्डन

दोलारोहण – प्रथम बार झुले पर झुलाये जाना वाला संस्कार

विद्यारम्भ – विद्या आरंभ किया जाने वाला संस्कार

विवाह – इसमें जातक गृहस्थ आश्रम में प्रवेशार्थ एक बन्धन में बंधता है।

2.7 बोधप्रश्नों के उत्तर

1. ख

2. क

3. ख

4. ग

5. ग

2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वीरमित्रोदय
2. मुहूर्त्त पारिजात
3. मुहूर्त्त चिन्तामणि
4. नित्यकर्मपूजाप्रकाश
5. संस्कार विधि

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. षोडश संस्कार से आप क्या समझते है। विस्तार से वर्णन कीजिये।
2. गर्भाधान, सीमन्तोन्नयन, पुंसवनं एवं विवाह संस्कार का उल्लेख कीजिये।

इकाई – 3 गणेशऽथर्वशीर्ष एवं श्रीसूक्त पाठ

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 गणेशऽथर्वशीर्ष पाठ
3.4 श्रीसूक्त पाठ
3.5 सारांश
3.6 पारिभाषिक शब्दावली
3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
3.9 सहायक पाठ्यसामग्री
3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई **CVK-02** के प्रथम खण्ड की तृतीय इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – गणेशऽथर्वशीर्ष एवं श्रीसूक्त पाठ। इसके पूर्व की इकाईयों में आपने संस्कारों के बारे में अध्ययन कर लिया है। अब आप सामान्य पूजन में भी आरम्भ के क्रम में होने वाले गणेश एवं लक्ष्मी जी से सम्बन्धित स्तोत्र पाठ का अध्ययन करने जा रहे हैं।

गणेशऽथर्वशीर्ष का पाठ अथर्व वेद से लिया गया है। श्री गणेश जी के सहस्रार्चन में तथा विविध प्रकार के अनुष्ठान व प्रयोग में इसका उपयोग होता है।

आइए इस इकाई में हम गणेशऽथर्वशीर्ष व श्रीसूक्त के पाठ का अध्ययन करते हैं।

3.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

1. समझ लेंगे कि गणेशऽथर्वशीर्ष पाठ किसे कहते हैं।
2. गणेशऽथर्वशीर्ष पाठ का प्रयोग कहाँ-कहाँ होता हैं।
3. गणेशऽथर्वशीर्ष का महत्व क्या है।
4. श्रीसूक्त पाठ को समझ लेंगे।
5. श्रीसूक्त पाठ विधि के साथ-साथ उसका महत्व भी जान लेंगे।

3.3 गणेशऽथर्वशीर्ष पाठ

गणेशऽथर्वशीर्ष का पाठ मूलत: भगवान श्रीगणेश की आराधना के लिए है। यह जैसा की नाम से ही स्पष्ट है यह अथर्ववेद से लिया गया है। गणेशसहस्रार्चन इन्हीं मन्त्रों द्वारा करने का विधान बतलाया गया है। इसके पाठ परम्परा में आचार्यों के द्वारा सर्वप्रथम शान्ति पाठ का विधान बतलाया गया है। अत: शान्तिपाठ स्वस्तिवाचन के निम्न मन्त्रों द्वारा इस प्रकार करें -

हरिः ऊँ भद्रं कर्ण्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यत्राः स्थिरैरङगै स्तुष्टुवा œ सस्तनू भिर्व्व्यशेमहि देवहितं जदायुः.....0। इस मन्त्र का पूरा उच्चारण करना चाहिये।

”लम्बोदरं परम सुन्दरमेकदन्तं पीताम्बरं त्रिनयनं परमं पवित्रम्।
उद्यदिद्वाकर निभोज्जवल कान्ति कान्तं विध्नेश्वरं सकल विध्नहरं नमामि।।
सिद्धिबुद्धि साहिताय श्रीमन्महागणाधिपतयेनमः।

इसके पश्चात अथर्वशीर्ष का पाठ करे-

हरिः ऊँ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि।

त्वमेव केवलं कर्त्तासि। त्वमेव केवलं धर्त्तासि।

त्वमेव केवलं हर्त्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि।

त्वं साक्षादात्मसि नित्यम् ॥१।

अर्थात् हे गणेश! आपको प्रणाम। आप सजीव प्रत्यक्ष रूप हो, आप ही कर्म और कर्त्ता भी आप ही हो, आप ही धारण करने वाले और आप ही हरण करने वाले संहारी हो। आप में ही समस्त विश्व व्याप्त हैं। आप एक पवित्र साक्षी हैं।

ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि।। २।।

अर्थात् मैं अब ज्ञान कहता हूँ और सत्य कहता हूँ।

अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्।

अव धातारम्। अव अनूचानम्। अव शिष्यम्।

अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्।

अव चोर्ध्वस्तात्। अवाधस्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्।।३।।

अर्थात् आप मेरे हो, मेरी रक्षा करो, मेरी वाणी की रक्षा कीजिये। मुझे सुनने वालो की रक्षा कीजिये। मुझे देने वाले की रक्षा करो, मुझे धारण करने वाले की रक्षा करो। वेदों एवं उपनिषदों की तथा उसके अध्येताओं की रक्षा करो। समस्त दिगों (दस दिशाओं) से रक्षा करों।

त्वं वाङमयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्मय। त्वं-

सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोसि।।४।।

अर्थ है कि आप ही वाम हो, चिन्मय हो। आप ही आनन्दमय ब्रह्म हो। आप ही सच्चिदानन्द, अद्वितीय रूप हो, प्रत्यक्षकर्त्ता हो, परब्रह्म हो तथा ज्ञान-विज्ञान के दाता हो।

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तारेस्तिष्ठति। सर्वं

जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं

भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि।।५।।

अर्थात् इस जगत् के जन्मदाता आप ही हो, आपने ही सम्पूर्ण विश्व को रक्षा प्रदान किया है। सम्पूर्ण विश्व आपमें ही निहित है तथा समस्त जगत् में आप ही दिखलाई देते हो। आप ही भूमि, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश हो। आप समस्त दिशाओं में व्याप्त हो।

त्वं गुणत्रयातीतः त्वं कालत्रायातीतः। त्वं देहत्रयातीतः।

त्वं मूलाधारोस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः।

त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मास्त्वं त्वं विष्णुस्त्वं-

रूद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वंचन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूभुर्वः स्वरोम्।।६।।

अर्थात् आप सत्व, रज, और तम तीनों गुणों से भिन्न हो, आप त्रिकाल से भिन्न हो, आप त्रिशरीर से भिन्न हो। आप जीवन के मूलाधार में विराजमान हो। आप में ही तीनों शक्तियाँ विराजमान है। योगी एवं महागुरु आपका ही ध्यान करते है। आप ही ब्रह्म, विष्णु, रूद्र, इन्द्र, अग्नि, वायु, सूर्य एवं चन्द्रमा है। आप में ही समस्त गुणों का वास है।

गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः अर्धेन्दुलसितम।

तारेण रूद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्।

अकारो मध्यमरूपम् अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरूत्तर रूपम्। नादः सन्धनम्।

संहिता सन्धिः सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्री छन्दः।

गणपतिर्देवता। ऊँ गं गणपतये नमः ।।७।।

अर्थात् गण का उच्चारण करके बाद के आदि वर्ण अकार का उच्चारण करें। ऊँकार का उच्चारण करें। यह पूरे मन्त्र ऊँ गं गणपतये नमः का भक्ति से उच्चारण करें।

एकादन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।। ८।।

अर्थात् आप एकदन्त एवं वक्रतुण्ड का हम ध्यान करते हैं। हमें यह सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्।

रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्।।

रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।

रक्तगन्धानुलिप्ताङग रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।।

भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारण मच्युतम्।

आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरूषात्परम्।।

एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः।।९।।

अर्थात् आप एकदन्त और चार भुजाओं वाले हैं, जिसमें आप पाश, अंकुश, दन्त और वरमुद्रा धारण करते हैं। आपके ध्वज पर मूषक है। आप लाल व्रस्त्रधारी है। चन्दन का लेप लगा है। आप रक्त पुष्प धारण करते है। आप सभी के मनोकामना पूरी करने वाले हैं, और समस्त जगत में व्याप्त है। आप सृष्टि के रचयिता है। जो आपका ध्यान सच्चे हृदय से करता है, वह महायोगी बन जाता है।

नमो ब्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये
नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैक दन्ताय विघ्ननाशिने
शिवसुताय श्री वरदमूर्तयेनमः।।१०।।

आप व्रातपति गणपति को प्रणाम है। प्रथम पति, एकदन्त, विघ्नविनाशक, लम्बोदर, शिवतनय तथा श्री वरदमूरत को प्रणाम है।

फलश्रुतिः

एतदथर्वशीर्षं योऽधीते। स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते।
स सर्वतः सुखमेधते। स पंचमहापापात्प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति।
प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुन्जानो अपापो भवति।
सर्वत्राधीयानोडपावेध्नो भवति।धर्मार्थ काम मोक्षं च विन्दति। इदमधर्वशीर्षम्-अशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्धास्यति स पापीयाम् भवति। सहस्त्रावर्तनाद् यं यं-का ममधीते तं तमनेन साधयते।।११।।

भाषा: जो भक्ति से इस अथर्वशीष का पाठ करता है, वह वेद के ज्ञान को प्राप्त करता है। वह किसी प्रकार के विध्नों से बाधित नहीं होता, वह सभी प्रकार से सुखी होता है वह पाँच महापापों से मुक्त हो जाता है। सांय काल इसका पाठ करने वाला दिन में किये हुए पापों का नाश करता है, प्रातः काल पाठ करने से भक्त निष्पाप हो जाता है। सदा इसका पाठ करने वाला सभी विध्नों से मुक्त हो जाता है। इसके पाठ से धर्म-अर्ध-काम-मोक्ष-इन चार पदार्थों की प्राप्ति होती है। जो शिष्य (विनम्र) न हो उसको यह अथ्रर्वशीर्ष का ज्ञान नही देना चाहिये। मोह में पड़कर जो अशिष्य को इसे देता है- वह महापापी होता है।। एक हजार बार इसका पाठ करने से उपासक जो जो कामना करता है, इसके द्वारा सिद्ध कर लेता है।।११।।

मूल-अनेन गणपतिमभिषिन्चति स वाग्मी भवति।
चतुर्थ्यामनश्नन्जपति स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वण वाक्यम्।
ब्रह्माधावरणम विद्यात्। नविभेति कदाचनेति।।१२।।

हिन्दी:- जो इस मन्त्र के द्वारा भी गणेश जी का अभिषेक करता है वह सुवक्ता हो जाता है। जो चतुर्थी के दिन उपवास रहकर इस का जप करता है वह विद्यावान् होता है। यह अथर्वण वाक्य है जो ब्रह्मादि आचरणों को जानता है, वह कभी भयभीत नहीं होता हैं।

मूलः-यो दूर्वाकुदरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान्

भवति। यो मोदकसहस्रेण यजीत स वान्छितफलवाप्नोति। यः साज्यसामेभिर्द्रर्यजीत स सर्वं लभते स सर्वं लभते।।१३।।

भाषाः- जो भक्त दुर्वा के द्वारा गणेश जी का यजने करता है, वह वैश्रवर्ण (कुबेर) के समान हो जाता है। जो लाजा (खील) से यजन करता है, वह यशस्वी होता है, वह बुद्धिमान होता है जो हजार मोदकों से गणेश जी का यजन करता है वह मनोवांछित फल को प्राप्त करता है। जो इस स्त्रोत से घृतयुक्त समिधा से हवन करता है, वह सब कुछ प्राप्त करता है।

मूलः- अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति।
सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासंनिधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति।
महाविध्यात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रभुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते।
स सर्वविद् भवति। स सर्वविद व्यवति य एवं वेद।।१४।। इत्युपनिषत।।

भाषा:- जो आठ ब्राह्मणों के द्वारा इस स्तोत्र पाठ को सम्यक्तया ग्रहण करता है अथवा इसका अनुष्ठान कराता है। वह सूर्य के समान तेजस्वी हो जाता है। सूर्य ग्रहण के समय महानदी में खड़े होकर अथवा मूर्ति के सामने इसका जप करता है वह सिद्धी को प्राप्त करता है। महाविघ्नों से मुक्त हो जाता है। महापापों से मुक्त हो जाता है। महादोषों से मुक्त हो जाता है। वह सर्वज्ञ हो जाता है। जो इस प्रकार जानता है। इस प्रकार यह ब्रह्मविद्या है।।

अभ्यास प्रश्न-

1. गणेशऽथर्वशीर्ष कौन से वेद का अंग है**?**
2. गणेश जी का बीज मन्त्र क्या है**?**
3. गणेशऽथर्वशीर्ष में कुल मन्त्रों की संख्या कितनी है?
4. गणेशसहस्रार्चन के लिए क्या किया जाता है।

3.4 श्रीसूक्त पाठ

विधि-

लक्ष्मी की उपासना के लिये श्री सूक्त का पाठ किया जाता है। यह तथ्य सर्वसाधारण के लिये जान लेना अत्यधिक आवश्यक है अतः ध्यान दे कि-

सदा स्मरण रखें कि -जो भी पाठ हो उस पाठ को शुद्ध तथा शुद्धता से करें।

एक निश्चत संख्या में पाठ करें। पूर्व दिवस में पाठ किये गये पाठों से आगामी दिनों में कम पाठ न करे यदि चाहे तो अधिक पाठ कर सकते हैं परन्तु स्मरण यही रखना है कि भूतकाल से वर्तमान काल के पाठ कम न हो।

पाठ का उच्चारण होंठों से बाहर आना चाहिये यदि अभ्यास न होने के कारण यह विधि प्रयुक्त न हो सके तो धीमे स्वर में पाठ करें।

पाठ काल में धूप-दीप जलता रहे।

पुस्तक देखकर ही पाठ करे।

पाठ काल में श्री यन्त्र की प्रतिमा, फोटों समक्ष रखना चाहिये

श्री सूक्त का पाठ कुश या कम्बल के आसन पर बैठकर करें।

जिस स्थान पर जिस स्थान पर पाठ का शुभारम्भ हो वही पर आगामी दिनों में भी पाठ करना चाहिये

पाठ काल में मन को पाठ से मिलायें।

मिथ्या सम्भाषण न करें।

स्त्री सेवन न करे।

आलस्य जम्भाई यथाशक्ति त्याग दें।

श्री सूक्त का पाठ पूर्व दिशा के तरफ मुख करके ही करें।

देवालय या विष्णु मन्दिर में बैठकर पूजन सामग्री का सम्प्रोक्षण करके आचमन प्रणायाम करे- सर्वप्रथम गौरी गणेश का पूजन करे।

एक लकड़ी की चौकी के ऊपर गणेश, षोडशमातृका, सप्तमातृका स्थापित करे। दूसरी चौकी पर नवग्रह, पञ्चलोकपाल आदि स्थापति करे। ईशान कोण में घी का दीपक रखे और अपने दायें हाथ में पूजा सामग्री रख लेवे। शुद्ध नवीन वस्त्र पहनकर पूर्वाभिमुख बैठे। कुंकुम (रोली) का तिलक करके अपने दायें हाथ की अनामिका में सुवर्ण की अंगुठी पहनकर आचमन प्राणायाम कर पूजन आरम्भ करे।

पवित्रीकरण-(अधोलिखित मन्त्र को पढते हुए कलश के जल से अपने उपर तथा पूजनादि की सामग्रियों पर जल छिडके):-

ऊँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

ऊँ पुण्डरीकाक्षः पुनातु , ऊँ पुण्डरीकाक्षः पुनातु , ऊँ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ,

आचमन (तीन बार आचमन करे):-

ऊँ केशवाय नमः। ऊँ नारायणाय नमः। ऊँ माधवाय नमः।

प्राणायामः-

गोविन्दाय नमः बोलकर हाथ धोवे और यदि ज्यादा ही कर सके तो तीन बार पूरक (दायें हाथ के अंगूठे से नाक का दायाँ छेद बन्द करके बायें छेद से श्वास अन्दर लेवे), कुम्भक (दायें हाथ की छोटी अंगुली से दूसरी अंगुली द्वारा बाया छेद भी बन्द करके श्वास को अन्दर रोके), रेचक (दायें अंगूठे को धीरे-धीरे हटाकर श्वास बाहर निकाले) करे।

पवित्रीधारणम् -

ॐ पवित्रेस्थो व्वैष्णव्यौसवितुर्व्वः प्रसव उत्पन्नुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्य रश्मिभिः।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

सपत्नीक यजमान के ललाट में स्वस्तितिलक लगाते हुए मन्त्र को बोले-

ऊँ स्वस्तिन इन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः।

स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।

ऊँ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्वि नौव्व्यात्तम्।

इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकं म ऽइषाण।।

ग्रन्थिबन्धन- (लोकाचार से यजमान का सपत्नीक ग्रन्थिबन्धन करे):-

ऊँ तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्ब्भ्रातृभिरुतवा हिरण्यैः।

नाकङ्गृब्भ्णानाः सुकृतस्यलोके तृतीयपृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।।

आसनपूजन (आसन की पूजा करे):-

ऊँ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम् ।

ऊँ कूर्मासनाय नमः।

ऊँ अनन्तासनाय नमः।

ऊँ विमलासनाय नमः। (सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि)

भूतापसारण (बायें हाथ में सरसों लेकर उसे दाहिने हाथ से ढककर निम्न मन्त्र पढ़े) -

ऊँ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।

सर्वेषामवरोधेन पूजाकर्म समारभे।।

निम्न मन्त्रों को पढ़ते हुए सरसों का सभी दिशाओं में विकिरण करे:-

प्राच्यैदिशे स्वाहाव्र्वाच्यै दिशेस्वाहा दक्षिणायै दिशेस्वाहाव्र्वाच्यै दिशेस्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहाव्र्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहा व्र्वाच्यै दिशे स्वाहोदर्ध्वायै दिशेस्वाहा व्र्वाच्यै दिशे स्वाहा व्वाच्यै दिशे स्वाहाव्र्वाच्यै दिशे स्वाहा।

पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेय्यां गरुड़ध्वजः। दक्षिणे रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैर्ऋते।।

पश्चिमे वारुणो रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः। उत्तरे श्रीधरो रक्षेद् ऐशान्ये तु गदाधरः।।

ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेद्अधस्ताद्त्रिविक्रमः। एवं दश दिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः।।

कर्मपात्र पूजन् (ताँबे के पात्र में जलभरकर कलश को अक्षतपुञ्ज पर स्थापित करते हुए पूजन करे):-

ऊँ तत्वामि ब्ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते जमानो हविर्ब्भिः।

अहेडमानो व्वरुणे हबोद्ध्युरुश समानऽ आयुः प्रमोषीः।। ऊँ वरुणाय नमः।

पूर्वे ऋग्वेदाय नमः। दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः।

पश्चिमे सामवेदाय नमः। उत्तरे अथर्ववेदाय नमः।

मध्ये साङ्गवरुणाय नमः। सर्वोपचारार्थे चन्दन अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अंकुशमुद्रया सूर्यमण्डलात्सर्वाणि तीर्थानि आवाहयेत् (दायें हाथ की मध्यमा अङ्गुली से जलपात्र में सभी तीर्थों का आवाहन करे):-

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति।

नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु।।

कलशस्य मुखे विष्णु कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।

अश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बु समाश्रिताः।

गायत्री चात्र सावित्री शान्तिः पुष्टिकरा तथा।

आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।

उदकेन पूजासामग्रीं स्वात्मानं च सम्प्रोक्षयेत् (पात्र के जल से पूजन सामग्री एवं स्वयं का प्रोक्षण करे):-

ऊँ आपो हिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन। महेरणायचक्षसे।।

योवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयते हनः। उशतीरिवमातरः।।

तस्म्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्न्वथ आपोजनयथाचनः।।

दीपपूजनम् (देवताओं के दाहिने तरफ घी एवं विशेष कर्मों में बायें हाथ की तरफ तेल का दीपक जलाकर पूजन करना चाहिए):-

अग्निर्देवता व्वातो देवता सूर्य्या देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्श्वे देवा देवता बृहस्प्पतिर्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता।

ऊँ दीपनाथाय नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि (गन्ध अक्षत पुष्प दीपक के सामने छोडे।)

प्रार्थनाः-(हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर अधोलिखित श्लोक को पढते हुए दीपक के सामने छोड़े

ऊँ भो दीप देवस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत।

यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरो भव।।

सर्वप्रथम श्री सूक्त की अधिकार प्राप्ति के लिये प्रायश्चित्तरूप में गोदान का संकल्प करना चाहिये

प्रायश्चित संकल्प हाथ में जल अक्षत-पुष्प कुश तथा द्रव्य लेकर प्रायश्चित संकल्प करे-

हरिः ऊँ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ऊँ तत्सदद्यैतस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे तदादौ श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे तत्रापि परमपवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्त अन्तर्गते अमुकदेशे (अपने देश का नाम) अमुकक्षेत्रे (अपने राज्य का नाम) अमुकनगरे (अपने नगर का नाम) श्री गङ्गायमुनयोः अमुकभागे (अपने स्थान की दिशा) नर्मदाया अमुक भागे (अपने स्थान की दिशा) चान्द्रसंज्ञकानां प्रभवादिषष्टिसम्वत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि सम्वत्सरे (सम्वत्सर का नाम)

श्रीमन्नृपति विक्रमार्कसमयादमुकसंख्यापरिमिते विक्रमाब्दे (वर्तमान विक्रम सम्वत्) अमुकायने (वर्तमान सम्वत्) अमुकर्ता (वर्तमान ऋतु) अमुकमासे (वर्तमान मास) अमुकपक्षे (वर्तमान पक्ष) अमुकतिथौ (वर्तमान तिथि) अमुकवासरे अमुकगोत्रः (यजमान का गौत्र) अमुकशर्मा अहं क्रियमाण श्री सूक्त पाठ कर्मणि अधिकार प्राप्त्यर्थं कायिक वाचिकमानसिक सांसर्गिकचतुर्विधपापशमनार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं गोनिष्क्रयद्रव्यं ’’’’’’’’’गोत्राय’’’’’’’’शर्मणे आचार्याय भवते सम्प्रददे (ऐसा कहकर हाथ का संकल्प जल तथा द्रव्य ब्राह्मण के हाथ में देदे।

मंगल पाठ -हस्ते अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा (हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर गणेश जी की प्रार्थना करे):-

ऊँ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु व्विश्वतो दब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः। देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्प्रायुवोरक्षितारो दिवेदिवे॥१॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवाना रातिरभिनोनिवर्त्तताम्। देवाना सक्ख्यमुपसेदिमा व्वयं देवानऽआयुः प्प्रतिरन्तुजीवसे॥२॥ तान्पूर्वया निविदाहूमहे व्वयं भगम्मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम्। अर्यमणं व्वरुण सोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्करत्॥३॥ तन्नोव्वातो मयो भुव्वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्॥४॥ तामीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पति-न्धियञ्जिन्व्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥५॥ स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाव्विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो ऽ अरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु॥६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो व्विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्व्वामनवः सूरचक्षसो व्विश्वेनोदेवाऽअवसा गमन्निह॥७॥ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा œ सस्तनूभिर्व्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः॥८॥ शतमिन्नुशरदो ऽ अन्ति देवा त्रा नश्चक्रा जरसंतनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मद्ध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥९॥ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवा ऽ अदितिः पञ्चजना ऽ अदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम्॥१०॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष œ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्पतयः शान्ति व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व œ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि॥११॥ यतो यतः समीहसे ततो नो ऽ अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः॥१२॥ सुशान्तिर्भवतु॥ (अक्षत-पुष्प को सिर से लगाकर गणपति मण्ड़ल पर गणेशजी को समर्पित करे)

गणपत्यादि देवानां स्मरणम्- (हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर गणेश जी की प्रार्थना करे)

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजगर्णकः। लम्बोदरश्च विकटोविघ्ननाशो विनायकः। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो

भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि। विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चौव विघ्नस्तस्य न जायते। शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये। अभीप्सितार्थ सिध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः। सर्वमङ्ग्ल माङ्ग्ल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते। सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममङ्ग्गलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः। तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेंऽघ्रियुगं स्मरामि। लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः। यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्री र्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम। सर्वेष्वारब्धकार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः। विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे काशीं गुहां गङ्गा भवानी मणिकर्णिकाम्। विनायकं गुरुभानुं ब्रह्म्विष्णुमहेश्वरान्। सरस्वतीं प्रणौम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये।ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ सर्वपितृदेवताभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ गुरवे नमः। ॐ परमगुरवे नमः। ॐ परात्परगुरवे नमः। ॐ परमेष्ठिगुरवे नमः।(अक्षत-पुष्प को सिर से लगाकर गणपति मण्ड़ल पर गणेशजी को समर्पित करे)

संकल्प-हाथ में जल अक्षत-पुष्प कुश तथा द्रव्य लेकर संकल्प करे-

हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ तत्सदद्यैतस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे तदादौ श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे तत्रापि परमपवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्त अन्तर्गते अमुकदेशे (अपने देश का नाम) अमुकक्षेत्रे (अपने राज्य का नाम) अमुकनगरे (अपने नगर का नाम) श्री गङ्गायमुनयोः अमुकभागे (अपने स्थान की दिशा) नर्मदाया अमुक भागे (अपने स्थान की दिशा) चान्द्रसंज्ञकानां प्रभवादिषष्टिसम्वत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि सम्वत्सरे (सम्वत्सर का नाम) श्रीमन्नृपति विक्रमार्कसमयादमुकसंख्यापरिमिते विक्रमाब्दे (वर्तमान विक्रम सम्वत्) अमुकायने (वर्तमान सम्वत्) अमुकर्ता (वर्तमान ऋतु) अमुकमासे (वर्तमान मास) अमुकपक्षे (वर्तमान पक्ष) अमुकतिथौ (वर्तमान तिथि) अमुकवासरे अमुकगोत्रः (यजमान का गौत्र) अमुकशर्मा अहं (ब्राह्मण के लिए शर्मा, क्षत्रिय के लिए वैश्य, वैश्य के लिए गुप्ता, शूद्र के लिए दासान्त) सपुत्रस्त्रीबान्धवो अहं

मम जन्मलग्नाच्चन्द्रलग्नाद् वर्ष मास दिन गोचराष्टक वर्गदशान्तर्दशादिषु चतुर्थाष्टं द्वादशस्थान् स्थित क्रूरग्रहास्तेषां अनिष्टफल शान्ति पूर्वकं द्वितीयसप्तम् एकादशस्थानस्थित सकल शुभफल प्राप्त्यर्थं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य नित्यकल्याणप्राप्त्यर्थम् अलक्ष्मीविनाशपूर्वक मनो अभिलषित विपुल लक्ष्मीप्राप्त्यर्थ सर्वदा मम गृहे लक्ष्मी निवासार्थं च श्री महालक्ष्मी देव्याः प्रप्त्यर्थं श्री सूक्तस्य पाठमहं करिष्ये (वा ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये) । ऐसा कहकर हाथ का संकल्प जल तथा द्रव्य गणेश जी के सामने छोड़ दे।

पुनः हाथ में जल अक्षत-पुष्प कुश तथा द्रव्य लेकर बोले -

तदंगत्वेन कार्यस्य सिद्ध्यर्थं आदौ गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये। ऐसा कहकर हाथ का संकल्प जल तथा द्रव्य गणेश जी के सामने छोड़ दे।

पूजा में जो वस्तु विद्यमान न हो उसके लिये 'मनसा परिकल्प्य समर्पयामि' कहे। जैसे, आभूषणके लिये 'आभूषणं मनसा परिकल्प्य समर्पयामि'।)

सर्वप्रथम श्रीगणपति का पूजन आप कर ले।

प्राणप्रतिष्ठा- बायें हाथ में अक्षत लेकर निम्नलिखित मन्त्रों को पढ़ते हुए दाहिने हाथ से उन अक्षतों को लक्ष्मी जी के प्रतिमा पर छोड़ते जाय।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पर्तिज्ञमिमन्तनोत्त्वरिष्टं ज्ञ œ समिमन्दधातु।

विश्वेदवा स ऽ इह मादयन्तामोम्प्रतिष्ठ।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः। सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्

प्रार्थना:-(हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर अधोलिखित श्लोक को पढ़ते हुए लक्ष्मी जी के सामने छोड़े

या सा पद्मासनस्थ विपुल कटि तटि पद्म पत्रायताक्षी

गम्भीरा वर्तनाभिः स्तनभरनमितांशुभ्र वस्त्रोत्तरीया।

लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगणा खचितैः स्नापिता हेमकुम्भै

र्नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता।।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।१।।

आसनम् -(हाथ में पुष्प लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी के उपर छोड़े

ऊँ पुरुष ऽ एवेद œ सर्व्वंद्भूतँच्च भाव्व्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

पाद्यम् --(हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी के उपर छोड़े

ऊँ एतावानस्य महिमातोज्ज्याँश्चपूरुषः।

पादोस्य व्विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, पादप्रक्षालनार्थं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम् --(हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी के उपर छोडे

ऊँ धामन्तेव्विश्वम्भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्रेहृद्यन्त रायुषि।

अपामनीकेसमिथेय ऽ आभृतस्तमश्याम मधुमन्तन्त ऽ ऊर्मिम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम् --(हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी के उपर छोडे

सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धिनिर्मलं जलम्।

आचम्यार्थं मया दत्तं गृहाण गणनायक।।

ऊँ इमम्मेव्वरुण Ÿशुधीहवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

जलस्नानम् -(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी के उपर जल छोडे

ऊँ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्य ऽ ऋतसदन्यसि

वरुणस्य ऽ ऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऽ ऋतसदनमासीद।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, स्नानार्थे जलं समर्पयामि।।

पञ्चामृत स्नानम् -(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी के उपर पंचामृत से स्नान करावे

पयो दधिघृतं चैव मधुं च शर्करायुतम्।

सरस्वती तु पञ्चधासो देशेभवत्सरित्।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नानम् -(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी के उपर शुद्ध जल से स्नान करावे)

ऊँ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणिवालस्त ऽ आश्विनः श्येतः

श्येताक्षो रुणस्तेरुद्रायपशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रानभोःरूपाः पार्ज्जन्याः।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्रोपवस्त्रम्-(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी के उपर रक्त सूत्र चढावे)

ऊँ सुजातोज्ज्योतिषा सहशर्म्म व्वरुथमासदत्स्वः।

व्वासो ऽ अग्ने विश्वरूप œ सँव्ययस्वव्विभावसो।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, वस्त्रोपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रं समर्पयामि।

चन्दनम् --(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए गणेश जी और गौरी लक्ष्मी जी के उपर चन्दन चढावे)

ऊँ अ œ शुना ते अ œ शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गन्धस्ते सोममवतु मदायरसोऽअच्युतः।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, चन्दनकुंकुमञ्च समर्पयामि।

अक्षता: --(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी के उपर अक्षत चढावे)

ऊँ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽ अधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठयामती योजान्विन्द्रते हरी।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, अलङ्करणार्थम् अक्षतान् समपर्यामि।

पुष्पाणि (पुष्पमालां) --(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी के उपर पुष्पमाला अथवा पुष्प चढावे)

ऊँ ओषधिः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।

अश्वाऽ इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

दुर्वाङ्कुरम् --(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी के उपर दूर्वा चढावे)

ऊँ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, दूर्वाङ्कुराणि समर्पयामि।

बिल्वपत्रम् --(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी के उपर बिल्वपत्र चढावे)

ऊँ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्मिणे च वथिने च नमः

श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्याय च।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

सुगन्धितद्रव्यम् --(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी के उपर इत्र चढावे)

ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि।

सिन्दूरम् --(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी के उपर सिन्दूर चढावे)

ऊँ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्प्रमियः पतयन्ति ह्यवाः।

घृतस्य धारा ऽ अरुषो न व्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि --(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी के उपर अवीर चढावे)

ऊँ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुञ्ज्याया हेतिं परिबाधमानः।

हस्तघ्नो व्विश्वाव्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमा œ सम्परिपातुव्विश्वतः।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, परिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

धूपम् --(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी के उपर धूप दिखावे)

धूरसि धूर्व्वधूर्व्वन्तं धूर्व्व तंयोस्म्मान् धूर्वतितन्धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्नितम œ सस्न्नितमं पप्प्रितमं जुष्टतमं देवहूतम्।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, धूपम् आघ्रापयामि।

दीपम् ---(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी के उपर दीप दिखावे)

ऊँ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्चाज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्यो वर्च्चाज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, दीपकं दर्शयामि।

हस्तौ प्रक्षाल्य। (इसके बाद हाथ धोये)

नैवेद्यम् ---(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी को भोग लगावे)

ऊँ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष œ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ अकल्पयन्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये जलं निवेदयामि।

(इसके बाद पॉच बार जल चढावे)

ऋतुफलम् ---(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए गणेश जी और गौरी लक्ष्मी जी के उपर फल चढावे)

ऊँ याः फलनीर्या ऽ अफला ऽ अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व œ हसः।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, फलं निवेदयामि। पुनः आचमनीयं निवेदयामि।(इसके बाद पुनः जल चढावे)

ताम्बूल-मन्त्र बोलते हुए लवंग,इलायची, सोपारी सहित पान का पत्ता लक्ष्मी जी के उपर चढावे।

ॐयत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

वसन्तोस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मःशरद्धविः।।

ॐ भूभुर्वः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः। मुखवासार्थं एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि। (इलायची,लौंग-सुपारी सहित ताम्बूल को चढाये)

दक्षिणा-(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी के उपर दक्षिणा चढ़ावे)

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातःपतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

ॐ भूभुर्वः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः ,कृतायाः पूजायाः सादुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।(द्रव्य दक्षिणा समर्पित करें।)

आरती-(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी को कर्पूर की आरती करे)

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम् ।

आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य में वरदो भव।।

ॐ भूभुर्वः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, आरार्तिकं समर्पयामि। आरती के बाद जल गिरा दे।

पुष्पाञ्जलि - (हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर लक्ष्मी जी की प्रार्थना करे):-

ॐयज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

ॐ भूभुर्वः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, पुष्पांजलिं समर्पयामि।(पुष्पांजलि अर्पित करे।)

प्रदक्षिणा--(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी को प्रदक्षिणा करे)

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।

तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।।

ॐ भूभुर्वः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, प्रदक्षिणा समर्पयामि।(प्रदक्षिणा करे।)

प्रार्थना- मन्त्र बोलते हुए हाथ में फूल लेकर लक्ष्मी जी की पुष्पांजलि अर्थात् प्रार्थना करना।

सुरासुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिकै

र्युक्तं सदा यत्तव पादपंकजम्।
परावरं पातु वरं सुमंगलं
नमामि भक्त्याखिलकामसिद्धये।।
भवानि त्वं महालक्ष्मी सर्वकामप्रदायिनी।
सुपूजिता प्रशन्ना स्यात् महालक्ष्मि! नमोस्तुते ।।
नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात् त्वदर्चनात्।।
विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।
भक्तार्ति नाशनपराय गणेश्वराय
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय
भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।

ॐ भूभुर्वः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, प्रार्थना पूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि। (साष्टांग नमस्कार करे।

नोट:- श्रीसूक्त से भी अभिषेक अथवा यथोपचार पूजन किया जा सकता है।

विनियोग-हाथ में जल लेकर अधोलिखित मन्त्र को पढते हुए जल को गीरावें

ऊँ हिरण्य वर्णामिति पंचदशर्चस्य श्री सूक्तस्य श्री आनन्द कर्दम चिक्लीतेन्दिरा सुता महर्षयः श्री अग्निदेवता आद्यास्तिस्त्रो अनुष्टुपः । चतुर्थी वृहती, पंचमीषष्ठयो त्रिष्टुभौ ततो अष्टावनुष्टुभः अन्त्या प्रस्तार पंक्तिः छन्दसि । हिरण्य वर्णामिति बीजम् ताम आवह जातवेद इति शक्तिः। कीर्तिमृद्धिं ददातु मे इति कीलकम्। ममसकल विधि धनधान्य यशः श्रीः पौत्रादि प्राप्त मे श्री महालक्ष्मी वरप्रसादात् सिद्ध्यर्थे न्यासे पाठे विनियोगः॥ (जल को गीरावें)

कर शुद्धिः- श्री बीज का उच्चारण करते हुए तीन बार हाथ धोवे।

ऋष्यादिन्यासः -ऊँ आँ ह्रीं क्रों ऐं श्रीं क्लीं ब्लूं यौं रं बं श्रीं ऊँ

(प्रत्येक ऋचा से पहले इनी बीज मन्त्रों को लगाये)

ऊँ हिरण्यवर्णामिति शिरसि (दाहिने हाथ से शिर को स्पर्श करे)।

तम् आवह जातवेदेति नेत्रयोः (दाहिने हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग से दोनों नेत्रों को स्पर्श करे)।

अश्वपूर्वामिति कर्णयोः(दाहिने हाथ से दोनो कानों को स्पर्श करे)।

कांसोस्मितामिति नासिकायाम् (दाहिने हाथ से नासिका को स्पर्श करे)।

चन्द्रप्रभासामिति मुखे (दाहिने हाथ से मुख को स्पर्श करे)।

आदित्यवर्णामिति कण्ठे (दाहिने हाथ से कण्ठ को स्पर्श करे)।

उपेतुमामिति बाह्यौ(दाहिने हाथ से पुरे शरीर को स्पर्श करे)।

क्षुत्पिपासामिति हृदये (दाहिने हाथ से हृदय को स्पर्श करे)।

गन्धद्वारामिति नाभौ (दाहिने हाथ से नाभी को स्पर्श करे)।

मनसः कामामिति गुह्ये दाहिने हाथ से गुदा को स्पर्श करे)।

कर्दमेनेति वायौ (दाहिने हाथ से वायु को स्पर्श करे)।

आपः सृजन्तमिति उच्चै (दाहिने हाथ से उपर करे)।

आर्दा पुष्करिणी पुष्टिमिति जाह्नवौः। (दाहिने हाथ से जानु को स्पर्श करे)।

आर्दा यः करिणीमिति जंघयोः। (दाहिने हाथ से जंघा को स्पर्श करे)

तां म आवह जातवेदो इति पादयोः। (दाहिने हाथ से दोनों पैरों को स्पर्श करे)

करन्यासः - ऊँ श्रां नमो भगवत्यै महालक्ष्म्यै हरिण्यवर्णाय अंगुष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों से दोनों अंगूठों का स्पर्श करे) ।

ऊँ श्रीं नमो भगवत्यै महालक्ष्म्यै हरिण्यै तर्जनीभ्याँ नमः (दोनों हाथों के अंगूठों से दोनों तर्जनी अंगुलियों का स्पर्श करे) ।

ऊँ श्रुं नमो भगवत्यै महालक्ष्म्यै स्वर्ण रजत स्रजायै मध्यमाभ्याँ नमः(अंगूठों से मध्यमा अंगुलियों का स्पर्शकरे)।

ऊँ श्रैं नमो भगवत्यै महालक्ष्म्यै चन्द्रायै अनामिकाभ्याँ नमः (अंगूठों से अनामिका अंगुलियों का स्पर्श करे)

ऊँ श्रौं नमो भगवत्यै महालक्ष्म्यै हिरण्मयै कनिष्ठिकाभ्याँ नमः (अंगूठों से कनिष्ठिका अंगुलियों का स्पर्श करे)

ऊँ श्रः नमो भगवत्यै महालक्ष्म्यै लक्ष्म्यै करतलकरपृष्ठाभ्याँ नमः(हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करे) ।

षडङ्गन्यासः

ऊँ श्रां नमो भगवत्यै महालक्ष्म्यै हरिण्यवर्णाय हृदयाय नमः (दाहिने हाथ से हृदय को स्पर्श करे)

ऊँ श्रीं नमो भगवत्यै महालक्ष्म्यै हरिण्यै शिरसे स्वाहा (दाहिने हाथ से शिर को स्पर्श करे)।

ऊँ श्रुं नमो भगवत्यै महालक्ष्म्यै स्वर्ण रजत स्रजायै शिखायै वषट् (दाहिने हाथ से शिखा को स्पर्श करे

ऊँ श्रैं नमो भगवत्यै महालक्ष्म्यै चन्द्रायै कवचाय हुँ (दाहिने हाथ की अंगुलियों से बायें कन्धे का और बायें हाथ की अंगुलियों से दाहिने कन्धे का साथ ही स्पर्श करे)।

ऊँ श्रौं नमो भगवत्यै महालक्ष्म्यै हिरण्मयै नेत्रत्रयाय वौषट् (दाहिने हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग से दोनों नेत्रों और ललाट के मध्य भाग को स्पर्श करे)।

ऊँ श्रः नमो भगवत्यै महालक्ष्म्यै लक्ष्म्यै अस्त्रायफट् यह वाक्य पढ़कर दाहिने हाथ को सिर के उपर से बायी ओर से पीछे की ओर लेजाकर दाहिनी ओर से आगे की ले आये और तर्जनी तथा मध्यमा अंगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजाये)।

हाथों में पुष्प लेकर अधोलिखित श्लोक को पढ़ते हुए गणेश जी का प्रार्थना करे

या सा पद्मासनस्थ विपुल कटि तटि पद्म पत्रायताक्षी

गम्भीरा वर्तनाभिः स्तनभरनमितांशुभ्र वस्त्रोत्तरीया।

लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगणा खचितैः स्नापिता हेमकुम्भै

र्नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता।।

पाठ करना प्रारम्भ करे।

अथ श्रीसूक्तम् -

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ।। १ ।।

अर्थ-हे अग्ने! जिनका वर्ण सुवर्ण के समान उज्ज्वल है जो हरिणी के समान रूपवाली हैं, जिनके कण्ठ में सुवर्ण और चॉदी के फूलों की माला शोभा पाती है, जो चन्द्रमा के समान प्रकाशमान है, जिनकी माला देह सुवर्णमय है उन्हीं लक्ष्मीदेवी का हमारे निमित्त आवाहन करो। हे हुताशन! तुम्ही देवताओं के होता हो, लक्ष्मी देवी का आवाहन करके बुलाने में केवल तुम्हारी ही सामर्थ्य है।।१।।

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।

यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ।। २ ।।

अर्थ-हे अग्ने! जिनके प्रसन्न होकर आने सुवर्ण, भूमि , अश्व (घोड़ा) पुत्रपौत्रादि सबकुछ प्राप्त हो

जाता है, उन्हीं अनुगामी (उन्हीं के पीछे जानेवाली) लक्ष्मी को हमारे लिये आवाहन करों । ॥ २ ॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।

श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ ३ ॥

अर्थ- घोड़े जिनके आगे चलते हैं, सम्पूर्ण रथ जिनके मध्य में स्थिर है , जो हाथियों की चग्घाण से सबको जगाती है , जो एकमात्र देवी और आश्रय है , उन्हीं लक्ष्मी का आवाहन करता हूँ वह आकर हमारी सेवा को स्वीकार करें ॥३॥

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।

पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥

अर्थ-जिनका शरीर विकसित कमल के समान हॅसता हुआ विराजित है, जिनका वर्ण सुवर्ण के समान सुन्दर है,जो क्षीर सागर के निकलने से सदा गीली है जिनकी सदा उज्ज्वल कान्ती है,सदा परितृप्त और जो प्रसन्न हो मनोरथ देकर आश्रित भक्त जनों को तृप्त करती हैं जो कमल के आसन पर विराजमान और कमल के समान वर्णवाली है, मै उन्हीं श्रीलक्ष्मी देवी का आवाहन करता हूँ । ॥ ४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये ऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ ५ ॥

अर्थ- जो चन्द्रमा के समान प्रभायुक्त है जो परम दीप्तिमान है, जो यश के समूह से प्रकाशमान है सुरपुर में सदा देवता लोग जिनकी आराधना करते हैं, जो उदारचित्तवालीहै, कमल के समान रूपवाली और ईकारस्वरूपिणी है, मै उन्हीं लक्ष्मी देवी की शसण होता हूँ। हे देवी! मैं तुम्हे प्रणाम कर प्रार्थना करता हूँ कि तुम हमारी दरिद्रता को दूर करो । ॥ ५ ॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।

तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥६॥

अर्थ-हे देवी! तुम्हारा वर्ण सूर्य के समान उज्ज्वल है तुम्हारी तपस्या के प्रभाव से ही फलवान् बिल्ववृक्षादि उत्पन्न होते हैं। हे शरण्ये!उन्हीं बिल्ववृक्षों के पके हुए फलसमूह हमारे अन्तस्थ और बाहर की अलक्ष्मी को दूर करें। ॥६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।

प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ ७ ॥

अर्थ-हे देवि! तुम्हारे अनुग्रह से शिाव का मित्र कुबेर और कीर्ति देवी मणिरत्नादि सहित हमारे निकट उपस्थित हों, मैने इस संसार में देह धारण किया है, वहा आकर ऋद्धि और सिद्धि प्रदान करें ॥७॥

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।

अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।८।।

अर्थ-मै क्षुधा और तृष्णा से मल परिपूर्ण और अलक्ष्मी का विनाश करूँगा हे देवि! तुम हमारे घर से सम्पूर्ण अभूति को और असमृद्धि को दूर करो। ।।८।।

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।

ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।९।।

अर्थ- गन्ध ही जिसका लक्षण है, जिसको काई भी परस्त करने में समर्थनहीं है, जो सदा गौ इत्यादि पशुओं से युक्त है, जो सम्पूर्ण जीवों की ईश्वरी है,मैं उन्हीं लक्ष्मी देवी का आवाहन करता हूँ ।।९।।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।

पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०।।

अर्थ-हे देवि! प्रसन्न होकर आशीर्वाद दो , तुम्हारे प्रसाद से हमारा मनोरथ पूर्ण, संकल्प सिद्ध हो सदा सत्यवचन बोलने में वृद्धि रहे , मुझे गाय का दूध बहुत सा प्राप्त हो, चारों ओर हमारे घर में आवश्यकतानुसार अन्न विद्यमान रहे और समृद्धि व यश हमेशा मेरा आश्रय करे। ।।१०।।

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।

श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।११।।

अर्थ- कर्दम जी से ही सम्पूर्ण प्रजा उत्पन्न हुई है। इस कारण हे कर्दम! तुम हमारे स्थान में स्थिति करो और अपनी जननी पद्ममालिनी लक्ष्मी देवी को हमारे वंश में स्थापित करो ।।११।।

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।

नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।१२।।

अर्थ-हे कर्दम जलदेवतागण चिकना द्रव्य उत्पन्न करें, तुम सदा मेरे स्थान में स्थित रहो, अपनी जननी लक्ष्मी देवी को हमारे कुल में स्थापित करो।।१२।।

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।१३।।

अर्थ- हे अग्ने! जो गीले देहवाली है, जिनके हाथ में शोभायमान लकड़ी विराजमान है, जो पुष्टि युक्त है, जो पीले वर्णवाली है, जो पद्मचारिणी,पद्ममालिनी और जिनका वर्ण सुवर्ण के समान देदीप्यमान है, उन्हीं लक्ष्मी देवी का हमारे लिये यहा आवाहन करो।।१३।।

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।

सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥१४॥

अर्थ- हे अनल! जो गीले देहवाली है, जिनके हाथ में शोभायमान लकड़ी विराजमान है, जो सुवर्ण के समान वर्णवाली और हममालिनी है ,जिनी कान्ति सूर्य के समान देदीप्यमान है, उन्हीं लक्ष्मी देवी को हमारे लिये यहा आवाहन करो॥१४॥

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्॥१५॥

अर्थ- हे अग्ने! जिसकी अनुग्रह से वहुत सा सुवर्ण, गौ, अश्व, दास-दासी, पुत्र-पौत्र इत्यादि प्रप्त कर सकें, तुम उन्हीं अनपगामिनी लक्ष्मी देवी का हमारे यहा आवाहन करो॥१५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।

सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥१६॥

अर्थ- जो मनुष्य लक्ष्मी की कामना करता हो वह पवित्र और सावधान होकर प्रतिदिन अग्नि में गौघृत का हवन और साथ ही श्री सूक्त की पन्द्रह ऋचाओं का प्रतिदिन पाठ करे ॥१६॥

2 **माता महालक्ष्मी की आरती**

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मी

पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धि।

श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा

तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥

ऊँ जय लक्ष्मीमाता, (मैय्या) जय लक्ष्मी माता।

तुमको निशिदिन ध्यावत, हर विष्णु धाता॥ ऊँ जय॥

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।

सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ ऊँ जय॥

दुर्गारूप निरञ्जनी, सुख-सम्पत्ति-दाता।

जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता॥ ऊँ जय॥

तुम पाताल-निवासिनी, तुम ही शुभदाता।

कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता॥ ऊँ जय॥

जिस घर तुम रहती, तहँ सब सदड्ढ्गुण आता।

सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता॥ ऊँ जय॥

तुमबिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।

खान-पान का वैभव सब तुमसे आता॥ ऊँ जय॥

शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।

रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहीं पाता॥ ऊँ जय॥

या आरती लक्ष्मीजी की जो कोई नर गाता,

उर आनन्द अति उमगे पाप उतर जाता॥ ऊँ जय॥

ॐ भूभुर्वः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, आरार्तिकं समर्पयामि। आरती के बाद जल गिरा दे।

पुष्पाञ्जलि - (हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर लक्ष्मी जी की प्रार्थना करे):-

ॐयज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ भूभुर्वः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, पुष्पांजलिं समर्पयामि।(पुष्पांजलि अर्पित करे।)

प्रदक्षिणा--(अधोलिखित मन्त्र पढते हुए लक्ष्मी जी को प्रदक्षिणा करे)

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।

तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे॥

ॐ भूभुर्वः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, प्रदक्षिणा समर्पयामि।(प्रदक्षिणा करे।)

प्रार्थना- मन्त्र बोलते हुए हाथ में फूल लेकर लक्ष्मी जी की पुष्पांजलि अर्थात् प्रार्थना करना।

सुरासुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिकै
र्युक्तं सदा यत्तव पादपंकजम्।
परावरं पातु वरं सुमंगलं
नमामि भक्त्याखिलकामसिद्धये॥

भवानि त्वं महालक्ष्मी सर्वकामप्रदायिनी।
सुपूजिता प्रशन्ना स्यात् महालक्ष्मि! नमोस्तुते ॥

नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात् त्वदर्चनात्॥

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय

गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।

भक्तार्ति नाशनपराय गणेश्वराय

सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।

विद्याधराय विकटाय च वामनाय

भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।

ॐ भूभुर्वः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः, प्रार्थना पूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि। (साष्टांग नमस्कार करे।)

समर्पण-पूजन के अन्त में -कृतार्चनेन पूजनेन भगवती महालक्ष्मीदेवी प्रीयताम्, न मम। (यह वाक्य बोलकर समस्त पूजन-कर्म भगवती महालक्ष्मी को समर्पित करे तथा जल गिराये।)

3.5 सारांश

इस इकाई में गणेशऽथर्वशीर्ष पाठ एवं श्रीसूक्त का पाठ का वर्णन किया गया है। गणेशऽथर्वशीर्ष में फलश्रुति सहित १४ मन्त्र है तथा श्रीसूक्त में सोलह मन्त्र पढ़े गये है। इन सूक्तों में लक्ष्मी जी के स्वरूप का वर्णन किया गया है प्रथम सूक्त में लक्ष्मी जी के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहते है कि जिनका वर्ण सुवर्ण के समान उज्ज्वल है जो हरिणी के समान रूपवाली हैं, जिनके कण्ठ में सुवर्ण और चॉदी के फूलों की माला शोभा पाती है, जो चन्द्रमा के समान प्रकाशमान है, जिनकी माला देह सुवर्णमय है उन्हीं लक्ष्मीदेवी का हमारे निमित्त आवाहन करो। हे हुताशन! तुम्ही देवताओं के होता हो, लक्ष्मी देवी का आवाहन करके बुलाने में केवल तुम्हारी ही सामर्थ्य है।

घोड़े जिनके आगे चलते हैं, सम्पूर्ण रथ जिनके मध्य में स्थिर है , जो हाथियों की चग्घाण से सबको जगाती है , जो एकमात्र देवी और आश्रय है , उन्हीं लक्ष्मी का आवाहन करता हूँ वह आकर हमारी सेवा को स्वीकार करें इन सबका वर्णन इस इकाई में किया गया है।

3.6 पारिभाषिक शब्दावली

शब्द	**अर्थ**
ताम्	उसको
आवह	अवाहन करते है
जातवेदो	प्रसन्न होकर
लक्ष्मीमनपगामिनीम्	उन्हीं अनुगामी (उन्हीं के पीछे जानेवाली) लक्ष्मी को
यस्यां	जिनके

हिरण्यं	त्रसुवर्ण,
विन्देयं	प्राप्त हो जाता है,
गामश्वं	अश्व
अश्वपूर्वां	घोड़े जिनके आगे चलते हैं,
रथमध्यां	रथ जिनके मध्य में स्थिर है ,
हस्तिनाद	हाथियों की चग्घाण से
प्रमोदिनीम्।	सबको जगाती है
श्रियम्	आश्रय है ,
देवीमुपह्वये	उन्हीं लक्ष्मी का आवाहन करता हूँ
श्रीर्मा देवी	एकमात्र देवी
जुषताम्	सेवा को स्वीकार करें

3.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. अथर्ववेद
2. गं गणपतये नम:।
3. १४
4. गणेशऽथर्वशीर्ष का पाठ

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 पुस्तक का नाम - रुद्रष्टाध्यायी
लेखक का नाम - शिवदत्त मिश्र
प्रकाशक का नाम- चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

2 पुस्तक का नाम-सर्वदेव पूजापद्धति
लेखक का नाम- शिवदत्त मिश्र
प्रकाशक का नाम- चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन वाराणसी

3 धर्मशास्त्र का इतिहास
लेखक - डॉ. पाण्डुरङ्ग वामन काणे
प्रकाशक:- उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान।

4 नित्यकर्म पूजा प्रकाश,

लेखक:- पं. बिहारी लाल मिश्र,

प्रकाशक:- गीताप्रेस, गोरखपुर।

5 अमृतवर्षा, नित्यकर्म, प्रभुसेवा

संकलन ग्रन्थ

प्रकाशक:- मल्होत्रा प्रकाशन, दिल्ली।

6 कर्मठगुरुः

लेखक - मुकुन्द वल्लभ ज्योतिषाचार्य

प्रकाशक - मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

7 हवनात्मक दुर्गासप्तशती

सम्पादक - डॉ. रवि शर्मा

प्रकाशक - राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र, जयपुर।

8 शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टध्यायी

सम्पादक - डॉ. रवि शर्मा

प्रकाशक - अखिल भारतीय प्राच्य ज्योतिष शोध संस्थान, जयपुर।

9 विवाह संस्कार

सम्पादक - डॉ. रवि शर्मा

प्रकाशक - हंसा प्रकाशन, जयपुर

3.9 सहायक पाठ्यसामग्री

नित्यकर्मपूजाप्रकाश – पं. बिहारी लाल मिश्र, गीताप्रेस।

महालक्ष्मीपूजन विधि – गीता प्रेस

अथर्ववेद

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. गणेशऽथर्वशीर्ष पाठ का अर्थ सहित लेखन कीजिये।
2. गणेशऽथर्वशीर्ष पाठ का महत्व निरूपण कीजिये।
3. श्रीसूक्त पाठ का अर्थ लिखिये।
4. श्रीसूक्त पाठ विधि का लेखन करते हुए उसका महत्व प्रतिपादित कीजिये।

इकाई – 4 आदित्यहृदय स्तोत्र एवं विष्णुसहस्रनाम

इकाई की संरचना

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 आदित्यहृदय स्तोत्र पाठ
4.4 विष्णुसहस्रनाम
4.5 सारांश
4.6 पारिभाषिक शब्दावली
4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
4.**8** सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
4.9 सहायक पाठ्यसामग्री
4.10 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई **CVK-02** के प्रथम खण्ड की चतुर्थ इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – आदित्यहृदयस्तोत्र एवं विष्णुसहस्रनाम। इसके पूर्व की इकाईयों में आपने गणेशऽथर्वशीर्ष एवं श्रीसूक्त पाठ के बारे में अध्ययन कर लिया है। अब आप भगवान सूर्य एवं विष्णु जी से सम्बन्धित स्तोत्र पाठ का अध्ययन करने जा रहे हैं।

आदित्यहृदयस्तोत्र बाल्मीकी रामायण से लिया गया है। यह ऋषि अगस्त्य द्वारा प्रणीत है। विष्णुसहस्रनाम में भगवान विष्णु के १००० नामों का उल्लेख है। इसके पाठ से समस्त कष्टों का निवारण हो जाता है, ऐसा ऋषियों का कथन है।

आइए इस इकाई में हम आदित्यहृदयस्तोत्र व विष्णुसहस्रनाम के पाठ का अध्ययन करते हैं।

4.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

1. समझ लेंगे कि आदित्यहृदयस्तोत्र किसे कहते हैं।
2. आदित्यहृदयस्तोत्र पाठ का प्रयोग कहाँ-कहाँ होता हैं।
3. विष्णुसहस्रनाम का महत्व क्या है।
4. विष्णुसहस्रनाम पाठ को जान लेंगे।
5. आदित्यहृदयस्तोत्र एवं विष्णुसहस्रनाम पाठ विधि के साथ-साथ उसका महत्व भी जान लेंगे।

4.3 आदित्यहृदयस्तोत्र

यह स्तोत्र श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण के युद्धकाण्ड के 105वें सर्ग से लिया गया है। जब भगवान् श्रीराम के साथ रावण का युद्ध हो रहा था तब विविध अस्त्र शस्त्रों के प्रयोग करने पर भी जब रावण की मृत्यु नहीं हो पा रही थी, तब श्रीराम जी को कुछ चिन्ता होने लगी। उसी समय भगवत्कृपा से अगस्त्य ऋषि का आगमन हुआ तथा वे श्रीराम जी को चिन्तातुर देखकर इस आदित्य-हृदय-स्तोत्र का उपदेश किये जिसके प्रभाव से सूर्य के प्रसन्न होने पर भगवान् श्रीराम रावण को मारकर विजय को प्राप्त किये। इसमें कुल 31 श्लोक हैं।

एक जिज्ञासा यहाँ स्वाभाविक होती है कि देवताओं का स्तोत्र या स्तुति से क्या सम्बन्ध हैं? हम स्तोत्र पाठ आदि क्यों करते हैं? तथा इससे लाभ क्या होता है? क्या स्तोत्र पाठ से देवता प्रसन्न होते हैं? इत्यादि।

इन प्रश्नों के समाधान में आप भी कुछ न कुछ अवश्य ही जानते हैं, फिर भी अपनी बुद्धि के

अनुसार कुछ शास्त्रीय विचार आपके सामने रखे जा रहे हैं। यदि रुचिकर लगे तो लेखक का प्रयास सार्थक होगा।

देखिये! सामान्यतः देवता की परिभाषा - जो दान देने वाला है, प्रकाशरूप (तेजोमय) एवं द्युलोक (स्वर्ग) में निवास करने वाला है उसे ही देवता कहते हैं। निरुक्तशास्त्र के अनुसार वैदिक देवता 33 होते हैं, जिनमें 11 पृथिवीस्थानीय, 11 अन्तरिक्षस्थानीय एवं 11 द्युस्थानीय देवता है। इन्हीं वैदिक देवताओं का विकास पुराणों में शिव, विष्णु आदि के रूप में हुआ है। मुख्यरूप से वैदिक देवता 33 ही होते हैं। जैसा कि निरुक्तग्रन्थ में लिखा है ''देवो दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा द्युस्थानो भवतीति वा''। मनुष्य का सम्बन्ध देवताओं से सनातन से है क्योंकि सृष्टि के समय ब्रह्मा जी ने स्पष्ट रूप से मनुष्यों को कहा कि तुम यज्ञ में प्रदत्त हवि एवं स्तुति आदि के द्वारा देवताओं को सन्तुष्ट करो, देवता प्रसन्न होकर तुम्हारे सभी मनोरथों को पूर्ण करेंगे। इस प्रकार परस्पर एक दूसरे को सुखी सम्पन्न बनाते हुए परम कल्याण को प्राप्त करो। जैसा कि गीता में लिखा है-

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।

परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।।

इसीलिए मनुष्य अन्यान्य लौकिक आश्रयों को छोड़कर देवता की शरण में जाता है। साक्षात् श्रुति भी इसी बात का समर्थन करते हुए कहती है-

देहि मे ददामि ते निमेधे हि नितेदधे।

इस मन्त्र में इन्द्र मनुष्यों से कहते हैं कि हे मनुष्यों! तुम सर्वप्रथम मुझे हवि प्रदान करो, फिर मैं तुम्हारे सभी मनोरथों को पूर्ण कर दूँगा। इसमें सर्वप्रथम मनुष्य ही देवताओं को यज्ञ या स्तुति आदि से प्रसन्न करता है। इसके बाद प्रसन्न एवं संतुष्ट होकर देवता उसके सारे अभिमत फल को प्रदान करते हैं।

एक बात और भी यहाँ ध्यान देने की है - सामान्यतया लोकव्यवहार में देवता दो प्रकार के होते हैं। (क) वैदिक देवता एवं (ख) पौराणिक देवता। सामान्य रूप से तो विचार करने पर वैदिक देवताओं का विकास ही पौराणिक देवता है। जैसे - वैदिक देवता रुद्र है जिन्हें पुराणादि में शिव, महेश्वर आदि नामों से कहा गया है। फिर भी इतना अन्तर अवश्य है कि वैदिक देवताओं के लिए त्रेता आदि युगों में नाना प्रकार के श्रौतानुष्ठानों से यागों में हवि प्रदान करके उन्हें प्रत्यक्षरूप से सन्तुष्ट किया जाता था, परन्तु युगानुसार आज पौराणिक देवताओं को उनकी स्तुति प्रार्थना आदि करके ही उन्हें प्रसन्न किया जाता है क्योंकि द्रव्यादि के शुचिता का अभाव सर्वत्र है। इस प्रकारं उनसे

अभिलषित पदार्थों की कामना की जाती है। देवता भी प्रसन्न होकर भक्त की इच्छा को पूर्ण करते हैं। इस प्रकार मनुष्य के फल प्राप्ति का साधन स्तुति या स्तोत्र है। जो देवताओं की प्रसन्नता द्वारा प्राप्त होता है। प्रत्यक्ष रूप से हमारे यहाँ पुराणों में वर्णित स्तुति या स्तोत्र आदि विपुल मात्रा में अत्यन्त प्रसिद्ध है। जिनके आधार ग्रन्थ हमारे पुराण है। इनमें तो प्रायः हवि आदि देने का वैदिक विधान प्राप्त नहीं है, केवल स्तोत्र या स्तुति पाठ से ही उनकी प्रसन्नता स्वयं हो जाती है। हविः प्रदान तो चरु पुरोडाश आदि के रूप में दिया जाता है जो अत्यन्त श्रमसाध्य है। परन्तु आज श्रुतियोगों का सर्वथा अभाव दिखाई देता है।

बात यह है कि अन्य युगों में मन्त्रों से आवाहन करने पर देवता स्वयं उपस्थित होकर अपनी हवि ग्रहण करते थे। परन्तु अब तो देवताओं का प्रत्यक्ष होना संभव नहीं है। अतः हम उन्हें स्तुति आदि से ही प्रसन्न करते हैं।

इन देवताओं के स्वभाव एवं प्रसन्नता के साधन की चर्चा करते हुए आचार्य यास्क कहते हैं कि कुछ देवता हविप्रिय होते हैं, कुछ स्तुतिप्रिय होते हैं एवं कुछ हवि एवं स्तुति दोनों की अभिलाषा रखते हैं।

एषु केचन स्तुतिभाजः, केचन हविर्भाजः केचन च उभयप्रिया भवन्ति।

अतः मनुष्यों को देवताओं के स्वभाववश अपनी अपनी कामना के अनुसार उन्हें सन्तुष्ट करना चाहिए एवं उनकी प्रसन्नता से अभिलषित फल पुरुष को प्राप्त करना चाहिए।

इस प्रकार दानशील स्वभाव होने के कारण देवता हमारे स्तुतियों से प्रसन्न होते हैं एवं हमें अभिलषित फल प्रदान करते हैं। यही परस्पर में आदान-प्रदान का क्रम स्तुति के माध्यम से होता है। अच्छे मनुष्य का एक स्वभाव है कि अपने सामर्थ्य पर विश्वास करता है और उसे अपने प्रयास से पाने की चेष्टा भी करता है, परन्तु जहाँ अपना सामर्थ्य (शक्ति) काम नहीं आता तब वह देवताओं की शरण में जाता है एवं श्रद्धा विश्वास पूर्वक देवाराधन से फल को प्राप्त करता है।

हाँ एक बात अवश्य ध्यान देना चाहिए कि स्तुति पाठ में श्रद्धा एवं विश्वास दोनों का होना नितान्त आवश्यक है। इसके बिना कार्य सफल नही होता है। आराधना जितना ही सात्विक भाव से की जायेगी उसके अनुसार ही फल की प्राप्ति होगी। कदाचित् फलप्राप्ति में समय (देर) भी लग सकता है, परन्तु फलप्राप्ति अवश्य ही होती है, क्योंकि श्रौतसूत्रकार कहते हैं - ‘‘फलयुक्तानि कर्माणि’’ अर्थात् संसार में ऐसा कोई भी कर्म नहीं है जिसका फल न हो। अतः पाप कर्म हो या पुण्य कर्म दोनों का फल अवश्य ही मिलता है और यह भी ध्यान रखें। कर्म का फल मनुष्य को अवश्य ही भोगना

पड़ता है। चाहे वह पाप हो या पुण्य हो। जैसा कि-

नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि।
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाऽशुभम्।।

एक बात और मन में आ रही है कि, अपने उत्कर्ष की कामना मनुष्य योनि में ही रहती है, अन्य योनियों में नहीं। क्योंकि ''ज्योतिष्टोमेन स्वर्गकामो यजेत्'' इस वाक्य में स्वर्ग की कामना वाला मनुष्य ज्योतिष्टोम याग करे, यह कहा गया है। इससे यह बात सामने आती है कि मनुष्य को ही स्वर्ग की अभिलाषा या कामना हो सकती है पशुओं को नहीं। क्योंकि मनुष्य ही पूर्ण रूप से तत्तत्कर्मों का अनुष्ठान अच्छी तरह से कर सकता है जिससे उसे फलप्राप्ति हो सकती है। एक वाक्य में यदि कहा जाय तो मनुष्य का उत्कर्ष (प्रमोशन) ही देवता भाव है, एवं पतन (डिमोशन) ही दानव भाव है। अब जिसको जहाँ जाना हो या जो चुनना हो वह समर्थ एवं स्वतन्त्र है। अर्थात् हमें दानव बनना है या देवता, निर्णय हमारे हाथ में है। अस्तु।

इसी देवभाव या देवतारूप की प्राप्ति के लिए लौकिक एवं पारलौकिक फल की कामना मनुष्य करता है जो देवताओं की स्तुति से प्राप्त होती है। यही देवताओं का स्तुति या स्तोत्र से मुख्य सम्बन्ध है।

स्तुति, स्तोत्र, स्तवन आदि शब्द अपर पर्याय रूप हैं। उनके अर्थ में कोई भेद नहीं है। अतः श्रद्धा एवं विश्वास के साथ स्तुति पाठ करने से हमारी मनोकामनायें पूर्ण होती है।

निष्कर्ष रूप से यदि कहा जाय तो यही स्तुतिपाठ का महत्त्व एवं देवताओं का मनुष्य से शाश्वत-सम्बन्ध सामान्यतया है। अस्तु।

अब आपके सामने आदित्य-हृदय-स्तोत्र पाठ की विधि, श्लोक एवं उनके अर्थ भी नीचे दिये जा रहे हैं।

देखिये! शास्त्रीय विधि से हीनकर्म फलप्रद नहीं होते हैं क्योंकि गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं-

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।

अतः शास्त्र विधि का भी होना नितान्त आवश्यक है। दूसरी बात यह है कि संस्कृत के श्लोक कुछ कठिन तो अवश्य ही होते हैं, जिनके उच्चारण बिना गुरु के संभव नहीं होता। उच्चारण के बाद उन श्लोकों का अर्थ करना और कठिन है। क्योंकि पाठक को अर्थपूर्वक पाठ करने से ही

श्रद्धा की अभिवृद्धि देवता में आती है। अर्थ न जानने पर मात्र एक रोंटिंग वर्क होकर रह जाता है। अन्य कार्यों की तरह उसे भी करना है ऐसा सोचकर आदमी गलती सही कुछ भी पढने लगता है, जो ठीक नहीं होता है। अतः अर्थानुसन्धान पूर्वक श्रद्धा के साथ स्तोत्र का पाठ करना चाहिए इस दृष्टि से ही यहाँ प्रत्येक श्लोक के अन्त में उसका अर्थ दिया गया है। अस्तु।

मुख्यस्तोत्रपाठ

अथ आदित्यहृदयस्तोत्रम्

विनियोग

ऊँ अस्य आदित्यहृदयस्तोत्रस्यागस्त्य ऋषिरनुष्टुप् छन्दः, आदित्यहृदयभूतो भगवान्ब्रह्मा देवता निरस्ताशेषविघ्नतया ब्रह्मविद्यासिद्धौ सर्वत्र जयसिद्धौ च विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ऊँ अगस्त्यऋषये नमः, शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः, मुखे। आदित्य-हृदयभूत-ब्रह्मदेवतायै नमः, हृदि। ऊँ बीजाय नमः, गुह्ये। रश्मिमते शक्तये नमः, पादयोः। ऊँ तत्सवितुरित्यादिगायत्रीकीलकाय नमः, नाभौ।

करन्यासः

इस स्तोत्र के अंगन्यास और करन्यास तीन प्रकार से किये जाते हैं। केवल प्रणव से, गायत्री मन्त्र से अथवा 'रश्मिमते नमः' इत्यादि छः नाम-मन्त्रों से। यहाँ नाम-मन्त्रों से किये जाने वाले न्यास का प्रकार बताया जाता है।

ऊँ रश्मिमते अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ऊँ समुद्यते तर्जनीभ्यां नमः। ऊँ देवासुरनमस्कृताय मध्यमाभ्यां नमः। ऊँ विवस्वते अनामिकाभ्यां नमः। ऊँ भास्कराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ऊँ भुवनेश्वराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि-अङ्गन्यास

ऊँ रश्मिमते हृदयाय नमः। ऊँ समुद्यते शिरसे स्वाहा। ऊँ देवासुरनमस्कृताय शिखायै वषट्। ऊँ विवस्वते कवचाय हुम्। ऊँ भास्कराय नेत्रत्रयाय वौषट्। ऊँ भुवनेश्वराय अस्त्राय फट्।

इस प्रकार न्यास करके निम्नांकित मन्त्र से भगवान सूर्य का ध्यान एवं नमस्कार करना चाहिये-

ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

तत्पश्चात् 'आदित्य हृदय' स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

आदित्यहृदयस्तोत्र पाठ -

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्। रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् ॥1॥

दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्। उपगम्याब्रवीद् राममगस्त्यो भगवांस्तदा ॥2॥

अर्थ - उधर श्रीरामचन्द्रजी युद्ध से थककर चिंता करते हुए रणभूमि में खड़े हुए थे। इतने में रावण भी युद्ध के लिए उनके सामने उपस्थित हो गया। यह देख भगवान् अगस्त्य मुनि, जो देवताओं के साथ युद्ध देखने के लिए आये थे, श्रीराम के पास जाकर बोले।

राम राम महाबाहो श्रृणु गुह्यं सनातनम्। येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे ॥3॥

अर्थ - सबके हृदय में रमन करने वाले महाबाहो राम! यह सनातन गोपनीय स्तोत्र सुनो! वत्स! इसके जप से तुम युद्ध में अपने समस्त शत्रुओं पर विजय पा जाओगे ।

आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्। जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम् ॥4॥

सर्वमंगलमागल्यं सर्वपापप्रणाशनम्। चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ॥5॥

अर्थ - इस गोपनीय स्तोत्र का नाम है 'आदित्यहृदय'। यह परम पवित्र और संपूर्ण शत्रुओं का नाश करने वाला है। इसके जप से सदा विजय कि प्राप्ति होती है । यह नित्य अक्षय और परम कल्याणमय स्तोत्र है। सम्पूर्ण मंगलों का भी मंगल है। इससे सब पापों का नाश हो जाता है। यह चिंता और शोक को मिटाने तथा आयु का बढ़ाने वाला उत्तम साधन है।

रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्। पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥6॥

अर्थ - भगवान् सूर्य अपनी अनंत किरणों से सुशोभित हैं। ये नित्य उदय होने वाले, देवता और असुरों से नमस्कृत, विवस्वान नाम से प्रसिद्ध, प्रभा का विस्तार करने वाले और संसार के स्वामी हैं। तुम इनका रश्मिमंते नमः, समुद्यन्ते नमः, देवासुरनमस्कृताये नमः, विवस्वते नमः, भास्कराय नमः, भुवनेश्वराये नमः इन मन्त्रों के द्वारा पूजन करो।

सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः। एष देवासुरगणांल्लोकान् पाति गभस्तिभिः ॥7॥

अर्थ - संपूर्ण देवता इन्ही के स्वरुप हैं । ये तेज़ की राशि तथा अपनी किरणों से जगत को सत्ता एवं स्फूर्ति प्रदान करने वाले हैं। ये अपनी रश्मियों का प्रसार करके देवता और असुरों सहित समस्त लोकों का पालन करने वाले हैं ।

एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः। महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यापां पतिः॥8॥

पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः। वायुर्वहिनः प्रजा प्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः ॥9॥

अर्थ - ये ही ब्रह्मा, विष्णु शिव, स्कन्द, प्रजापति, इंद्र, कुबेर, काल, यम, चन्द्रमा, वरुण, पितर , वसु, साध्य, अश्विनीकुमार, मरुदगण, मनु, वायु, अग्नि, प्रजा, प्राण, ऋतुओं को प्रकट करने वाले तथा प्रकाश के पुंज हैं।

आदित्य: सविता सूर्य: खग: पूषा गभस्तिमान्। सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकर: ॥10॥

हरिदश्व: सहस्त्रार्चि: सप्तसप्तिर्मरीचिमान्। तिमिरोन्मथन: शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान् ॥11॥

हिरण्यगर्भ: शिशिरस्तपनोऽहस्करो रवि:। अग्निगर्भोऽदिते: पुत्रः शंखः शिशिरनाशन: ॥12॥

व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजु:सामपारग:। घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवंगमः ॥13॥

आतपी मण्डली मृत्यु: पिगंल: सर्वतापन:। कविर्विश्वो महातेजा: रक्त:सर्वभवोद् भव: ॥14॥

नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावन:। तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते ॥15॥

इनके नाम हैं आदित्य(अदितिपुत्र), सविता(जगत को उत्पन्न करने वाले), सूर्य(सर्वव्यापक), खग, पूषा(पोषण करने वाले), गभस्तिमान (प्रकाशमान), सुवर्णसदृश्य, भानु(प्रकाशक), हिरण्यरेता(ब्रह्मांड कि उत्पत्ति के बीज), दिवाकर(रात्रि का अन्धकार दूर करके दिन का प्रकाश फैलाने वाले), हरिदश्व, सहस्त्रार्चि(हज़ारों किरणों से सुशोभित), सप्तसप्ति(सात घोड़ों वाले), मरीचिमान(किरणों से सुशोभित), तिमिरोमंथन(अन्धकार का नाश करने वाले), शम्भू, त्वष्टा, मार्तण्डक(ब्रह्माण्ड को जीवन प्रदान करने वाले), अंशुमान, हिरण्यगर्भ(ब्रह्मा), शिशिर(स्वभाव से ही सुख प्रदान करने वाले), तपन(गर्मी पैदा करने वाले), अहस्कर, रवि, अग्निगर्भ(अग्नि को गर्भ में धारण करने वाले), अदितिपुत्र, शंख, शिशिरनाशन(शीत का नाश करने वाले), व्योमनाथ(आकाश के स्वामी), तमभेदी, ऋग, यजु और सामवेद के पारगामी, धनवृष्टि, अपाम मित्र (जल को उत्पन्न करने वाले), विंध्यवीथिप्लवंगम (आकाश में तीव्र वेग से चलने वाले), आतपी, मंडली, मृत्यु, पिंगल(भूरे रंग वाले), सर्वतापन(सबको ताप देने वाले), कवि, विश्व, महातेजस्वी, रक्त, सर्वभवोद्भव (सबकी उत्पत्ति के कारण), नक्षत्र, ग्रह और तारों के स्वामी, विश्वभावन(जगत कि रक्षा करने वाले), तेजस्वियों में भी अति तेजस्वी और द्वादशात्मा हैं। इन सभी नामो से प्रसिद्द सूर्यदेव ! आपको नमस्कार है।

नम: पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नम:। ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नम: ॥16॥

अर्थ - पूर्वगिरी उदयाचल तथा पश्चिमगिरी अस्ताचल के रूप में आपको नमस्कार है। ज्योतिर्गणों (ग्रहों और तारों) के स्वामी तथा दिन के अधिपति आपको प्रणाम है।

जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नम:। नमो नम: सहस्त्रांशो आदित्याय नमो नम: ॥17॥

अर्थ - आप जयस्वरूप तथा विजय और कल्याण के दाता हैं। आपके रथ में हरे रंग के घोड़े जुते रहते हैं। आपको बारबार नमस्कार है। सहस्रों किरणों से सुशोभित भगवान् सूर्य! आपको बारम्बार

प्रणाम है। आप अदिति के पुत्र होने के कारण आदित्य नाम से भी प्रसिद्द हैं, आपको नमस्कार है।

नम उग्राय वीराय सारंगाय नमो नम:। नम: पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते॥18॥

अर्थ - उग्र, वीर, और सारंग सूर्यदेव को नमस्कार है। कमलों को विकसित करने वाले प्रचंड तेजधारी मार्तण्ड को प्रणाम है।

ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सुरायादित्यवर्चसे। भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नम: ॥19॥

तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने। कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नम: ॥20॥

अर्थ - आप ब्रह्मा, शिव और विष्णु के भी स्वामी है। सूर आपकी संज्ञा है, यह सूर्यमंडल आपका ही तेज है, आप प्रकाश से परिपूर्ण हैं, सबको स्वाहा कर देने वाली अग्नि आपका ही स्वरुप है, आप रौद्ररूप धारण करने वाले हैं, आपको नमस्कार है। आप अज्ञान और अन्धकार के नाशक, जड़ता एवं शीत के निवारक तथा शत्रु का नाश करने वाले हैं। आपका स्वरुप अप्रमेय है। आप कृतघ्नों का नाश करने वाले, संपूर्ण ज्योतियों के स्वामी और देवस्वरूप हैं, आपको नमस्कार है।

तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे। नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥21॥

नाशयत्येष वै भूतं तमेष सृजति प्रभु:। पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभि: ॥22॥

अर्थ - आपकी प्रभा तपाये हुए सुवर्ण के समान है, आप हरी और विश्वकर्मा हैं, तम के नाशक, प्रकाशस्वरूप और जगत के साक्षी हैं, आपको नमस्कार है।

रघुनन्दन ! ये भगवान् सूर्य ही संपूर्ण भूतों का संहार, सृष्टि और पालन करते हैं। ये अपनी किरणों से गर्मी पहुंचाते और वर्षा करते हैं।

एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठित:। एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ॥23॥

देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतुनां फलमेव च। यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमं प्रभु: ॥24॥

ये सब भूतों में अन्तर्यामी रूप से स्थित होकर उनके सो जाने पर भी जागते रहते हैं। ये ही अग्निहोत्र तथा अग्निहोत्री पुरुषों को मिलने वाले फल हैं।

देवता, यज्ञ और यज्ञों के फल भी ये ही हैं। संपूर्ण लोकों में जितनी क्रियाएँ होती हैं उन सबका फल देने में ये ही पूर्ण समर्थ हैं।

एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च। कीर्तयन् पुरुष: कश्चिन्नावसीदति राघव ॥25॥

पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्। एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि ॥26॥

अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जहिष्यसि। एवमुक्ता ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम् ॥27॥

एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत् तदा॥ धारयामास सुप्रीतो राघव प्रयतात्मवान् ॥28॥

आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान्। त्रिराचम्य शूचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान् ॥29॥
रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागतम्। सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभवत् ॥30॥
अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमना: परमं प्रहृष्यमाण:। निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा
सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ॥31॥

अर्थ – हे राघव ! विपत्ति में, कष्ट में, दुर्गम मार्ग में तथा और किसी भय के अवसर पर जो कोई पुरुष इन सूर्यदेव का कीर्तन करता है, उसे दुःख नहीं भोगना पड़ता।

इसलिए तुम एकाग्रचित होकर इन देवाधिदेव जगदीश्वर कि पूजा करो। इस आदित्यहृदय का तीन बार जप करने से तुम युद्ध में विजय पाओगे।

महाबाहो ! तुम इसी क्षण रावण का वध कर सकोगे। यह कहकर अगस्त्यजी जैसे आये थे वैसे ही चले गए।

नका उपदेश सुनकर महातेजस्वी श्रीरामचन्द्रजी का शोक दूर हो गया । उन्होंने प्रसन्न होकर शुद्धचित्त से आदित्यहृदय को धारण किया और तीन बार आचमन करके शुद्ध हो भगवान् सूर्य की और देखते हुए इसका तीन बार जप किया। इससे उन्हें बड़ा हर्ष हुआ। फिर परम पराक्रमी रघुनाथ जी ने धनुष उठाकर रावण की और देखा और उत्साहपूर्वक विजय पाने के लिए वे आगे बढे । उन्होंने पूरा प्रयत्न करके रावण के वध का निश्चय किया।

उस समय देवताओं के मध्य में खड़े हुए भगवान् सूर्य ने प्रसन्न होकर श्रीरामचन्द्रजी की और देखा और निशाचरराज रावण के विनाश का समय निकट जानकर हर्षपूर्वक कहा - 'रघुनन्दन ! अब जल्दी करो'।

अभ्यास प्रश्न –

1.आदित्यहृदयस्तोत्र पाठ वाल्मीकी रामायण के युद्धकाण्ड के किस सर्ग से लिया गया है?

क. १०० वाँ ख. १०५ वाँ ग. ११० वाँ घ. १०८ वाँ

2. आदित्यहृदय स्तोत्र में कुल मन्त्रों की संख्या कितनी है?

क. ३० ख.३१ ग.३२ घ. ३४

3. वैदिक देवताओं की संख्या कितनी हैं?

क. ३३ ख.३४ ग.३५ घ. ३६

4. आदित्यहृदय स्तोत्र किस ऋषि द्वारा प्रणीत है?

क. वशिष्ठ ख. विश्वामित्र ग. अगस्त्य घ. भृगु

4.4 विष्णुसहस्रनाम पाठ –

विष्णुसहस्रनाम का अर्थ भगवान विष्णु के १००० नामों से हैं। वेदों में, पुराणों में तथा उपनिषादि में भगवान के अनेकों नामों का उल्लेख मिलता है। विष्णु सहस्रनम की उत्पत्ति महाकाव्य महाभारत से मानी जाती है, जब पितामह भीष्म, पांडवों से घिरे मौत के बिस्तर पर अपनी मृत्यु का इंतजार कर रहे थे, उस समय युधिष्ठिर ने उनसे पूछा, "पितामह! कृपया हमें बताएं कि सभी के लिए सर्वोच्च आश्रय कौन है? जिससे व्यक्ति को शांति प्राप्त हो सके, वह नाम कौन सा है जिससे इस भवसागर से मुक्ति प्राप्त हो सके, इस सवाल के जबाब में भीष्म ने कहा की वह नाम विष्णु सहस्रनाम है। अब यहाँ विष्णुसहस्रनाम का उल्लेख करते हैं -

ॐ विश्वं विष्णु: वषट्कारो भूत-भव्य-भवत्प्रभुः।
भूत-कृत भूतभृत भावो भूतात्मा भूतभावनः॥1॥
पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमं गतिः।
अव्ययः पुरुष साक्षी क्षेत्रज्ञो अक्षर एव च ॥ 2 ॥
योगो योग-विदां नेता प्रधान-पुरुषेश्वरः ।
नारसिंह-वपुः श्रीमान केशवः पुरुषोत्तमः ॥ 3 ॥
सर्वः शर्वः शिवः स्थाणु: भूतादि: निधि: अव्ययः ।
संभवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभु: ईश्वरः ॥ 4 ॥
स्वयंभू: शम्भु: आदित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः ।
अनादि-निधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥ 5 ॥
अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभो-अमरप्रभुः ।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥ 6 ॥
अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः ।
प्रभूतः त्रिककुब-धाम पवित्रं मंगलं परं ॥ 7॥
ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
हिरण्य-गर्भो भू-गर्भो माधवो मधुसूदनः ॥ 8 ॥
ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः ।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृति: आत्मवान ॥ 9 ॥
सुरेशः शरणं शर्म विश्व-रेताः प्रजा-भवः ।

अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥ 10 ॥
अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादि: अच्युतः ।
वृषाकपि: अमेयात्मा सर्व-योग-विनिःसृतः ॥ 11 ॥
वसु:वसुमनाः सत्यः समात्मा संमितः समः ।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥ 12 ॥
रुद्रो बहु-शिरा बभ्रु: विश्वयोनिः शुचि-श्रवाः ।
अमृतः शाश्वतः स्थाणु: वरारोहो महातपाः ॥ 13 ॥
सर्वगः सर्वविद्-भानु:विष्वक-सेनो जनार्दनः ।
वेदो वेदविद-अव्यंगो वेदांगो वेदवित् कविः ॥ 14 ॥
लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृता-कृतः ।
चतुरात्मा चतुर्व्यूह:-चतुर्दंष्ट्र:-चतुर्भुजः ॥ 15 ॥
भ्राजिष्णु भोजनं भोक्ता सहिष्णु: जगदादिजः ।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥ 16 ॥
उपेंद्रो वामनः प्रांशु: अमोघः शुचि: ऊर्जितः ।
अतींद्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः ॥ 17 ॥
वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः।
अति-इंद्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥ 18 ॥
महाबुद्धि: महा-वीर्यो महा-शक्ति: महा-द्युतिः।
अनिर्देश्य-वपुः श्रीमान अमेयात्मा महाद्रि-धृक ॥ 19 ॥
महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः ।
अनिरुद्धः सुरानंदो गोविंदो गोविदां-पतिः ॥ 20 ॥
मरीचि:दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः ।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः ॥ 21 ॥
अमृत्युः सर्व-दृक् सिंहः सन-धाता संधिमान स्थिरः ।
अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥ 22 ॥
गुरुःगुरुतमो धामः सत्यः सत्य-पराक्रमः ।
निमिषो-अ-निमिषः स्रग्वी वाचस्पति: उदार-धीः ॥ 23 ॥

अग्रणी: ग्रामणीः श्रीमान न्यायो नेता समीरणः ।
सहस्र-मूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात ॥ 24 ॥
आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सं-प्रमर्दनः ।
अहः संवर्तको वह्निः अनिलो धरणीधरः ॥ 25 ॥
सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृक्-विश्वभुक्-विभुः ।
सत्कर्ता सकृतः साधु: जह्नु:-नारायणो नरः ॥ 26 ॥
असंख्येयो-अप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्ट-कृत्-शुचिः ।
सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥ 27॥
वृषाही वृषभो विष्णु: वृषपर्वा वृषोदरः ।
वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुति-सागरः ॥ 28 ॥
सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेंद्रो वसुदो वसुः ।
नैक-रूपो बृहद-रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥ 29 ॥
ओज: तेजो-द्युतिधरः प्रकाश-आत्मा प्रतापनः ।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मंत्र:चंद्रांशु: भास्कर-द्युतिः ॥ 30 ॥
अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिंदुः सुरेश्वरः ।
औषधं जगतः सेतुः सत्य-धर्म-पराक्रमः ॥ 31 ॥
भूत-भव्य-भवत्-नाथः पवनः पावनो-अनलः ।
कामहा कामकृत-कांतः कामः कामप्रदः प्रभुः ॥ 32 ॥
युगादि-कृत युगावर्तो नैकमायो महाशनः ।
अदृश्यो व्यक्तरूपश्च सहस्रजित्-अनंतजित ॥ 33 ॥
इष्टो विशिष्टः शिष्टेष्टः शिखंडी नहुषो वृषः ।
क्रोधहा क्रोधकृत कर्ता विश्वबाहु: महीधरः ॥ 34 ॥
अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ।
अपाम निधिरधिष्टानम् अप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥ 35 ॥
स्कन्दः स्कन्द-धरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः ।
वासुदेवो बृहद भानु: आदिदेवः पुरंदरः ॥ 36 ॥
अशोक: तारण: तारः शूरः शौरि: जनेश्वर: ।

अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥ 37 ॥
पद्मनाभो-अरविंदाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत ।
महर्धि-ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुड़ध्वजः ॥ 38 ॥
अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हीरिः ।
सर्वलक्षण लक्षण्यो लक्ष्मीवान समितिंजयः ॥ 39 ॥
विक्षरो रोहितो मार्गो हेतु: दामोदरः सहः ।
महीधरो महाभागो वेगवान-अमिताशनः ॥ 40 ॥
उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः ।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥ 41 ॥
व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो-ध्रुवः ।
परर्रद्धि परमस्पष्टः तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥ 42 ॥
रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयो-अनयः ।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठ: धर्मो धर्मविदुत्तमः ॥ 43 ॥
वैकुंठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः ।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ॥ 44॥
ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः ।
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्व-दक्षिणः ॥ 45 ॥
विस्तारः स्थावर: स्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम ।
अर्थो अनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥ 46 ॥
अनिर्विण्णः स्थविष्ठो-अभूर्धर्म-यूपो महा-मखः ।
नक्षत्रनेमि: नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥ 47 ॥
यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः ।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमं ॥ 48 ॥
सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत ।
मनोहरो जित-क्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥ 49 ॥
स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत ।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥ 50 ॥

धर्मगुब धर्मकृद धर्मी सदसत्क्षरं-अक्षरं ।
अविज्ञाता सहस्त्रांशु: विधाता कृतलक्षणः ॥ 51 ॥
गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद गुरुः ॥ 52 ॥
उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
शरीर भूतभृद्भोक्ता कपींद्रो भूरिदक्षिणः ॥ 53 ॥
सोमपो-अमृतपः सोमः पुरुजित पुरुसत्तमः ।
विनयो जयः सत्यसंधो दाशार्हः सात्वतां पतिः ॥ 54 ॥
जीवो विनयिता-साक्षी मुकुंदो-अमितविक्रमः ।
अम्भोनिधिरनंतात्मा महोदधिशयो-अंतकः ॥ 55 ॥
अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः ।
आनंदो नंदनो नंदः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ॥ 56 ॥
महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः ।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाश्रृंगः कृतांतकृत ॥ 57 ॥
महावराहो गोविंदः सुषेणः कनकांगदी ।
गुह्यो गंभीरो गहनो गुप्तश्चक्र-गदाधरः ॥ 58 ॥
वेधाः स्वांगोऽजितः कृष्णो दृढः संकर्षणो-अच्युतः ।
वरूणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ॥ 59 ॥
भगवान भगहानंदी वनमाली हलायुधः ।
आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णु:-गतिसत्तमः ॥ 60 ॥
सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः ।
दिवि:स्पृक् सर्वदृक व्यासो वाचस्पति:अयोनिजः ॥ 61 ॥
त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक ।
संन्यासकृत्-छमः शांतो निष्ठा शांतिः परायणम ॥ 62 ॥
शुभांगः शांतिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः ।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ॥ 63 ॥
अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृत्-शिवः ।

श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतां वरः ॥ 64 ॥
श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः ।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमान्-लोकत्रयाश्रयः ॥ 65 ॥
स्वक्षः स्वंगः शतानंदो नंदिर्ज्योतिर्गणेश्वर: ।
विजितात्मा विधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः ॥ 66 ॥
उदीर्णः सर्वत:चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः ।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥ 67 ॥
अर्चिष्मानर्चितः कुंभो विशुद्धात्मा विशोधनः ।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥ 68 ॥
कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः ।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः ॥ 69 ॥
कामदेवः कामपालः कामी कांतः कृतागमः ।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णु: वीरोअनंतो धनंजयः ॥ 70 ॥
ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृत् ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः ।
ब्रह्मविद ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ॥ 71 ॥
महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः ।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥ 72 ॥
स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः ।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥ 73 ॥
मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः ।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ॥ 74 ॥
सद्गतिः सकृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः ।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥ 75 ॥
भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयो-अनलः ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरो-अथापराजितः ॥ 76 ॥
विश्वमूर्तिमहार्मूर्ति:दीप्तमूर्ति: अमूर्तिमान ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥ 77 ॥

एको नैकः सवः कः किं यत-तत-पद्मनुत्तमम ।
लोकबंधु: लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥ 78 ॥
सुवर्णोवर्णो हेमांगो वरांग: चंदनांगदी ।
वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरऽचलश्चलः ॥ 79 ॥
अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक ।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥ 80 ॥
तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः ।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकश्रृंगो गदाग्रजः ॥ 81 ॥
चतुर्मूर्ति: चतुर्बाहु:श्चतुर्व्यूह:चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भाव:चतुर्वेदविदेकपात ॥ 82 ॥
समावर्तो-अनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥ 83 ॥
शुभांगो लोकसारंगः सुतंतुस्तंतुवर्धनः ।
इंद्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥ 84 ॥
उद्भवः सुंदरः सुंदो रत्ननाभः सुलोचनः ।
अर्को वाजसनः श्रृंगी जयंतः सर्वविज-जयी ॥ 85 ॥
सुवर्णबिंदुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः ।
महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधः ॥ 86 ॥
कुमुदः कुंदरः कुंदः पर्जन्यः पावनो-अनिलः ।
अमृतांशो-अमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥ 87 ॥
सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
न्यग्रोधो औदुंबरो-अश्वत्थ:चाणूरांध्रनिषूदनः ॥ 88 ॥
सहस्रार्चिः सप्तजिव्हः सप्तैधाः सप्तवाहनः ।
अमूर्तिरनघो-अचिंत्यो भयकृत्-भयनाशनः ॥ 89 ॥
अणु:बृहत कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान् ।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्धनः ॥ 90 ॥
भारभृत्-कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः ।

आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥ 91 ॥
धनुर्धरो धनुर्वेदो दंडो दमयिता दमः ।
अपराजितः सर्वसहो नियंता नियमो यमः ॥ 92 ॥
सत्त्ववान सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः ।
अभिप्रायः प्रियार्हो-अर्हः प्रियकृत-प्रीतिवर्धनः ॥ 93 ॥
विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग विभुः ।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥ 94 ॥
अनंतो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः ।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकधिष्ठानमद्भुतः ॥ 95॥
सनात्-सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः ।
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत स्वस्ति स्वस्तिभुक स्वस्तिदक्षिणः ॥ 96 ॥
अरौद्रः कुंडली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः ।
शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ॥ 97 ॥
अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः ।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥ 98 ॥
उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः ।
वीरहा रक्षणः संतो जीवनः पर्यवस्थितः ॥ 99 ॥
अनंतरूपो-अनंतश्री: जितमन्यु: भयापहः ।
चतुरश्रो गंभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ॥ 100 ॥
अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मी: सुवीरो रुचिरांगदः ।
जननो जनजन्मादि: भीमो भीमपराक्रमः ॥101॥
आधारनिलयो-धाता पुष्पहासः प्रजागरः ।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥102॥
प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत प्राणजीवनः ।
तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्यु जरातिगः ॥103॥
भूर्भवः स्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः ।
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञांगो यज्ञवाहनः ॥104॥

यज्ञभृत्-यज्ञकृत्-यज्ञी यज्ञभुक्-यज्ञसाधनः ।
यज्ञान्तकृत-यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥105॥
आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः ।
देवकीनंदनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥106॥
शंखभृन्नंदकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ।
रथांगपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥107॥
सर्वप्रहरणायुध ॐ नमः इति।
वनमालि गदी शार्ङ्गी शंखी चक्री च नंदकी ।
श्रीमान् नारायणो विष्णु: वासुदेवोअभिरक्षतु ।

शास्त्रों में विष्णु को पालन अर्थात जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले देव के रूप में परिभाषित किया गया है। अर्थात चाहे वह मनुष्य के विद्या ग्रहण की बात हो या फिर विवाह की। विवाह के पश्चात संतान प्राप्ति की बात हो या फिर संतान की उन्नति की, हर कार्य में भगवान विष्णु की कृपा के बगैर सफलता नहीं मिल सकती। भगवान विष्णु को बृहस्पति या गुरु भी कहा गया है। नक्षत्र विज्ञान में बृहस्पति को सबसे बड़ा ग्रह बताया गया है। ज्योतिष शास्त्र में तो कन्या के विवाह का कारक ग्रह बृहस्पति को ही माना गया है।

महाकाव्य महाभारत के 'अनुशासन पर्व' नामक अध्याय में भगवान विष्णु के एक हजार नामों का उल्लेख है। कहा जाता है कि जब भीष्म पितामह बाणों की शय्या पर लेटे अपनी इच्छा मृत्यु के काल चयन की प्रतीक्षा कर रहे थे, तब उन्होंने ये एक हजार नाम युधिष्ठिर को बताये थे। तथ्य यह है कि ज्ञान अर्जन की अभिलाषा में जब युधिष्ठिर ने भीष्मपितामह से यह पूछा कि 'किमेकम दैवतम लोके, किम वाप्येकम परयणम' अर्थात कौन ऐसा है, जो सर्व व्याप्त है और सर्व शक्तिमान है? तो पितामह ने अपने संवाद में भगवान विष्णु के इस एक हजार नामों का उल्लेख किया और कहा कि प्रत्येक युग में सभी अभीष्ठ की प्राप्ति के लिये, इन एक हजार नामों का श्रवण और पठन सबसे उत्तम होगा। विष्णु सहस्रनाम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हिन्दू धर्म के दो प्रमुख सम्प्रदाय शैव और वैष्णवों के मध्य यह सेतु का कार्य करता है।

विष्णु सहस्रनाम में विष्णु को शम्भु, शिव, ईशान और रुद्र के नाम से सम्बोधित किया है, जो इस तथ्य को प्रतिपादित करता है कि शिव और विष्णु एक ही है। आदि शंकराचार्य ने भी इस बात की पुष्टि की है। पाराशर भट्टर ने विष्णु को शिव के नाम से सम्बोधित किये जाने को विशेषण बताया है, अर्थात शिव रूपी शाश्वत सत्य को विष्णु के पर्यायवाची के रूप में व्यक्त किया गया है। विष्णु सहस्रनाम के आधार पर 'कैवल्य उपनिषद' में विष्णु को ब्रह्मा और शिव का स्वरूप बताया गया है।

कर्म प्रधान है सहस्रनाम। सनातन सम्प्रदाय में धर्म को कभी भी जन के समूह के रूप में व्यक्त नहीं

किया गया है। धर्म को विशेष रूप से मनुष्य के कर्तव्य के निष्पादन के रूप में प्रकट किया गया है, जिसे हम कर्म भी कहते हैं। विष्णु सहस्रनाम भी कर्म प्रधान है अर्थात इन एक हजार नामों में मनुष्य के मानव धर्म को बताया गया है। मनुष्य द्वारा मानसिक और शारीरिक रूप से सम्पादित होने वाले कर्मों की विवेचना और उनके फलों का उल्लेख है। जैसे सहस्रनाम में 135वां नाम 'धर्माध्यक्ष' है। अर्थ है कि धर्म का निर्वहन अर्थात कर्म के अनुसार मनुष्य को पुरस्कार या दंड देने वाले देव। इसी तरह 32वां नाम 'विधाता' और 609वां नाम 'भावना' इस तथ्य को प्रतिपादित करते हैं। 'ब्रह्म सूत्र' नामक ग्रंथ में भी धर्म को कर्म की प्रकृति की श्रेणी बताते हुए विष्णु सहस्रनाम का उल्लेख किया गया है।

एकश्लोकी विष्णु सहस्रनाम स्त्रोत्र मंत्र

नमोऽस्वनन्ताय सहस्त्र मूर्तये, सहस्त्रपादाक्षि शिरोरु बाहवे।
सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटि युग धारिणे नमः।।

यह एक श्लोक है, जिस का प्रभाव उतना ही है, जितना कि विष्णु सहस्रनाम स्त्रोत्र का है। यदि प्रतिदिन प्रातः काल इस एक श्लोक का पाठ किया जाये तो जीवन में आने वाली कठिनाइयों से मुक्ति मिलती है।

प्रत्येक समस्या का समाधान छिपा है इस स्तोत्र में। विष्णु सहस्रनाम चूंकि संस्कृत में है अतः संस्कृत नहीं जानने वालों के लिए इसका उच्चारण भी कठिन है, अतः यदि कोई इसका श्रवण मात्र भी करे तो उसे लाभ अवश्य मिलता है। वे लोग जो आर्थिक विपदा से गुजर रहे हैं, कर्ज की अधिकता है और पारिवारिक शांति भी नहीं है, ऐसे लोग यदि नित्य इस स्त्रोत्र का श्रवण भी करते हैं तो समस्या से मुक्ति मिलती है। शास्त्रों में लिखा गया है कि केले के पेड़ को विष्णु स्वरूप मान कर यदि प्रत्येक गुरुवार को पूजा की जाये और उसके नीच बैठ कर विष्णु सहस्रनाम का पाठ किया जाये तो विवाह में आ रही बाधा दूर होती है। जिन कन्याओं का गुरु नीच का है या राहुयुक्त है, वे यदि विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें तो यह दोष दूर होता है और योग्य वर मिलता है। ग्रंथों में यह भी उल्लेख है कि यकृत यानी लीवर से सम्बंधित व्याधि जैसे पीलिया, हेपेटाइटिस या सिरोसिस आदि में भी विष्णु सहस्रनाम के पाठ से लाभ मिलता है।

अभ्यास प्रश्न -

1.विवस्वान् किसका पर्याय है?

क. आदित्य का ख. शिव का ग. चन्द्रमा का घ. विष्णु का

2. सहस्र का अर्थ क्या है?

क. दस हजार ख. १००० ग. ३००० घ. एक लाख

3. श्रीशः किसका नाम है?

क. विष्णु ख. शिव ग. सूर्य घ. रूद्र

4. विष्णुसहस्रनाम पाठ कहाँ से लिया गया है?

क. महाभारत ख. रामायण ग. गीता घ. उपनिषद

4.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि आदित्यहृदयस्तोत्र श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण के युद्धकाण्ड के 105वें सर्ग से लिया गया है। जब भगवान् श्रीराम के साथ रावण का युद्ध हो रहा था तब विविध अस्त्र शस्त्रों के प्रयोग करने पर भी जब रावण की मृत्यु नहीं हो पा रही थी, तब श्रीराम जी को कुछ चिन्ता होने लगी। उसी समय भगवत्कृपा से अगस्त्य ऋषि का आगमन हुआ तथा वे श्रीराम जी को चिन्तातुर देखकर इस आदित्य-हृदय-स्तोत्र का उपदेश किये जिसके प्रभाव से सूर्य के प्रसन्न होने पर भगवान् श्रीराम रावण को मारकर विजय को प्राप्त किये। इसमें कुल 31 श्लोक हैं। देखिये! सामान्यतः देवता की परिभाषा - जो दान देने वाला है, प्रकाशरूप (तेजोमय) एवं द्युलोक (स्वर्ग) में निवास करने वाला है उसे ही देवता कहते हैं। निरुक्तशास्त्र के अनुसार वैदिक देवता 33 होते हैं, जिनमें 11 पृथिवीस्थानीय, 11 अन्तरिक्षस्थानीय एवं 11 द्युस्थानीय देवता है। इन्हीं वैदिक देवताओं का विकास पुराणों में शिव, विष्णु आदि के रूप में हुआ है। मुख्यरूप से वैदिक देवता 33 ही होते हैं। जैसा कि निरुक्तग्रन्थ में लिखा है ''देवो दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा द्युस्थानो भवतीति वा''। मनुष्य का सम्बन्ध देवताओं से सनातन से है क्योंकि सृष्टि के समय ब्रह्मा जी ने स्पष्ट रूप से मनुष्यों को कहा कि तुम यज्ञ में प्रदत्त हवि एवं स्तुति आदि के द्वारा देवताओं को सन्तुष्ट करो, देवता प्रसन्न होकर तुम्हारे सभी मनोरथों को पूर्ण करेंगे। इस प्रकार परस्पर एक दूसरे को सुखी सम्पन्न बनाते हुए परम कल्याण को प्राप्त करो। विष्णुसहस्रनाम महाभारत से लिया गया है तथा इसमें भगवान विष्णु के १००० नामों का उल्लेख है। यह अनेक प्रकार के अभिलाषाओं को पूर्ण करने में सहायक होता है।

4.6 पारिभाषिक शब्दावली

शब्द	**अर्थ**
विवस्वान	भगवान सूर्य का नाम
श्रीद:	श्री को देने वाला
श्रीश:	लक्ष्मीपति अर्थात् विष्णु

जगत्	संसार
समर	युद्ध
दृष्टवा	देखकर
युद्धाय	युद्ध के लिए
समुपस्थित	बराबर रूप से उपस्थित
ज्योतिषां पति	ज्योतिष शास्त्र के अधिपति अथवा आकाशस्थ ज्योतिर्पिण्डों के पति
तमोघ्नाय	अंधकार को हरने वाले
शत्रुघ्नाय	शत्रुओं का नाश करने वाले

4.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. ख

2. ख

3. क

4. ग

अभ्यास प्रश्न -2 के उत्तर

1.क

2. ख

3. क

4. क

4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 पुस्तक का नाम-सर्वदेव पूजापद्धति
लेखक का नाम- शिवदत्त मिश्र
प्रकाशक का नाम- चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन वाराणसी

2 नित्यकर्म पूजा प्रकाश,
लेखक:- पं. बिहारी लाल मिश्र,
प्रकाशक:- गीताप्रेस, गोरखपुर।

3 अमृतवर्षा, नित्यकर्म, प्रभुसेवा
संकलन ग्रन्थ

प्रकाशक:- मल्होत्रा प्रकाशन, दिल्ली।

4 कर्मठगुरुः

लेखक - मुकुन्द वल्लभ ज्योतिषाचार्य

प्रकाशक - मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

4.9 सहायक पाठ्यसामग्री

नित्यकर्मपूजाप्रकाश – पं. बिहारी लाल मिश्र, गीताप्रेस।

महालक्ष्मीपूजन विधि – गीता प्रेस

4.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. आदित्यहृदय स्तोत्र का अर्थ सहित लेखन कीजिये।
2. विष्णुसहस्र पाठ का महत्व निरूपण कीजिये।
3. आदित्यहृदय स्तोत्र का परिचय दीजिये।
4. विष्णुसहस्रनाम पाठ का लेखन कीजिये।

इकाई – 5 शिवमहिम्न स्तोत्र पाठ

इकाई की संरचना

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 शिवमहिम्न स्तोत्र
5.4 सारांश
5.5 पारिभाषिक शब्दावली
5.6 बोध प्रश्नों के उत्तर
5.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
5.8 सहायक पाठ्यसामग्री
5.9 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई CVK-02 के प्रथम खण्ड की पाँचवीं इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – शिवमहिम्नस्तोत्रम। इसके पूर्व की इकाईयों में आपने गणेशऽथर्वशीर्ष, श्रीसूक्त, आदित्यहृदयस्तोत्र एवं विष्णुसहस्रनाम पाठ के बारे में अध्ययन कर लिया है। अब आप समस्त विद्याओं के गुरु भगवान शिव जी से सम्बन्धित स्तोत्र पाठ का अध्ययन करने जा रहे हैं।

शिवमहिम्न स्तोत्र पाठ में भगवान शिव की महिमा का विवेचन किया गया है। उनके समस्त स्वरूपों का वर्णन इसमें बड़े सुन्दर एवं लालित्य के साथ किया गया है।

आइए इस इकाई में हम शिवमहिम्नस्तोत्र के पाठ का अध्ययन करते हैं।

5.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

1. समझा सकेंगे कि शिवमहिम्नस्तोत्र किसे कहते हैं।
2. शिवमहिम्न स्तोत्र पाठ का प्रयोग कहाँ-कहाँ होता हैं।
3. शिवमहिम्न स्तोत्र का महत्व क्या है।
4. विष्णुसहस्रनाम पाठ को जान लेंगे।
5. आदित्यहृदयस्तोत्र एवं विष्णुसहस्रनाम पाठ विधि के साथ-साथ उसका महत्व भी जान लेंगे।

5.3 शिवमहिम्न स्तोत्र

एक समय चित्ररथ नाम के राजा ने एक अद्भुत सुंदर बाग का निर्माण करवाया। जिसमें विभिन्न प्रकार के सुंदर फूल लग रहे थे। प्रत्येक दिन राजा उन पुष्पों से शिव जी की पूजा करते थे। एक दिन पुष्पदंत नामक गन्धर्व जो इंद्र के दरबार में गायक था, उद्यान की तरफ से जाते हुए फूलों की सुंदरता से मोहित हो कर उन्हें चुराने लगा। परिणाम स्वरुप राजा चित्ररथ भगवान शिव को फूल अर्पित नहीं कर पा रहे थे। राजा बहुत प्रयास के बाद भी चोर को पकड़ने में असफल रहे क्योंकि गन्धर्व पुष्पदंत में अदृश्य रहने की शक्ति थी। अंत में राजा ने अपने बगीचे में शिव निर्माल्य फैला दिया। अनजाने में पुष्पदंत शिव निर्माल्य के ऊपर से चला गया, जिससे उसे भगवान शिव का कोप भाजन बनाना पड़ा। फलतः पुष्पदंत की दिव्य शक्तियाँ नष्ट हो गयीं। उसने क्षमा याचना के लिए भगवान शिव की महिमा का गुणगान करते हुए स्तुति की। भगवान शिव की कृपा से पुष्पदंत की दिव्य शाक्तियाँ लौट आयीं। पुष्पदंत द्वारा रचित भगवान शिव की स्तुति 'शिव महिम्न्स्तोत्रं' के नाम से प्रसिद्द हुई। ४३ क्षन्दो का यह स्तोत्र शिव भक्तों को अत्यंत प्रिय है।

मूल पाठ -

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी ।
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।।
अथाऽवाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन् ।
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ।।१।।

अर्थ - हे प्रभु ! बड़े बड़े विद्वान और योगीजन आपके महिमा को नहीं जान पाये तो मैं तो एक साधारण बालक हूँ, मेरी क्या गिनती ? लेकिन क्या आपके महिमा को पूर्णतया जाने बिना आपकी स्तुति नहीं हो सकती ? मैं ये नहीं मानता क्योंकि अगर ये सच है तो फिर ब्रह्मा की स्तुति भी व्यर्थ कहलाएगी। मैं तो ये मानता हूँ कि सबको अपनी मति अनुसार स्तुति करने का अधिकार है। इसलिए हे भोलेनाथ ! आप कृपया मेरे हृदय के भाव को देखें और मेरी स्तुति का स्वीकार करें।

अतीतः पंथानं तव च महिमा वाङ्मनसयोः ।
अतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः ।
पदे त्ववर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ।।२।।

अर्थात् हे शिव !!! आपकी व्याख्या न तो मन, न ही वचन द्वारा संभव है। आपके सन्दर्भ में वेद भी अचंभित हैं तथा 'नेति नेति' का प्रयोग करते हैं अर्थात ये भी नहीं और वो भी नहीं। आपकी महिमा और आपके स्वरूप को पूर्णतया जान पाना असंभव है, लेकिन जब आप साकार रूप में प्रकट होते हो तो आपके भक्त आपके स्वरूप का वर्णन करते नहीं थकते। ये आपके प्रति उनके प्यार और पूज्यभाव का परिणाम है।

मधुस्फीता वाचः परममृतं निर्मितवतः ।
तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः ।
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ।।३।।

अर्थात् हे वेद और भाषा के सृजक! आपने अमृतमय वेदों की रचना की है। इसलिए जब देवों के गुरु, बृहस्पति आपकी स्तुति करते है तो आपको कोई आश्चर्य नहीं होता। मै भी अपनी मति अनुसार आपके गुणानुवाद करने का प्रयास कर रहा हूँ। मैं मानता हूँ कि इससे आपको कोई आश्चर्य नहीं होगा, मगर मेरी वाणी इससे अधिक पवित्र और लाभान्वित अवश्य होगी।

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत् ।
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं ।
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ।।४।।

अर्थ - हे देव ! आप इस सृष्टि के सृजनहार है, पालनहार है और विसर्जनकार है। इस प्रकार आपके तीन स्वरूप है – ब्रह्मा, विष्णु और महेश तथा आप में तीन गुण है – सत्व, रज और तम। वेदों में इनके बारे में वर्णन किया गया है फिर भी अज्ञानी लोग आपके बारे में उटपटांग बातें करते रहते है। ऐसा करने से भले उन्हें संतुष्टि मिलती हो, किन्तु यथार्थ से वो मुँह नहीं मोड़ सकते।

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं ।
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ।।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसर दुःस्थो हतधियः ।
कुतर्कोऽयं कांश्चित् मुखरयति मोहाय जगतः ।।५।।

अर्थ - हे महादेव !!! मूर्ख लोग अक्सर तर्क करते रहते है कि ये सृष्टि की रचना कैसे हुई, किसकी इच्छा से हुई, किन वस्तुओं से उसे बनाया गया इत्यादि। उनका उद्देश्य लोगों में भ्रांति पैदा करने के अलावा कुछ नहीं है। सच पूछो तो ये सभी प्रश्नों के उत्तर आपकी दिव्य शक्ति से जुड़े है और मेरी सीमित शक्ति से उसे व्यक्त करना असंभव है।

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगतां ।
अधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो ।
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ।।६।।

अर्थ - हे प्रभु, आपके बिना ये सब लोक (सप्त लोक – भूः भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यं) का निर्माण क्या संभव है? इस जगत का कोई रचयिता न हो, ऐसा क्या संभव है?आपके अलावा इस सृष्टि का निर्माण भला कौन कर सकता है ?आपके अस्तित्व के बारे केवल मूर्ख लोगों को ही शंका हो सकती है।

त्रयी साङ्ख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति ।
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिल नानापथजुषां ।

नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ।।७।।

अर्थ - हे परमपिता !!! हे प्रभु ! आपको पाने के लिए अनगिनत मार्ग है – सांख्य मार्ग, वैष्णव मार्ग, शैव मार्ग, वेद मार्ग आदि । लोग अपनी रुचि के अनुसार कोई एक मार्ग को पसंद करते है। मगर आखिरकार ये सभी मार्ग, जैसे अलग अलग नदियों का पानी बहकर समुद्र में जाकर मिलता है, वैसे ही, आप तक पहुंचते है । सचमुच, किसी भी मार्ग का अनुसरण करने से आपकी प्राप्ति हो सकती है।

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः ।
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहितां ।
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ।।८।।

अर्थ - हे शिव !!! आपके भृकुटी के इशारे मात्र से सभी देवगण एश्वर्य एवं संपदाओं का भोग करते हैं। पर आपके स्वयं के लिए सिर्फ कुल्हाडी, बैल, व्याघ्रचर्म, शरीर पर भस्म तथा हाथ में खप्पर (खोपड़ी)! इससे ये फलित होता है कि जो आत्मानंद में लीन रहता है वो संसार के भोगपदार्थो में नहीं फँसता।

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं ।
परो ध्रौव्याऽध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव ।
स्तुवन् जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ।।९।।

अर्थ - हे त्रिपुरहंता !!! इस संसार के बारे में विभिन्न विचारकों के भिन्न-भिन्न मत हैं. कोई इसे नित्य जानता है तो कोई इसे अनित्य समझता है। लोग जो भी कहें, आपके भक्त तो आपको हमेंशा सत्य मानते है और आपकी भक्ति मे आनंद पाते है। मैं भी उनका समर्थन करता हूँ, चाहे किसी को मेरा ये कहना धृष्टता लगे, मुझे उसकी परवाह नहीं।

तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चिर्हरिरधः ।
परिच्छेतुं यातावनिलमनलस्कन्धवपुषः ।।
ततो भक्तिश्रद्धा-भरगुरु-गृणद्भ्यां गिरिश यत् ।
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ।।१०।।

अर्थ - हे प्रभु ! जब ब्रह्मा और विष्णु के बीच विवाद हुआ की दोनों में से कौन महान है, तब आपने उनकी परीक्षा करने के लिए अग्निस्तंभ का रूप लिया । ब्रह्मा और विष्णु – दोनों नें स्तंभ को अलग

अलग छोर से नापने की कोशिश की मगर वो सफल न हो सके। आखिरकार अपनी हार मानकर उन्होंने आपकी स्तुति की, जिससे प्रसन्न होकर आपने अपना मूल रूप प्रकट किया। सचमुच, अगर कोई सच्चे दिल से आपकी स्तुति करे और आप प्रकट न हों एसा कभी हो सकता है भला ?

अयत्नादासाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं ।
दशास्यो यद्बाहूनभृत-रणकण्डू-परवशान् ।।
शिरःपद्मश्रेणी-रचितचरणाम्भोरुह-बलेः ।
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ।।११।।

अर्थ - हे त्रिपुरान्तक !!! आपके परम भक्त रावण ने पद्म की जगह अपने नौ-नौ मस्तक आपकी पूजा में समर्पित कर दिये। जब वो अपना दसवाँ मस्तक काटकर अर्पण करने जा रहा था तब आपने प्रकट होकर उसको वरदान दिया। इस वरदान की वजह से ही उसकी भुजाओं में अटूट बल प्रकट हुआ और वो तीनो लोक में शत्रुओं पर विजय पाने में समर्थ रहा। ये सब आपकी दृढ भक्ति का नतीजा है।

अमुष्य त्वत्सेवा-समधिगतसारं भुजवनं ।
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।।
अलभ्यापातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि ।
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ।।१२।।

अर्थ - हे शिव !!! आपकी परम भक्ति से रावण अतुलित बल का स्वामी बन बैठा मगर इससे उसने क्या करना चाहा ? आपकी पूजा के लिए हर रोज कैलाश जाने का श्रम बचाने के लिए कैलाश को उठाकर लंका में गाढ़ देना चाहा। जब कैलाश उठाने के लिए रावण ने अपनी भूजाओं को फैलाया तब पार्वती भयभीत हो उठीं। उन्हें भयमुक्त करने के लिए आपने सिर्फ अपने पैर का अंगूठा हिलाया तो रावण जाकर पाताल में गिरा और वहाँ भी उसे स्थान नहीं मिला। सचमुच, जब कोई आदमी अनधिकृत बल या संपत्ति का स्वामी बन जाता है तो उसका उपभोग करने में विवेक खो देता है।

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीं ।
अधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः ।।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयोः।
न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ।।१३।।

अर्थ - हे शम्भो ! आपकी कृपा मात्र से ही बाणासुर दानव इन्द्रादि देवों से भी अधिक ऐश्वर्यशाली बन गया तथा तीनो लोकों पर राज्य किया। हे ईश्वर ! जो मनुष्य आपके चरण में श्रद्धाभक्तिपूर्वक

शीश रखता है उसकी उन्नति और समृद्धि निश्चित है।

अकाण्ड-ब्रह्माण्ड-क्षयचकित-देवासुरकृपा ।
विधेयस्याऽऽसीद् यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः ।।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो ।
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवन-भय-भङ्ग-व्यसनिनः ।।१४।।

अर्थ - हे प्रभु ! जब समुद्रमंथन हुआ तब अन्य मूल्यवान रत्नों के साथ महाभयानक विष निकला, जिससे समग्र सृष्टि का विनाश हो सकता था। आपने बड़ी कृपा करके उस विष का पान किया। विषपान करने से आपके कंठ में नीला चिन्ह हो गया और आप नीलकंठ कहलाये। परंतु हे प्रभु, क्या ये आपको कुरुप बनाता है ? कदापि नहीं, ये तो आपकी शोभा को और बढाता है। जो व्यक्ति औरों के दुःख दूर करता है उसमें अगर कोई विकार भी हो तो वो पूजा पात्र बन जाता है।

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे ।
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत् ।
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ।।१५।।

अर्थ - हे प्रभु !!! कामदेव के वार से कभी कोई भी नहीं बच सका चाहे वो मनुष्य हों, देव या दानव हों। पर जब कामदेव ने आपकी शक्ति समझे बिना आप की ओर अपने पुष्प बाण को साधा तो आपने उसे तत्क्षण ही भष्म कर दिया। श्रेष्ठ जनो के अपमान का परिणाम हितकर नहीं होता।

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं ।
पदं विष्णोर्भ्राम्यद् भुज-परिघ-रुग्ण-ग्रह-गणम् ।।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृत-जटा-ताडित-तटा ।
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ।।१६।।

अर्थ - हे नटराज !!! जब संसार के कल्याण हेतु आप तांडव करने लगते हैं तब समग्र सृष्टि भय के मारे कांप उठती है, आपके पदप्रहार से पृथ्वी अपना अंत समीप देखती है ग्रह नक्षत्र भयभीत हो उठते हैं। आपकी जटा के स्पर्श मात्र से स्वर्गलोग व्याकुल हो उठता है और आपकी भुजाओं के बल से वैंकुंठ में खलबली मच जाती है। हे महादेव ! आश्चर्य ही है कि आपका बल अतिशय कष्टप्रद है।

वियद्व्यापी तारा-गण-गुणित-फेनोद्गम-रुचिः।
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।।

जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमिति।

अनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥१७॥

अर्थ - गंगा नदी जब मंदाकिनी के नाम से स्वर्ग से उतरती है तब नभोमंडल में चमकते हुए सितारों की वजह से उसका प्रवाह अत्यंत आकर्षक दिखाई देता है, मगर आपके शिर पर सिमट जाने के बाद तो वह एक बिंदु समान दिखाई पडती है। बाद में जब गंगाजी आपकी जटा से निकलती है और भूमि पर बहने लगती है तब बड़े बड़े द्वीपों का निर्माण करती है। ये आपके दिव्य और महिमावान स्वरूप का ही परिचायक है।

अभ्यास प्रश्न –

1.शिवमहिम्न स्तोत्र किसके द्वारा रचित है।

क. व्यास ख. दुर्वासा ग. पुष्पदन्त घ. वशिष्ठ

2. पुष्पदन्त कौन थे?

क. मनुष्य ख. गन्धर्व ग. राक्षस घ. देवता

3. शिवमहिम्न स्तोत्र में मुख्य रूप से क्या है?

क. शिव की महिमा का गान ख. विष्णु की महिमा का गान ग. दुर्गा जी की महिमा का वर्णन घ. कोई नहीं

4. नीलकण्ठ किसका पर्याय है।

क. विष्णु का ख. मोर का ग. शिव का घ. ब्रह्मा का

5. शिवमहिम्न स्तोत्र में कुल कितने छन्द है?

क. ४२ ख.४३ ग.४४ घ. ४५

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो।

रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथ-चरण-पाणिः शर इति॥

दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बर विधिः।

विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥१८॥

अर्थ - हे शिव !!! आपने (तारकासुर के पुत्रों द्वारा रचित) तीन नगरों का विध्वंश करने हेतु पृथ्वी को

रथ, ब्रह्मा को सारथी, सूर्य चन्द्र को दो पहिये मेरु पर्वत का धनुष बनाया और विष्णुजी का बाण लिया। हे शम्भू ! इस वृहत प्रयोजन की क्या आवश्यकता थी ? आपके लिए तो संसार मात्र का विलय करना अत्यंत ही छोटी बात है। आपको किसी सहायता की क्या आवश्यकता? आपने तो केवल (अपने नियंत्रण में रही) शक्तियों के साथ खेल किया था, लीला की थी।

हरिस्ते साहस्रं कमल बलिमाधाय पदयोः ।
यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषः ।
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ।।१९।।

अर्थ - जब भगवान विष्णु ने आपकी सहस्र कमलों (एवं सहस्र नामों) द्वारा पूजा प्रारम्भ की तो उन्होंने एक कमल कम पाया। तब भक्ति भाव से विष्णुजी ने अपनी एक आँख को कमल के स्थान पर अर्पित कर दिया। उनकी इसी अदम्य भक्ति ने सुदर्शन चक्र का स्वरूप धारण कर लिया जिसे भगवान विष्णु संसार रक्षार्थ उपयोग करते हैं। हे प्रभु, आप तीनों लोक (स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल) की रक्षा के लिए सदैव जाग्रत रहते हो।

क्रतौ सुप्ते जाग्रत् त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां ।
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदान-प्रतिभुवं ।
श्रुतौ श्रद्धां बध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ।।२०।।

अर्थ - हे देवाधिदेव !!! यज्ञ की समाप्ति होने पर आप यज्ञकर्ता को उसका फल देते हो। आपकी उपासना और श्रद्धा बिना किया गया कोई कर्म फलदायक नही होता। यही वजह है कि वेदों मे श्रद्धा रखके और आपको फलदाता मानकर हर कोई अपने कार्यो का शुभारंभ करते है।

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतां ।
ऋषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुर-गणाः ।।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफल-विधान-व्यसनिनः ।
ध्रुवं कर्तुं श्रद्धा विधुरमभिचाराय हि मखाः ।।२१।।

अर्थ - हे प्रभु !!! यद्यपि आपने यज्ञ कर्म और फल का विधान बनाया है तद्यपि जो यज्ञ शुद्ध विचारों और कर्मो से प्रेप्रित न हो और आपकी अवहेलना करने वाला हो उसका परिणाम कदाचित विपरीत और अहितकर ही होता है इसीलिए दक्षप्रजापति के महायज्ञ यज्ञ को जिसमें स्वयं ब्रह्मा तथा

अनेकानेक देवगण तथा ऋषि-मुनि सम्मिलित हुए, आपने नष्ट कर दिया क्योंकि उसमें आपका सम्मान नहीं किया गया। सचमुच, भक्ति के बिना किये गये यज्ञ किसी भी यज्ञकर्ता के लिए हानिकारक सिद्ध होते है।

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं।
गतं रोहिद् भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं।
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ।।२२।।

अर्थ - एक बार प्रजापिता ब्रह्मा अपनी पुत्री पर ही मोहित हो गए। जब उनकी पुत्री ने हिरनी का स्वरुप धारण कर भागने की कोशिश की तो कामातुर ब्रह्मा भी हिरन भेष में उसका पीछा करने लगे। हे शंकर ! तब आप ने व्याघ्र स्वरूप में धनुष-बाण ले ब्रह्मा को मार भगाया। आपके रौद्र रूप से भयभीत ब्रह्मा आकाश दिशा में अदृश्य अवश्य हुए परन्तु आज भी वह आपसे भयभीत हैं।

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत् ।
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत-देहार्ध-घटनात् ।
अवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ।।२३।।

अर्थ - हे त्रिपुरानाशक ! जब कामदेव ने आपकी तपश्चर्या में बाधा डालनी चाही और आपके मन में पार्वती के प्रति मोह उत्पन्न करने की कोशिश की, तब आपने कामदेव को तृणवत् भस्म कर दिया। अगर तत्पश्चात् भी पार्वती ये समझती है कि आप उन पर मुग्ध है क्योंकि आपके शरीर का आधा हिस्सा उनका है, तो ये उनका भ्रम होगा। सच पूछो तो हर युवती अपनी सुंदरता पे मुग्ध होती है।

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराः ।
चिता-भस्मालेपः स्रगपि नृकरोटी-परिकरः ।।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं ।
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि ।।२४।।

अर्थ - हे भोलेनाथ ! आप श्मशान में रमण करते हैं, भूत - प्रेत आपके मित्र हैं, आप चिता भष्म का लेप करते हैं तथा मुंडमाल धारण करते हैं। ये सारे गुण ही अशुभ एवं भयावह जान पड़ते हैं। तब भी हे श्मशान निवासी ! उन भक्तों जो आपका स्मरण करते है, आप सदैव शुभ और मंगल करते है।

मनः प्रत्यक् चित्ते सविधमविधायात्त-मरुतः ।

प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमद-सलिलोत्सङ्गति-दृशः ।।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये ।
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान् ।।२५।।

अर्थ - हे योगिराज !!! आपको पाने के लिए योगी क्या क्या नहीं करते ? बस्ती से दूर, एकांत में आसन जमाकर, शास्त्रों में बताई गई विधि के अनुसार प्राण की गति को नियंत्रित करने की कठिन साधना करते है और उसमें सफल होने पर हर्षाश्रु बहाते है। सचमुच, सभी प्रकार की साधना का अंतिम लक्ष्य आपको पाना ही है।

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहः ।
त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च ।।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरं ।
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत् त्वं न भवसि ।।२६।।

अर्थ - हे शिव !!! आप ही सूर्य, चन्द्र, धरती, आकाश, अग्नि, जल एवं वायु हैं। आप ही आत्मा भी हैं। हे देव ! मुझे ऐसा कुछ भी ज्ञात नहीं जो आप न हों।

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरान् ।
अकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृति ।।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः ।
समस्त-व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ।।२७।।

हे सर्वेश्वर !!! ॐ शब्द अ, ऊ, म से बना है। ये तीन शब्द तीन लोक – स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल; तीन देव – ब्रह्मा, विष्णु और महेश तथा तीन अवस्था – स्वप्न, जागृति और सुषुप्ति के द्योतक है। लेकिन जब पूरी तरह से ॐ कार का ध्वनि निकलता है तो ये आपके तुरीय पद (तीनों से पर) को अभिव्यक्त करता है।

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहान् ।
तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि ।
प्रियायास्मैधाम्ने प्रणिहित-नमस्योऽस्मि भवते ।।२८।।

हे शिव ! वेद एवं देवगण आपकी इन आठ नामों से वंदना करते हैं – भव, सर्व, रूद्र , पशुपति, उग्र, महादेव, भीम, एवं इशान। हे शम्भू ! मैं भी आपकी इन नामों की भावपूर्वक स्तुति करता हूँ।

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमः ।
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमः ।
नमः सर्वस्मै ते तदिदमतिसर्वाय च नमः ।।२९।।

हे एकांतप्रिय प्रभु ! आप सब से दूर हैं फिर भी सब के पास है। हे कामदेव को भस्म करनेवाले प्रभु ! आप अति सूक्ष्म है फिर भी विराट है। हे तीन नेत्रोंवाले प्रभु ! आप वृद्ध है और युवा भी है। हे महादेव ! आप सब में है फिर भी सब से पर है। आपको मेरा प्रणाम है।

बहुल-रजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः ।
प्रबल-तमसे तत् संहारे हराय नमो नमः ।।
जन-सुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः ।
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ।।३०।।

हे प्रभु ! मैं आपको रजोगुण से युक्त सृजनकर्ता जान कर आपके ब्रह्मा स्वरूप को नमन करता हूँ। तमोगुण को धारण करके आप जगत का संहार करते हो, आपके उस रुद्र स्वरूप को मैं नमन करता हूँ। सत्वगुण धारण करके आप लोगों के सुख के लिए कार्य करते हो, आपके उस विष्णु स्वरूप को नमस्कार है। इन तीनों गुणों से पर आपका त्रिगुणातीत स्वरूप है, आपके उस शिव स्वरूप को मेरा नमस्कार है।

कृश-परिणति-चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं ।
क्व च तव गुण-सीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद् ।
वरद चरणयोस्ते वाक्य-पुष्पोपहारम् ।।३१।।

हे वरदाता (शिव) ! मेरा मन शोक, मोह और दुःख से संतप्त तथा क्लेश से भरा पड़ा है। मैं दुविधा में हूँ कि ऐसे भ्रमित मन से मैं आपके दिव्य और अपरंपार महिमा का गान कैसे कर पाउँगा ? फिर भी आपके प्रति मेरे मन में जो भाव और भक्ति है उसे अभिव्यक्त किये बिना मैं नहीं रह सकता। अतः ये स्तुति की माला आपके चरणों में अर्पित करता हूँ।

असित-गिरि-समं स्यात् कज्जलं सिन्धु-पात्रे ।
सुर-तरुवर-शाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं ।

तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ।।३२।।

यदि समुद्र को दवात बनाया जाय, उसमें काले पर्वत की स्याही डाली जाय, कल्पवृक्ष के पेड की शाखा को लेखनी बनाकर और पृथ्वी को कागज़ बनाकर स्वयं ज्ञान स्वरूपा माँ सरस्वती दिनरात आपके गुणों का वर्णन करें तो भी आप के गुणों की पूर्णतया व्याख्या करना संभव नहीं है।

असुर-सुर-मुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दु-मौलेः ।
ग्रथित-गुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।।
सकल-गण-वरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानः ।
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ।।३३।।

हे प्रभु ! आप सुर, असुर और मुनियों के पूजनीय है, आपने मस्तक पर चंद्र को धारण किया है, और आप सभी गुणों से परे है। आपकी इसी दिव्य महिमा से प्रभावित होकर मैं, पुष्पंदत गंधर्व, आपकी स्तुति करता हूँ।

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत् ।
पठति परमभक्त्या शुद्ध-चित्तः पुमान् यः ।।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र ।
प्रचुरतर-धनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ।।३४।।

पवित्र और भक्तिभावपूर्ण हृदय से जो मनुष्य इस स्तोत्र का नित्य पाठ करेगा, तो वो पृथ्वीलोक में अपनी इच्छा के अनुसार धन, पुत्र, आयुष्य और कीर्ति को प्राप्त करेगा। इतना ही नहीं, देहत्याग के पश्चात् वो शिवलोक में गति पाकर शिवतुल्य शांति का अनुभव करेगा । शिवमहिम्न स्तोत्र के पठन से उसकी सभी लौकिक व पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होंगी।

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ।।३५।।

शिव से श्रेष्ठ कोइ देव नहीं, शिवमहिम्न स्तोत्र से श्रेष्ठ कोइ स्तोत्र नहीं है, भगवान शंकर के नाम से अधिक महिमावान कोई मंत्र नहीं है और ना ही गुरु से बढकर कोई पूजनीय तत्व।

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नस्तव पाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।।३६।।

शिवनहिम्न स्तोत्र का पाठ करने से जो फल मिलता है वो दीक्षा या दान देने से, तप करने से, तीर्थाटन करने से, शास्त्रों का ज्ञान पाने से तथा यज्ञ करने से कहीं अधिक है।

कुसुमदशन-नामा सर्व-गन्धर्व-राजः ।
शशिधरवर-मौलेर्देवदेवस्य दासः ।।
स खलु निज-महिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात् ।
स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्य-दिव्यं महिम्नः ।।३७।।

पुष्पदन्त गंधर्वों का राजा, चन्द्रमोलेश्वर शिव जी का परम भक्त था। मगर भगवान शिव के क्रोध की वजह से वह अपने स्थान से च्युत हुआ। महादेव को प्रसन्न करने के लिए उसने ये महिम्नस्तोत्र की रचना की है।

सुरगुरुमभिपूज्य स्वर्ग-मोक्षैक-हेतुं ।
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्य-चेताः ।।
व्रजति शिव-समीपं किन्नरैः स्तूयमानः ।
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ।।३८।।

जो मनुष्य अपने दोनों हाथों को जोड़कर, भक्तिभावपूर्ण, इस स्तोत्र का पठन करेगा, तो वह स्वर्ग-मुक्ति देनेवाले, देवता और मुनिओं के पूज्य तथा किन्नरों के प्रिय ऐसे भगवान शंकर के पास अवश्य जायेगा। पुष्पदंत द्वारा रचित यह स्तोत्र अमोघ और निश्चित फल देनेवाला है।

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्व-भाषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि सर्वमीश्वरवर्णनम् ।।३९।।

पुष्पदंत गन्धर्व द्वारा रचित, भगवान शिव के गुणानुवाद से भरा, मनमोहक, अनुपम और पुण्यप्रदायक स्तोत्र यहाँ पर संपूर्ण होता है।

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्कर-पादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ।।४०।।

हे प्रभु ! वाणी के माध्यम से की गई मेरी यह पूजा आपके चरणकमलों में सादर अर्पित है । कृपया इसका स्वीकार करें और आपकी प्रसन्नता मुझ पर बनाये रखें।

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ।।४१।।

हे शिव ! हे महेश्वर !!! मैं आपके वास्तविक स्वरुप् को नहीं जानता। लेकिन आप जैसे भी है, जो भी है, मैं आपको प्रणाम करता हूँ।

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः ।

सर्वपाप-विनिर्मुक्तः शिव लोके महीयते ।।४२।।

जो इस स्तोत्र का दिन में एक, दो या तीन बार पाठ करता है वह सर्व प्रकार के पाप से मुक्त हो जाता है तथा शिव लोक को प्राप्त करता है।

श्री पुष्पदन्त-मुख-पङ्कज-निर्गतेन ।

स्तोत्रेण किल्बिष-हरेण हर-प्रियेण ।।

कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन ।

सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ।।४३।।

पुष्पदंत के मुखपंकज से उदित, पाप का नाश करनेवाली, भगवान शंकर की अतिप्रिय यह स्तुति का जो पठन करेगा, गान करेगा या उसे सिर्फ अपने स्थान में रखेगा, तो भोलेनाथ शिव उन पर अवश्य प्रसन्न होंगे।

5.5 सारांश

इस इकाई में शिवमहिम्न स्तोत्र पाठ का वर्णन किया गया है। एक समय चित्ररथ नाम के राजा ने एक अद्भुत सुंदर बाग का निर्माण करवाया। जिसमें विभिन्न प्रकार के सुंदर फूल लग रहे थे। प्रत्येक दिन राजा उन पुष्पों से शिव जी की पूजा करते थे। एक दिन पुष्पदंत नामक गन्धर्व जो इंद्र के दरबार में गायक था, उद्यान की तरफ से जाते हुए फूलों की सुंदरता से मोहित हो कर उन्हें चुराने लगा। परिणाम स्वरुप राजा चित्ररथ भगवान शिव को फूल अर्पित नहीं कर पा रहे थे। राजा बहुत प्रयास के बाद भी चोर को पकड़ने में असफल रहे क्योंकि गन्धर्व पुष्पदंत में अदृश्य रहने की शक्ति थी। अंत में राजा ने अपने बगीचे में शिव निर्माल्य फैला दिया। अनजाने में पुष्पदंत शिव निर्माल्य के ऊपर से चला गया, जिससे उसे भगवान शिव का कोप भाजन बनाना पड़ा। फलतः पुष्पदंत की दिव्य शक्तियाँ नष्ट हो गयीं। उसने क्षमा याचना के लिए भगवान शिव की महिमा का गुणगान करते हुए स्तुति की। भगवान शिव की कृपा से पुष्पदंत की दिव्य शाक्तियाँ लौट आयीं। पुष्पदंत द्वारा रचित भगवान शिव की स्तुति 'शिव महिम्न्स्तोत्रं' के नाम से प्रसिद्द हुई। ४३ क्षन्दो का यह स्तोत्र शिव भक्तों को अत्यंत प्रिय है।

5.6 पारिभाषिक शब्दावली

शब्द	**अर्थ**
शिव	कल्याण करने वाला

महिम्न	महिमा
यद्यसदृशी	जिसके समान
शशिधर	चन्द्रमा
असित	श्वेत
सिन्धुपात्र	समुद्र को पात्र मान लिया है
शारदा	सरस्वती
एककालं	एक समय
द्विकालं	प्रात:-सन्ध्या दोनों काल
त्रिकालं	तीनों काल प्रात:, मध्याह्न एवं सन्ध्या

5.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. ग
2. ख
3. क
4. ग
5. ख

5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 पुस्तक का नाम - रुद्रष्टाध्यायी
लेखक का नाम - शिवदत्त मिश्र
प्रकाशक का नाम- चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

2 पुस्तक का नाम-सर्वदेव पूजापद्धति
लेखक का नाम- शिवदत्त मिश्र
प्रकाशक का नाम- चौखम्भा सुरभारती प्रकाषन वाराणसी

3 पुस्तक का नाम – शिवमहिम्न स्तोत्र
प्रकाशक - चौखम्भा प्रकाशन

5.9 सहायक पाठ्यसामग्री

नित्यकर्मपूजाप्रकाश – पं. बिहारी लाल मिश्र, गीताप्रेस।
शिवमहिम्न स्तोत्र – गीता प्रेस

5.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. शिवमहिम्न स्तोत्र क्या है? विस्तार से लिखिये।
2. शिवमहिम्न स्तोत्र पाठ का महत्व क्या है।
3. शिवमहिम्न स्तोत्र पाठ का अर्थसहित लेखन कीजिये।

खण्ड - 2

विविध पूजन विधान

इकाई – 1. गणेशाम्बिका पूजन विधान

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 गणेशाम्बिका पूजन विधान

1.4 सारांश

1.5 पारिभाषिक शब्दावली

1.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.8 सहायक पाठ्यसामग्री

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई सी0वी0के-02 पाठ्यक्रम के द्वितीय खण्ड की प्रथम इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है - गणेशाम्बिका पूजन विधान। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने संस्कारों और विभिन्न स्तोत्र पाठ का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में गणेशाम्बिका पूजन के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

पूजन आस्था का विषय है। मानव को यदि आस्था है, तभी वह मूर्ति में भी ईश्वर के स्वरूप दर्शन करता है, उनके रूप को देखने और समझने का प्रयास करता है। गणेश देवताओं में अग्रगण्य है, यह सर्वविदित है। गणेश के साथ अम्बिका का पूजन विधान है।

आईए इस इकाई में हम सब गणेशाम्बिका पूजन विधान को जानने का प्रयास करते हैं।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्

- आप जान जायेंगे कि गणेश पूजन कैसे किया जाता है।
- गणेशाम्बिका पूजन विधान क्या है।
- आप गणेशाम्बिका पूजन को समझा सकते हैं।
- आप गणेशाम्बिका पूजन के महत्व को प्रतिपादित कर सकते हैं।

1.3 गणेशाम्बिका पूजन विधान

भारतीय सनातन परम्परा में यह निर्विवाद है कि सभी पूजन कर्मो में सर्वप्रथम गणेश जी की पूजा होती है, साथ में गौरी माता की पूजा भी होती है। पूजन की प्रक्रिया में क्या क्या होता है इसका अध्ययन आप पूर्व के इकाई में कर चुके हैं। प्राचीन काल में पूजन कर्म केवल वैदिक मन्त्रों से किये जाते थे, क्योंकि वह वेदप्रधान युग था। कालांतर में स्थितियॉ बदली, तो अब संस्कृतज्ञों एवं वेदज्ञों की संख्या भी घटती चली गई है। ऐसी परिस्थिति में आचार्यों ने लौकिक मन्त्र का निर्माण किया। इस प्रकार अब लौकिक और वेद मन्त्र से पूजन की जाती है। यहाँ दोनों का समावेश किया जा रहा है। आइए गणपति और गौरी पूजन का अध्ययन करते है –

सर्वप्रथम हाथ में अक्षत लेकर गणपति – गौरी का ध्यान निम्नलिखित मन्त्र से करना चाहिए –

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारूभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्।।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः , ध्यानं समर्पयामि।

इसके पश्चात् हाथ में अक्षत पुष्प लेकर आवाहन करना चाहिए। आवाहन के निम्न मन्त्रों का उच्चारण करें –

ऊँ गणानां त्वा गणपति गूँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति गूँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति गूँ हवामहे व्वसो मम्।। आहमजानि गर्भधमा त्त्वमजासि गर्ब्धधम्।।

एह्येहि हेरम्ब महेशपुत्र समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष।

मांगल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

हाथ के अक्षत गणेश जी पर चढ़ा दे। पुनः अक्षत लेकर गणेश जी की दाहिनी ओर गौरी जी का **आवाहन करें** –

ऊँ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।

ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

आवाहन के पश्चात् गणपति और गौरी को स्पर्श करते हुए निम्नलिखित मन्त्र से उनकी प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिए -

प्रतिष्ठा -

ऊँ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गूँ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो ३ प्रतिष्ठ।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ।।

गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम् ।।

प्रतिष्ठापूर्वकम् आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ।

आसन के लिए अक्षत समर्पित करे ।

पश्चात् निम्न मन्त्र से पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नान, पुनराचमनीय करें –

ऊँ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।।

एतानि पाद्यार्घ्याचनमनीयस्नानीयपुनराचमनीययानि समर्पयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। इतना कहकर जल चढ़ा दे।

दुग्ध स्नान –

ऊँ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पयः स्नानं समर्पयामि। दूध से स्नान कराये।

दधिस्नान -

ऊँ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्राण आयू गूँ षि तारिषत्।।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दधिस्नानं समर्पयामि। दधि से स्नान कराये।

घृत स्नान –

ऊँ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिघृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।।

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः घृतस्नानं समर्पयामि। घृत से स्नान कराये।

मधुस्नान –

ऊँ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव गूँ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।।

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मधुस्नानं समर्पयामि। मधु से स्नान कराये।

शर्करास्नान –

ऊँ अपा गूँ रसमुद्वयस गूँ सूर्ये सन्त गूँ समाहितम्। अपा गूँ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।

मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शर्करास्नानं समर्पयामि। शर्करा से स्नान कराये।

पञ्चामृत स्नान –

ऊँ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।

ऊँ पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। पञ्चामृत से स्नान कराये।

गन्धोदक स्नान –

ऊँ अ गॅू शुना ते अ गॅू शुः पृच्यतां परूषा परूः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।

मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विनिःसृतम्।
इदं गन्धोधकस्नानं कुंकुमाक्तं च गृह्यताम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। गन्धोदक से स्नान कराये।

शुद्धोद्धक स्नान –

ऊँ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोऽरूणस्ते रूद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।।

गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोद्धकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोद्धक स्नान कराये।
आचनम - शुद्धोद्धकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। आचमन के लिए जल दे।

वस्त्र –

ऊँ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो ३ मनसा देवयन्तः।

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्र समर्पित करे।
आचमन – वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्र –

ऊँ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूप गॅू सं व्ययस्व विभावसो

यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किंचिन्न सिध्यति।
उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोपकारकम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रभावे रक्तसूत्र समर्पित करे।

आचमन - उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत -

ऊँ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीत समर्पित करे।

आचमन - यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

चन्दन –

त्वां गन्धर्वा अखनॅस्त्वामिन्द्रस्त्वां वृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः चन्दनानुलेपनं समर्पयामि। चन्दन समर्पित करे।

अक्षत –

ऊँ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अक्षतान् समर्पयामि। अक्षत अर्पित करे।

पुष्पमाला –

ऊँ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्वरीर्वीरूधः पारयिष्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पमालां समर्पयामि। पुष्पमाला समर्पित करे।

दूर्वा –

ऊँ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परूषः परूषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

दूर्वांकुरान् सुहरितानमृतान् मंगलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक।।

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दूर्वांकुरान् समर्पयामि। दुर्वा समर्पित करे।

सिन्दूर –

ऊँ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमिय: पतयन्ति यह्वा:।
घृतस्य धारा अरूषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभि: पिन्वमान: ॥

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: सिन्दूरं समर्पयामि। सिन्दूर समर्पित करे ।

अबीर – गुलाल -

ऊँ अहिरिव भोगै: पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमान:। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा गॅू सं परि पातु विश्वत:।

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर ॥

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। अबीर आदि समर्पित करे ।

सुगन्धित द्रव्य –

ऊँ अहिरिव भोगै: पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमान:। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा गॅू सं परि पातु विश्वत:।

दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भूतम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै परिगृह्यताम् ॥

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि। द्रव्य समर्पित करे ।

धूप –

ऊँ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वाम:। देवानामसि वह्नितम गॅू सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढयो गन्ध उत्तम:।
आघ्रेय: सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: धूपमाघ्रापयामि। धूप दिखाये।

दीप –

ऊँ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि: स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योति : सूर्य: स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्च: स्वहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च: स्वाहा। ज्योति: सूर्य: सूर्यो ज्योति: स्वाहा।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निा योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते ॥

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दीपं दर्शयामि। दीप दिखाये।

हस्त प्रक्षालन - ऊँ हृीषीकेशाय नमः कहकर हाथ धो ले।

नैवेद्य –

ऊँ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष गॅू शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकॉ अकल्पयन्।

ऊँ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

ऊँ प्राणाय स्वाहा। ऊँ अपानाय स्वाहा। ऊँ समानाय स्वाहा। ऊँ उदानाय स्वाहा। ऊँ व्यानाय स्वाहा।

ऊँ अमृतापिधानमसि स्वाहा।

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्य निवेदित करे।

नैवद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

ऋतुफल –

ऊँ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। वृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गॅू हसः॥
इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलवाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फलान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि

उत्तरापोशन - उत्तरापोऽशनार्थे जलं समर्पयामि। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।

करोद्वर्तन -

ऊँ अ गॅू शुना ते अ गॅू शुः पृच्यतां परूषा परूः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।
चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्ववर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर॥

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, करोद्वर्तनकं चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल –

ऊँ यत्पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ऊँ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।

दक्षिणा –

ऊँ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै

देवाय हविषा विधेम ॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।
अनन्तपुण्यफलदमत: शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , कृताया: पूजाया: सांगुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ।

आरती –

ऊँ इद गॅू हवि: प्रजननं मे अस्तु दशवीर गॅू सर्वगण गॅू स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि ॥ अग्नि: प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त ॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , आरार्तिकं समर्पयामि।

पुष्पांजलि –

ऊँ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा: ।

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , पुष्पांजलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा -

ऊँ ये तीर्थाथ्न प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषडिं्गण:। तेषा गॅू सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे ॥

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , प्रदक्षिणां समर्पयामि।

विशेषार्घ्य -

ताम्रपात्र में जल, चन्दन, अक्षत, पुष्प , दूर्वा और दक्षिणा रखकर अर्घ्यपात्र को हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़े -

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो।
वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद ।
अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम ॥

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , विशेषार्घ्य समर्पयामि।

अन्त में हाथ जोड़कर प्रार्थना करे –

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।

नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमोस्ते ॥
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय
भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमोस्ते ॥
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय करिरूपाय ते नम:
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे ।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति ॥
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति ।
तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव
त्वां वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या ॥
विश्वस्य बीजं परमासि माया
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् ।
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतु: ॥

ऊँ भूर्भुव: स्व: गणेशाम्बिकाभ्यां नम: , प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।

गणेशपूजने कर्म यन्नयूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम।
अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयताम् न मम।।

ऐसा कहकर समस्त पूजन कर्म को गणपति – गौरी को समर्पित कर दे तथा पुन: नमस्कार करना चाहिए।

बोध प्रश्न-

1. समस्त पूजन में प्रथम पूजन होता है ?
   क. विष्णु ख. शिव ग. गणेश घ. ब्रह्मा
2. गजानन का अर्थ है -
   क. घोड़े के समान मुख ख. हाथी के समान मुख ग. ग्राह के समान मुख घ. कोई नहीं
3. गौरी जी का स्थान गणेश जी के होता है -
   क. दायॉ ख. बायॉ ग. सामने घ. पीछे
4. गणेशाम्बिका का अर्थ है -

क. गणेश ख. गणेश – गौरी ग. गणेश – दुर्गा घ. शिव – गणेश

5. हिरण्यगर्भगर्भस्थं ..... विभावसो।
अनन्तपुण्यफलदमत: शान्तिं प्रयच्छ मे ॥
क. हेमबीज ख. ताम्बूलं ग. कर्पूरं घ. कोई नहीं

1.4 सारांश -

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से आपने जाना कि भारतीय सनातन परम्परा में यह निर्विवाद है कि सभी पूजन कर्मो में सर्वप्रथम गणेश जी की पूजा होती है, साथ में गौरी माता की पूजा भी होती है। पूजन की प्रक्रिया में क्या क्या होता है इसका अध्ययन आप पूर्व के इकाई में कर चुके हैं। प्राचीन काल में पूजन कर्म केवल वैदिक मन्त्रों से किये जाते थे, क्योंकि वह वेदप्रधान युग था। कालांतर में स्थितियॉ बदली, तो अब संस्कृतज्ञों एवं वेदज्ञों की संख्या भी घटती चली गई है। ऐसी परिस्थिति में आचार्यों ने लौकिक मन्त्र का निर्माण किया। इस प्रकार अब लौकिक और वेद मन्त्र से पूजन की जाती है। गणपति – गौरी पूजन के साथ – साथ मातृका पूजन में षोडशमातृका पूजन (जिसमें 16 कोष्ठक बने होते है) का भी ज्ञान प्राप्त किया है।

1.5 शब्दावली-

वेदप्रधान – जहॉ वेद की प्रधानता हो ।

लौकिक - सांसारिक।

वैदिक – वेद से सम्बन्धित ।

विघ्नेश्वर - विघ्न को हरने वाले ईश्वर ।

आवाहयामि – आवाहन करता हूँ

पूजयामि – पूजन करता हूँ

च – और

घृत – घी

मधु – शहद

शर्करा – चीनी

पंचामृत – दूध, दही, घी, शहद, गंगाजल का मिश्रण

1.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. ग
2. ख
3. क
4. ख
5. क

1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- कर्मकाण्ड प्रदीप

2- संस्कार दीपक

3. नित्यकर्मपूजाप्रकाश

1.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1. गणपति - गौरी पूजन का विस्तार से वर्णन कीजिये।
2. गणेशाम्बिका पूजन विधान को स्पष्ट रूप से लिखिये।

इकाई – 2. शिव पूजन विधान

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 शिवपूजन विधान

2.4 सारांश

2.5 पारिभाषिक शब्दावली

2.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

2.8 सहायक पाठ्यसामग्री

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई सी0वी0के-02 पाठ्यक्रम के द्वितीय खण्ड की द्वितीय इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है - शिवपूजन विधान। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने संस्कारों और विभिन्न स्तोत्र पाठ तथा गणेशाम्बिका पूजन का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में शिव पूजन के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

शिव पूजन में भगवान शिव की विभिन्न द्रव्यों के द्वारा पूजा की जाती है। मानव को यदि आस्था है, भगवान शिव को समस्त विद्याओं का अधिपति कहा गया है। इसलिए इन्हें 'महागुरु' भी कहा जाता है।

आईए इस इकाई में हम सब शिव पूजन विधान को जानने का प्रयास करते हैं।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्

- आप जान जायेंगे कि शिव पूजन कैसे किया जाता है।
- शिव पूजन का विधान क्या है।
- आप शिव पूजन को प्रायोगिक रूप से समझा सकते हैं।
- आप शिव पूजन के महत्व को प्रतिपादित कर सकते हैं।

2.3 शिव पूजन विधान

वैदिक सनातन परम्परा में शिव का अर्थ कल्याण बतलाया गया है। जो मनुष्य शिव की श्रद्धापूर्वक उपासना करता है, उसका सर्वविधकल्याण होता है, इसमें संशय नहीं। शिव की पूजा से ज्ञानवृद्धि होती है तथा परमज्ञान की प्राप्ति के लिए भी शिव की ही शरण में जाना पड़ता है। क्योंकि समस्त ज्ञान-विज्ञान के मूर्त्त-अमूर्त्त रूप शिव ही हैं। इसलिए कहा गया है कि –

विशुद्ध ज्ञान देहाय त्रिवेदी दिव्य चक्षुषे।
श्रेय: प्राप्ति निमित्ताय नम: सोमार्द्ध धारिणे।।

अर्थात् जिनका शरीर ही विशुद्ध ज्ञान है। ऐसे शिव की बात यहाँ कही गयी है। शिवपूजन में भी अन्य पूजन की तरह विविध द्रव्यों का प्रयोग किया जाता है। विशेष रूप से इनके पूजन में भस्म, भाँग, धतूर, मदार की माला, विल्वपत्रादि का प्रयोग होता है, जो अन्य देवताओं के पूजन में नहीं के बराबर होता है। शिव को 'अवघड़दानी' तथा 'आशुतोष' कहा गया है। अवघड़दानी का अर्थ होता है- जो

पास आकर दान दें। तथा आशुतोष वह होता है, जो शीघ्र प्रसन्न हो जाये। हमें लोक में भगवान के अनेक नाम सुनने एवं पढ़ने को मिलते रहते हैं। विविध द्रव्यों द्वारा शिवलिंग/पार्थिव शिवलिंग आदि के उपर रूद्राभिषेक करने/कराने की परम्परा भी है। रूद्राष्टाध्यायी यजुर्वेद का ही भाग है। जिसमें ५०० से भी अधिक मन्त्रों के द्वारा शिवार्चन का विधान है। लोग अनेक प्रकार की कामनाओं को लेकर विविध द्रव्यों द्वारा भगवान का रूद्राभिषेक करते/कराते हैं।

शिव जी के पूजन के लिए सर्वप्रथम सभी पूजन की सामग्रियों को एकत्रित कर आसन पर विराजमान हो जाये। पुन: आचमन कर पवित्र हो जाय। पवित्री धारण करने के पश्चात् मंगल तिलक धारण करें, तत्पश्चात् स्वस्तिवाचन आदि करके संकल्प करना चाहिए।

शिव का ध्यान -

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारूचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

चॉदी के पर्वत के समान जिनकी श्वेत कान्ति है, जो सुन्दर चन्द्रमा को आभूषण रूप से धारण करते हैं, रत्नमय अलंकारों से जिनका शरीर उज्जवल है, जिनके हाथों में परशु, मृग, वर और अभय मुद्रा है, जो प्रसन्न हैं, पद्म के आसन पर विराजमान हैं, देवतागण जिनके चारों ओर खड़े होकर स्तुति करते हैं, जो बाघ की खाल पहनते हैं, जो विश्व के आदि जगत् के उत्पत्ति के बीज और समस्त भयों को हरनेवाले हैं, जिनके पॉच मुख और तीन नेत्र हैं, उन महेश्वर का प्रतिदिन ध्यान करें।

ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ऊँ शिवाय नम: ।

सद्योजात-स्थापन

पश्चिमं पूर्णचन्द्राभं जगत सृष्टिकरोज्ज्वलम,सद्योजातं यजेत सौम्य मन्दस्मित मनोहरम॥

वामदेव स्थापन

उत्तरं विद्रुमप्रख्य विश्वस्थितिकरं विभुम,सविलासं त्रिनयनं वामदेवं प्रपूजयेत॥

अघोर स्थापन

दक्षिणं नील नीमूतप्रभं संहारकारकम,वक्रभ्रू कुटिलं घोरमघोराख्यं तमर्चयेत॥

तत्पुरुष स्थापन

यजेत पूर्वमुखं सौम्यं बालर्क सदृशप्रभम,तिरोधानकृत्यपर रुद्रं तत्पुरुषभिधम॥

ईशान स्थापन

ईशानं स्फ़टिक प्रख्य सर्वभूतानुकंपितम,अतीव सौभ्यमोंकार रूपं ऊर्ध्वमुखं यजेत॥

ऊँ उमामहेश्वराभ्यां नम: श्यानं समर्पयामि॥

आवाहन

ऊँ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषये नम:।बाहुभ्यामुत ते नम:॥

एह्योहि गौरीश पिनाकपाणे शशांकमौलेवृषभरूढं।

देवाधिदेवेश महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन नमस्ते॥

आवाहयामि देवेशमरादिमध्यान्तपर्तितम।

आधारं सर्वलोकानामिश्रितार्थ प्रदासिनम॥ ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: आवाहनं समर्पयामि॥

आसन

ऊँ याते रुद्र शिवातनूरघोरा पापकाशिनी। तयानस्तावा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि। विश्वात्मने नमस्तुभ्यं चिदम्भरनिवरसिने॥ रत्नसिंहासनं चारो ददामि करुणानिधे॥ ऊँ उमामहेश्वराभ्यां नम: आसनार्थ पुष्पं समर्पयामि॥

फ़ूल चढायें।

पाद्य

ऊँ यामिषुडिंगरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे। शिवांगिरिशतडंकरु माहि गंगवहे सी: पुरुषन्जगत। तुभ्यं संप्रददे पाद्यं श्रीकैलास निवासिने। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: पादयो: पाद्यं समर्पयामि॥

चरणों में जल अर्पित करें।

अर्घ्य

ऊँ शिवेन वचसात्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथान: सर्वमिज्जगदयक्ष्य गंगवहे सुमनाऽअसत॥ अनर्घफ़लदात्रे च शास्त्रे वैवस्वतस्य च। तुमयर्मध्य प्रदास्यामि द्वादशान्त निवासिने॥ ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: हस्तयोर्घ्य समर्पयामि॥

अर्घ्य पात्रं में गन्धाक्षत पुष्प के साथ जल लेकर चढावें॥

आचमन

ऊँ अद्धयवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक।अह्रीश्यसर्वान्जभयन्तसर्वाश्चयातुधान्योधराची: परासुव। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: आचमनीयम जलं समर्पयामि॥ छ: बार आचमन करें।

स्नान

ऊँ असोस्ताम्रोऽरुण उतब्रभु: सुमंगल:। ये चेन गंगवहे रुद्राअभितोदिक्षुश्रिता: सहस्त्रशोवेषस गंगवहे हेडऽईमहे। गंगाक्लिन्नजटाभारं सोमसोमाधशेखर॥ नद्या मया समानेतै स्नानं कुरु महेश्वर:। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: स्नानीयं जलं समर्पयामि। स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि॥ घन्टावादन करें और स्नान करवायें॥

पयस्नान (दूध से स्नान)

ऊँ पय: पृथिव्याम्पयऽओषपीषु पर्योर्दिव्यसिक्षे पयोधा:॥ पयस्वती: प्रदिश: सन्तुमह्यम।ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: पय: स्नानं समर्पयामि। ऊँ शुद्धवाल:सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तेअश्विन:। श्वेत: श्वेताक्षौ रुद्राय पशुपतये कर्णयामा अवलिप्ता रौद्रा नभो रूपा: पार्जन्या:। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। पय स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि॥ पहले दूध से फ़िर जल से स्नान करावें॥

दधि स्नान

ऊँ दधिक्रोण्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिन:। सुरभि नो मुखा करत प्रणाअयु गंगवहे षितारिषत॥

ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: दधिस्नानं समर्पयामि।ऊँ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त अश्विन:। श्वेत श्वेताक्षौरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या:।

ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम:शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। दधि स्नानन्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि॥ पहले दही फ़िर जल से स्नान करवायें।

घृतस्नान

ऊँ घृतं मतिक्षेघृतमस्य योनिर्धिते श्रितोघृतस्य धाम।अनष्वधमावह मदयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षिहव्यम। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: घृतस्नानम समर्पयामि। घृतस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

ऊँ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त अश्विन:। श्वेत: श्वेताक्षौरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या:। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। पहले घी से फ़िर जल से स्नान करवायें।

मधुस्नान

ऊँ मधुव्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धव:। माधवीर्न: सन्त्वोषधी:। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव

गूँ रज:। मधुद्यौरस्तु पिता। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधमां अस्तु सूर्य:। माध्वीरर्गावो-भवन्तु न:। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: मधुस्नानं समर्पयामि। मधुस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। ऊँ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त अश्विन:। श्वेत: श्वेताक्षौरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या:। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। पहले शहद से फ़िर जल से स्नान करवायें।

शर्करास्नान

ऊँ अपा गूँ रसमुद्वयस गूँ सूर्ये सन्त: गूँ समाहितम। अपा गूँ रसस्ययो रसस्तं वो गृहणाम्युतममुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृहणाम्येषेत योति रिन्द्राय त्वा जुष्टतमम। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: शर्करास्नानं समर्पयामि। शर्करास्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

ऊँ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त अश्विन:। श्वेत: श्वेताक्षौरुणस्ते रुद्राय पसुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या:। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। पहले चीनी फ़िर जल से स्नान करवायें।

पंचामृत स्नान

ऊँ पंचनद्य: सरस्वतीम पिबन्ति सस्रोतस: सरस्वती तु पंचधा सो देशेभवत्सरित। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम पंचामृतस्नानं समर्पयामि। पंचामृतस्नानन्ते शुद्धोदक स्नानम समर्पयामि। ऊँ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त अश्विन:। श्वेत: श्वेताक्षौरुणस्ते रुद्राय पसुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या:। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। पहले पंचामृत से स्नान करवाये फ़िर जल से स्नान करवायें।

गन्धोदक स्नान

ऊँ गन्धद्वारा दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वेयेश्रियम। मलयाचल सम्भूतं चन्दगारूरंभवम। चन्द्रनं देवदेवेश स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। गन्धोदक स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। पहले गुलाबजल से फ़िर जल से स्नान करवायें।

शुद्धोदक स्नान

ऊँ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त अश्विन:। श्वेत: श्वेताक्षौरुणस्ते रुद्राय पह्सुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या:। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। घंटावदन करके जल से स्नान करवायें फ़िर आचमन

करवायें।

वस्त्र

ऊँ असौ योवसर्पति नीलग्रीवो विलोहित: उतैनंगोपाऽदृश्रम नदश्रम नुदहाजै: सदषटोमृडययति न:। दिगम्बर नमस्तुभ्यम गजाजिनधरा यच। व्याघ्रचर्मोतरीयाय वस्त्रयुग्मं दादाम्यहम॥ ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत

ऊँ नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे। अथोयेऽस्य सत्वानो हन्तेभ्योकरन्नम। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: यज्ञोपवीतं समर्पयामि। आचमनं जलं समर्पयामि।

सुगन्ध द्रव्य

ऊँ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम। उर्वारुकमिव बन्धनान मृत्योर्मुक्षीय मामृतात। ऊँ उमामहश्वराभ्याम नम: सुगन्धं समर्पयामि। भगवान को इत्र लगावे.

भस्म

अग्निहोत्र समुदभूतं विरजाहोमपाजितम, गृहाण भस्म हे स्वामिन भक्तानां भूतिदाय॥ ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: भस्मं समर्पयामि॥ भस्म अर्पित करें।

गन्ध

ऊँ प्रमुश्चधन्वनस्तवमुभयोरात्न्यौर्ज्याम,याश्चते हस्तऽअंगषव: पराता भगवोवप। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: गन्धं समर्पयामि॥

अक्षत

ऊँ अक्शान्नमीमदन्तछप्रियाऽअधषत। अस्तोषतस्वभानति विप्रान्न विष्टुयामती योजान। विन्द्रतेहरी। अक्सहतान धवलान देवसिद्धगन्धर्व पूजितम। सुदत्रेश नमस्तुभ्यं गृहाण वरदो भव॥ ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: अक्षतान समर्पयामि। अक्षत चढावें।

पुष्प

ऊँ विज्जयन्धनु: कपर्दिनो विशल्यो बाधवांऽउत। अनेकशन्नस्ययाऽड.षव आभुरस्यनिषंगधि:। तुरीयवनसंभूतं। परमानन्दसौरभम। पुष्पं गृहाण सोमेश पुष्पचापविभंजन॥ ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: पुष्पाणि समर्पयामि।

बिल्वपत्र

ऊँ नमो बिल्विने च कवचिने च नमो वश्रिणे च वरूथिने च नम: श्रुताव च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्यरयचाहनन्यायच। त्रिबलं द्विगुणाकारं द्विनेत्रं च त्रिधायुधम। श्रिजन्मपाप संहारमेक बिल्वं शिवार्पणम। दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम। अघोर पाप संहारं मेक बिल्वं शिवार्पणम॥

अंगपूजा

ऊँ भवाय नम: पादो पूजयामि। ऊँ जगत्पित्र नम: जंघे पूजयामि। ऊँ मृडाय नम: जानुनीं पूजयामि। ऊँ रुद्राय नम: उरु पूजयामि। ऊँ कालान्तकाय नम: कटिं पूजयामि। ऊँ नागेन्द्रा भरणाय नमं नाभिर पूजयामि। ऊँ स्तव्याय नम: कंठं पूजयामि। ऊँ भवनाशाय नम: भुजान पूजयामि। ऊँ कालकंठाय नम: कंठं पूजयामि। ऊँ महेशाय नम: मुखं पूजयामि। ऊँ लास्यप्रियाय नम: ललाटं पूजयामि। ऊँ शिवाय नम: शिरं पूजयामि। ऊँ प्रणतार्तिहराय नम: सर्वाण्यंगानि पूजयामि। प्रत्येक बार गंधाक्षतपुष्प से सम्बन्धित अंग को घर्षित करें।

अष्टपूजा

ऊँ शर्वाय क्षितिमूर्तये नम:,ऊँ भवाय जलमूर्तये नम:,ऊँ रुद्राय अग्निमूर्तये नम:,ऊँ उग्राय वायुमूर्तये नम:,ऊँ भीमाय आकाश मूर्तये नम:,ऊँ ईशनाय सूर्य मूर्तये नम:,ऊँ महादेवाय सोममूर्तये नम:,ऊँ पशुपतये यजमान मूर्तये नम:। प्रत्येक बार गन्धाक्षतपुष्प बिल्वपत्र अर्पित करें।

परिवार पूजा

ऊँ उमायै नम:,ऊँ शंकर प्रियाये नम:,ऊँ पार्वत्यै नम:,ऊँ काल्यै नम:, ऊँ कालिन्द्यै नम:,ऊँ कोटि देव्यै नम:,ऊँ पिश्वधारित्रै नम:,ऊँ गंगा देव्यै नम:,नववितीन पूजयामि सर्वोपकरायै गन्धाक्षतपुष्पयाणि समर्पयामि।

प्रत्येक बार गन्ध अक्षत पुष्प अर्पण करें।

ऊँ गणपतये नम:,ऊँ कार्तिकेयाय नम:,ऊँ पुष्पदन्ताय नम:,ऊँ कपर्दिने नम:.ऊँ भैरवाय नम:,ऊँ भूलपाधये नम:,ऊँ चण्डेशाय नम:,ऊँ दण्डपाणये नम:, ऊँ नन्दीश्वराय नम:,ऊँ महाकालाय नम:,सर्वान गणाधिपान पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

ऊँ अघोराय नम:,ऊँ पशुपतये नम:,ऊँ शर्वाय नम:,ऊँ विरूपाक्षाय नम:,ऊँ विश्वरूष्ये नम:,ऊँ त्र्यम्बकाय नम:,ऊँ कपर्दिने नम:,ऊँ भैरवाय नम:,ऊँ शूलपाणये नम:,ऊँ ईशनाय नम:,एकादश रुद्रान पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्ध अक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

सौभाग्य द्रव्य

ऊँ अहिरीव भोगै: पर्येति बाहुन्ज्यावा हेतिम्परिवाधमान:। हस्तघ्नो विश्वावयुनानिविद्वान पुमान पुमा गंगवहे समपरिपातुविश्वत:॥ हरिद्रां कुंकुमं चैव सिन्दूरं कज्जलान्वितम। सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तं ग्रहाण परमेश्वर॥ ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: सौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि। हल्दी कुमकुम सिन्दूर चढावें।

धूप

ऊँ या ते हेतीर्मीढ्ष्ट्रम हस्ते बभूव ते धनु:। तयास्मान-विश्वस्त्व मयक्ष्मया परिभुज॥ऊँ उमा महेश्वराभ्याम नम: धूपं आघ्रायामि।

धूपबत्ती जलायें।

दीप

ऊँ परिते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणकतुविश्वत:। अथोयऽगंषि घ्रिस्त वारेऽकअस्मन्निधेहितम।साज्यं वर्ति युक्तं दीपं सर्वमंगलकारकम। समर्पयामि श्येदं सोमसूर्याग्निलोचनम॥

प्रज्वलित दीपक पर घंटावादन करते हुये चावल छोडें।

नैवैद्य

नैवैद्य के ऊपर बिल्वपत्र या पुष्प में पानी लेकर रुद्रगायत्री को बोलें- ऊँ तत्पुरुषाय विद्यमहे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्र: प्रचोदयात। फ़िर नैवैद्य पर धेनु मुद्रा दिखाते हुये इस मंत्र को बोलें- ऊँ अवतय धनुष्टव गंगवहे सहस्त्राक्षशतेषुधे। निशीर्य शलयानामुख शिवा न: सुमना भव॥ नैवैध्यं षडरसोपेतं विषाशत घृतान्वितम। मधुक्षीरापूपयुक्तं गृह्यतां सोमशेखर॥ ऊँ या फ़लिनीयाऽफ़लाऽपुष्पा याश्चपुष्पिणि:। बृहस्पतिप्रसूस्तानो मुन्वत्व गंगवहे हस:। यस्य स्मरण मात्रेण सफ़लता सन्ति सत्क्रिया:। तस्य देवस्या प्रीत्यर्थ इयं ऋतुफ़लार्पणम। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: नैवैद्यम निवेदयामि नाना ऋतुफ़लानि च सपर्पयामि। इसके बाद ग्राम मुद्रा में इस मंत्र का उच्चारण करें- ऊँ प्राणाय स्वाहा,ऊँ अपानाय स्वाहा,ऊँ व्यानाय स्वाहा,ऊँ उदानाय स्वाहा,ऊँ समानाय स्वाहा। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: आचमनीयं जलं समर्पयामि,पूर्जापोषण समर्पयामि। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: मध्ये पानीयं समर्पयामि,नैवैद्यान्ते आचमनीयं समर्पयामि,उत्तरापोषणं समर्पयामि,हस्तप्राक्षलण समर्पयामि,मुखप्रक्षालनं समर्पयामि। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: करोद्वर्जनार्थे चन्दनं समर्पयामि। भगवान के हाथो में चन्दन अर्पित करें।

ताम्बूल

ऊँ नमस्तुऽआयुधानाततायधृष्णवे। उमाभ्यांमुत ते नमो बाहुभ्यान्नत धन्वने। ऊँ उमा महेश्वराभ्याम नम: मुख शुद्धयर्थे ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा

ऊँ हरिण्यगर्भ: समवर्तमाग्रे भूतस्य जात: परिरेकऽआसीत। सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाकस्मै देवाय हविषा विधेम। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम:सांगता सिद्धयर्थ हिरण्यगर्भ दक्षिणां समर्पयामि।

नीराजंन

ऊँ इद गंगवहे हवि: प्रजननम्मे अस्तु दशवीर गंगवहे सर्वगण गंगवहे स्वस्तये। आत्मसनि। प्रजासनि पशुसति लोकसन्यभयसनि:। अग्नि प्रजा बहुलां में करोत्वनं न्यतो रेतोऽस्मासु धत।

ध्यान करें

वन्दे देव उमापतिं सुरुगुरु वन्दे जगत्कारणम, वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनांपतिम। वन्दे सूर्य शशांक वहिनयनं वन्चे मुकुन्दप्रिय:, वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवशंकरम॥

शान्तं पदमासनस्थं शशिधर मुकुटं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम, शूलं वज्र च खडग परशुमभयदं दक्षिणागे वहन्तम। नाग पाशं च घंटां डमरूकसहितं सांकुशं वामभागे, नानालंकार दीप्तं स्फ़टिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि॥कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्र हारम, सदा बसन्तं हृदयार विन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥

आरती

जय शिव ऊँकारा भज शिव ऊँकारा। ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धांगी धारा॥ ऊँ॥ एकानन चतुरानन पंचानन राजे। हंसानन गरुडासन वृषवाहन साजे॥ऊँ॥ दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहे। तीनो रुप निरखते त्रिभुवन जग मोहे॥ऊँ॥ अक्षरमाला वनमाला मुंडमाला धारी। त्रिपुरानाथ मुरारी करमाला धारी॥ऊँ॥ श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे। सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे॥ऊँ॥ कर मध्ये इक मंडल चक्र त्रिशूल धर्ता। सुखकर्ता दुखहर्ता सुख में शिव रहता॥ऊँ॥ काशी में विश्वनाथ विराजे नंदी ब्रह्मचारी। नित उठ ज्योति जलावत दिन दिन अधिकारी॥ऊँ॥ ब्रह्मा विष्णु सदा शिव जानत अविवेका। प्रणवाक्षर ऊँ मध्ये ये तीनो एका॥ऊँ॥ त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावै। ज्यारां मन शुद्ध होय जावे,ज्यारां पाप परा जावे,ज्यारे सुख संपति आवे,ज्यारां दुख दारिद्रय जावे,ज्यारे घर लक्ष्मी आवे,भणत भोलानन्द स्वामी, रटत शिवानन्द स्वामी इच्छा फ़ल पावे॥ऊँ॥

जल आरती

ऊँ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष गंगवहे शान्ति: पृथ्वीशान्तिराप: शान्त रोषधय: शान्ति। वनस्पतय: शान्ति शान्तिर्विश्वेदेवा शान्तिब्रह्म शान्ति सर्व गंगवहे शान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सा मा

शान्तिरेधि।

इस पानी को शिवजी के चारों तरफ़ थोडा थोडा डालकर शिवलिंग पर चढा दें।

प्रदक्षिणा

ऊँ मा नो महान्तमुत मा नोऽअभर्कम्मानऽउक्षन्त मुत मा नऽउक्षितम। मानो वधी: पिरंम्मोतमारम्मान: प्रियास्तस्न्वोरुद्ररीरिष:।

ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पांजलि

ऊँ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन। तेह ना कं महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा:। ऊँ राधाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमोवयं वेश्रणाय कुर्महे समे कामान कामकामा महम। कामेश्वरी वेश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नम:। ऊँ स्वास्ति साम्राज्यं भोज्य स्वराज्यं वैराज्यं परमेष्ठयं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायो स्वात सार्वभौम:। सर्वायुष आन्तादा परार्धात। पृथिव्ये समुद्रपर्यान्ताय एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगितो मरुत: परिवेष्टारो मरुतस्यावसन्नगृहे। अविक्षि तस्य कामप्रेविश्वेदेवा: सभासद इति:। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नमं मन्त्र पुष्पान्जलि समर्पयामि।

नमस्कार

ऊँ नम: शम्भवाय च मयोभवाय च नम: शंकराय च मयस्कराय च नम: शिवाय च शिवतराय च। तव तत्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर। यादशोसि महादेव तादृशाय नमोनम:॥ त्रिनेत्राय नमज्ञतुभ्यं उमादेहार्धधारिणे। त्रिशूल धारिणे तुभ्यं भूतानां पतये नम:॥ गंगाधर नमस्तुभ्यं वृषमध्वज नमोस्तु ते। आशुतोष नमस्तुभ्यं भूयो भूयो नमो नम:॥

ऊँ निधनपतये नम:। निधनपतान्तिकाय नम: उर्ध्वाय नम:। ऊर्ध्वलिंगाय नम:। हिरण्याय नम:। हिरण्यलिंगाय नम: दिव्याय नम: सुवर्णाय नम:। सुवर्ण लिंगाय नम:। दिव्यलिंगाय नम:। भवाय नम:। भवलिंगाय नम:। शर्वाय नम:। शर्वलिंगाय नम:। शिवाय नम:। शिवलिंगाय नम:। ज्वालाय नम:। ज्वललिंगाय नम:। आत्मरस नम:। आत्मलिंगाय नम:। परमाय नम:। परमलिंगाय नम:। एतत सोमस्य सूर्यस्य सर्वलिंग गंगवहे स्थापयसि पाणि मन्त्र पवित्रम।

ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: नमस्करोमि।

प्रार्थनापूर्वक क्षमायपन

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम, पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर, यह पूजितं मयादेव परिपूर्ण तदस्तुमे॥ यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद भवेत, तत सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥ क्षमस्व देव देवेश क्षस्व भुवनेश्वर, तव पदाम्बुजे नित्यं निश्चल भक्तितरस्तु में॥ असारे संसारे निजभजन दूरे जडधिया, भ्रमन्तं मामन्धं परम कृपया पातुमुचितम॥ मदन्य: को दीन स्वव कृपण रक्षाति निपुण, स्त्वदन्य: को वा मे त्रिगति शरण्य: पशुपते॥

विशेषार्ध्य

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरंण मम, मस्मात कारुण्य भावेन रक्ष मां परमेश्वर। रक्ष रक्ष महादेव रक्ष त्रैलोक्य रक्षक, भक्तानां अभयकर्ता त्राता भवभवार्णवात॥ वरद त्वं वरं देहि वांछितार्थादि। अनेक सफ़लर्ध्येन फ़लादोस्तु सदामम॥ ऊँ मानस्तोके तनये मानऽआयुषिमानो गोषुमानोऽश्वेषुरीरिष:। मानो वीरानुरुद्र भामिनो बधीर्हविष्मन्त: सदामित्वाहवामहे। ऊँ उमामहेश्वराभ्याम नम: विशेषर्ध्यं समर्पयामि। अर्ध्य पात्र में जल गन्ध अक्षत फ़ूल बिल्वपत्र आदि मंगल द्रव्य लेकर भगवान को अर्पित करें।

समर्पण

गतं पापं गतं दुखं गतं दारिद्रयमेव च,आगता सुख सम्पत्ति: पुण्याच्च तव दर्शनात॥ दवो दाता च भोक्ता च देवरूपमितं जगत,देवं जपति सर्वत्र यौ देव: सोहमेव हि॥ साधिवाऽसाधु वा कर्म यद्यमचारितं मया।तत सर्व कृपया देव गृहाणाराधनम॥ शंख या आचमनी का जल भगवान के दाहिने हाथ मे देते हुये समस्त पूजा फ़ल उन्हे समर्पित करें। अनेनकृत पूजाकर्मणा श्री संविदात्मक: साम्बसदाशिव प्रीयन्ताम। ऊँ तत सद ब्रह्मार्पणमस्तु। इसके बाद वैदिक या संस्कृत आरती कर पुष्पांजलि दें।

शिव आरती किस प्रकार करें

शिव आरती में सबसे पहले शिव के चरणों का ध्यान करके चार बार आरती उतारें फ़िर नाभिकमल का ध्यान करनेक दो बार आरती उतारें, फ़िर मुख का स्मरण करते हुये एक बार आरती उतारें,तथा सर्वांग की सात बार आरती उतारें, इस प्रकार चौदह बार आरती उतारे। इसके बाद शंख या पात्र में जल लेकर घुमाते हुये छोडें,और इस मंत्र को बोलें-

ऊँ द्यौ शान्तिरन्तरिक्षं गू शान्ति: पृथ्वी शान्ति राप: शान्तिरोषधय शान्ति: वनस्पतय: शान्तिर्विश्वेदेवा शान्ति ब्रह्माशान्ति सर्वं गूँ शान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सामाशान्तिरेधि। यतो यत: समीहसे ततो नो ऽभयं कुरू॥

प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञात कृतानि च, तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणं पदे पदे॥

बोध प्रश्न-

1. सोमार्द्ध धारी किस देवता को कहा गया है ?
   क. विष्णु ख. शिव ग. गणेश घ. ब्रह्मा
2. आशुतोष का अर्थ है -
   क. शीघ्र प्रसन्न होने वाला ख. क्रोधी होना ग. वाचाल घ. कोई नहीं
3. शिव का अर्थ है -
   क. मंगल ख. कल्याण ग. प्रसन्न घ. साधु
4. शिवपूजन से क्या होता है?
   क. धनप्राप्ति ख. सुख प्राप्ति ग. मोक्ष प्राप्ति घ. ये सभी
5. विज्ज्यं धनु: ..... मन्त्र से क्या चढ़ाया जाता है।
   क. भस्म ख. ताम्बूलं ग. भाँग घ. कोई नहीं

2.4 सारांश -

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से आपने जाना कि भारतीय सनातन परम्परा में शिव पूजन का भी अपना महत्व है। भगवान शिव सर्वविधकल्याणकारी है, अत: शिव पूजन प्राणिमात्र के लिए आवश्यक है। शिव को अवघड़दानी तथा आशुतोष कहा गया है। अवघड़दानी का अर्थ होता है, जो पास आकर दान दें। तथा आशुतोष वह होता है, जो शीघ्र प्रसन्न हो जाये। शिव की पूजन में विशेष रूप में विल्वपत्र, भस्म, भाँग, धतूर आदि का प्रयोग होता है। विविध द्रव्यों द्वारा शिवलिंग के उपर रूद्राभिषेक करने/कराने की परम्परा भी है। रूद्राष्टाध्यायी यजुर्वेद का ही भाग है। जिसमें लगभग ३०० से भी अधिक मन्त्रों के द्वारा शिवार्चन का विधान है।

2.5 शब्दावली-

शिव – कल्याण

लौकिक - सांसारिक।

वैदिक – वेद से सम्बन्धित ।

आशुतोष - शीघ्र प्रसन्न हो जाने वाला।

अवघड़दानी – जाकर दान देने वाला।

पूजयामि – पूजन करता हूँ

च – और

घृत – घी

मधु – शहद

शर्करा – चीनी

पंचामृत – दूध, दही, घी, शहद, गंगाजल का मिश्रण

2.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. ख
2. क
3. ख
4. घ
5. ग

2.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- कर्मकाण्ड प्रदीप

2- रूद्राष्टाध्यायी

3. नित्यकर्मपूजाप्रकाश

2.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1. शिव पूजन का विस्तार से वर्णन कीजिये।
2. शिव पूजन विधान को स्पष्ट रूप से लिखिये।
3. शिव पूजन का महत्व निरूपण कीजिये।

इकाई – 3. महालक्ष्मी पूजन विधान

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 महालक्ष्मी पूजन विधान

3.4 सारांश

3.5 पारिभाषिक शब्दावली

3.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

3.8 सहायक पाठ्यसामग्री

3.9 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई सी0वी0के-02 पाठ्यक्रम के द्वितीय खण्ड की तृतीय इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – महालक्ष्मी पूजन विधान। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने संस्कारों और विभिन्न स्तोत्र पाठों, गणेशाम्बिका पूजन तथा शिव पूजन का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में महालक्ष्मी पूजन के बारे में अध्ययन करने जा रहे है।

महालक्ष्मी पूजन में श्री अर्थात् लक्ष्मी की विभिन्न द्रव्यों के द्वारा पूजा की जाती है। सुकृतियों के पास 'श्री' होती है जो स्थायी होती है। कुकृतियों के पास अलक्ष्मी होती है, जो स्थायी नहीं होती हैं। उनका नाश हो जाता है। महालक्ष्मी की उपासना से 'श्री' की प्राप्ति होती है।

आईए इस इकाई में हम सब महालक्ष्मी पूजन विधान को जानने का प्रयास करते हैं।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्

- आप जान जायेंगे कि महालक्ष्मी पूजन कैसे किया जाता है।
- महालक्ष्मी पूजन का विधान क्या है।
- आप महालक्ष्मी पूजन को प्रायोगिक रूप से समझा सकते हैं।
- आप महालक्ष्मी पूजन के महत्व को प्रतिपादित कर सकते हैं।

3.3 महालक्ष्मी पूजन विधान

भगवती महालक्ष्मी चल एवं अचल, दृश्य एवं अदृश्य सभी सम्पत्तियों, सिद्धियों एवं निधियों की अधिष्ठात्री साक्षात् नारायणी हैं। कर्मकाण्ड में धन की आदि शक्ति के रूप में पराम्बा भगवती लक्ष्मी को जाना गया है। धन की प्राप्ति के लिये लक्ष्मी जी की वन्दना या पूजन किया जाता है। यह प्रकल्प शक्ति प्राप्ति हेतु एवं विविध मनोकामनाओं की प्रपूर्ति हेतु किया जाता है। अतः श्री लक्ष्मी जी क्या हैं ? तथा कैसे उनकी पूजा की जाती है ? इसका ज्ञान आपको इस इकाई के अध्ययन से हो जायेगा।

श्री लक्ष्मी जी की आरती एवं स्तुति विचार के अभाव में दीपावली आदि के अवसर पर या अन्य लक्ष्मी जी के व्रतादि या पूजनादि का सम्पादन किसी भी व्यक्ति द्वारा ठीक ढंग से नही हो सकता है। क्योकि इसमें लक्ष्मी माता की ही उपासना की जाती है। सभी सुख, सुविधा, शक्ति, भुक्ति, मुक्ति की दाता एवं ज्ञान पुंज रूपा आह्लादिनी महालक्ष्मी जी की पूजा अवश्य करनी चाहिये। मां लक्ष्मी भाव

से की गयी समस्त प्रकार के पूजन या स्तोत्र पाठ से परम प्रसन्न होती हैं। इसलिये मां लक्ष्मी की पूजा अवश्य करनी चाहिये। इसके लिये यथा उपलब्ध उपचारों से मां की श्रद्धा भक्ति एवं शुचिता से दीपावली या अन्य पर्व इत्यादि के समय महालक्ष्मी पूजन करना चाहिये। ताकि हमारा जीवन सुखमय, आनन्दमय, सात्विक विचारों से परिपूर्ण एवं वर्ष पर्यन्त पुत्र पौत्र सुख, हर्ष उल्लास, ग्रहों की शान्ति, कायिक, वाचिक एवं मानसिक पीड़ा की निवृत्ति के लिये, भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी, बेतालादि की शान्ति के लिये, अखण्ड लक्ष्मी की प्राप्ति और कोष को आगे बढ़ाने के लिये, निरोगी काया के लिये, व्यापार को बढ़ाने के लिये, लोक कल्याण के लिये, अपने आश्रितों का पोषण करने के लिये महालक्ष्मी पूजन करना चाहिये।

महालक्ष्मी पूजन का विशेष समय –

कार्तिक कृष्ण पक्ष के अमावस्या को भगवती श्रीमहालक्ष्मी एवं भगवान् गणेश की नूतन प्रतिमाओं का प्रतिष्ठापूर्वक विशेष पूजन किया जाता है।

पूजन की तैयारी –

पूजन के लिये किसी चौकी अथवा कपड़े के पवित्र आसन पर गणेश जी के दाहिने भाग में माता महालक्ष्मी को स्थापित करना चाहिये। पूजन के दिन गृह को स्वच्छ कर पूजन स्थान को भी पवित्र कर लेना चाहिये और स्वयं भी पवित्र होकर श्रद्धा भक्तिपूर्वक सायंकाल में इनका पूजन करना चाहिये। मूर्तिमयी श्रीमहालक्ष्मी जी के पास ही किसी पवित्र पात्र में केसरयुक्त चन्दन से अष्टदल कमल बनाकर उस पर द्रव्य लक्ष्मी को भी स्थापित करके एक साथ ही दोनों की पूजा करनी चाहिये। पूजन सामग्री को यथास्थान रख ले।

सर्वप्रथम पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुखा हो आचमन, पवित्रीधारण, मार्जन प्राणायाम कर अपने उपर तथा पूजा सामग्री पर निम्न मन्त्र पढ़कर जल छिड़के -

ऊँ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि: ॥

आसन - शुद्धि और स्वस्ति पाठ कर हाथ में जल – अक्षतादि लेकर पूजन संकल्प करें।

तत्पश्चात् प्रतिष्ठा कर ध्यान करें –

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितै: स्नापिता हेमकुम्भै:

सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता ॥

ऊँ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥

ऊँ महालक्ष्म्यै नमः । ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि । ध्यान के लिए पुष्प अर्पित करे ।

आवाहन –

सर्वलोकस्य जननीं सर्वसौख्यप्रदायिनीम् ।

सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम् ॥

ऊँ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।

यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरूषानहम् ॥

ऊँ महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मीमावाहयामि, आवाहनार्थे, पुष्पाणि समर्पयामि ।

आसन -

तत्पकाञ्चनवर्णाभं मुक्तामणिविराजितम् ।

अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥

ऊँ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।

श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥

ऊँ महालक्ष्म्यै नमः । आसनं समर्पयामि ।

पाद्य –

गंगादितीर्थसम्भूतं गन्धपुष्पादिभिर्युतम् ।

पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोऽस्तुते ॥

ऊँ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।

पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥

ऊँ महालक्ष्म्यै नमः । पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्य -

अष्ट गन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रप्रपूरिताम् ।

अर्घ्यं गृहाण मद्दतं महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते ।

ऊँ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।

तां पद्मनीमीं शरणं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥

ऊँ महालक्ष्म्यै नमः । हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमन –

सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्माविष्णवादिभिः स्तुता ।

ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम् ॥

ऊँ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।

तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥

ऊँ महालक्ष्म्यै नमः । आचमीनीयं जलं समर्पयामि ।

इसके पश्चात् पूर्व के पूजनानुसार स्नान, आचमन, वस्त्र, उपवस्त्रादि चढ़ायें ।

आभूषण –

रत्नकंकणवैदूर्यमुक्ताहारादिकानि च ।
सुप्रसन्नेन मनसादत्तानि स्वीकुरूष्व भोः ॥
ऊँ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥

ऊँ महालक्ष्म्यै नमः । नानाविधानि कुण्डलकटकादीनि आभूषणानि समर्पयामि ।

पुनः गन्ध, सिन्दूर, कुंकुम, अक्षत, पुष्प एवं पुष्पमाला दुर्वादि पूर्व के पूजन मन्त्रानुसार चढ़ायें ।

महालक्ष्मी अंग पूजा -

रोली, कुंकुममिश्रित अक्षत- पुष्पों से निम्नांकित एक – एक नाम मन्त्र पढ़ते हुए अंग पूजा करें-

ऊँ चपलायै नमः, पादौ पूजयामि ।

ऊँ चंचलायै नमः, जानुनी पूजयामि ।

ऊँ कमलायै नमः, कटिं पूजयामि ।

ऊँ कात्यायन्यै नमः, नाभिं पूजयामि ।

ऊँ जगन्मात्रे नमः, जठरं पूजयामि ।

ऊँ विश्ववल्लभायै नमः वक्षः स्थलं पूजयामि ।

ऊँ कमलवासिन्यै नमः, हस्तौ पूजयामि ।

ऊँ पद्माननायै नमः, मुखं पूजयामि ।

ऊँ कमलपत्राक्ष्यै नमः, नेत्रत्रयं पूजयामि ।

ऊँ श्रियै नमः, शिरः पूजयामि ।

ऊँ महालक्ष्म्यै नमः, सर्वांगं पूजयामि।

अष्टसिद्धि पूजन -

इस प्रकार अंगपूजा के अनन्तर पूर्वादि क्रम से आठों दिशाओं में आठों सिद्धियों की पूजा कुंकुमाक्त अक्षतों से देवी महालक्ष्मी के पास निम्नांकित मन्त्रों से करे –

ऊँ अणिम्ने नमः (पूर्व में) , ऊँ महिम्ने नमः (अग्निकोण में) , ऊँ गरिम्णे नमः (दक्षिणे) , ऊँ लघिम्ने नमः (नैर्ऋत्य में) , ऊँ प्राप्त्यै नमः (पश्चिमे) , ऊँ प्राकाम्यै नमः (वायव्ये), ऊँ ईशितायै नमः (उत्तर में) , ऊँ वशितायै नमः (ऐशान्याम्)।

अष्टलक्ष्मी पूजन –

तदनन्तर पूर्वादि क्रम से आठों दिशाओं में महालक्ष्मी के पास कुंकुमाक्त अक्षत तथा पुष्पों से एक – एक नाम मन्त्र पढ़ते हुए आठ लक्ष्मीयों का पूजन करे –

ऊँ आद्यलक्ष्म्यै नमः, ऊँ विद्यालक्ष्म्यै नमः , ऊँ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः , ऊँ अमृतलक्ष्म्यै नमः, ऊँ कामलक्ष्म्यै नमः , ऊँ सत्यलक्ष्म्यै नमः , ऊँ भोगलक्ष्म्यै नमः , ऊँ योगलक्ष्म्यै नमः ।

पुनः धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, ऋतुफल, ताम्बूल, दक्षिणा, नीराजन, प्रदक्षिणा पूर्वानुसार करें।

महालक्ष्मी की प्रसन्नता हेतु महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्र का पाठ –

इन्द्र उवाच-

नमस्तेस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मी नमोस्तुते।
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयंकरी।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तुते।
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयंकरी।
सर्वदुखहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तुते।
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी।
मन्त्रपूते सदादेवि महालक्ष्मीनमोस्तुते।
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरी।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मी नमोस्तुते।
स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तुते।

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणी।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मी नमोस्तुते।
श्वेताम्बरधरे देवि नानालंकारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मी नमोस्तुते।
महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेत् भक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा।
एककाले पठेन्नित्यं महापाविनाशनम्।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः।
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रु विनाशनम्।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा॥
इतीन्द्रकृतं महालक्ष्म्यष्टकम्।

इस महालक्ष्म्यष्टक का निर्माण इन्द्र जी के द्वारा किया गया है। इसका महत्व बतलाते हुये कहा गया है कि जो भी भक्तिमान होकर मनुष्य इस महालक्ष्म्यष्टक का पाठ करता है वह सभी प्रकार की सिद्धियों को प्राप्त करता है। राज्य की भी प्राप्ति इस स्तोत्र के पाठ से होती है। एक समय में पाठ करने से महापाप का विनाश होता है, दो काल यानी दो समय पढ़ने से धन एवं धान्य से व्यक्ति समन्वित होता है। तीन काल यानी तीनों समयों में पढ़ने से व्यक्ति महा शत्रुओं का विनाश होता है तथा महालक्ष्मी प्रसन्न होकर वर देने वाली होती है।

प्रार्थना -

सुरासुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिके -
र्युक्तं सदा यत्तव पादपंकजम् ।
परावरं पातु वरं सुमंगलं ।
नमामि भक्त्याखिलकामसिद्धयै॥
भवानि त्वं महालक्ष्मी: सर्वकामप्रदायिनी।
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मी नमोऽस्तुते॥
नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये ।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात् त्वदर्चनात् ॥

ऊँ महालक्ष्म्यै: नम:, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।

समर्पण -

पूजन के अन्त में कृतेनानेन पूजनेन भगवती महालक्ष्मीदेवी प्रीयताम् न मम् ॥

यह वाक्य उच्चारण कर समस्त पूजन कर्म भगवती महालक्ष्मी को समर्पित करे तथा जल गिराकर प्रणाम करे।

बोध प्रश्न -

१. सिद्धियों की संख्या है –

क. ८ ख. ९ ग. १० घ. ११

२. महालक्ष्मी का विशेष पूजन कब होता है –

क. कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा ख. कार्तिक कृष्ण अमावस्या ग. मार्गशीर्ष

घ. कार्तिक सप्तमी

३. सर्वलोकस्य जननीं का क्या अर्थ है –

क. सर्वजन ख. सभी लोगों की माता ग.सभी लोक घ. कोई नहीं

४. चन्द्रां प्रभासां ..... लोके देवजुष्टामुदाराम् ॥

क. यशसा ज्वलन्तीं सर्व ख. अलक्ष्मीर्मे नश्यतां ग. तपसोऽधि जातो

घ.तपसा नुदन्तु

५. निधियॉ है –

क. ८ ख. ९ ग. १० घ. ११

3.4 सारांश -

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से आपने जाना कि भगवती महालक्ष्मी चल एवं अचल, दृश्य एवं अदृश्य सभी सम्पत्तियों, सिद्धियों एवं निधियों की अधिष्ठात्री साक्षात् नारायणी हैं। कर्मकाण्ड में धन की आदि शक्ति के रूप में पराम्बा भगवती लक्ष्मी को जाना गया है। धन की प्राप्ति के लिये लक्ष्मी जी की वन्दना या पूजन किया जाता है। यह प्रकल्प शक्ति प्राप्ति हेतु एवं विविध मनोकामनाओं की प्रपूर्ति हेतु किया जाता है। अतः श्री लक्ष्मी जी क्या हैं ? तथा कैसे उनकी पूजा की जाती है ? इसका ज्ञान आपको इस इकाई के अध्ययन से हो जायेगा।

श्री लक्ष्मी जी की आरती एवं स्तुति विचार के अभाव में दीपावली आदि के अवसर पर या अन्य लक्ष्मी जी के व्रतादि या पूजनादि का सम्पादन किसी भी व्यक्ति द्वारा ठीक ढंग से नही हो सकता है।

क्योकि इसमें लक्ष्मी माता की ही उपासना की जाती है। सभी सुख, सुविधा, शक्ति, भुक्ति, मुक्ति की दाता एवं ज्ञान पुंज रूपा आह्लादिनी महालक्ष्मी जी की पूजा अवश्य करनी चाहिये। मां लक्ष्मी भाव से की गयी समस्त प्रकार के पूजन या स्तोत्र पाठ से परम प्रसन्न होती हैं। इसलिये मां लक्ष्मी की पूजा अवश्य करनी चाहिये। इसके लिये यथा उपलब्ध उपचारों से मां की श्रद्धा भक्ति एवं शुचिता से दीपावली या अन्य पर्व इत्यादि के समय महालक्ष्मी पूजन करना चाहिये। ताकि हमारा जीवन सुखमय, आनन्दमय, सात्विक विचारों से परिपूर्ण एवं वर्ष पर्यन्त पुत्र पौत्र सुख, हर्ष उल्लास, ग्रहों की शान्ति, कायिक, वाचिक एवं मानसिक पीड़ा की निवृत्ति के लिये, भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी, बेतालादि की शान्ति के लिये, अखण्ड लक्ष्मी की प्राप्ति और कोष को आगे बढ़ाने के लिये, निरोगी काया के लिये, व्यापार को बढ़ाने के लिये, लोक कल्याण के लिये, अपने आश्रितों का पोषण करने के लिये महालक्ष्मी पूजन करना चाहिये ।

3.5 शब्दावली-

चल – जिसमें गति हो।

अचल - स्थिर।

दृश्य – जो दिखलाई देता हो।

अदृश्य - जो दिखाई न देता हो।

पद्मासन - कमल का आसन।

पूर्वाभिमुख – पूर्व दिशा की ओर मुख

केसरयुक्त – केसर मिला हुआ

जननी – माता

नानाविध – अनेक प्रकार के

पादौ – दोनों पैर

कटि – कमर

हस्तौ - दोनों हाथ

3.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ख

2. ख

3. ख

4. क

5. ख

3.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- कर्मकाण्ड प्रदीप

2- संस्कार दीपक

3. नित्यकर्मपूजाप्रकाश

3.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1. महालक्ष्मी पूजन विधि का विस्तारपूर्वक उल्लेख कीजिये।

2. महालक्ष्मी के अंगपूजन एवं अष्टसिद्धि पूजन का वर्णन कीजिये।

3. महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्र का लेखन कीजिये।

इकाई – 4. नवरात्र एवं दुर्गापूजन विधि

इकाई की संरचना

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 नवरात्र परिचय
4.4 दुर्गापूजन विधि
4.5 सारांश
4.6 पारिभाषिक शब्दावली
4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
4.9 सहायक पाठ्यसामग्री
4.10 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई सी0वी0के-02 पाठ्यक्रम के द्वितीय खण्ड की चतुर्थ इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – नवरात्र एवं दुर्गापूजन विधि। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने संस्कारों और विभिन्न स्तोत्र पाठों, गणेशाम्बिका पूजन, शिव पूजन तथा महालक्ष्मी पूजन का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में नवरात्र तथा दुर्गापूजन पूजन के बारे में अध्ययन करने जा रहे है। नवानां रात्रिणां समाहार नवरात्रि। नवरात्र नौ दिनों का होता है। इन दिनों माता दुर्गा की उपासना की जाती है। दुर्गासप्तशती का पाठ किया जाता है।

आईए इस इकाई में हम सब नवरात्र तथा दुर्गापूजन को जानने का प्रयास करते हैं।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्

- आप जान जायेंगे कि नवरात्र एवं दुर्गापूजन कैसे किया जाता है।
- नवरात्र एवं दुर्गापूजन पूजन का विधान क्या है।
- आप नवरात्र एवं दुर्गापूजन को प्रायोगिक रूप से समझा सकते हैं।
- आप नवरात्र एवं दुर्गापूजन के महत्व को प्रतिपादित कर सकते हैं।

4.3 नवरात्र एवं दुर्गापूजन विधि

सर्वप्रथम, नवरात्र शब्द को लेकर यहाँ विचार किया जा रहा है, क्योंकि विचार के क्रम में शब्द ही पहले आते हैं इसके बाद अर्थ। संस्कृत में 'रात्रि' शब्द है, तो नवरात्रि शब्द का प्रयोग लोग क्यों नहीं करते हैं? लोग इसे नवरात्र ही क्यों कहते हैं? यह पहली जिज्ञासा है।

इसके लिए हम आपको कुछ देर के लिए व्याकरणशास्त्र की ओर ले चलेंगे, वहाँ इसका प्रामाणिक समाधान होगा।

महर्षि पाणिनि का एक सूत्र है - **'अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्चरात्रेः'** इसका अर्थ यह है - अहः, सर्व, एकदेश-सूचक शब्द, संख्यात तथा पुण्य के साथ, रात्रि का समास होने पर समासान्त अच् प्रत्यय हो जाता है और समस्तपद रात्रि को रात्र हो जाता है। संख्या एवं अव्यय के साथ भी इसी प्रकार होता है। जैसे अहश्च रात्रिश्चेति अहोरात्रः। सर्वा रात्रिः इति सर्वरात्रः। उसी तरह नवरात्र शब्द में भी नवानां रात्रीणां समाहारः नवरात्रम्, इसी तरह द्विरात्रम् आदि शब्द भी निष्पन्न होते हैं। अब जिज्ञासा होती है कि 'अच्' प्रत्यय होने पर अहोरात्रः की तरह नवरात्रः क्यों नहीं हुआ? तब

महर्षि कात्यायन का एक वार्तिक है - ''संख्यापूर्वं रात्रं क्लीबम्'' अर्थात् संख्यापूर्व रात्रन्त समास वाले शब्द नपुंसक लिंग में ही प्रयुक्त होते हैं। यथा - द्विरात्रम्, त्रिरात्रम् एवं नवरात्रम्। अस्तु! इस प्रकार संस्कृत में नवरात्रं कहेंगे एवं हिन्दी में इसे नवरात्र कहा जाता है। यह आपके विशेष जानकारी के लिए ही प्रस्तुत किया गया ताकि नवरात्रं, नवरात्र आदि शब्दों में सन्देह न हो।

यहाँ समाहार द्वन्द्व समास है। अस्तु।

अब विचार करना है कि नवरात्र ही इसे क्यों कहा गया? तथा इसके कितने प्रकार है? और कब, कब मनाये जाते हैं? इसका समाधान इस प्रकार दिया जा रहा है।

अनन्तकोटि ब्रह्माण्डों का परिचालन ईश्वर के द्वारा होता है यह ध्रुव सत्य है। यह परिचालन का कार्य एक प्रकार से प्रभु की शक्ति से ही सम्पन्न होता है यह बात भी निर्विवाद है। इस शक्ति की उपासना ही हम जीवधारियों का परम लक्ष्य है। यही परमात्मा की शक्ति, काल के रूप में हम सदा ही अनुभव करते हैं। काल भी नित्य है एवं परमात्मा की विभूति है। जैसा कि गीता में कहा गया - ''कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्त्तुमिहप्रवृत्तः''। इस प्रकार ऋतु या मौसम के रूप में यह काल रूप, ईश्वर-शक्ति जगत् में सतत परिवर्तन करती रहती है। इसका अनुभव प्रत्येक प्राणी को स्पष्ट रूप से होता है। संवत्सर में **360** दिन-रात होते हैं। इनको यदि **9,9** के खण्डों में विभक्त किया जाय तो सम्पूर्ण वर्ष में **40** नवरात्र होते हैं। अब प्रश्न यह होता है कि नौ, नौ के ही खण्ड क्यों?

इसका अभिप्राय यह है कि संख्याओं में नौ संख्या सभी से बड़ी है, अर्थात् एक अंक की सबसे बड़ी संख्या नौ है। यहाँ एक संख्या का अर्थ ईश्वर है। दूसरी बात यह है कि इस नौ संख्या के साथ प्रकृति का एक संबंध है - क्योंकि प्रकृति में तीन गुण है। सत्व, रज एवं तम। और ये तीनों परस्पर मिले हुए त्रिवृत कहलाते हैं। जिसका संकेत वेदों में आता है। इसको हम इस प्रकार समझ सकते हैं -

यज्ञोपवीत में तीन तार होते हैं। (धागे हैं) फिर एक एक में तीन धागे होते हैं, इस प्रकार तीन तीन मिलाकर नौ हो जाते हैं। इसीलिए यज्ञोपवीत संस्कार के समय, जनेऊ में ''ऊँकार'' आदि नव देवताओं का नौ तन्तुओं में आवाहन करते हैं। यही प्रकृति का स्वरूप है। प्रकृति के तीन गुण और फिर तीनों में एक एक सम्मिलित है जिसे हमलोग प्रकृतितत्त्व को ही निरन्तर जनेऊ के रूप में धारण करते हैं। यह एक प्रकार से प्रकृति का मानचित्र है। जैसे भारत का मानचित्र होता है।

उपरोक्त **40** नवरात्रों में मुख्यरूप से **4** नवरात्र प्रधान है जिसका संकेत देवीभागवत के इस श्लोक में प्राप्त होता है-

चैत्रेऽश्विने तथाषाढे माघे कार्यो महोत्सवः।

नवरात्रे महाराज पूजाकार्या विशेषतः।।

अर्थात् चैत्र, आश्विन, आषाढ एवं माघ के शुक्ल पक्ष कीं प्रतिपदा तिथि से नवमी तिथि तक नवरात्र रहता है। दो गुप्त नवरात्र है, जो आषाढ एवं माघ महीने में होते हैं। इनमें भी दो नवरात्र वर्तमान समय में अत्यन्त ही प्रसिद्ध हैं। चैत्र एवं अश्विन मास वाले ये दोनों ही नवरात्र ग्रीष्म और शीत, दो प्रधान ऋतुओं के आरम्भ की सूचना देने वाले हैं। इस अवसर पर प्रधानशक्ति सम्पूर्ण जगत् का परिवर्तन करती है। इस समय उस महाशक्ति का रूप प्रत्यक्ष होता है। इसीलिए विज्ञान की भित्ति पर प्रतिष्ठित सनातन धर्म में ये शक्ति उपासना के प्रधान अवसर माने गये हैं।

दूसरी बात यह है कि कृषि प्रधान भारत देश में चैत्र एवं आश्विन में ही महालक्ष्मी का स्वरूप प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है। वर्षा की फसल आश्विन में और शीत की फसल चैत्र में पककर तैयार हो जाती है। मानों भारत की धनधान्य समृद्धि अपने पूर्णरूप में प्रत्यक्ष हो जाती है। जब भारतवर्ष में सुख समृद्धि अधिक था, उन दिनों आश्विन एवं चैत्र महीनों में घर घर में लोग बड़ी उत्सुकता के साथ महालक्ष्मी का स्वागत करते थे। इस अवसर पर कृतज्ञ भारतवासी जगत् की शक्ति महालक्ष्मी की उपासना बड़ी श्रद्धा के साथ करते थे। अपने अहंकार को भूलकर जिस परमात्मा की परमशक्ति की कृपा से यह सुख समृद्धि प्राप्त हुई है, उसके चरणों में नत होना अपना कर्तव्य समझते थे। संभवतः इसीलिए दोनों नवरात्र शक्ति उपासना के लिए प्रधान समय माने गये हैं। आश्विन का महीना जैसे धन धान्य आदि समृद्धि के लिए प्रसिद्ध है उसी तरह विविध बीमारियों भी इसी समय में लोगों को होती है। इसीलिए - ''वैद्यानां शारदीमाता'' कहा गया है। क्योंकि वर्षा का अन्त एवं शीत का प्रारम्भ इसी काल में होता है। इन दोनों ऋतुओं के सन्धिकाल में ही नाना प्रकार के रोग होते हैं। आयुर्वेद में इसे यमद्रंष्ट्रा काल कहा गया है। इस समय प्राकृतिक आपत्ति से बचने के लिए भी यथाशक्ति महाशक्ति की उपासना अवश्य ही सभी को करना चाहिए।

जिन दिनों भारत के वीरक्षत्रिय संसार भर में विजय का डंका बजाते थे, उन दिनों इस आश्विन मास का और भी अधिक महत्त्व था। चातुर्मास में विजय यात्रा स्थगित रहती थी, वे घर पर विश्राम करते थे, आश्विन मास के आते ही ''वर्षा गत शरद् ऋतु आई'' इस वचन के अनुसार शक्ति की उपासना करके वे फिर विजययात्रा का आरम्भ कर देते थे। इसलिए आश्विन मास के नवरात्र में शक्ति की उपासना के लिए सबसे प्रधान काल माना गया है और इसके पूर्ण होते ही विजय यात्रा का दिन (विजयादशमी) भी आता है।

एक बात और यहाँ आप ध्यान दें। मैंने इसके पहले नवरात्र को प्रकृति की संज्ञा दी थी। इसके साथ ही प्रकृति में तीन गुण सत्, रज एवं तम है। प्रकृति रूप शक्ति के सौम्य क्रूर आदि भेद से नाना प्रकार के रूप हैं। अपने अपने अधिकारानुसार सिद्धि भी विभिन्न प्रकार की प्रत्येक मनुष्य चाहता है। अर्थात् अपनी इच्छानुसार ही विभिन्न रूपों की उपासना व्यक्ति करता है। यहाँ सत्व, श्वेत का प्रतीक है। रज, रक्त का एवं तम, कृष्णवर्ण (काला) का प्रतीक है। स्वच्छता, संघर्ष और आवरण का बोध कराने के लिए ही हम इन रूपों की उपासना करते हैं। यहाँ भी महालक्ष्मी सत्वस्वरूपा, श्रीमहासरस्वती रजस्वरूपा (रक्तरूपा) एवं महाकाली तमस्वरूपा (कृष्णवर्णात्मिका) है।

इन्हीं गुणों के अनुकूल ही उनके हाथों में आयुध या अन्य चिह्न भी देखे जाते हैं। इनकी उपासना से अपने अपने कार्य में सभी को विजय प्राप्त होती है यही विजयादशमी का लक्ष्य है। विशेष रूप से हमारे भारतवर्ष में दो नवरात्र अत्यन्त ही प्रसिद्ध है। इसका संकेत दुर्गापाठ में भी है - शरत्काले महापूजा, क्रियते या च वार्षिकी। अर्थात् आश्विन, शुक्ल एवं चैत्र, शुक्ल, प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त नवरात्र होता है।

यह तो नवरात्र का एक सामान्य परिचय था। नवरात्र में प्रमाण क्या है? क्या इसका संकेत कहीं शास्त्रों में है? यह भी जानना अत्यन्त अनिवार्य है। देखिये! युक्ति के साथ प्रमाण की भी आवश्यकता होती। यदि कोई आप से पूछ दें कि इन मासों में ही नवरात्र क्यों मनाया जाता है? इसमें प्रमाण क्या है? तो उत्तर आपको शास्त्रवचन के रूप में अवश्य ही देना होगा। क्योंकि कार्याकार्य में निर्णायक शास्त्र ही होते हैं। इसमें प्रमाण के लिए रुद्रयामल नाम के ग्रन्थ में ऐसा लिखा है-

आश्विने मासि सम्प्राप्ते शुक्लपक्षे विधेस्तिथिम्।

प्रारभ्य नवरात्रं स्याद् दुर्गा पूज्या तु तत्र वै।।

देवीपुराण में कहा गया है -

मासि चाश्वयुजे शुक्ले नवरात्रं विशेषतः।

सम्पूज्य नवदुर्गां च नक्तं कुर्यात् समाहितः।।

यहाँ रात्रि शब्द से दिन और रात दोनों का ग्रहण किया गया है। यह नवरात्र नित्य विधि की तरह है - जैसा कि लिखा है ‘‘वर्षे वर्षे विधातव्यं स्थापनं च विसर्जनम्’’। इससे यह ज्ञात होता है कि प्रत्येक वर्ष नवरात्र में भगवती की स्थापना, पूजन एवं विसर्जन अवश्य ही करना चाहिए। अब कोई कहे कि यदि न किया जाय तो क्या होगा? इसके उत्तर में कालिका पुराण में कहा गया है-

यो मोहादथवालस्याद्देवीं दुर्गां महोत्सवे।

न पूजयति दुष्टात्मा तस्य कामानिष्टान्निहन्ति च।।

यहाँ अर्थ तो अत्यन्त ही स्पष्ट है। आगे चलते हैं। इसीलिए 'पूजयित्वाश्विने मासे विशोको जायते नरः' कहा गया है। वर्तमान में सभी लोग अपने शोक (दुःख) को दूर करना चाहते हैं अतः शारदीय नवरात्र में शक्ति की उपासना उन्हें अवश्य ही करनी चाहिए। अधिकार की दृष्टि से इस नवरात्र पूजन में चारो वर्णों का अधिकार है। अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र। क्योंकि लिखा गया है-

स्नातैः प्रमुदितै र्हृष्टैः ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्नृप।
वैश्यैः शूद्रैर्भक्तियुतैर्म्लेच्छैरन्यैश्च मानवैः।।

इसका तात्पर्य यह है कि चारों वर्णों को श्रद्धा विश्वास पूर्वक दुर्गापाठ के माध्यम से शक्ति की उपासना करनी चाहिए। एवं जो शुद्ध दुर्गापाठ आदि करने में समर्थ हैं वे तो स्वयं करें एवं जिन्हें शुद्धता आदि में सन्देह है वे ब्राह्मणों से करा सकते हैं। परन्तु नवरात्र में शक्ति की उपासना अवश्य ही करनी चाहिए। यदि नौ दिनों तक आप करने में असमर्थ हैं, तो तीन दिन, सप्तमी से नवमी तक या एक दिन अष्टमी को करनी चाहिए। ऐसा शास्त्रों का कहना है। जैसा कि-

त्रिरात्रं वापि कर्तव्यं सप्तम्यादि यथाक्रमम्।
अष्टम्यां नवम्यां च जन्ममोक्षप्रदां शिवम्।।

अब यहाँ कुछ नवरात्र से सम्बन्धित मुहूर्त की थोड़ी चर्चा आपसे होगी। मुहूर्त का अर्थ है अच्छा समय या शुभकाल भी इसे कहते हैं। नवरात्र तो वैसे ही शुभकाल है फिर भी शास्त्रीय जो सिद्धान्त है उससे आपका परिचय कराया जा रहा है।

आप जानते हैं कि पूर्वाह्न काल देवताओं का होता है, मध्याह्नकाल मनुष्यों का एवं अपराह्न काल पितरों का होता है। जैसा कि लिखा है-

''पूर्वाह्नो वे देवानाम्, मध्यन्दिनो मनुष्याणाम् अपराह्नो पितृणाम्।

इस प्रकार नवरात्र में शुद्ध प्रतिपदा अर्थात् सूर्योदय में होने वाली प्रतिपदा तिथि में पूर्वाह्न - प्रातः काल के समय नवरात्र के निमित्त कलशस्थापन करना चाहिए। जैसा कि लिखा है - ''शुद्धे तिथौ प्रकर्तव्या प्रतिपच्चोर्ध्वगामिनी'' अर्थात् प्रतिपदा तिथि में सूर्योदय हो एवं वह तिथि अपराह्नकाल तक रहे वही तिथि यहाँ ग्राह्य है। यही प्रतिपदा का मुहूर्त है। यहाँ पूजन की विधि नहीं दी जा रही है, क्योंकि पूजन का विधान आपको पहले से ज्ञात है। यहाँ मात्र प्रतिपदा तिथि के दिन नवरात्र में नित्यकर्म समाप्त करके शुद्ध होकर गौरी गणेश पूजन पूर्वक कलश स्थापन अवश्य करना

चाहिए। इसके बाद दुर्गा सप्तशती स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। इसका विशेष विधान आगे की इकाई में बताया जायेगा।

दुर्गापाठ के अनुष्ठान में कुछ आवश्यक नियम

दुर्गापाठ में शीघ्रता, गाना गाने की तरह उच्चारण करना, सिर हिलाकर पाठ करना, अपने द्वारा लिखित दुर्गापाठ करना, अर्थ बिना समझे तथा अत्यन्त धीमे स्वर से पाठ करना, ये सभी उपरोक्त बातें निषिद्ध हैं। ऐसा नहीं करना चाहिए। जैसा कि लिखा है-

गीती शीघ्री शिरः कम्पी तथा लिखित पाठकः।

अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाऽधमाः।।

हमने सुना है कि कुछ समय पहले कवच के प्रसंग में एक सज्जन ने 'भार्यां रक्षतु भैरवी' की जगह 'भार्यां भक्षतु भैरवी' का पाठ किया, एक मास के पाठ के बाद ही स्त्री उनकी उन्हें छोड़कर स्वर्ग चली गई। अतः पाठ में सावधानी अवश्य ही रखनी चाहिए। उच्चारण में शुद्धता होनी चाहिए। हाथ में रखकर पुस्तक को पाठ नहीं करना चाहिए। शुद्ध शब्दों का उच्चारणपूर्वक पाठ करना चाहिए। मानसिक पाठ नहीं। एक विशेष बात और है कि अध्यायों के अन्त में आने वाले 'इति' अध्याय और 'वध' शब्द का उच्चारण नहीं करना चाहिए। इति शब्द के उच्चारण से लक्ष्मी का नाश, वध शब्द के उच्चारण से कुल का नाश, एवं अध्याय शब्दोच्चारण से प्राण का क्षय हो जाता है। अतः इनका उच्चारण नहीं करना चाहिए। जैसा कि कहा गया है-

इति शब्दो हरेल्लक्ष्मीः वधः कुलविनाशकः।

अध्यायो हरते प्राणान् सत्याः सन्तु फलप्रदः।।

इसका शुद्ध उच्चारण इस प्रकार करना चाहिए 'श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सत्याः सन्तु मम कामाः या यजमानस्य कामाः' बोलना चाहिए। यह परम्परा काशी के विद्वानों में आज भी देखी जाती है। क्योंकि सर्वाधिक उत्तम पाठ इसी परम्परा में प्राप्त है। अस्तु।

भाई! अब सुनते सुनते आप भी थक गए होंगे एवं लिखते-लिखते हम भी। तो अब आपसे क्यों न कुछ प्रश्न पूछ लिया जाय। तो आइए, तैयार हो जायें, उत्तर देने के लिए।

बोधप्रश्न

क. दुर्गासप्तशती में कितने श्लोक हैं?

ख. इस ग्रन्थ में किस मनु का वर्णन है?

ग. दुर्गापाठ में ऋषि शब्द से किसे कहा गया है?

घ. दुर्गासप्तशती किस पुराण के किस अध्याय से लिया गया है?

ङ. संस्कृत में कितने प्रकार के स्तोत्र मिलते हैं?

च. सप्तशती का संस्कृत में विग्रह कैसे होगा?

च. दुर्गापाठ में कितने चरित्र एवं कितने अध्याय हैं?

4.4 दुर्गा पाठ की विधि

दुर्गा पाठ करने की विधि विविध शास्त्रों के अनुसार (तन्त्र एवं आगम ग्रन्थों के अनुसार) भिन्न भिन्न हैं। हम निर्णय नहीं कर पाते हैं कि कौन सा न्यास छोड़ें और कौन सा करें। यदि शास्त्रों के अनुसार सभी अंगों (पाठों) का अनुपालन करते हैं, तो 24 घंटा बीत जायेंगे पर पाठ का क्रम पूर्ण नहीं हो सकता है। इसके साथ ही इसका निर्णय भी (कर्तव्याकर्तव्य का) हम स्वयं नहीं कर सकते हैं। इसके लिए शास्त्रीय पक्ष ही निर्णायक हैं। इन सभी ऊहापोहों पर विचार करते हुए हम एक निर्णय पर पहुँचते हैं जो सभी के लिए ग्राह्य एवं शास्त्रानुमोदित पक्ष है। यह दुर्गापाठ की परम्परा, काशी की है, जो लगभग हजारों वर्षों से चली आ रही है। एवं जिसका मूल अत्यन्त प्राचीन हस्तलिखित पाठ दुर्गा पाठ की विधि में लेखक ने (हमने) प्रत्यक्ष देखा है। क्योंकि हमें भी छात्र जीवन में इस काशी की परम्पराप्राप्त पाठ में कहीं कहीं सन्देह होने लगा था कि ऐसा ही क्यों? इसके समाधान के लिए मैं एक प्रतिष्ठित विद्वान् से अपनी जिज्ञासा रखी तब उन्होंने एक प्राचीन पद्धति जो हस्तलिखित एवं लगभग 500 वर्ष पुरानी थी उसमें उन्होंने हमें दिखाया, वही परम्परा आज भी है तब जाकर हमें भी विश्वास हुआ। यही परम्परा प्राप्त दुर्गा पाठ आज हम भी करते एवं कराते हैं। सौभाग्य से हमने अक्षरशः गुरुमुख से काशी में दुर्गापाठ पढ़ा है, अतः वही पाठ आपके सामने रख रहा हूँ।

साधक स्मरण करके पवित्र होकर पवित्र आसन पर बैठ कर शुद्ध जल (गंगाजल) से आचमन, प्राणायाम करके 'अपवित्रः पवित्रो वा' इस मन्त्र से अपने ऊपर जल छिड़के। पवित्री धारण करके 'द्यौः शान्तिः' मन्त्र का पाठ करें। इसके बाद हाथ में अक्षत, जल, पुष्प, द्रव्य लेकर भगवती की मूर्ति के सामने संकल्प करें। संकल्प आप को बताया जा चुका है अतः यहाँ देने की जरुरत नहीं है। विशेष रूप से - 'गोत्रः शर्माऽहं' आदि का उच्चारण करके 'अस्मिन् नवरात्र पर्वणि त्रिगुणात्मिकायाः भगवत्याः श्री दुर्गादेव्याः कृपाप्रसादेन सकलापच्छान्तिपूर्वकं सदभीष्टकामना संसिद्ध्यर्थं त्रिगुणात्मिका जगदम्बा श्री दुर्गादेवता प्रीत्यर्थं, (यदि कोई कामना हो तो उसका उच्चारण करें) यदि निष्काम भाव से करना हो तो यही संकल्प पर्याप्त है। लेखक सदा से ही निष्काम संकल्प (यही संकल्प) करता आया है, क्योंकि माँ सर्वज्ञ हैं, हमारी न्यूनता या दोषों, बाधाओं को अच्छी

तरह वह जानती है अतः उनके सामने हम क्या कहें। 'दुर्गासप्तशतीस्तोत्रस्य कवचार्गलाकीलकसहितं नवार्णमन्त्रजपपुरस्सरं देवीसूक्तरात्रिसूक्तं रहस्यत्रयसमन्वितं दुर्गापाठमहं करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प करके भगवती दुर्गा का यथालब्धोपचार से पूजन करें एवं प्रणाम करते हुए विनियोग पूर्वक कवच का पाठ करें। कवच पाठ करने के बाद अर्गला स्तोत्र एवं कीलक का पाठ करें। जिसका निर्देश रुद्रयामल में इस प्रकार किया गया है। कुछ आचार्यों के मत से शापोद्धार आदि भी करना चाहिए लेकिन यह मत सर्वमान्य नहीं है। उपरोक्त पाठ ही शास्त्रसम्मत है।

कवचं बीजमादिष्टमर्गलाशक्तिरुच्यते।
कीलकं कीलकं प्राहुः सप्तशत्यामहामनोः।।

यथा सर्वमन्त्रेषु बीजशक्तिकीलकानां प्रथममुच्चारणं तथा सप्तशतीपाठेऽपि कवचार्गलाकीलकानां प्रथमं पाठः स्यात्।

कवचार्गलाकीलक पाठ करने के बाद नर्वाणमन्त्र जप का न्यास करें। ऊँ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास:

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि। गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दोभ्यो नमः, मुखे। श्री महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः, हृदि। ऐं बीजाय नमः, गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ।

'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इस मूल मन्त्र से हाथों की शुद्धि करके करन्यास करे।

करन्यास:

ऊँ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। (दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों से दोनों अंगुठों का स्पर्श)
ऊँ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। (दोनों हाथों के अंगुठों से दोनों तर्जनी अंगुलियों का स्पर्श)
ऊँ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। (अंगूठों से मध्यमा अंगुलियों का स्पर्श)
ऊँ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः। (अनामिका अंगुलियों का स्पर्श)
ऊँ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः। (कनिष्ठिका अंगुलियों का स्पर्श)
ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। (हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श)

हृदयादिन्यासः

ऊँ ऐं हृदयाय नमः (दाहिने हाथ की पाँचों अंगुलियों से हृदय का स्पर्श)

ऊँ ह्रीं शिरसे स्वाहा। (सिर का स्पर्श)

ऊँ क्लीं शिखायै वषट् (शिखा का स्पर्श)

ऊँ चामुण्डायै कवचाय हुम् (दाहिने हाथ की अंगुलियों से बायें कन्धे का और बायें हाथ की अंगुलियों से दाहिने कन्धे का साथ ही स्पर्श)

ऊँ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् (दाहिने हाथ की अंगुलियों के अग्र भाग से दोनों नेत्रों और ललाट के मध्य भाग का स्पर्श)

ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् (यह वाक्य पढ़कर दाहिने हाथ को सिर के ऊपर से बायीं ओर से पीछे की ओर ले जाकर दाहिनी ओर से आगे की ओर ले जायें और तर्जनी तथा मध्यमा अंगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजाये)

अक्षरन्यासः

ऊँ ऐं नमः, शिखायाम्। ऊँ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे। ऊँ क्लीं नमः, वामनेत्रे। ऊँ चां नमः, दक्षिणकर्णे। ऊँ मुं नमः, वामकर्णे। ऊँ डां नमः, दक्षिणनासापुटे। ऊँ यैं नमः, वामनासापुटे। ऊँ विं नमः, मुखे। ऊँ च्चें नमः, गुह्ये।

इस प्रकार न्यास करके मूलमन्त्र से आठ बार व्यापक (दोनों हाथों द्वारा सिर से लेकर पैर तक के सब अंगों का स्पर्श) करें, फिर प्रत्येक दिशा में चुटकी बजाते हुए न्यास करे-

दिङ्न्यासः

ऊँ ऐं प्राच्यै नमः। ऊँ ऐं आग्नेय्यै नमः। ऊँ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ऊँ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः। ऊँ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ऊँ क्लीं वायव्यै नमः। ऊँ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ऊँ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूयै नमः।

इन सभी न्यासों को पूर्ण करते हुए श्रीमहाकाली महालक्ष्मी एवं महासरस्वती का निम्न श्लोकों से ध्यान करें।

खड्गं चक्रगदेषु चापपरिधां छूलं भुशुण्डीं शिरः
शंखं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वांगभूषावृताम्।
नीलाष्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम्
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।

अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।
घण्टाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्।।

फिर 'ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः' इस मन्त्र से माला की पूजा करके प्रार्थना करे-

ऊँ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।

ऊँ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।

ऊँ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।

इसके बाद ''ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' इस मन्त्र का 108 बार जप करे और -

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।

नवार्ण मन्त्र जप के बाद ' ऊँ ऐं हृदयाय नमः, ऊँ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ऊँ क्लीं शिखायै वषट्, ऊँ चामुण्डायै कवचाय हुम, ऊँ विच्चै नेत्रत्रयाय वौषट्, ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै अस्त्राय फट्' पढ़कर हृदयादि न्यास करें।

यहाँ पर नवार्ण मन्त्र जप के पहले भी न्यास एवं जप के बाद रात्रिसूक्त का पाठ करना चाहिए। जो 'विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थिति संहारकारिणी' से लेकर 'बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ' तक है। इसमें 15 श्लोक हैं। रात्रिसूक्त पाठ के बाद सप्तशती के पाठ का विनियोग हाथ में जल लेकर करना चाहिए।

प्रथममध्यमोत्तरचरित्राणां ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषय, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः, रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामयोर्बीजानि, अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि, ऋग्यजुःसामवेदा ध्यानानि, सकलकामनासिद्धये

श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

इसके बाद दुर्गा पाठ का न्यास करें -

करन्यासः

ऊँ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणो तथा।
शंखिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिधायुधा।। अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ऊँ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।। तर्जनीभ्यां नमः।
ऊँ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।। मध्यमाभ्यां नमः।
ऊँ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्।। अनामिकाभ्यां नमः।
ऊँ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसंगीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।। कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ऊँ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते।। करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।
ऊँ खड्गिनी शूलिनी घोरा ..... हृदयाय नमः।
ऊँ शूलेन पाहि नो देवि ..... शिरसे स्वाहा।
ऊँ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां ..... शिखायै वषट्।
ऊँ सौम्यानि यानि ..... कवचाय हुम्।
ऊँ खड्गशूलगदादीनि ..... नेत्रत्रयाय वौषट्।
ऊँ सर्वस्वरूपे सर्वेशे ..... अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

(यहाँ पर कुछ आचार्य कहते हैं कि इस विनियोग की आवश्यकता नहीं है क्योंकि प्रत्येक चरित्र के आरम्भ में वही विनियोग है। बात भी ठीक है। इसे कर लेने से भी कोई हानि नहीं होगी। यहाँ कर लेने के बाद तत्तत् चरित्रों के आरम्भ में भी विनियोग कर सकते हैं।)

यह विनियोग एवं ध्यान दुर्गा पाठ का है। अतः सीधे प्रथम चरित्र का विनियोग एवं खड्गं चक्रगदेषु चाप का पाठ करते हुए ध्यान करके प्रथम चरित्र का पाठ प्रारम्भ करना चाहिए। जो सावर्णिः सूर्यतनयो. से प्रारम्भ होता है। एक बात अवश्य ध्यान देना चाहिए कि अध्याय के बीच में कोई व्यवधान आ जाय, या कुछ बोल देने पर पुनः अध्याय को प्रारम्भ से पढ़ना चाहिए। 'अध्यायमध्ये न विरमेत्' लिखा है। इसके बाद क्रमशः तेरह अध्याय तक पाठ करना चाहिए। पाठ के बाद - 'खड्गिनी शूलिनी घोरा' से करन्यास एवं हृदयादिन्यास करें तथा तत्रोक्त देवीसूक्त का पाठ करना चाहिए। नमो देव्यै महादेव्यै से लेकर भक्तिविनम्रमूर्तिभिः. तक यह तन्त्रोक्त देवीसूक्त है। इस देवी सूक्त के पाठ के बाद नर्वाण मन्त्र जप का - ऊँ ऐं हृदयाय नमः' आदि से अस्त्राय फट् तक न्यास करें एवं नवार्ण मन्त्र का जप करें। जप निवेदन के बाद पुनः हृदयादि न्यास करें। इसके साथ ही तीनों रहस्यों का पाठ विनियोग सहित करें। पाठ करने के बाद कुंजिका स्तोत्र का पाठ एवं देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र का पाठ करें एवं पाठ भगवती को समर्पित करें। इस प्रकार आपका एक दिन का पाठ यहाँ पूर्ण हो गया। इसी क्रम से नवरात्र में यथाशक्ति चण्डी पाठ करना चाहिए। यह एक पाठ हुआ। ऐसे ही नव पाठ करें। शास्त्रीय मान्यताओं के अनुसार यहाँ दुर्गापाठ के प्रारम्भ में नर्वाण मन्त्र जप एवं अन्त में तथा रात्रिसूक्त का पाठ आदि में एवं देवी सूक्त का पाठ अन्त में करने का विधान बताया गया है जो आपको यहाँ बताया गया।

यही दुर्गापाठ की अत्युत्तम विधि है। इस क्रम से पाठ करने पर शास्त्रविधि से पाठ सम्पन्न होता है एवं शास्त्र आज्ञा का अनुपालन भी हो जाता है।

इसके अतिरिक्त जो भिन्न- भिन्न विधियाँ एवं पाठ का क्रम अन्य ग्रन्थों में दिया गया है वह भी आदरणीय है उसका भी चिन्तन मनन आप अवश्य कर सकते हैं परन्तु दुर्गापाठ के अंगभूत वे स्तोत्र नहीं है। दूसरी बात यह है यह पाठ सात्विक परम्पराओं का अनुपालन करता है। जो लोग राजस, तामस परम्परा प्राप्त पद्धति से पाठ करना चाहते हैं वे हमारे लिए प्रणम्य है। वे स्वेच्छापूर्वक जिस प्रकार चाहे वैसा कर सकते हैं। लेकिन जो विधि आपको बताई गई यह वे वैदिक सनातन धर्म परम्परा प्राप्त पद्धति है। अनुकरण के लिए आप स्वतन्त्र है। अस्तु!

अब आपके लिए कुछ इससे भी सम्बद्ध बोध प्रश्न दिये जा रहे हैं। जिनका उत्तर आपको देना है।

बोध प्रश्न

क. रात्रिसूक्त का पाठ कब करें?

ख. कवच का क्या अर्थ है?

ग. अर्गला किसे कहते हैं?

घ. देवीसूक्त का कब पाठ करते हैं?

दुर्गा पूजन विधि –

सर्वप्रथम आसन पर गणपति एवं दुर्गा माता की मूर्ति के सम्मुख बैठ जाएं (बिना आसन, चलते-फिरते, पैर फैलाकर पूजन करना निषेध है)। इसके बाद अपने आपको तथा आसन को इस मंत्र से शुद्धि करें -

"ॐ अपवित्र : पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा। य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर: शुचि :॥" इन मंत्रों से अपने ऊपर तथा आसन पर 3-3 बार कुशा या पुष्पादि से छींटें लगायें फिर आचमन करें – ॐ केशवाय नम: ॐ नारायणाय नम:, ॐ माधवाय नम:, ॐ गोविन्दाय नम:। फिर जल से हाथ धोकर शुद्ध करें, पुन: आसन शुद्धि मंत्र बोलें :-

ॐ पृथ्वी त्वयाधृता लोका देवि त्यवं विष्णुनाधृता।
त्वं च धारयमां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

इसके पश्चात अनामिका उंगली से अपने मत्थे पर चंदन लगाते हुए यह मंत्र बोलें-

चन्दनस्य महत्पुण्यम् पवित्रं पापनाशनम्,
आपदां हरते नित्यम् लक्ष्मी तिष्ठतु सर्वदा।

संकल्प- संकल्प में पुष्प, फल, सुपारी, पान, चांदी का सिक्का, नारियल (पानी वाला), मिठाई, मेवा, थोड़ी-थोड़ी मात्रा में लेकर संकल्प मंत्र बोलें –

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु:, ॐ अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे, कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे पुण्य (अपने नगर/गांव का नाम लें) क्षेत्रे बौद्धावतारे वीर विक्रमादित्यनृपते (वर्तमान संवत), तमेऽब्दे परिधावी नाम संवत्सरे उत्तरायणे (वर्तमान) ऋतो महामंगल्यप्रदे मासानां मासोत्तमे (वर्तमान) मासे (वर्तमान) पक्षे (वर्तमान) तिथौ (वर्तमान) वासरे (गोत्र का नाम लें) गोत्रोत्पन्नोऽहं अमुकनामा (अपना नाम लें) सकलपापक्षयपूर्वकं सर्वारिष्ट शांतिनिमित्तं सर्वमंगलकामनया- श्रुतिस्मृत्योक्तफलप्राप्त्यर्थं मनेप्सित कार्य सिद्धयर्थं श्री दुर्गा पूजनं च अहं करिष्ये। तत्पूर्वागंत्वेन निर्विघ्नतापूर्वक कार्य सिद्धयर्थं यथा मिलितोपचारे गणपति पूजनं करिष्ये।

पश्चात् पूर्व पाठ के अनुसार गणेशाम्बिका का पूजन करें। उसके पश्चात् दुर्गा जी का पूजन करें। दुर्गा जी के पूजन के लिए भी नैवेद्य चढ़ाते हुए श्रीसूक्त के मन्त्र अथवा द्रव्यादि चढ़ाने के पूर्व के मन्त्रों का

पाठ कर सकते हैं। प्रत्येक मन्त्रों के पश्चात् नीचे दिए गए मन्त्रों का पाठ करें।

सबसे पहले माता दुर्गा का ध्यान करें-

सर्व मंगल मागंल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्येत्रयम्बिके गौरी नारायणी नमोस्तुते ॥

आवाहन-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। दुर्गादेवीमावाहयामि॥

आसन-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। आसानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि॥

अर्घ्य-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि॥

आचमन-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। आचमनं समर्पयामि॥

स्नान-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। स्नानार्थं जलं समर्पयामि॥

स्नानांग आचमन-

स्नानान्ते पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि।

पंचामृत स्नान-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। पंचामृतस्नानं समर्पयामि॥

गन्धोदक-स्नान-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि॥

शुद्धोदक स्नान-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि॥

आचमन-

शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्र-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। वस्त्रं समर्पयामि ॥ वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

सौभाग्य सूत्र-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। सौभाग्य सूत्रं समर्पयामि ॥

चन्दन-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। चन्दनं समर्पयामि ॥

हरिद्राचूर्ण-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। हरिद्रां समर्पयामि ॥

कुंकुम-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। कुंकुम समर्पयामि ॥

सिन्दूर-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। सिन्दूरं समर्पयामि ॥

कज्जल-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। कज्जलं समर्पयामि ॥

आभूषण-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। आभूषणानि समर्पयामि ॥

पुष्पमाला-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। पुष्पमाला समर्पयामि ॥

धूप-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। धूपमाघ्रापयामि॥

दीप-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। दीपं दर्शयामि॥

नैवेद्य-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। नैवेद्यं निवेदयामि॥नैवेद्यान्ते त्रिबारं आचमनीय जलं समर्पयामि।

फल-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। फलानि समर्पयामि॥

ताम्बूल-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। ताम्बूलं समर्पयामि

दक्षिणा-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। दक्षिणां समर्पयामि॥

आरती-

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। आरार्तिकं समर्पयामि॥

पूजन के पश्चात् क्षमा याचना करें।

क्षमा प्रार्थना----

न मंत्रं नोयंत्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो

न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ।

न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं

परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत्क्षतव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयंत्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत् क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापित्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदप कुमाता न भवति ॥
परित्यक्तादेवा विविधविधिसेवाकुलतया
मया पंचाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदर जननि कं यामि शरण् ॥
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातंको रंको विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतहारी पशुपतिः ।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥
न मोक्षस्याकांक्षा भवविभव वांछापिचनमे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।

अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडाणी रुद्राणी शिवशिव भवानीति जपतः ॥
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रूक्षचिंतन परैर्नकृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥
जगदंब विचित्रमत्र किं परिपूर्ण करुणास्ति चिन्मयि ।
अपराधपरंपरावृतं नहि मातासमुपेक्षते सुतम् ॥
मत्समः पातकी नास्तिपापघ्नी त्वत्समा नहि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवियथायोग्यं तथा कुरु ॥

अन्त में दुर्गा जी की आरती करें -

जगजननी जय! जय! माँ! जगजननी जय! जय!
भयहारिणी, भवतारिणी, भवभामिनि जय जय। जगजननी ..
तू ही सत्-चित्-सुखमय, शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन, सुन्दर, पर-शिव सुर-भूपा॥ जगजननी ..
आदि अनादि, अनामय, अविचल, अविनाशी।
अमल, अनन्त, अगोचर, अज आनन्दराशी॥ जगजननी
अविकारी, अघहारी, अकल कलाधारी।
कर्ता विधि, भर्ता हरि, हर संहारकारी॥ जगजननी .
तू विधिवधू, रमा, तू उमा महामाया।
मूल प्रकृति, विद्या तू, तू जननी जाया॥ जगजननी .
राम, कृष्ण तू, सीता, ब्रजरानी राधा।
तू वाँछाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा॥ जगजननी ..

दश विद्या, नव दुर्गा नाना शस्त्रकरा।
अष्टमातृका, योगिनि, नव-नव रूप धरा॥ जगजननी ..
तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू।
तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू॥ जगजननी .
सुर-मुनि मोहिनि सौम्या, तू शोभाधारा।
विवसन विकट सरुपा, प्रलयमयी, धारा॥ जगजननी .
तू ही स्नेहसुधामयी, तू अति गरलमना।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि तना॥ जगजननी ..
मूलाधार निवासिनि, इह-पर सिद्धिप्रदे।
कालातीता काली, कमला तू वरदे॥ जगजननी ..
शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी।
भेद प्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी॥ जगजननी ..
हम अति दीन दुःखी माँ! विपत जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे॥ जगजननी ..
निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै।
करुणा कर करुणामयी! चरण शरण दीजै॥ जगजननी ....

आरती के पश्चात् प्रदक्षिणा कर विसर्जन की क्रिया करनी चाहिये।

4.5 सारांश

प्रस्तुत इस इकाई में प्रधान रूप से दुर्गापाठ के नियम एवं पाठ करने की विधि का शास्त्रीय रीति से ज्ञान कराया गया। इसके साथ ही दुर्गासप्तशती का परिचय, कुछ शाक्त सन्त महापुरुषों की भगवती दुर्गा के प्रति उपासना या साधना का फल जिसके प्रभाव से आज भी वे अपने यशःकाय से जीवित हैं। इसमें भगवती दुर्गा की उपासना का ही प्रत्यक्ष फल ज्ञात होता है। इसमें सन्देह नहीं। इसी क्रम में आपको यह भी बताया गया है कि अन्य देवताओं को छोड़कर दुर्गा जी की ही आराधना क्यों किया जाय? एवं नवरात्रों में दुर्गापाठ का ही महत्त्व इतना अधिक क्यों है? इन सभी विषयों पर प्रकाश डाला गया। पाठ से सम्बद्ध कुछ विशेष नियम को बताते हुए चण्डी पाठ कैसे करें? इसे भी आपको उहापोह पूर्वक काशी की पाण्डित्य परम्परा के अनुसार यथासंभव आपके लिए प्रस्तुत किया गया। इस प्रकार यह इकाई दुर्गापाठ की विधि से पूर्ण होती है।

4.6 पारभाषिक शब्दावली

क. अनर्थज्ञः	-	अर्थ न जानने वाला
ख. शीघ्री	-	अत्यन्त शीघ्र पाठ करने वाला
ग. लिखितपाठकः	-	अपने हाथ से लिखकर स्तोत्र पढने वाला
घ. क्रौष्टुकि	-	भागुरि ऋषि
ङ. दारैः	-	भार्या द्वारा
च. वैश्य	-	समाधि नाम का वैश्य
छ. राजोवाच	-	राजा सुरथ ने कहा
ज. प्रणव	-	ऊँकार
झ. तुष्टाव	-	स्तुति किया

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर (क)

क. दुर्गासप्तशती में उवाच, अर्ध श्लोक आदि मिलाकर 700 श्लोक हैं।

ख. इसमें 8वें मनु 'सावर्णिः' का वर्णन है।

ग. इसमें क्रौष्टुकि जी को ऋषि शब्द से कहा गया है।

घ. यह मार्कण्डेय पुराण के (78 से 90 अध्याय तक) से लिया गया है।

ङ. संस्कृत में लगभग तीन प्रकार के स्तोत्र पाये जाते हैं।

च. सप्तानां शतानां समाहारः इति सप्तशती ऐसा विग्रह होता है।

छ. दुर्गा पाठ में तीन चरित्र एवं तेरह अध्याय हैं।

बोधप्रश्न के उत्तर (ख)

क. रात्रिसूक्त का पाठ दुर्गापाठ के प्रारम्भ में किया जाता है।

ख. कवच शरीर की रक्षा करता है। इसे रक्षक कहते हैं। वर्म भी कहते हैं।

ग. यह दरवाजे को बन्द करके रोकने के लिए लकड़ी का बना यन्त्र है। यह शब्द अवरोध के अर्थ में बहुधा प्रयुक्त होता है।

घ. देवीसूक्त का पाठ दुर्गापाठ के अन्त में किया जाता है।

4.8 सन्दर्भग्रन्थसूची

क. दुर्गासप्तशती
ख. रुद्रयामलतन्त्र
ग. मार्कण्डेय पुराण
घ. दुर्गार्चन पद्धति
ङ. दुर्गोपासना कल्पद्रुम

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

क. श्रीदुर्गा जी के महत्त्व पर प्रकाश डालें।
ख. दुर्गापाठ की विधि का विस्तार से वर्णन करें।

इकाई – 5 विष्णु पूजन विधान

इकाई की संरचना

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 विष्णुपूजन विधान
5.4 सारांश
5.5 पारिभाषिक शब्दावली
5.6 बोध प्रश्नों के उत्तर
5.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
5.8 सहायक पाठ्यसामग्री
5.9 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई सी0वी0के-02 पाठ्यक्रम के द्वितीय खण्ड की पंचम इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – विष्णु पूजन विधान। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने संस्कारों और विभिन्न स्तोत्र पाठों, गणेशाम्बिका पूजन, शिव पूजन तथा महालक्ष्मी पूजन, नवरात्र एवं दुर्गापूजन का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में विष्णु पूजन के बारे में अध्ययन करने जा रहे है। विष्णु पूजन में भगवान विष्णु की विविध प्रकार के मांगलिक द्रव्यों द्वारा कर्मकाण्ड विधि से पूजन किया जाता है।

आईए इस इकाई में हम सब विष्णु पूजन विधान को जानने का प्रयास करते हैं।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्

- आप जान जायेंगे कि विष्णु पूजन कैसे किया जाता है।
- विष्णु पूजन का विधान क्या है।
- आप विष्णु पूजन को प्रायोगिक रूप से समझा सकते हैं।
- आप विष्णु पूजन के महत्व को प्रतिपादित कर सकते हैं।

5.3 विष्णु पूजन विधान

भगवान विष्णु को जगत का पालनकर्त्ता कहा गया है। इनका निवास स्थान क्षीरसागर में बतलाया जाता है। यह माता महालक्ष्मी के साथ शेष सय्या पर क्षीरसागर में ही निवास करते हैं। उसे ही वैकुण्ठ धाम के नाम से भी जाना जाता है। भगवान विष्णु का पूजन समस्त गृहस्थों को करना चाहिए, इससे उनके परिवार एवं समाज में शान्ति बनी रहती है। विष्णु भगवान के प्रचलित दशावतार कहे गये हैं, किन्तु भागवतमहापुराण में उनके २४ अवतारों का वर्णन हैं। राम एवं कृष्ण भगवान के सर्व प्रमुख अवतारों में माना जाता है। गौ एवं द्विजों के हितों के लिए तथा धर्म की स्थापना एवं रक्षा के लिए भगवान का अवतार होता रहता है। भगवान विष्णु की पूजन में मुख्यतया तुलसीपत्र का प्रयोग होता है। पूजन की विधि यहाँ इस इकाई में आपको बतलायी जा रही है।

सर्वप्रथम प्रात:काल स्नान-सन्ध्या आदि नित्यकर्म से निवृत्त होकर विष्णु-पूजनार्थ पवित्र आसन पर बैठ कर आचमन, प्राणायाम कर ॐ अपवित्र: पवित्रो...0' वा मन्त्र से इससे अपने शरीर का और पूजन सामग्री का पवित्र जल से सम्प्रोक्षण करे।

पश्चात अपने दाहिने हाथमें अक्षत, पुष्प तथा जल लेकर इस प्रकार सङ्कल्प करे---

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु: श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकग्रामे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरी शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगर्णावशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्र: अमुकशर्माऽहम् अमुकवर्माऽहम्, अमुकगुप्तोऽहम् ममात्मन : श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्त्यथ धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं यथोपचारै: श्रीविष्णुपूजनमहं करिष्ये ।'

इसके पश्चात् सर्वप्रथम भगवान का ध्यान करें ---

विष्णु का ध्यान –

उद्यत्कोटिदिवाकराभमनिशं शखं गदां पंकजम् ।
चक्र विभ्रतमिन्दिरावसुमतीसंशोभिपार्श्वद्वयम् ॥
कोटीरांगदहारकुण्डलधरं पीताम्बरं कौस्तुभै -
दीप्तं विश्वधरं स्ववक्षसि लसच्छ्रीवत्सचिह्नं भजे

अर्थ - उदीयमान करोड़ों सूर्य के समान प्रभातुल्य, अपने चारों हाथों में शंख, गदा, पद्म तथा चक्र धारण किये हुए एवं दोनों भागों में भगवती लक्ष्मी और पृथ्वी देवी से सुशोभित, किरीट, मुकुट, केयूर हार और कुण्डलों से समलंकृत, कौस्तुभमणि तथा पीताम्बर से देदीप्यमान विग्रहयुक्त एवं वक्ष:स्थलपर श्रीवत्सचिह्न धारण किये हुए भगवान विष्णु का मैं निरन्तर स्मरण ध्यान करता हूँ ।

ध्यानार्थे अक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ऊँ विष्णवे नम: ।

ध्यान का अन्य मन्त्र

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेधवर्ण शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

आवाहन -

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुष: सहस्राक्ष: सहस्रपात् ।
स भूमिर्ठ० सर्व्वतस्पृत्त्वात्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥
आगच्छ भगवन्देव स्थाने चात्र स्थिरो भव ।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव ।
श्रीभगवते विष्णवे नम: आवाहयामि स्थार्पयामि ।

आसन---

ॐ पुरुष ऽएवेदर्ठ० सर्व्वं यद् भूतं वच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥
रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभय ।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥
श्रीभगवते विष्णवे नम: आसनं समर्पयामि ।

पाद्य---

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुष: ।
पादोऽस्य व्विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥
उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम् ।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: पादयो: पाद्यं जलं समर्पयामि ।

अर्घ---

रजत अथवा ताम्रके अध्यपात्रमें गङ्गाजल, चन्दन, अक्षत, पुष्प, तुलसीदल लेकर भगवान् विष्णुको **अर्घ्य प्रदान करें---**

ॐ त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुष: पादोऽस्येहा भवत्पुन: ।
ततो व्विष्वङ व्यक्क्रा मत्साशनानशने ऽअभि ॥
अध्य गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतै: सह ।
करुणाकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: हस्तयोरर्घ समर्पयामि ।

आचमन---

ॐ ततो व्विराडजायत व्विराजो ऽअधिपूरुष: ।
स जातो ऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुर: ॥

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम् ।

आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

स्नान

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्व्वहुत: सम्भृतं पृषदाज्यम् ।

पशूँस्ताँश्चक्क्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च वे ॥

गङ्गासरस्वतीरेवापयोष्णी नर्मदाजलै: ।

स्नांपितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे ॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: स्नानार्थं जलं समर्पयामि ।

पञ्चामृतस्नान

ॐ पञ्च नद्य: सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतस: ।

सरस्वती तु पञ्चधा सोऽदेशे भवत्सरित् ॥

पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु \

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदकस्नान

ॐ शुद्धबाल: सर्व्वशुद्धवालो

मणिवालस्त ऽआश्विना: ।

श्येत: श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णा वामा

ऽअवलिप्ता रौद्द्रा नभोरूपा: पार्ज्जन्या: ॥

मलयाचलसम्भूतं चन्दनागुरुसम्भवम् ।

चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीविष्णवे नम: शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

सुगन्धिद्रव्यस्नान

ॐ त्र्यम्बकं वजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् ।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: सुगन्धिद्रव्यस्नानं समर्पयामि ।

पश्चात् 'ॐ सहस्रशीर्षा पुरुष:०' इस पुरुषसूक्त

से तथा 'ॐ इदं विष्णुर्व्विचक्रमे०', 'ॐ व्विष्णो: कर्म्माणि०', 'ॐ तद्विष्णो: परमं पदम्०', 'ॐ तद्विप्रासो व्विपन्यव:० इन मन्त्रोंसे विष्णु भगवान्का अभिषेक करे।

वस्त्र

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुत ऽऋच: सामानि जज्ञिरे।
छन्दा सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥
सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं गृह्येतां वाससी शुभे॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत

ॐ तस्मादश्वा ऽअजायन्त वे के चोभयादत:।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता ऽअजावय:॥
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामय
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जजं समर्पयामि।

चन्दन

ॐ तं वज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रत:।
तेन देवा ऽअयजन्त साध्या ऽऋषयश्च वे॥
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: चन्दनं समर्पयामि।

पुष्पमाला

ॐ वत्पुरुषं व्यदधु: कतिधाव्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा ऽउच्येते॥
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: पुष्पमालां समर्पयामि।

तुलसीदल

ॐ इदं व्विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पा सुरे स्वाहा॥
तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम्॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: तुलसीदलानि समर्पयामि।

अङ्गपूजन

ॐ दामोदराय नम: पादौ पूजयामि। ॐ माधवाय नम: जानुनी: पूजयामि। ॐ पद्मनाभाय नम: नाभिं पूजयामि। ॐ विश्वमूर्तये नम: उदरं पूजयामि। ॐ ज्ञानगम्याय नम: हृदयं पूजयामि। ॐ श्रीकण्ठाय नम: कण्ठं पूजयामि। ॐ सहस्नभानवे नम: बाहु पूजयामि। ॐ योगिने नम: नेत्रे पूजयामि। ॐ उरगाय नम: ललाटं पूजयामि। ॐ नाकसुरेश्वराय नम: नासिकां पूजयामि। ॐ श्रवणेशाय नम: श्रोत्रे पूजयामि। ॐ सर्वकर्मप्रदाय नम: शिखां पूजयामि। ॐ सहस्नशीर्ष्णे नम: शिर: पूजयामि। ॐ सर्वस्वरूपिणे नम: सर्वाङ्गं पूजयामि।

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य: कृत:।
ऊरू तदस्य वद्वैश्य: पद्भ्यार्ठ० शूद्रो ऽअजायत॥
वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढयो गन्ध उत्तम:।
आघ्रेय: सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: धूपमाघ्रपयामि।

दीप

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षो: सूर्व्वो ऽअजायत।
श्रोत्राद् व्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥
साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्।

नैवेद्य

ॐ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्षर्ठ० शीर्ष्णो द्यौ: समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्द्दिश: श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ ऽअकल्पयन्॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: नैवेद्यं निवेदयामि।

नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं सर्पयामि।

इसके बाद नैवेद्यमें तुलसी छोड कर उसको अभ्युक्षण कर, गन्ध और पुष्पसे आच्छादित करे।

पश्चात् धेनुमुद्रासे अमृतीकरण कर योनिमुद्राको दिखला कर घण्टा बजावे।

पश्चात् ग्रासमुद्राको दिखलावे और ॐ प्राणाय स्वाहा। (कनिष्ठिका, अनामिका और अँगूठा मिलावे)।

ॐ अपानाय स्वाहा। (तर्जनी, मध्यमा, अनासिका और अँगूठा मिलावे)।

ॐ व्यानाय स्वाहा। (मध्यमा, तर्जनी और अँगूठा मिलावे)। ॐ समानाय स्वाहा। (समस्त अँगुलियाँ तथा अँगूठा मिलावे)

इस प्रकार उञ्चारण करे और बीच-बीचमें जल समर्पित करे। उत्तरापोशनार्थ पुन: नैवेद्य निवेदन करे।

हस्तप्रक्षालनार्थं

और मुखप्रक्षालनार्थ जल समर्पण करे। पुन: आचमनीय जल अर्पित करे।

करोद्वर्त्तन चन्दन

ॐ अर्ठ० शुनाते ऽअर्ठ० शु: पृच्यतां परुषा परु:।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युत:॥
करोद्वर्त्तनकं देव सुगन्धै: परिवासितै:।
गृहीत्वा मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: करोद्वर्त्तनार्थे गन्धं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि।

ऋतुफल

ॐ वा: फलिनीर्व्वा ऽअफला ऽअपुष्पा वाश्च पुष्पिणी:।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वर्ठ० हस:॥
नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै।
भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेश्वर॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: ऋतुफलानि समर्पयामि।

ताम्बूल (पूगफल-एला-लवङ्ग सहित)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा वज्ञमतन्वत।
व्वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्नीष्म ऽइध्म: शरद्धवि:॥
पूगीफलादिसहितं कर्पूरेण च संयुतम्।
ताम्बूलं कोमलं दिव्यं गृहाण परमेश्वर॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: मुखवासार्थं ताम्बूलं समर्पयामि ।

दक्षिणा

ॐ हिरण्यगर्भ: समवर्त्तताग्रे भूतस्प जात: पतिरेक ऽआसोत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम ॥
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो: ।
अनन्तपुण्यफलदमत: शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: दक्षिणां समर्पयामि ।

आरती

ॐ इदर्ठ० हवि: प्रजननं मे ऽअस्तु दशवीरर्ठ० सर्व्वगणर्ठ० स्वस्तये ।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि ॥
अग्नि: प्रजां बहुलां मे करोत्त्वन्नं पयो रेतो ऽअस्मासु धत्त ॥१॥
ॐ आ राऋि पार्थिवर्ठ० रज: पितुरप्प्रायि धामभि: ।
दिव: सदा सि बृहती व्वि तिष्ठ्स ऽआ त्त्वेषं व्वर्त्तते तम: ॥
कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ॥

श्रीभगवते विष्णवे नम: आरार्तिक्यं समर्पयामि ।

अभ्यास प्रश्न –

1.विष्णु का निवास स्थान कहाँ है।

2. चतुर्भुज किसे कहा जाता है।

3. पालनकर्त्ता कौन है।

4. विष्णुपूजन में मुख्य रूप से किसका प्रयोग होता है।

5. भगवान विष्णु के कितने अवतार कहे गये हैं।

5.4 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के बाद आपने जान लिया है कि भगवान विष्णु को जगत का पालनकर्त्ता कहा गया है। इनका निवास स्थान क्षीरसागर में बतलाया जाता है। यह माता महालक्ष्मी के साथ शेष सय्या पर क्षीरसागर में ही निवास करते हैं। उसे ही वैकुण्ठ धाम के नाम से भी जाना जाता है। भगवान विष्णु का पूजन समस्त गृहस्थों को करना चाहिए, इससे उनके परिवार एवं समाज

में शान्ति बनी रहती है। विष्णु भगवान के प्रचलित दशावतार कहे गये हैं, किन्तु भागवतमहापुराण में उनके २४ अवतारों का वर्णन हैं। राम एवं कृष्ण भगवान के सर्व प्रमुख अवतारों में माना जाता है। गौ एवं द्विजों के हितों के लिए तथा धर्म की स्थापना एवं रक्षा के लिए भगवान का अवतार होता रहता है। भगवान विष्णु की पूजन विधि यहाँ इस इकाई में आपको बतलायी जा रही है।

5.5 पारभाषिक शब्दावली

क. चतुर्भुज - जिसकी चार भुजा हो

ख. कमलनयन - जिसका नेत्र कमल के समान हो

ग. पीताम्बर - पीला वस्त्र

घ. वैकुण्ठ धाम - विष्णु का निवास स्थान

ड. क्षीर - दूध

च. शान्ताकारं – जिसका आकार शान्त हो।

5.6 बोध प्रश्नों के उत्तर (क)

1. क्षीरसागर
2. विष्णु
3. विष्णु
4. तुलसी
5. २४

5.7 सन्दर्भग्रन्थसूची

क. नित्यकर्मपूजाप्रकाश

ख. स्तोत्ररत्नावली

ग. विष्णु पूजन पद्धति

5.8 निबन्धात्मक प्रश्न

क. विष्णु पूजन का परिचय दीजिये।

ख. विष्णु पूजन विधि का विस्तार से वर्णन करें।

खण्ड – 3

विविध आरती

इकाई – 1. गणेश एवं लक्ष्मी जी की आरती

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 श्रीगणेश जी का स्वरूप विचार एवं तात्विक विवेचन

1.3.1 श्री गणेश जी का स्वरूप विचार

1.3.2 श्री गणेश जी के स्वरूप का तात्विक विवेचन

1.3.3 गणेश जी हेतु सूक्त पाठ, स्तोत्र पाठ एवं आरती

1.3.4 गणेश जी प्रसन्नता हेतु गणपत्यथर्वशीर्ष पाठ

1.3.5 संकटनाशकगणेशस्तोत्रम्

1.4 गणेश जी की आरती

1.5 श्री लक्ष्मी जी की स्तुति व आरती

1.6 सारांश

1.7 पारिभाषिक शब्दावली

1.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.10 सहायक उपयोगी पाठ्यसामग्री

1.11 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

इस इकाई में श्री गणेश जी की आरती एवं स्तुति विचार संबंधी प्रविधियों का अध्ययन आप करने जा रहे हैं। इससे पूर्व की प्रविधियों का अध्ययन आपने कर लिया होगा। कर्मकाण्ड के श्राद्धादि विषयक पक्ष को छोड़कर अन्यत्र सर्वत्र सर्वप्रथम श्रीगणेश जी की वन्दना या पूजा से ही कार्य का आरम्भ किया जाता है।यह प्रकल्प कार्य के निर्विघ्न समाप्त्यर्थ सम्पन्न किये जाते हैं। अतः श्री गणेश जी क्या हैं? तथा कैसे उनकी आरती पूजा की जाती है? इसका ज्ञान आपको इस इकाई के अध्ययन से हो जायेगा।

श्री गणेश जी की आरती एवं स्तुति विचार के अभाव में किसी व्रत, किसी मुहूर्त्त, किसी उत्सव एवं किसी पर्व का सम्पादन किसी भी व्यक्ति द्वारा ठीक ढंग से नही हो सकता है। क्योकि कोई भी व्रत करते हैं तो उसके निर्विघ्न पूर्णता के लिये हमें सबसे पहले श्री गणेश जी की वन्दना करनी होती है। न केवल कर्मकाण्ड अपितु अन्यत्र क्षेत्रों में भी यह परम्परा देखने को मिलती है। एक बार समस्त देवमण्डल में यह विचार चल रहा था कि हम सभी देवताओं में सबसे पहले किसकी पूजा होनी चाहिये? किसी देवता ने विचार दिया कि जो देवता गण सबसे पहले इस ब्रह्माण्ड की परिक्रमा करके यहां उपस्थित हो जायेगा उसे ही सर्व प्रथम पूज्य माना जायेगा। सभी देवता परिक्रमा करने के लिये प्रस्थान किये। गणेश जी की सवारी का नाम मूषक है। गणेश जी ने सोचा की मूषक पर बैठकर ब्रह्माण्ड की परिक्रमा हम नही कर सकते। तो विचार किया कि एक पुत्र के लिये उसके माता पिता ही ब्रह्माण्ड है। अतः उन्होनें अपने माता पिता की परिक्रमा करके अपने को उपस्थित कर दिया और उनका सर्व प्रथम पूजन हेतु चयन हो गया।

इस इकाई के अध्ययन से आप श्री गणेश जी की आरती एवं स्तुति इत्यादि के विचार करने की विधि का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेगें। इससे श्री गणेश जी की आरती एवं स्तुति आदि विषय के अज्ञान संबंधी दोषों का निवारण हो सकेगा जिससे सामान्य जन भी अपने कार्य क्षमता का भरपूर उपयोग कर समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगें। आपके तत्संबंधी ज्ञान के कारण ऋषियों एवं महर्षियों का यह ज्ञान संरक्षित एवं सवंर्धित हो सकेगा। इसके अलावा आप अन्य योगदान दें सकेगें, जैसे - कल्पसूत्रीय विधि के अनुपालन का सार्थक प्रयास करना, भारत वर्ष के गौरव की अभिवृद्धि में सहायक होना, सामाजिक सहभागिता का विकास, इस विषय को वर्तमान समस्याओं के समाधान हेतु उपयोगी बनाना आदि।

1.2 उद्देश्य-

अब श्री गणेश जी की आरती एवं स्तुति विचार की आवश्यकता को आप समझ रहे होगें। इसका उद्देश्य भी इस प्रकार आप जान सकते हैं -

- कर्मकाण्ड को लोकोपकारक बनाना।

- श्री गणेश जी की आरती एवं स्तुति सम्पादनार्थ शास्त्रीय विधि का प्रतिपादन।
- कर्मकाण्ड में व्याप्त अन्धविश्वास एवं भ्रान्तियों को दूर करना।
- प्राच्य विद्या की रक्षा करना।
- लोगों के कार्यक्षमता का विकास करना।
- समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना।

1.3 श्रीगणेश जी का स्वरूप विचार एवं तात्विक विवेचन-

इसमें श्रीगणेश जी का स्वरूप विचार एवं तात्विक विवेचन आपको कराया जायेगा क्योकि बिना इसके परिचय के श्री गणेश जी का आधारभूत ज्ञान नही हो सकेगा। आधारभूत ज्ञान हो जाने पर श्रद्धा एवं समर्पण की भावना का उद्भव होता है। भावो हि विद्ते देवः के अनुसार भावना होने पर देवत्व को प्राप्त किया जा सकता है। इसलिये श्री गणेश जी का स्वरूप विचार एवं तात्विक विवेचन इस प्रकार है-

1.3.1 श्री गणेश जी का स्वरूप विचार-

श्री गणेश जी की वह वन्दना जो प्रायः अधिकांशतः लोगों को स्मृत होगी उसी का स्मरण करते हुये हम स्वरूप विचार करेंगे जो इस प्रकार है-

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्।।

यह श्लोक अत्यन्त सुप्रसिद्ध श्लोक है। इसमें कहा गया है कि- गजाननं यानी गज का आनन अर्थात् गज यानी हाथी तथा आनन यानी मुख अर्थात् भगवान गणेश हाथी के मुख वाले हैं। गजानन में दीर्घ सन्धि हुई है। ये हाथी के मुख वाले गणेश जी भूत गणों से सेवित है। कपित्थ अर्थात् कैंथ, जम्बू अर्थात् जामुन के फल को चारु यानी रुचि पूर्वक या सुन्दरता पूर्वक भक्षण करने वाले है। उमासुतं यानी मां पार्वती के पुत्र हैं तथा शोक विनाश करने के कारक है यानी दुख को विनाश करने के मूल में श्री गणेश जी है। ऐसे विघ्नों के स्वामी श्री विघ्नेश्वर के चरण कमलों में मैं नमन करता हूँ। यहॉ विघ्नेश्वर में विघ्न एवं ईश्वर नामक दो जुड़ गया है। इन दोनों के जुड़ जाने के कारण गुण सन्धि हो रही है।

इस श्लोक में भगवान श्री गणेश को उमा सुत यानी उमा का पुत्र बतलाया है। कुछ कथानकों के अनुसार एक बार भगवती पार्वती अपने सदन में अकेली थी। उन्हें अत्यावश्यक कृत्य हेतु एकान्त की आवश्यकता थी। उन्होनें अपने तप के प्रभाव से एक बालक का सृजन किया जिसका नाम गणेश रखा। भगवान श्री गणेश ने कहा माताजी क्या आदेश है? माता ने कहा किसी को अन्दर न आने देना। ऐसा आदेश मिलने पर बालक गणेश वहीं प्रहरी की तरह खड़ा होकर द्वार का रक्षण करने लगे।

कुछ समय के पश्चात् भगवान शंकर का शुभागमन हुआ। बालक तो किसी को जानता नही था सो उसने आवाज लगाई , ये साधु बाबा वहीं रुक जाओ, अन्दर जाना मना है। भगवान श्री शंकर ने कहा हमारे घर में जाने से हमें रोकने वाला यह कौन हो सकता है? भगवान शंकर ने समझाया कि ये हमारा ही घर है मुझे जाने दो लेकिन बालक गणेश ने मना कर दिया, क्योकि वह तो किसी को पहचानता ही नही था । परिणाम स्वरूप युद्ध हुआ और उस युद्ध में भगवान शंकर ने श्री गणेश जी की गर्दन काट दी और अन्दर चले गये। भगवती ने पूछा आप अन्दर कैसे आ गये? आपको कोई रोका नही। भगवान ने कहा एक बालक रोक रहा था, परन्तु मैने उसका शिर धड़ से अलग कर दिया है। यह सुनते ही भगवती धड़ाम से नीचे गिर गयीं। भगवान ने उनको सम्भाला और पूछा, तो उन्होने कहा वह तो हमारा बेटा गणेश है। मैं उसके बिना जीवित नही रह सकती । अन्त में भगवान शंकर ने हाथी का शिर मंगवाकर उसके धड़ से जोड़कर श्री गणेश जी को जीवित कर दिया। इस प्रकार भगवान गणेश भगवान शंकर एवं माता पार्वती दोनों के पुत्र हो गये ।

भगवान गणेश जी के स्वरूप के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे है जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न- उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** गज का अर्थ होता है-

क- हाथी , ख- मुख, ग- कैंथ, घ- जामुन।

प्रश्न **2-** आनन का अर्थ होता है-

क- हाथी , ख- मुख, ग- कैंथ, घ- जामुन।

प्रश्न **3-** कपित्थ का अर्थ होता है-

क- हाथी , ख- मुख, ग- कैंथ, घ- जामुन।

प्रश्न **4-** जम्बू का अर्थ होता है-

क- हाथी , ख- मुख, ग- कैंथ, घ- जामुन।

प्रश्न **5-** गजानन में सन्धि है-

क- दीर्घ , ख- गुण, ग- वृद्धि, घ- यण।

प्रश्न **6-** विघ्नेश्वर में सन्धि है-

क- दीर्घ , ख- गुण, ग- वृद्धि, घ- यण।

प्रश्न **7-** गणेश में सन्धि है-

क- दीर्घ , ख- गुण, ग- वृद्धि, घ- यण।

प्रश्न **8-** मात पार्वती ने तप के प्रभाव से क्या सृजन किया**?**

क- हाथी, ख- भूत, ग- बालक, घ- बालिका।

प्रश्न **9-** गणेश जी का किसके साथ युद्ध हुआ**?**

क- ब्रह्मा जी, ख- विष्णु जी, ग- शंकर जी, घ- इन्द्र जी।

प्रश्न **10-** गणेश जी के धड़ पर किसका शिर लगाया गया**?**

क- मनुष्य का, ख- स्त्री का, ग- हाथी का, ध- घोड़ा का ।

1.3.2 श्री गणेश जी के स्वरूप का तात्विक विवेचन-

भगवान गणेश के स्वरूप का दर्शन हमने इससे पूर्व के प्रकरण में किया है। हम सभी अवगत है कि श्री गणेश जी का मस्तक हाथी का है। हाथी का मस्तक यह बतलाता है कि जिस व्यक्ति को कोई बड़ा कार्य करना हो तो उसे अपना मस्तक बड़ा रखना चाहिये।यानी वृहद् विचार रखना चाहिये। प्रत्येक छोटी-छोटी बांतों को शिर में रखकर सबसे तू तू मै मै करना स्वयं के विकास का बाधक है। जीवन में यह आवश्यक नही की प्रत्येक प्रश्नों के उत्तर दिये ही जाय। यदि आवश्यक नही हो तो उस पर ध्यान नही देना चाहिये। हाथी जाता रहता है लोग उसे कुछ कहते हैं, कुत्ते उसे भोकते रहते हैं लेकिन बिना इसकी परवाह किये वह लगातार अपने पथ पर आगे बढ़ता जाता है।

हाथी के आंख की अत्यन्त विशेषता बतलायी गयी है । कहा गया है कि हाथी में कनीनिका विपरीत तरीके से लगने के कारण सामने की छोटी वस्तु को भी बड़ा देखता है। जिस प्रकार समतल दर्पण को छोड़कर अन्य दर्पण के प्रयोग से प्रतिबिम्ब बड़ा या छोटा दिखता है उसी प्रकार हाथी को किसी वस्तु का प्रतिबिम्ब बड़ा ही दिखता है। यह उन लोगों के लिये सबसे बड़ा सन्देश है जो धनादि के अभिमान वश लघुकाय प्राणियों को कीटप्राय समझकर पैर के तले रगड़ देते हैं। इससे यह शिक्षा मिलती है कि अपने से बड़ा समझकर सबका सम्मान करना चाहिये। नाक प्रतिष्ठा का द्योतक होता है। जिसकी नाक बड़ी हो यानी प्रतिष्ठा बड़ी हो उसको अपना सम्मान बचाने के बारे में सोचना चाहिये। प्रतिष्ठा संरक्षण व्यक्ति का कर्त्तव्य होना चाहिये। हाथी का कान यह संकेत करता है कि किसी भी व्यक्ति को कोई बात केवल सुनकर ही प्रतिक्रिया में नही लग जाना चाहिये, अपितु उसको हाथी के कान की तरह इधर-उधर चलाकर वास्तविकता की खोज करनी चाहिये। जब तक वास्तविक बातों का पता न चल जाय तब तक प्रतिकार उचित नही है। हाथी की जिह्वा दन्तमूल से कण्ठ की ओर जाती है जिसके कारण कोई भी बात कहने के प्रयास करने पर उसका अच्छी तरह मनन करना चाहिये। मनन करने बाद यदि उचित हो तो बोलना चाहिये ।

हाथी के दांत दो प्रकार के पाये जाते है जिसे कह सकते है कि खाने के अलग एवं दिखाने के अलग। इसका तात्पर्य है कि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा कही गयी बातें चिन्तनीय है ऐसी बात नही है। बहुत से लोग हास परिहास में कुछ इधर-उधर की बातें कर देते हैं। गणेश जी को चित्र में एक दॉत वाला दिखाया

गया है। इसलिये उन्हें एकदन्त भी कहा गया है। गणेशजी के चित्र में केवल दायी ओर का दांत ही दर्शनीय माना गया है।

शेष शरीर गणेश जी का नराकृति के रूप में विद्यमान रहता है। इससे यह निर्देश मिलता है कि अपने किसी कार्य में विघ्न न चाहने वाले पुरुषों के लिये आवश्यक है कि वे स्पष्टवादी हों। मानव हृदय रखने वाले हों, मनुष्योचित कर्मकलाप में सतत निरत रहें। मनुष्य की ही कर्म योनि होती है शेष सभी की भोग योनि होती है। चार भुजायें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्रतीक है। व्यक्ति को अपने जीवन में इन पुरुषार्थों की ओर ध्यान देना चाहिये।

गणेश जी के उदर को लम्बोदर कहा जाता है। इससे यह शिक्षा मिलती है कि व्यक्ति को अपना उदर लम्बा रखना चाहिये। किसी बात को सुनकर उसको पेट में रखने का प्रयास करना चाहिये। उससे वास्तविकता का ज्ञान होता है। व्यक्ति भ्रम में नही पड़ता है।

गणेश जी का वाहन मूषक है। मूषक को समृद्धि का प्रतीक माना गया है। चूहे वहीं रहते है जहां अन्न इत्यादि उन्हें खाने को प्राप्त हो रहा हो। व्यक्ति को अपने समृद्धि का पूरा ध्यान रखना चाहिये। सत्य की समृद्धि विकास का कारण बनती है।

भगवान गणेश जी के स्वरूप के तात्विक विवेचन के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना। आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे है जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न- उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** गणेश जी का मस्तक किसका द्योतक है-

क- वृहद् विचार का , ख- सूक्ष्म विचार का, ग- लघु विचार का, घ- वक्र विचार का।

प्रश्न **2-** गणेश जी की आंखे किसका द्योतक है-

क- वृहद् विचार का , ख- अपने से बड़ा देखने का, ग- लघु देखने का, घ- वक्र देखने का।

प्रश्न **3-** गणेश जी की नाक किसका द्योतक है-

क- वृहद् विचार का , ख- सूक्ष्म विचार का, ग- प्रतिष्ठा का, घ- वक्र विचार का।

प्रश्न **4-** गणेश जी का कान किसका द्योतक है-

क- वृहद् विचार का , ख- सूक्ष्म विचार का, ग- लघु विचार का, घ- वास्तविकता का।

प्रश्न **5-** गणेश जी की जिह्वा किसका द्योतक है-

क- मनन करने का , ख- सूक्ष्म विचार का, ग- लघु विचार का, घ- वक्र विचार का।

प्रश्न **6-** गणेश जी का दांत किसका द्योतक है-

क- वृहद् विचार का , ख- कथनी करनी में समुचित भेद का, ग- लघु विचार का, घ- वक्र विचार का ।

प्रश्न **7-** एकदन्त किसे कहा जाता है**?**

क- गणेश जी को , ख- गजग्राह को, ग- इन्द्र को, घ- ऐरावत को।

प्रश्न **8-** लम्बोदर किसे कहा जाता है**?**

क- गणेश जी को , ख- गजग्राह को, ग- इन्द्र को, घ- ऐरावत को।

प्रश्न **9-** मूषक वाहन किसका है**?**

क- गणेश जी का , ख- गजग्राह का, ग- इन्द्र का, घ- ऐरावत का।

प्रश्न **10-** मूषक किसका प्रतीक है**?**

क- दरिद्रता का , ख- गजग्राह का, ग- इन्द्र का, घ- समृद्धि का।

1.4 गणेश जी हेतु सूक्त पाठ, स्तोत्र पाठ एवं आरती-

इस प्रकरण में गणेश जी की प्रसन्नता के लिये स्तोत्रों का पाठ विधान व आरती विधान जाना जायेगा। इसके ज्ञान से श्री गणेश जी के प्रसन्नता के लिये सूक्त पाठ स्तोत्र पाठ एवं आरती का आपको ज्ञान हो जायेगा । प्रकरण अधोलिखित है-

1.4.1. गणेश जी की प्रसन्न्ता हेतु श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष का सूक्त पाठ-

गणपत्यथर्वशीर्षम् का पाठ सूक्त पाठों में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अतः गणपत्यथर्वशीषम् का पाठ इस प्रकार नीचे दिया जा रहा है-

ओं नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्वमसि। त्वमेव केवलं कर्त्तासि । त्वमेव केवलं धर्त्तासि। त्वमेव केवलं हर्त्तासि।त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम् । ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वांग्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयं। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्व जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्व जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापो नलो निलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वमवस्थात्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वंरुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्। गणादीन्पूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितं। तारेण रुद्धम्। एतत्तवमनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। विन्दुरुत्तररूपम्।

नादः सन्धानम्। स गुं हिता सन्धिः।सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्री छन्दः। गणपतिर्देवता। ओं गं गणपतये नमः। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमंकुशधारणम्। रदं च वरदं हस्तैर्विभ्राणमूषकध्वजम्। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्तगन्धानुलिप्तांगं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्। भक्तानुकम्पिनं देवं जगतकारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्। एवं ध्यायति योनित्यं स योगी योगिनां वरः। नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्ते अस्तु नमस्ते अस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्री वरदमूर्त्तये नमः।

एतदथर्वशीर्षं यो धीते स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्व विघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पंचमहापापात्प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाश्यति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाश्यति । सायं प्रातः प्रयुंजानो अपापो भवति। सर्वत्राधीयानो अपविघ्नो भवति। धर्ममर्थंकाममंमोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति। सहावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिमभिषिंचति। स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नन् जपति स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यान्न विभेति कदाचनेति। यो दूर्वांकुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति स वांच्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते। स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात्प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति। स सर्वविद्भवति। यं एवं वेद।।

।। इत्यथर्वणवाक्यम् ।।

गणेश जी को नमस्कार है । हे गणेश आप प्रत्यक्ष तत्व है। आप केवल कर्त्ता है। आप केवल धर्त्ता है। आप केवल कष्टों के हर्त्ता है। आप ही ब्रह्म है। आप साक्षात् नित्य आत्मा है। यह ऋत वचन है। यह सत्य वचन है। मेरी रक्षा करिये। मेरे वाणि की रक्षा करें। मेरे श्रवण की रक्षा करे। मेरे दातृत्व की रक्षा करे। धातृत्व की रक्षा करें। मेरे अनूचान शिष्यों की रक्षा करें। पश्चिम की ओर से हमारी रक्षा करें। पूर्व से हमारी रक्षा करे। उत्तर की ओर से हमारी रक्षा करे। दक्षिण की ओर से हमारी रक्षा करे। ऊपर से हमारी रक्षा करे। नीचे से हमारी रक्षा करे। सभी ओर से मेरी रक्षा करे, सामने से भी हमारी रक्षा करे। आप वांग्मय है। आप चिन्मय है। आप आनन्दमय है। आप ब्रह्ममय है। आप सच्चिदानन्द है। आप अद्वितीय हैं। आप प्रत्यक्ष ब्रह्मा है। आप ज्ञानमय एवं विज्ञानमय हैं। यह सम्पूर्ण जगत् आप से उत्पन्न होता है। यह सम्पूर्ण जगत् आपमें स्थित है। यह सम्पूर्ण जगत् आप में ही लय हो जाता है। यह सम्पूर्ण

जगत् आपकी ओर ही जाता है। आप भूमि है। आप आप यानी जल हैं। आप अनल यानी अग्नि है। आप अनिल यानी वायु है। आप नभ यानी आकाश है। आप चार मूल वाक्य है। आप गुणत्रयातीत है। आप अवस्थात्रयातीत है। आप देहत्रयातीत है। आप कालत्रयातीत है। आप नित्य मूलाधार में स्थित रहते है। आप तीनों शक्तियां है। योगि गण आपका नित्य ध्यान करते हैं। आप ब्रह्मा है। आप विष्णु है। आप रुद्र है। आप इन्द्र है। आप अग्नि है। आप वायु है। आप सूर्य है। आप चन्द्रमा है। आप ब्रह्म है । आप भूर्भुवः स्वरोम् है। गणादि का उच्चारण सर्वप्रथम करते हैं। वर्णादि का उच्चारण उसके बाद करते हैं। उसके बाद अनुस्वार है। अर्ध चन्द्र से विलसित हैं। तार यानी ओं कार से रुद्ध हैं ऐसा आपका स्वरूप है। गकार पूर्णरूप में है। अकार मध्यम रूप में है। अनुस्वार अन्त्य रूप में है। विन्दु उत्तर रूप में है। नाद सन्धान करता है। सबका सामूहिक स्वरूप सन्धि है। यहीं श्री गणेेश की विद्या है। गणक इसके ऋषि है। निचृद् गायत्री छन्द है। गणपति इसके देवता है। ओं गं गणपतये नमः। इसका मन्त्र है। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्। यह श्री गणेश गायत्री है।

एक दांत वाले, चार हाथ वाले, पाश एवं अंकुश धारण करने वाले आप है। हाथों में रद और वरद लिये हुये मूषक पर विराजमान हैं। रक्त वर्ण, लम्बा उदर यानी पेट शूर्प जैसा कर्णक यानी कान है। आप रक्त वस्त्र धारण किये हुये हैं। रक्त गन्ध से आपके अंग अनुलिप्त हैं तथा रक्त पुष्पों से आप सुपूजित हैं। भक्तों के ऊपर अनुकम्पा करने वाले आप देवता हैं तथा जगत के कारण हैं अच्युत गणेश जी। सृष्टि हेतु आप आविर्भूत होते हैं , प्रकृति एवं पुरुष से परे है। इस प्रकार जो नित्य आपका ध्यान करता है वह योगियों में श्रेष्ठ है। हे व्रतों के स्वामी, हे गणों के स्वामी, हे प्रमथ के स्वामी आपको नमस्कार हो। लम्बोदर के लिये, एकदन्त के लिये, विघ्ननाशिन् के लिये, शिव सुता के लिये, श्री वरदमूर्त्ति के लिये नमस्कार है।

इस अथर्वशीर्ष का जो ध्यान करता है वह ब्रह्मभूय के लिये कल्पना करता है। उसको सर्व विघ्न बाधित नही करते हैं। वह सभी ओर से सुख प्राप्त करता है। वह पंचमहापापों से छूट जाता है। सायं ध्यान से दिवस कृत पाप नष्ट होता है। प्रातः ध्यान से रात्रि कृत पाप नष्ट होता है । सायं प्रातः प्रयोग करने वाला पाप रहित होता है। सर्वत्र ध्यान करने वाला अविघ्नवान होता है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को प्राप्त करता है। इस अथर्वशीर्ष को अशिष्य को नही देना चाहिये। जो मोह से देता है वह पापी होता है। सहस्त्र आवर्तन से जो जो सोचता है उसे साध सकता है। इससे गणपति जी का जो अभिसिंचन करता है वह वाग्मी होता है। चतुर्थी को बिना भोजन किये जो इसको जपता है वह विद्यावान् होता है। यह अथर्वण वाक्य है। ब्रह्मादि आवरण को जानकर किसी से भय वह नही खाता है। जो दूर्वांकुरों से यजन करता है वह वैश्रवणोपम होता है । जो लाजों से यजन करता है वह

यशोवान् होता है। वह मेधावान् होता है । जो मोदकसहस्र से यजन करता है वह वांच्छित फल को प्राप्त करता है। जो आज्य यानी धी सहित समिधाओं से यजन करता है वह सब कुछ प्राप्त करता है। सब कुछ प्राप्त करता है। आठ ब्राह्मणों से जो अर्चन कराता है वह सूर्यवर्चस्वी होता है। सूर्यग्रहण में महानदी में, प्रतिमा के सन्निधि में जो जपता है उसका मन्त्र सिद्ध होता है। महाविघ्नों से वह छूट जाता है। वह सर्वविद् हो जाता है। वह सर्वविद् हो जाता है। इस प्रकार जानना चाहिये।

इस प्रकार भगवान गणेश जी के प्रिय सूक्त श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम् के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे है जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें गणपति अथर्वशीर्ष के शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** ओं नमस्ते .....।

क-गणपतये, ख- तत्वमसि, ग- वच्मि, घ- चिन्मयः।

प्रश्न **2-** त्वमेव प्रत्यक्षं.....।

क-गणपतये, ख- तत्वमसि, ग- वच्मि, घ- चिन्मयः।

प्रश्न **3-** ऋतं.....।

क-गणपतये, ख- तत्वमसि, ग- वच्मि, घ- चिन्मयः।

प्रश्न **4-** त्वं वांग्मयस्त्वं .....।

क-गणपतये, ख- तत्वमसि, ग- वच्मि, घ- चिन्मयः।

प्रश्न **5-** त्वं प्रत्यक्षं .....।

क-ब्रह्मासि, ख- त्वयि प्रत्येति, ग- लयमेष्यति, घ- ध्यायन्ति नित्यम्।

प्रश्न **6-** सर्व जगदिदं .....।

क-ब्रह्मासि, ख- त्वयि प्रत्येति, ग- लयमेष्यति, घ- ध्यायन्ति नित्यम्।

प्रश्न **7-** सर्वं जगदिदं त्वयि.....।

क-ब्रह्मासि, ख- त्वयि प्रत्येति, ग- लयमेष्यति, घ- ध्यायन्ति नित्यम्।

प्रश्न **8-** त्वां योगिनो.....।

क-ब्रह्मासि, ख- त्वयि प्रत्येति, ग- लयमेष्यति, घ- ध्यायन्ति नित्यम्।

प्रश्न **9-** अनुस्वारः .....।

क-ब्रह्मासि, ख- परतरः, ग- लषितम्, घ- ध्यायन्ति नित्यम्।

प्रश्न **10-** अर्धेन्दु.....।

क-ब्रह्मासि, ख- त्वयि प्रत्येति, ग- लषितम्, घ- ध्यायन्ति नित्यम्।

1.4.2 संकटनाशनगणेशस्तोत्रम्-

संकटों को नष्ट करने हेतु श्री गणेश जी का यह स्तोत्र है। इस स्तोत्र का वर्णन नारद पुराण में किया गया है। इस स्तोत्र के विविध फल बताये गये हैं जो निम्नलिखित है-

प्रणम्य शिरसां देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासंस्मरेन्नित्यं आयुष्कामार्थ सिद्धये॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्॥
लम्बोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम्॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम्॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम्॥
जपेत् गणपतिं स्तोत्रं षडिभर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः॥
अष्टानां ब्राह्मणानां च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः॥
॥ श्रीनारदपुराणे संकष्टनाशनं नाम गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

श्री संकट नाशन गणेश स्तोत्र का हिन्दी अनुवाद-

गौरी पुत्र श्री विनायक जी को शिर से प्रणाम करता हूँ। आपकी स्तुति का भक्तगण आयु की कामना की सिद्धि के लिये हमेशा स्मरण करते रहते है। श्री गणेश जी का पहला नाम वक्र तुण्ड है। श्री गणेश जी का दूसरा नाम एकदण्त है। श्री गणेश जी का तीसरा नाम कृष्णपिंगाक्ष है। श्री गणेश जी का चौथा नाम गजवक्त्र है। श्री गणेश जी का पॉचवॉ नाम लम्बोदर है। श्री गणेश जी का छठां नाम विकट है। श्री गणेश जी का सांतवां नाम विघ्नराज है। श्री गणेश जी का आंठवां नाम धूम्रवर्ण है। श्री गणेश

जी का नौवां नाम भालचन्द्र है। श्री गणेश जी का दसवां नाम विनायक है। श्री गणेश जी का ग्यारहवां नाम गणपति है। श्री गणेश जी का बारहवां नाम गजानन है।

भगवान गणेश जी के इन बारह नामों को तीनों सन्ध्याओं में जो व्यक्ति पढ़ता है उसको किसी भी प्रकार के विध्नों का भय नही होता है। उसको सभी प्रकार की श्रेष्ठ सिद्धियां प्राप्त होती है। इस स्तोत्र को विद्यार्थी पढ़ते हैं तो विद्या की प्राप्ति होती है। धन को प्राप्त करने वाला कोई व्यक्ति इस स्तोत्र को पढ़ता है तो उसे धन की प्राप्ति होती है। पुत्र को प्राप्त करने वाला कोई व्यक्ति इस स्तोत्र को पढ़ता है तो उसे पुत्र की प्राप्ति होती है। मोक्ष को प्राप्त करने वाला कोई व्यक्ति इस स्तोत्र को पढ़ता है तो उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। भगवान गणपति के इस स्तोत्र को पढ़ने से छः मास में फल प्राप्त होता है। एक वर्ष तक पाठ करने से सिद्धि की प्राप्ति होती है। इसमें कोई संशय नही है। आठ ब्राह्मणों को लिखकर जो गणपति स्तोत्र को समर्पित करता है उसको श्री गणेश जी के प्रसाद से सारी विद्यायें प्राप्त होती है।

इस प्रकार भगवान गणेश जी के प्रिय स्तोत्र श्रीसंकष्टनाशनगणेश स्तोत्र के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना। आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें श्रीसंकष्टनाशनगणेश स्तोत्रम् के शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न- उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** प्रणम्य शिरसा .....।

क- देवं, ख- विनायकम्, ग- वक्रतुण्डं च, घ- विकटमेव च।

प्रश्न **2-** गौरीपुत्रं .....।

क- देवं, ख- विनायकम्, ग- वक्रतुण्डं च, घ- विकटमेव च।

प्रश्न **3-** प्रथमं .....।

क- देवं, ख- विनायकम्, ग- वक्रतुण्डं च, घ- विकटमेव च।

प्रश्न **4-** षष्ठं .....।

क- देवं, ख- विनायकम्, ग- वक्रतुण्डं च, घ- विकटमेव च।

प्रश्न **5-** सप्तमं .....।

क- विघ्नराजं, ख- भालचन्द्रं, ग- विनायकम्, घ- गजाननम्।

प्रश्न **6-** नवमं .....।

क- विघ्नराजं, ख- भालचन्द्रं, ग- विनायकम्, घ- गजाननम्।

प्रश्न **7-** दशमं तु .....।

क- विघ्नराजं, ख- भालचन्द्रं, ग- विनायकम्, घ- गजाननम्।

प्रश्न **8-** द्वादशं तु .....।

क- विघ्नराजं, ख- भालचन्द्रं, ग- विनायकम्, घ- गजाननम्।

प्रश्न **9-** विद्यार्थी लभते .....।

क- विघ्नराजं, ख- विद्या, ग- विनायकम्, घ- गजाननम्।

प्रश्न **10-** धनार्थी लभते .....।

क- विघ्नराजं, ख- धनम्, ग- विनायकम्, घ- गजाननम्।

1.4.3 श्री गणेश जी की आरती

आरती के बिना पूजन नही हो सकता। प्रत्येक देवता के पूजन में आरती का विशेष महत्व है । श्री गणेश जी की आरती अधोलिखित प्रकार से दी जा रही है।

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥
लडुवन के भोग लगे सन्त करे सेवा ।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ॥
एकदन्त दयावन्त चारभुजाधारी ।
मस्तक पर सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी ।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥
अन्धन को आंख देत कोढ़िन के काया ।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया ॥
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥
पान चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा ।
सूरश्याम शरण में आयें सुफल कीजै सेवा ॥
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥

इस प्रकार भगवान गणेश जी की प्रिय आरती के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा

रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें आरती के शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** माता जाकी.....।

क- पार्वती, ख- महादेवा, ग- भोग लगे, घ- सेवा।

प्रश्न **2-** पिता.....।

क- पार्वती, ख- महादेवा, ग- भोग लगे, घ- सेवा।

प्रश्न **3-** लडुवन के .....।

क- पार्वती, ख- महादेवा, ग- भोग लगे, घ- सेवा।

प्रश्न **4-** सन्त करे .....।

क- पार्वती, ख- महादेवा, ग- भोग लगे, घ- सेवा।

प्रश्न **5-** एकदन्त.....।

क- दयावन्त, ख- सिन्दूर सोहे, ग- सवारी, घ- आंख देत।

प्रश्न **6-** मस्तक पर.....।

क- दयावन्त, ख- सिन्दूर सोहे, ग- सवारी, घ- आंख देत।

प्रश्न **7-** मूसे की.....।

क- दयावन्त, ख- सिन्दूर सोहे, ग- सवारी, घ- आंख देत।

प्रश्न **8-** अन्धन को .....।

क- दयावन्त, ख- सिन्दूर सोहे, ग- सवारी, घ- आंख देत।

प्रश्न **9-** बांझन को .....।

क- पुत्र देत, ख- सिन्दूर सोहे, ग- सवारी, घ- आंख देत।

प्रश्न **10-** निर्धन को .....।

क- दयावन्त, ख- सिन्दूर सोहे, ग-माया, घ- आंख देत।

1.5 श्री लक्ष्मी जी का स्वरूप विचार-

माता लक्ष्मी का ध्यान हम विविध रूपों में करते हैं। पुराणों के अनेकों श्लोकों में मातेश्वरी के विविध स्वरूपों को दर्शाया गया है। भगवती लक्ष्मी के स्वरूप का वर्णन इस प्रकार है-

या सा पद्मासनसस्था, विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी ।

गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।।
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः।
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता ।।

इस श्लोक में महालक्ष्मी जी के स्वरूप का वर्णन करते हुये कहा गया है कि वह देवि जो पद्म यानी कमल के आसन पर स्थित है। दस महादेवि का कटि तट यानी कमर का तट विपुल अर्थात् विशद् है। माताजी की आखें कमल के पत्र के समान है। महालक्ष्मी जी की गम्भीर आवर्तन वाली नाभि है। शुभ्र उत्तरीय वस्त्रों से सुशोभित हो रही है। हे लक्ष्मी माता आपका रूप दिव्य है। यानी माता लक्ष्मी के रूप से तेज प्रकट हो रहा है। मणि गणों से माता लक्ष्मी का रूप विभूषित हो रहा है। हेम कुम्भ यानी सोने के घड़े से आपको स्नान कराया जाता है। इस मातेश्वरी के हाथ में कमल सर्वदा सुशोभित हो रहा है। ऐसी माता लक्ष्मी जो सभी प्रकार के मंगल कार्यों से युक्त होती है वह लक्ष्मी मेरे घर में वास करें।

लक्ष्मी की व्याख्या करते हुये शब्दकल्पद्रुम में कहा गया है कि लक्ष्यति पश्यति उद्योगिनमिति लक्ष्मी अर्थात् जो उद्योगियों को देखे उसे लक्ष्मी कहते है। लक्ष्मी की प्राप्ति के लिये उद्योग का करना अत्यन्त आवश्यक है क्योकि कहा गया है उद्योगिनं पुरुष सिंहमुपैतिलक्ष्मीः यानी उद्योग करने वाले पुरुष सिंहों के पास ही लक्ष्मी जाती है। वैसे तो लक्ष्मी के विविध नाम दिये गये हैं उनमें से कुछ नाम इस प्रकार दिया गया है- विष्णुपत्नी, पद्मालया, पद्मा, कमला, श्रीः, हरिप्रिया, इन्दिरा, लोकमाता, मां, क्षीराब्धितनया, रमा, जलधिजा, भार्गवी, हरिवल्लभा, दुग्धाब्धितनया, क्षीरसागरसुता इत्यादि। अथर्व वेद के **7.115.4** में दो प्रकार की लक्ष्मीयों का वर्णन मिलता है। वहां कहा गया है कि- रमन्तां पुण्या लक्ष्मीर्या पापीस्ता अनीनशम् यानी पुण्या लक्ष्मी हमारे घर में निवास करे तथा जो अनर्थमूला लक्ष्मी है वह विनष्ट हो जावे। इसकी चर्चा श्री सूक्तम् में भी करते हुये बतलाया गया है कि क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात् यानी क्षुधा यानी भूखे रहना, पिपासा यानी प्यासे रहना, मलां यानी मलयुक्ता लक्ष्मी तथा ज्येष्ठा अलक्ष्मी नष्ट हों, अभूति, असमृद्धि ये सभी मेरे घर से निकल जायं। लक्ष्मी जी की उत्पत्ति समुद्र मन्थन से हुयी है ऐसा मिलता है। समुद्र मन्थन से चौदह रत्न निकले थे, जिनमें से एक लक्ष्मी जी को बतलाया गया है। इनका विवाह श्रीमन्नारायण भगवान से हुआ है इसलिये लक्ष्मी जी सदैव नारायण भगवान के साथ रहती है इसलिये प्रायः सुना जाता है कि लक्ष्मी नारायण भगवान की जै।

श्रीदुर्गा सप्तशती में तीन चरित्र दिये गये हैं जिन्हें प्रथम चरित्र, मध्यम चरित्र एवं उत्तम चरित्र के रूप में जाना जाता है। इनमें प्रथम चरित्र में महाकाली का ध्यान एवं चरित्र दिया है, मध्यम चरित्र में मां लक्ष्मी का चरित्र दिया है और उत्तम चरित्र में सरस्वती का चरित्र दिया गया है। मध्यम चरित्र में महालक्ष्मी का ध्यान इस प्रकार दिया गया है-

अक्षस्रक्परशुं गदेषु कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां।
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं धण्टां सुराभाजनम्।।

शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्ननां ।

सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ।।

इसकी व्याख्या करते हुये कहा गया है कि मैं कमल के आसन पर बैठी हुयी प्रसन्न मुख वाली महिषासुरमर्दिनी भगवती महालक्ष्मी का भजन करता हूँ जो अपने हाथों में अक्ष यानी अक्षमाला, स्रक् यानी माला, परशु यानी फरसा, गद यानी गदा, इषु यानी बाण, कुलिश यानी वज्र, पद्म यानी कमल, धनुष, कुण्डिका, दण्ड, शक्ति, असि यानी खड्ग, चर्म यानी ढाल, जलज यानी शंख, घण्टा, सुराभाजन यानी मधु पात्र, शूल, पाश और सुदर्शन चक्र धारण करती हैं।

इस प्रकार भगवती लक्ष्मी जी के स्वरूप के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों या संबंधित शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु

विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन

आपको करना है-

प्रश्न **1-** अक्ष शब्द का अर्थ है-

क- अक्षमाला, ख- माला, ग- फरसा, घ-बाण ।

प्रश्न **2-** स्रक् शब्द का अर्थ है-

क- अक्षमाला, ख- माला, ग- फरसा, घ-बाण ।

प्रश्न **3-** परशु शब्द का अर्थ क्या है**?**

क- अक्षमाला, ख- माला, ग- फरसा, घ-बाण ।

प्रश्न **4-** इषु शब्द का अर्थ है-

क- अक्षमाला, ख- माला, ग- फरसा, घ-बाण ।

प्रश्न **5-** कुलिश शब्द का अर्थ क्या है **?**

क- वज्र, ख- कमल, ग- खड्ग, घ-ढाल।

प्रश्न **6-** असि शब्द का अर्थ क्या है **?**

क- वज्र, ख- कमल, ग- खड्ग, घ-ढाल।

प्रश्न **7-** पद्म शब्द का अर्थ क्या है **?**

क- वज्र, ख- कमल, ग- खड्ग, घ-ढाल।

प्रश्न **8-** चर्म शब्द का अर्थ क्या है**?**

क- वज्र, ख- कमल, ग- खड्ग, घ-ढाल।

प्रश्न **9-** जलज शब्द का अर्थ क्या है**?**

क- वज्र, ख- शंख, ग- खड्ग, घ-ढाल।

प्रश्न **10-** सुराभाजन शब्द का अर्थ क्या है **?**

क- वज्र, ख- कमल, ग- मधुपात्र, घ-ढाल।

इस प्रकार आपने महालक्ष्मी जी के स्वरूप के बारे में आपने जाना। अब हम श्री सूक्त का वर्णन करने जा रहे हैं जो इस प्रकार है-

लक्ष्मी जी की प्रसन्नता हेतु श्री सूक्त पाठ -

लक्ष्मी जी की प्रसन्नता हेतु श्री सूक्त का पाठ अत्यन्त प्रभावशाली माना गया है। कहा गया है शुद्धता पूर्वक श्री सूक्त का पाठ करने वाले या कराने वाले लोगों के यहां लक्ष्मी का कभी अभाव नही होता है। आज के समय में तो लक्ष्मी के सन्दर्भ में यस्यास्ति वित्तं स नर कुलीनः यह श्लोक उपयुक्त प्रतीत होता है। इसलिये लक्ष्मी प्राप्ति हेतु श्री सूक्त का पाठ भी एक उपाय है। इसके पाठ से सद् लक्ष्मी का आगमन होता है-

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।

कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थिता पद्मवर्णा तामिहोपह्वयेश्रियम् ।
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ।
आदित्य वर्णे तपसो अधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोथविल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च वाह्या अलक्ष्मीः ।।
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रदुर्भूतोस्मि राष्ट्रे स्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ।
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाश्याम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्यस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देविं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्यो अश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ।।
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ।

इस प्रकार भगवती लक्ष्मी जी की प्रसन्नता के लिये उनके परम प्रिय सूक्त श्री सूक्त के विषय में

आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना। आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों या संबंधित शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** हिरण्यवर्णां ..... सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।
क- हरिणीं, ख-जातवेदो, ग- हस्तिनाद, घ- हिरण्यप्राकारा।

प्रश्न **2-** तां म आवह ..... लक्ष्मी मनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।
क- हरिणीं, ख-जातवेदो, ग- हस्तिनाद, घ- हिरण्यप्राकारा।

प्रश्न **3-** अश्वपूर्वां रथमध्यां ..... प्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।
क- हरिणीं, ख-जातवेदो, ग- हस्तिनाद, घ- हिरण्यप्राकारा।

प्रश्न **4-** कांसोस्मितां .....मार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्ता तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थिता पद्मवर्णा तामिहोपह्वयेश्रियम्।
क- हरिणीं, ख-जातवेदो, ग- हसितनाद, घ- हिरण्यप्राकारा।

प्रश्न **5-** चन्द्रां प्रभासां ..... ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।
क- यशसा, ख-वनस्पतिस्तव, ग- देवसखः घ- अभूतिमसमृद्धिं।

प्रश्न **6-** आदित्य वर्णे तपसो अधिजातो ..... वृक्षोथविल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च वाह्या अलक्ष्मीः।।
क- यशसा, ख-वनस्पतिस्तव, ग- देवसखः घ- अभूतिमसमृद्धिं।

प्रश्न **7-** उपैतु मां ..... कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रदुर्भूतोस्मि राष्ट्रे स्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।
क- यशसा, ख-वनस्पतिस्तव, ग- देवसखः घ- अभूतिमसमृद्धिं।

प्रश्न **8-** क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाश्याम्यहम्।

..... च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।

क- यशसा, ख-वनस्पतिस्तव, ग- देवसखः घ- अभूतिमसमृद्धिं।

प्रश्न **9-** गन्धद्वारां ..... नित्यपुष्टां करीषिणीम्।

ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।

क- दुराधर्षां, ख-वनस्पतिस्तव, ग- देवसखः घ- अभूतिमसमृद्धिं।

प्रश्न **10-** मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।

..... रूपमन्यस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।

क- यशसा, ख-वनस्पतिस्तव, ग-पशूनां घ- अभूतिमसमृद्धिं।

महालक्ष्मी जी की आरती-

आरती के बिना कोई भी पूजन कार्य पूर्णतया सम्पन्न नही माना जाता है। इसलिये महालक्ष्मी जी आरती इस प्रकार दी जा रही है। इसके सम्यक् प्रकार से गायन से लक्ष्मी जी की आरती उत्तम रीति से की जा सकती है।

ओं जय लक्ष्मी माता मैया जै लक्ष्मी माता

तुमको निसिदिन सेवत, हर विष्णु धाता। ओ जय लक्ष्मी माता।

उमा, रमा, ब्रह्माणि, तुम ही जगमाता।

सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता। ओं जय लक्ष्मी माता।

दुर्गा रूप निरंजनि, सुख सम्पत्ति दाता।

जो कोई तुमको ध्यावत, नारद ऋषि गाता। ओं जय लक्ष्मी माता।

तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।

कर्म प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता। ओं जय लक्ष्मी माता।

जिस घर में तुम रहती, तहॅं सब सद्गुण आता।

सब सम्भव हो जाता, मन नहि घबराता। ओं जय लक्ष्मी माता।

तुम बिन यज्ञ न होते, व्रत भी न हो पाता।

खान पान का वैभव, सब तुमसे आता। ओं जय लक्ष्मी माता।

शुभ गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि जाता।

रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोइ नही पाता। ओं जय लक्ष्मी माता।

महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता।

उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता। ओं जय लक्ष्मी माता।

इस प्रकार भगवती लक्ष्मी जी की प्रसन्नता के लिये उनकी आरती के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों या संबंधित शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** ओं जय लक्ष्मी माता मैया जै लक्ष्मी माता

तुमको ..... सेवत, हर विष्णु धाता। ओ जय लक्ष्मी माता।

क- निसिदिन, ख- चन्द्रमा, ग- निरंजनि, ध- पाताल।

प्रश्न **2-** उमा, रमा, ब्रह्माणि, तुम ही जगमाता।

सूर्य ..... ध्यावत, नारद ऋषि गाता। ओं जय लक्ष्मी माता।

क- निसिदिन, ख- चन्द्रमा, ग- निरंजनि, ध- पाताल।

प्रश्न **3-** दुर्गा रूप ....., सुख सम्पत्ति दाता।

जो कोई तुमको ध्यावत, नारद ऋषि गाता। ओं जय लक्ष्मी माता।

क- निसिदिन, ख- चन्द्रमा, ग- निरंजनि, ध- पाताल।

प्रश्न **4-** तुम ..... निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।

कर्म प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता। ओं जय लक्ष्मी माता।

क- निसिदिन, ख- चन्द्रमा, ग- निरंजनि, ध- पाताल।

प्रश्न **5-** जिस घर में तुम रहती, तहॅ सब ..... आता।

सब सम्भव हो जाता, मन नहि घबराता। ओं जय लक्ष्मी माता।

क- सद्गुण, ख- वैभव, ग- क्षीरोदधि, ध- रत्न चतुर्दश।

प्रश्न **6-** तुम बिन .....होते, वरत न हो पाता।

क- निसिदिन, ख- यज्ञ न , ग- निरंजनि, ध- पाताल।

प्रश्न **7-** खान पान का ....., सब तुमसे आता। ओं जय लक्ष्मी माता।

क- सद्गुण, ख- वैभव, ग- क्षीरोदधि, ध- रत्न चतुर्दश।

प्रश्न **8-** शुभ गुण मंदिर सुन्दर, **.....** जाता।

क- सद्गुण, ख- वैभव, ग- क्षीरोदधि, ध- रत्न चतुर्दश।

प्रश्न **9-.....** तुम बिन, कोइ नही पाता। ओं जय लक्ष्मी माता।

क- सद्गुण, ख- वैभव, ग- क्षीरोदधि, ध- रत्न चतुर्दश।

प्रश्न **10-** महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता।

उर ..... समाता, पाप उतर जाता। ओं जय लक्ष्मी माता।

क- आनन्द, ख- वैभव, ग- क्षीरोदधि, ध- रत्न चतुर्दश।

1.5 सारांश-

इस इकाई में श्री गणेश जी की आरती एवं स्तुति विचार संबंधी प्रविधियों का अध्ययन आपने किया। कर्मकाण्ड के पक्ष में श्राद्धादि विषय को छोड़कर अन्यत्र सर्वत्र सर्वप्रथम गणेश जी की वन्दना या पूजा से ही कार्य का आरम्भ किया जाता है।यह प्रकल्प कार्य के निर्विघ्न समाप्त्यर्थ सम्पन्न किये जाते है। अतः श्री गणेश जी क्या हैं तथा कैसे उनकी आरती पूजा की जाती है इसका ज्ञान किसी पूजक को आवश्यक है। श्री गणेश जी की आरती एवं स्तुति विचार के अभाव में किसी व्रत, किसी मुहूर्त्त, किसी उत्सव एवं किसी पर्व का सम्पादन किसी भी व्यक्ति द्वारा ठीक ढंग से नही हो सकता है। क्योकि कोई भी व्रत करते हैं तो उसके निर्विघ्न पूर्णता के लिये हमें सबसे पहले श्री गणेश जी की वन्दना करनी होती है।

भगवान गणेश की आराधना सम्यक् प्रकार से तभी सम्भव है जब आप उनके स्वरूप के बारे में जाने, उनके तात्विक विवेचन के बारे में जाने। स्वरूप का विचार करते हुये कहा गया है कि भगवान गणेश का मुख मण्डल हाथी का एवं शरीर आकृति मानव की है। हाथी का मस्तक वृहद् विचार का द्योत है। हाथी के आंख की अत्यन्त विशेषता बतलायी गयी है । कहा गया है कि हाथी में कनीनिका विपरीत तरीके से लगने के कारण सामने की छोटी वस्तु को भी बड़ा देखता है। जिस प्रकार समतल दर्पण को छोड़कर अन्य दर्पण के प्रयोग से प्रतिबिम्ब बड़ा या छोटा दिखता है उसी प्रकार हाथी को किसी वस्तु का प्रतिबिम्ब बड़ा ही दिखता है। यह उन लोगों के लिये सबसे बड़ा सन्देश है जो धनादि के अभिमान वश लघुकाय प्रणियों को कीटप्राय समझकर पैर के तले रगड़ देते है। इससे यह शिक्षा मिलती है कि अपने से बड़ा समझकर सबका सम्मान करना चाहिये। नाक प्रतिष्ठा का द्योतक होता है। जिसकी नाक बड़ी हो यानी प्रतिष्ठा बड़ी हो उसको अपना सम्मान बचाने के बारे में सोचना चाहिये। प्रतिष्ठा संरक्षण व्यक्ति का कर्त्तव्य होना चाहिये। हाथी का कान यह संकेत करता है कि किसी भी व्यक्ति की कोई बात केवल सुनकर ही प्रतिक्रिया में नही लग जाना चाहिये अपितु उसको हाथी के कान की तरह इधर- उधर चलाकर वास्तविकता की खोज करना चाहिये। जब तक

वास्तविक बातों का पता न चल जाय तब तक प्रतिकार उचित नही है। हाथी की जिह्वा दन्तमूल से कण्ठ की ओर जाती है जिसके कारण कोई भी बात कहने के प्रयास करने पर उसका अच्छी तरह मनन करना चाहिये। मनन करने बाद यदि उचित हो तो बोलना चाहिये।

भगवान गणेश को प्रसन्न करने के लिये विभिन्न प्रकार के स्तोत्रों एवं सूक्तों का वर्णन किया गया है। इन सूक्तों में सबसे महत्वपूर्ण सूक्त है श्रीगणपति अथर्वशीर्षम्। यह सूक्त इस प्रकरण के अन्तर्गत दिया गया है। इसके फल का वर्णन करते हुये कहा गया है कि इससे यानी गणपत्यथर्वशीर्षम् से गणपति जी का जो अभिषिंचन करता है वह वाग्मी होता है। चतुर्थी को बिना भोजन किये जो इसको जपता है वह विद्यावान् होता है। यह अथर्वण वाक्य है। ब्रह्मादि आवरण को जानकर किसी से भय वह नही खाता है। जो दूर्वांकुरों से यजन करता है वह वैश्रवणोपम होता है। जो लाजों से यजन करता है वह यशोवान् होता है। वह मेधावान् होता है । जो मोदकसहस्र से यजन करता है वह वांच्छित फल को प्राप्त करता है। जो आज्य यानी घी सहित समिधाओं से यजन करता है वह सब कुछ प्राप्त करता है। आठ ब्राह्मणों से जो अर्चन कराता है वह सूर्यवर्चस्वी होता है। सूर्यग्रहण में महानदी में, प्रतिमा के सन्निधि में जो जपता है उसका मन्त्र सिद्ध होता है। महाविघ्नों से वह छूट जाता है। वह सर्वविद् हो जाता है। वह सर्वविद् हो जाता है।

स्तुति में श्री संकष्टनाशन गणेश स्तोत्र का पाठ दिया गया है। इसका तीनों सन्ध्याओं में जो व्यक्ति पाठ करता है उसको किसी भी प्रकार के विघ्नों का भय नही होता है। उसको सभी प्रकार की श्रेष्ठ सिद्धियां प्राप्त होती है। इस स्तोत्र को विद्यार्थी पढ़ते हैं तो विद्या की प्राप्ति होती है। धन को प्राप्त करने वाला कोई व्यक्ति इस स्तोत्र को पढ़ता है तो उसे धन की प्राप्ति होती है। पुत्र को प्राप्त करने वाला कोई व्यक्ति इस स्तोत्र को पढ़ता है तो उसे पुत्र की प्राप्ति होती है। मोक्ष को प्राप्त करने वाला कोई व्यक्ति इस स्तोत्र को पढ़ता है तो उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। भगवान गणपति के इस स्तोत्र को पढ़ने से छः मास में फल प्राप्त होता है। एक वर्ष तक पाठ करने से सिद्धि की प्राप्ति होती है। इसमें कोई संशय नही है।

1.6 पारिभाषिक शब्दावलियां-

एकदन्त- एक दांत वाले, दयावन्त- दया से समन्वित, चारभुजाधारी- चार भुजाओं को धारण करने वाले, मस्तक- माथा या ललाट, मूसे- चूहा, सवारी- वाहन, अन्धन- नेत्र ज्योति विहीन, कोढ़िन- कुष्ठ रोग से ग्रस्त रोगी, काया- शरीर, बांझन- सन्तानोत्पादन में असमर्थ स्त्री, निर्धन- धनहीन, माया- मुद्रा इत्यादि, पान- ताम्बूल, चढ़े- चढ़ना, मेवा- पंचमेवा, सुफल- सुस्वादु फल, प्रणम्य- प्रणाम करके, शिरसा- शिर से, गौरीपुत्रं - पार्वती जी के पुत्र, विनायक- विघ्नों के नायक, संस्मरेत्- सम्यक् प्रकार से स्मरण करना, नित्यं- प्रतिदिन, आयुष्कामार्थ - आयु की कामना के लिये, सिद्धये- सिद्धि के लिये, गजवक्त्रं - हाथी का मुख , लम्बोदरं - लम्बा उदर हो जिसका, विघ्नराजं - विघ्नों के राजा, धूम्रवर्ण-

धूम्र का वर्ण वाला, भालचन्द्रं - मस्तक पर चन्द्रमा हो जिसके, गणपतिं- गणों के स्वामी, गजाननम्- गज यानी हाथी के आनन यानी मुख वाला, द्वादशैतानि- ये बारह, नामानि- नाम, त्रिसन्ध्यं- तीनों सन्ध्याओं यानी प्रातः सन्ध्या में रात्रि एवं दिन की सन्धि, मध्यान्ह सन्ध्या में पूर्वान्ह एवं अपरान्ह की सन्धि, सायान्ह- दिन एवं रात्रि की सन्धि, यः- जो, विघ्नभयं - विघ्नों का भय, तस्य- उसको, सर्वसिद्धिकरं- सभी प्रकार की सिद्धियां करने वाला, परम्- उत्तम, विद्यार्थी - विद्या चाहने वाला, लभते- प्राप्त करता है, विद्यां- विद्या को, धनार्थी- धन चाहने वाला, धनम्- धन को, पुत्रार्थी- पुत्र चाहने वाला, पुत्रान्- पुत्रों को, मोक्षार्थी- मोक्ष चाहने वाला, गतिम्- गति को, षडिभर्मासैः - छ मासों से, संवत्सरेण - एक वर्ष, प्रसादतः- कृपा से, संकष्टनाशनं- कष्ट को नष्ट करने वाला, सम्पूर्णम्- पूरा हुआ, अव- रक्षा, माम्- मेरी, वक्तारम्- वकतृत्व शक्ति की, श्रोतारम्- श्रोतृत्व शक्ति की, दातारम्- दातृत्व शक्ति की, धातारम्- धातृत्व शक्ति की, अनूचान- ऋचाओं की, पश्चात्- पश्चिम से, पुरस्तात्- पूर्व से, उत्तरात्तात्- उत्तर से, दक्षिणात्तात्- दक्षिण से, उर्ध्वात्तात्- ऊपर से, अधरात्तात्- नीचे से, सर्वतो- चारो ओर से, मां- मेरी, पाहि- रक्षा करो, समन्तात्- सामने से, चिन्मयः- प्रकाशमय, आनन्दमय- आनन्द से विभूषित, ब्रह्ममयं- ब्रह्म से विभूषित, सच्चिदानन्द- सत्, चित्, आनन्द, अद्वितीयोसि- अद्वितीय हैं, ब्रह्मासि- ब्रह्मा हैं, ज्ञानमयो- ज्ञान से विभूषित, विज्ञानमयोसि- विज्ञान से विभूषित, जायते- उत्पन्न होता है, त्वत्तस्तिष्ठति- आप में तिष्ठित है, त्वयि लयमेष्यति- तुम्हारे में लय होता है, त्वयि प्रत्येति - आपकी ओर जाता है, भूमि- पृथ्वी, आप- जल, अनल- अग्नि, अनिल- वायु, नभः- आकाश, गुणत्रयातीतः-तीनों गुणों से परे, त्वमवस्थात्रयातीतः- तीनों अवस्थाओं से परे, देहत्रयातीतः- तीनो शरीरों से परे, कालत्रयातीतः- तीनों कालों से परे, मूलाधारस्थितोसि- मूलाधार में स्थित, नित्यम्- हमेशा, शक्तित्रयात्मकः- तीनों शक्तियों वाला, योगिनो- योगिगण, ध्यायन्ति- ध्यान करते हैं, त्वं ब्रह्मा- आप ब्रह्मा है, त्वं विष्णुस्- आप विष्णु है, त्वंरुद्रस्- आप रुद्र है, त्वमिन्द्रस्- आप इन्द्र हैं, त्वमग्निस्- आप अग्नि है, त्वं वायुस्- आप वायु है, त्वं सूर्यस्- आप सूर्य है, त्वं चन्द्रमास्- आप चन्द्रमा है, चतुर्हस्तं- चार भुजाओं वाले, पाश- फन्दा, अंकुश- अंकुश, धारणम्-धारण करने वाले, वरदं- वर देने वाले, रक्तं - लाल, शूर्पकर्णकं- शूप जैसा कान वाला, रक्तवाससम्- लाल वस्त्र धारण करने वाला, रक्तगन्धानुलिप्तांगं- लाल रंग के गन्धों से अनुलिप्त अंग वाला, रक्तपुष्पैः- लाल पुष्पों से, सुपूजितम्- पूजा किया जाने वाला, वरः- श्रेष्ठ, विघ्ननाशिने- विघ्न नाश के लिये, शिवसुताय- शिव जी के पुत्र के लिये, वरदमूर्त्तये- वरद की मूर्ति वाले देवता के लिये, नमः- नमस्कार हो, बाध्यते- बाधित करता है, स- वह, सर्वतः- चारो ओर से, सुखमेधते- सुख की वृद्धि होती है,

पंचमहापापात्- पंच महापापों से, प्रमुच्यते- छूट जाता है, सायमधीयानो- सायं को ध्यान करने वाला, दिवसकृतं- दिन के किये गये पाप, नाश्यति- नाश करता है, प्रातरधीयानो- प्रातः ध्यान करने वाला के, रात्रिकृतं- रात्रि में किये गये , पापं - पाप, अनश्नन् - बिना भोजन किये, लाजा- खीलें, मेधावान् - बुद्धि वाला, भवति- होता है, यो- जो, मोदकसहस्रेण- एक हजार लड्डु, यजति- यजन करता है, वांच्छितफलमवाप्नोति- इच्छानुसार फल प्राप्त करता है, साज्य- घी सहित, समिद्भिर्यजति- समिधाओं से यजन करता है, सर्वं - सब कुछ, लभते- प्राप्त करता है।

1.7अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

पूर्व में दिये गये सभी अभ्यास प्रश्नों के उत्तर यहां दिये जा रहे हैं। आप अपने से उन प्रश्नों को हल कर लिये होगें। अब आप इन उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कर लीजिये। यदि गलत हो तो उसको सही करके पुनः तैयार कर लीजिये। इससे आप इस प्रकार के समस्त प्रश्नों का उत्तर सही तरीके से दे पायेगें।

1.3.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**ख, **8-**ग, **9-**ग, **10-**ग।

1.3.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**क, **8-**क, **9-**क, **10-**घ।

1.4.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**ख, **10-**ग।

1.4.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**ख, **10-**ख ।

1.4.3 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**क, **10-**घ ।

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1-आरती संग्रह।

2-क्यों-भाग-**1**

3-क्यों- भाग-**2**।

4-शब्दकल्पद्रुमः।

5-आह्निक सूत्रावलिः।

6-उत्सर्ग मयूख।

7-पूजन- विधान।

8- संस्कार एवं शान्ति का रहस्य।

1.9- सहायक उपयोगी पाठ्य सामग्री-

1- दैनिक आरती स्तुति एवं स्तोत्र।

2- स्तोत्ररत्नावलिः।

3- श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम् ।

1.10 निबंधात्मक प्रश्न-

1- श्री गणेश जी का परिचय बतलाइये ।

2- श्री गणेश जी का स्वरूप बतलाइये ।

3- श्री गणेश जी के स्वरूप का तात्विक विवेचन कीजिये ।

4- गणपत्यथर्वशीर्षम् नामक सूक्त लिखिये ।

5- गणपत्यथर्वशीर्षम् का हिन्दी अनुवाद दीजिये ।

6- संकष्टनाशन गणेश स्तोत्र लिखिये ।

7- संकटनाशन श्री गणेश स्तोत्र का महत्त्व लिखिये ।

8- गणपत्यथर्वशीर्ष का महत्त्व लिखिये ।

9- संकटनाशन श्री गणेश स्तोत्र का हिन्दी अनुवाद लिखिये ।

10- श्री गणेश भगवान की आरती का वर्णन कीजिये ।

इकाई – 2. विष्णु एवं शिव जी की आरती

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 विष्णु जी का परिचय एवं आरती
2.4 शिव जी का परिचय एवं आरती
2.5 सारांश
2.6 पारिभाषिक शब्दावली
2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
2.9 सहायक पाठ्यसामग्री
2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में आपका स्वागत है। इस इकाई में आप विष्णु एवं शिव जी की आरती से सम्बन्धित विषयों का अध्ययन करने जा रहे हैं। विष्णु एवं शिव सभी देवताओं में प्रमुख माने जाते हैं। एक पालनकर्त्ता हैं तो दूसरे को संहारकर्त्ता कहा गया है। आइए हम सब विष्णु एवं शिव जी की आरती के बारे में अध्ययन करते हैं।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप जान जायेंगे कि –

विष्णु की आरती कैसे की जाती है।

शिव जी आरती क्या है।

विष्णु एवं शिव जी की आरती के महत्व को समझा सकेंगे।

2.3 विष्णु जी का परिचय एवं आरती

भगवान विष्णु को जगत का पालनकर्त्ता कहा गया है। इनका निवास स्थान क्षीरसागर में बतलाया जाता है। यह माता महालक्ष्मी के साथ शेष सय्या पर क्षीरसागर में ही निवास करते हैं। इसे वैकुण्ठ धाम के नाम से भी जाना जाता है। भगवान विष्णु का पूजन समस्त गृहस्थों को करना चाहिए, इससे उनके परिवार एवं समाज में शान्ति बनी रहती है। शिव भगवान कल्याणकर्त्ता हैं एवं सृष्टि संहारकर्त्ता भी। आरती वस्तुत: रक्षार्थ भगवद् उपासना की एक क्रिया है।

'विष्णु' शब्द की व्युत्पत्ति मुख्यतः 'विष्' धातु से ही मानी गयी है। ('विष्' या 'विश्' धातु लैटिन में - **vicus** और सालविक में **vas -ves** का सजातीय हो सकता है।) निरुक्त **(12.18)** में यास्काचार्य ने मुख्य रूप से 'विष्' धातु को ही 'व्याप्ति' के अर्थ में लेते हुए उससे 'विष्णु' शब्द को निष्पन्न बताया है। वैकल्पिक रूप से 'विश्' धातु को भी 'प्रवेश' के अर्थ में लिया गया है, 'क्योंकि वह विभु होने से सर्वत्र प्रवेश किया हुआ होता है।

आदि शंकराचार्य ने भी अपने विष्णुसहस्रनाम-भाष्य में 'विष्णु' शब्द का अर्थ मुख्यतः व्यापक (व्यापनशील) ही माना है, तथा उसकी व्युत्पत्ति के रूप में स्पष्टतः लिखा है कि "व्याप्ति अर्थ के वाचक नुक् प्रत्ययान्त 'विष्' धातु का रूप 'विष्णु' बनता है"। 'विश्' धातु को उन्होंने भी विकल्प से ही लिया है और लिखा है कि "अथवा नुक् प्रत्ययान्त 'विश्' धातु का रूप विष्णु है; जैसा कि

विष्णुपुराण में कहा है-- 'उस महात्मा की शक्ति इस सम्पूर्ण विश्व में प्रवेश किये हुए हैं; इसलिए वह विष्णु कहलाता है, क्योंकि 'विश्' धातु का अर्थ प्रवेश करना है"।

ऋग्वेद के प्रमुख भाष्यकारों ने भी प्रायः एक स्वर से 'विष्णु' शब्द का अर्थ व्यापक (व्यापनशील) ही किया है। विष्णुसूक्त (ऋग्वेद-1.154.1 एवं 3) की व्याख्या में आचार्य सायण 'विष्णु' का अर्थ व्यापनशील (देव) तथा सर्वव्यापक करते हैं; तो श्रीपाद दामोदर सातवलेकर भी इसका अर्थ व्यापकता से सम्बद्ध ही लेते हैं।महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी 'विष्णु' का अर्थ अनेकत्र सर्वव्यापी परमात्मा किया है और कई जगह परम विद्वान् के अर्थ में भी लिया है।

इस प्रकार सुस्पष्ट परिलक्षित होता है कि 'विष्णु' शब्द 'विष्' धातु से निष्पन्न है और उसका अर्थ व्यापनयुक्त (सर्वव्यापक) है।

विष्णु का स्वरूप वर्णन

विष्णु का सम्पूर्ण स्वरूप ज्ञानात्मक है। पुराणों में उनके द्वारा धारण किये जाने वाले आभूषणों तथा आयुधों को भी प्रतीकात्मक माना गया है :-

1. कौस्तुभ मणि = जगत् के निर्लेप, निर्गुण तथा निर्मल क्षेत्रज्ञ स्वरूप का प्रतीक
2. श्रीवत्स = प्रधान या मूल प्रकृति
3. गदा = बुद्धि
4. शंख = पंचमहाभूतों के उदय का कारण तामस अहंकार
5. शार्ंग (धनुष) = इन्द्रियों को उत्पन्न करने वाला राजस अहंकार
6. सुदर्शन चक्र = सात्विक अहंकार
7. वैजयन्ती माला = पंचतन्मात्रा तथा पंचमहाभूतों का संघात वैजयन्ती माला मुक्ता, माणिक्य, मरकत, इन्द्रनील तथा हीरा -- इन पाँच रत्नों से बनी होने से पंच प्रतीकात्मक
8. बाण = ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रिय।
9. खड्ग = विद्यामय ज्ञान (जो अज्ञानमय कोश (म्यान) से आच्छादित रहता है।

इस प्रकार समस्त सृजनात्मक उपादान तत्त्वों को विष्णु अपने शरीर पर धारण किये रहते हैं।

श्रीविष्णु की आकृति से सम्बन्धित स्तुतिपरक एक श्लोक अतिप्रसिद्ध है :-

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघ वर्णं शुभांगम्।।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्।

वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

भावार्थ - जिनकी आकृति अतिशय शांत है, जो शेषनाग की शैया पर शयन किए हुए हैं, जिनकी नाभि में कमल है, जो देवताओं के भी ईश्वर और संपूर्ण जगत के आधार हैं, जो आकाश के सदृश सर्वत्र व्याप्त हैं, नीलमेघ के समान जिनका वर्ण है, अतिशय सुंदर जिनके संपूर्ण अंग हैं, जो योगियों द्वारा ध्यान करके प्राप्त किए जाते हैं, जो संपूर्ण लोकों के स्वामी हैं, जो जन्म-मरण रूप भय का नाश करने वाले हैं, ऐसे लक्ष्मीपति, कमलनेत्र भगवान श्रीविष्णु को मैं प्रणाम करता हूँ।

भगवान विष्णु के अवतार -

विष्णु के अवतारों की पहली व्यवस्थित सूची महाभारत में उपलब्ध होती है। महाभारत के शान्तिपर्व में अवतारों की कुल संख्या 10 बतायी गयी है -

हंस: कूर्मश्च मत्स्यश्च प्रादुर्भावा द्विजोत्तम॥

वराहो नरसिंहश्च वामनो राम एव च।

रामो दाशरथिश्चैव सात्वत: कल्किरेव च॥

अर्थात् (श्रीभगवान् स्वयं नारद से कहते हैं) हंस कूर्म मत्स्य वराह नरसिंह वामन परशुराम दशरथनन्दन राम यदुवंशी श्रीकृष्ण तथा कल्कि -- ये सब मेरे अवतार हैं। आगे यह भी कहा गया है कि ये भूत और भविष्य के सभी अवतार हैं।मूलपाठ में वर्णन छह अवतारों का है :- 1.वराह 2.नरसिंह 3.वामन 4.परशुराम 5.राम 6.कृष्ण

चूँकि महाभारत बुद्ध के जन्म से पूर्व की अथवा बुद्ध के अवतारी होने की कल्पना से पहले की रचना है; अतः स्वाभाविक रूप से उसमें कहीं बुद्ध का नामोनिशान नहीं है। उसके बदले हंस को अवतार रूप में गिनने से दश की संख्या पूरी हो गयी है।

महाभारत के दाक्षिणात्य पाठ में अवतार का वर्णन इस प्रकार है :-

मत्स्य कूर्मो वराहश्च नारसिंहोऽथ वामनः। रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्किश्च ते दशाः॥

यहाँ पूर्वोक्त अवतारों में से हंस को छोड़कर तीसरे राम अर्थात् बलराम को जोड़ देने से दश की संख्या पूरी हो गयी है। इस विवरण से एक बात प्रमाणित हो जाती है कि महाभारत-काल तक दश से अधिक अवतारों की कल्पना भी नहीं की गयी थी; अन्यथा उन दश अवतारों को 'भूत और भविष्य के भी सभी अवतार' नहीं कहा गया रहता।

बाद में अन्य अवतारों की भी कल्पना प्रचलित हुई और कुल अवतारों की गणना चौबीस तक पहुँच

गयीं।

विष्णु जी की आरती –

ओम जय जगदीश हरे, स्वामी! जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे॥ ओम जय जगदीश हरे।
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का। स्वामी दुःख विनसे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥ ओम जय जगदीश हरे।
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी। स्वामी शरण गहूं मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी॥ ओम जय जगदीश हरे।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
स्वामी तुम अन्तर्यामी। पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ओम जय जगदीश हरे।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन-कर्ता। स्वामी तुम पालन-कर्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥ ओम जय जगदीश हरे।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति। स्वामी सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति॥ ओम जय जगदीश हरे।
दीनबन्धु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे। स्वामी तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ ओम जय जगदीश हरे।
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। स्वमी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओं सन्तन की सेवा॥

इस प्रकार भगवान विष्णु जी आरती कर, प्रदक्षिणा करते हुए मन्त्र पुष्पांजलि करनी चाहिए। तत्पश्चात् पूजन का विसर्जन करने का विधान हैं।

2.4 शिव जी का परिचय एवं आरती

जिस प्रकार इस ब्रह्मण्ड का ना कोई अंत है, न कोई छोर और न ही कोई आरम्भ, उसी प्रकार शिव अनादि है सम्पूर्ण ब्रह्मांड शिव के अंदर समाहित है। जब कुछ नहीं था तब भी शिव थे जब कुछ न होगा तब भी शिव होंगे। शिव को 'महाकाल' कहा जाता है, अर्थात सृष्टिसंहारक काल। शिव अपने इस स्वरूप द्वारा पूर्ण सृष्टि का भरण-पोषण करते हैं। इसी स्वरूप द्वारा परमात्मा ने अपने

ओज व उष्णता की शक्ति से सभी ग्रहों को एकत्रित कर रखा है। परमात्मा का यह स्वरूप अत्यंत ही कल्याणकारी माना जाता है क्योंकि पूर्ण सृष्टि का आधार इसी स्वरूप पर टिका हुआ है।

'सत्यं शिवं सुन्दरम्' के आधार सत्य को ही 'शिव' कहा गया है तथा शिव को ही सुन्दर भी कहा गया है।

शिव या **महादेव** वैदिक संस्कृति या भारतीय सनातन परम्परा में सबसे महत्वपूर्ण देवताओं में से एक है। वह त्रिदेवों में एक देव हैं। इन्हें देवों के देव महादेव भी कहते हैं। इन्हें भोलेनाथ, शंकर, महेश, रुद्र, नीलकंठ, गंगाधार आदि नामों से भी जाना जाता है। तंत्र साधना में इन्हे भैरव के नाम से भी जाना जाता है। हिन्दू शिव घर्म शिव-धर्म के प्रमुख देवताओं में से हैं। वेद में इनका नाम रुद्र है। यह व्यक्ति की चेतना के अन्तर्यामी हैं। इनकी अर्धांगिनी (शक्ति) का नाम पार्वती है। इनके पुत्र कार्तिकेय और गणेश हैं, तथा पुत्री अशोक सुंदरी हैं। शिव अधिक्तर चित्रों में योगी के रूप में देखे जाते हैं और उनकी पूजा शिवलिंग तथा मूर्ति दोनों रूपों में की जाती है। शिव के गले में नाग देवता विराजित हैं और हाथों में डमरू और त्रिशूल लिए हुए हैं। कैलाश में उनका वास है। यह शैव मत के आधार है। इस मत में शिव के साथ शक्ति सर्व रूप में पूजित है।

भगवान शिव को सृष्टि के संहार का देवता कहा जाता है। भगवान शिव सौम्य आकृति एवं रौद्ररूप दोनों के लिए विख्यात हैं। अन्य देवों से शिव को भिन्न माना गया है। सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति एवं संहार के अधिपति शिव हैं। त्रिदेवों में भगवान शिव संहार के देवता माने गए हैं। शिव अनादि तथा सृष्टि प्रक्रिया के आदिस्रोत हैं और यह काल महाकाल ही ज्योतिषशास्त्र के आधार हैं। शिव का अर्थ यद्यपि कल्याणकारी माना गया है, लेकिन वे हमेशा लय एवं प्रलय दोनों को अपने अधीन किए हुए हैं। रावण, शनि, कश्यप ऋषि आदि इनके भक्त हुए है। शिव सभी को समान दृष्टि से देखते है इसलिये उन्हें महादेव कहा जाता है। शिव के कुछ प्रचलित नाम, महाकाल, आदिदेव, किरात,शंकर, चन्द्रशेखर, जटाधारी, नागनाथ, मृत्युंजय, त्रयम्बक, महेश, विश्वेश, महारुद्र, विषधर, नीलकण्ठ, महाशिव, उमापति, काल भैरव, भूतनाथ आदि।

शिव के नन्दी गण -

1. नंदी
2. भृंगी
3. रिटी
4. टुंडी

5. श्रृंगी
6. नन्दिकेश्वर

शिव जी की अष्टमूर्ति -

1. क्षितिमूर्ति -सर्व
2. जलमूर्ति -भव
3. अग्निमूर्ति -रूद्र
4. वायुमूर्ति -उग्र
5. आकाशमूर्ति -भीम
6. यजमानमूर्ति -पशुपति
7. चन्द्रमूर्ति -महादेव
8. सूर्यमूर्ति –ईशान

शिव जी प्रमुख द्वादश ज्योर्तिलिंग –

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।

उज्ज्यन्यां महाकालं ओंकारमलेश्वरम्।।

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम्।

सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारूकावणे।।

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्रयम्बकं गौतमी तटे।

हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये।।

एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रात: पठेन्नरं।

सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति।।

इस प्रकार सम्पूर्ण भारतवर्ष में भगवान शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंग स्थापित हैं।

शिव जी की आरती -

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥
एकानन चतुरानन पञ्चानन राजे।
हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन साजे॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥
दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहे।
त्रिगुण रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी कर माला धारी॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
सनकादिक गरुणादिक भूतादिक संगे॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥
कर के मध्य कमण्डलु चक्र त्रिशूलधारी।
सुखकारी दुखहारी जगपालन कारी॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥
लक्ष्मी व सावित्री पार्वती संगा।
पार्वती अर्द्धांगी, शिवलहरी गंगा॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥

पर्वत सोहैं पार्वती, शंकर कैलासा।
भांग धतूर का भोजन, भस्मी में वासा॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥
जटा में गंग बहत है, गल मुण्डन माला।
शेष नाग लिपटावत, ओढ़त मृगछाला॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥
काशी में विराजे विश्वनाथ, नन्दी ब्रह्मचारी।
नित उठ दर्शन पावत, महिमा अति भारी॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥
त्रिगुणस्वामी जी की आरति जो कोइ नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवान्छित फल पावे॥
ॐ जय शिव ओंकारा॥

इस प्रकार भगवान शिव की आरती पूर्ण कर पाँच बार प्रदक्षिणा करते हुए, मन्त्रपुष्पांजलि करने के पश्चात् पूजन की समाप्ति करने का विधान है।

अभ्यास प्रश्न –

1.भागवत महापुराण के अनुसार विष्णु के कितने अवतार कहे गये हैं।
2. भगवान विष्णु का निवास स्थान कहाँ है।
3. विष्णु शब्द की उत्पत्ति किस धातु से हुई है।
4. शिव का क्या अर्थ है।
5. शिव के नन्दी गणों की संख्या कितनी है।
6. शिव की मूर्तियों की संख्या कितनी है।
7. शिव जी के प्रमुख ज्योर्तिलिंगों की संख्या कितनी है।

2.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि भगवान विष्णु को जगत का पालनकर्त्ता कहा गया है। इनका निवास स्थान क्षीरसागर में बतलाया जाता है। यह माता महालक्ष्मी के साथ शेष सय्या पर क्षीरसागर में ही निवास करते हैं। इसे वैकुण्ठ धाम के नाम से भी जाना जाता है। भगवान विष्णु का पूजन समस्त गृहस्थों को करना चाहिए, इससे उनके परिवार एवं समाज में

शान्ति बनी रहती है। शिव भगवान कल्याणकर्त्ता हैं एवं सृष्टि संहारकर्त्ता भी। आरती वस्तुत: रक्षार्थ भगवद् उपासना की एक क्रिया है।

'विष्णु' शब्द की व्युत्पत्ति मुख्यतः 'विष्' धातु से ही मानी गयी है। ('विष्' या 'विश्' धातु लैटिन में - **vicus** और सालविक में **vas -ves** का सजातीय हो सकता है।) निरुक्त **(12.18)** में यास्काचार्य ने मुख्य रूप से 'विष्' धातु को ही 'व्याप्ति' के अर्थ में लेते हुए उससे 'विष्णु' शब्द को निष्पन्न बताया है। वैकल्पिक रूप से 'विश्' धातु को भी 'प्रवेश' के अर्थ में लिया गया है, 'क्योंकि वह विभु होने से सर्वत्र प्रवेश किया हुआ होता है।

आदि शंकराचार्य ने भी अपने विष्णुसहस्रनाम-भाष्य में 'विष्णु' शब्द का अर्थ मुख्यतः व्यापक (व्यापनशील) ही माना है, तथा उसकी व्युत्पत्ति के रूप में स्पष्टतः लिखा है कि "व्याप्ति अर्थ के वाचक नुक् प्रत्ययान्त 'विष्' धातु का रूप 'विष्णु' बनता है"। 'विश्' धातु को उन्होंने भी विकल्प से ही लिया है और लिखा है कि "अथवा नुक् प्रत्ययान्त 'विश्' धातु का रूप विष्णु है; जैसा कि विष्णुपुराण में कहा है-- 'उस महात्मा की शक्ति इस सम्पूर्ण विश्व में प्रवेश किये हुए हैं; इसलिए वह विष्णु कहलाता है, क्योंकि 'विश्' धातु का अर्थ प्रवेश करना है"।

जिस प्रकार इस ब्रह्मण्ड का ना कोई अंत है, न कोई छोर और न ही कोई आरम्भ, उसी प्रकार शिव अनादि है सम्पूर्ण ब्रह्मांड शिव के अंदर समाहित है। जब कुछ नहीं था तब भी शिव थे जब कुछ न होगा तब भी शिव होंगे। शिव को 'महाकाल' कहा जाता है, अर्थात सृष्टिसंहारक काल। शिव अपने इस स्वरूप द्वारा पूर्ण सृष्टि का भरण-पोषण करते हैं। इसी स्वरूप द्वारा परमात्मा ने अपने ओज व उष्णता की शक्ति से सभी ग्रहों को एकत्रित कर रखा है। परमात्मा का यह स्वरूप अत्यंत ही कल्याणकारी माना जाता है क्योंकि पूर्ण सृष्टि का आधार इसी स्वरूप पर टिका हुआ है।

'सत्यं शिवं सुन्दरम्' के आधार सत्य को ही 'शिव' कहा गया है तथा शिव को ही सुन्दर भी कहा गया है।

शिव या **महादेव** वैदिक संस्कृति या भारतीय सनातन परम्परा में सबसे महत्वपूर्ण देवताओं में से एक है। वह त्रिदेवों में एक देव हैं। इन्हें देवों के देव महादेव भी कहते हैं। इन्हें भोलेनाथ, शंकर, महेश, रुद्र, नीलकंठ, गंगाधार आदि नामों से भी जाना जाता है। तंत्र साधना में इन्हे भैरव के नाम से भी जाना जाता है। हिन्दू शिव घर्म शिव-धर्म के प्रमुख देवताओं में से हैं। वेद में इनका नाम रुद्र है। यह व्यक्ति की चेतना के अन्तर्यामी हैं। इनकी अर्धांगिनी (शक्ति) का नाम पार्वती है। इनके पुत्र कार्तिकेय और गणेश हैं, तथा पुत्री अशोक सुंदरी हैं। शिव अधिक्तर चित्रों में योगी के रूप में देखे जाते हैं और

उनकी पूजा शिवलिंग तथा मूर्ति दोनों रूपों में की जाती है। शिव के गले में नाग देवता विराजित हैं और हाथों में डमरू और त्रिशूल लिए हुए हैं। कैलाश में उनका वास है। यह शैव मत के आधार है। इस मत में शिव के साथ शक्ति सर्व रूप में पूजित है।

2.6 पारिभाषिक शब्दावली

शान्ताकारं - जिसका आकार शान्त हो।

भुजगशयनं – सर्प की शय्या।

पद्नाभं – जिसके नाभि से कमल निकला हो।

सुरेश – देवताओं के स्वामी

पंचानन – जिसके पाँच मुख हो।

महेश – भगवान शिव का नाम

केदार – शिव जी का हिमालय में स्थित ज्योर्तिलिंग का नाम

2.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. 24
2. क्षीर सागर, वैकुण्ठ
3. विष्
4. कल्याण
5. 6
6. 8
7. 12

2.8 सन्दर्भ सूची

नित्यकर्मपूजाप्रकाश

रूद्राष्टाध्यायी

भागवत महापुराण

महाभारत

2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. भगवान विष्णु जी तथा शिव जी का परिचय देते हुए उनकी आरती का लेखन कीजिये।

इकाई – 3. दुर्गा जी की आरती

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 श्री दुर्गा जी का स्वरूप विचार एवं माहात्म्य
3.2.1 श्री दुर्गा जी का स्वरूप विचार
3.2.2 दुर्गा जी का माहात्म्य
3.4 श्री दुर्गा जी की स्तुति एवं आरती
3.4.1 श्री दुर्गा जी की स्तुति हेतु भगवती स्तोत्रम्
3.4.2 श्री दुर्गा जी की आरती
3.4.3 श्री दुर्गा जी की द्वितीय आरती
3.4.4 श्री दुर्गा जी की अन्य आरती
3.5 सारांश
3.6 पारिभाषिक शब्दावली
3.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
3.9 सहायक उपयोगी पाठ्यसामग्री
3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

इस इकाई में श्री दुर्गा जी की आरती एवं स्तुति विचार संबंधी प्रविधियों का अध्ययन आप करने जा रहे हैं। इससे पूर्व की प्रविधियों का अध्ययन आपने कर लिया होगा। कर्मकाण्ड के पक्ष आदि शक्ति के रूप में पराम्बा भगवती जगत जननि जगदम्बिका को जाना गया है। श्राद्धादि विषय को छोड़कर अन्यत्र सर्वत्र दुर्गा जी की वन्दना या पूजन किया जाता है। यह प्रकल्प शक्ति प्राप्ति हेतु एवं विधि मनोकामनाओं की प्रपूर्ति हेतु किया जाता है। अतः श्री दुर्गा जी क्या हैं ? तथा कैसे उनकी आरती पूजा की जाती है ? इसका ज्ञान आपको इस इकाई के अध्ययन से हो जायेगा।

श्री दुर्गा जी की आरती एवं स्तुति विचार के अभाव में किसी नवरात्रादि के अवसर पर व्रतादि या पूजनादि का सम्पादन किसी भी व्यक्ति द्वारा ठीक ढंग से नही हो सकता है। क्योकि इसमें दुर्गा माता की ही उपासना की जाती है। जब असुरों का अत्याचार इतना बढ़ गया था जिसमें सामान्य जन का जीना दुभर हो गया था तब समस्त देवमण्डल में यह विचार किया जाने लगा कि किस प्रकार से इन दैत्यों से मुक्त हुआ जा सकता है। उस समय ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश को छोड़कर अन्य कोई शक्ति ऐसी नही थी जिससे दैत्य पराजित हो सके। ये तीनों महाशक्तियों का दैत्यों के साथ युद्ध में आना उचित नही था इसलिये विकल्प पर विचार किया जाने लगा। समस्त देवगणों ने ध्यान से अपनी - अपनी शक्तियों का थोड़ा अंश निकालकर एक जगह एकत्रित करने का प्रयास किया। वह प्रयास सफल हुआ तथा उस एकत्रित शक्तियों से महादेवी का प्राकट्य हुआ जिसे दुर्गा देवि के रूप में जाना जाता है। दुर्गा जी की सवारी का नाम सिंह है। इस प्रकार माता दुर्गा की उपासना उपासक गण विविध रीति से करके अपने मनोकामनाओं को पूरा करते हैं।

इस इकाई के अघ्ययन से आप श्री दुर्गा जी की आरती एवं स्तुति इत्यादि के विचार करने की विधि का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेगें। इससे श्री दुर्गा जी की आरती एवं स्तुति आदि विषय के अज्ञान संबंधी दोषों का निवारण हो सकेगा जिससे सामान्य जन भी अपने कार्य क्षमता का भरपूर उपयोग कर समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगें। आपके तत्संबंधी ज्ञान के कारण ऋषियों एवं महर्षियों का यह ज्ञान संरक्षित एवं सवंर्धित हो सकेगा। इसके अलावा आप अन्य योगदान दें सकेगें, जैसे - कल्पसूत्रीय विधि के अनुपालन का सार्थक प्रयास करना, भारत वर्ष के गौरव की अभिवृद्धि में सहायक होना, सामाजिक सहभागिता का विकास, इस विषय को वर्तमान समस्याओं के समाधान हेतु उपयोगी बनाना आदि।

3.2 उद्देश्य-

अब श्री दुर्गा जी की आरती एवं स्तुति विचार की आवश्यकता को आप समझ रहे होगें। इसका उद्देश्य भी इस प्रकार आप जान सकते हैं -

- ❖ कर्मकाण्ड को लोकोपकारक बनाना।
- ❖ श्री दुर्गा जी की आरती एवं स्तुति सम्पादनार्थ शास्त्रीय विधि का प्रतिपादन।
- ❖ कर्मकाण्ड में व्याप्त अन्धविश्वास एवं भ्रान्तियों को दूर करना।
- ❖ प्राच्य विद्या की रक्षा करना।
- ❖ लोगों के कार्यक्षमता का विकास करना।
- ❖ समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना।

3.3. श्री दुर्गा जी का स्वरूप विचार एवं माहात्म्य -

इसमें श्री दुर्गा जी का स्वरूप विचार एवं माहात्म्य का ज्ञान आपको कराया जायेगा क्योंकि बिना इसके परिचय के श्री दुर्गा जी का आधारभूत ज्ञान नही हो सकेगा। आधारभूत ज्ञान हो जाने पर श्रद्धा एवं समर्पण की भावना का उद्भव होता है। भावो हि विद्ते देवः के अनुसार भावना होने पर देवत्व को प्राप्त किया जा सकता है। इसलिये श्री दुर्गा जी का स्वरूप विचार एवं महत्त्व इस प्रकार है-

3.3.1 श्री दुर्गा जी का स्वरूप विचार-

माता दुर्गा का ध्यान हम विविध रूपों में करते हैं। देवि पुराण में अनेकों श्लोकों में मातेश्वरी के विविध स्वरूपों को दर्शाया गया है। भगवती दुर्गा की उपासना में एक ग्रन्थ अत्यन्त प्रचलित है जिसे दुर्गा सप्तशती के रूप में जाना जाता है। इसमें दुर्गा जी की उपासना के लिये तेरह अध्यायों में सात सौ श्लोकों को दिया गया है। इसी में से प्रथम अध्याय का यह श्लोक ध्यान हेतु प्रदत्त है जिसका वर्णन इस प्रकार है-

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघांछूलं भुशुण्डीं शिरः।
शंखंसंन्दधतिं करैस्त्रिनयनयनां सर्वांगभूषावृताम्॥
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां।
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

इसकी व्याख्या करते हुये बतलाया गया है कि माता दुर्गा के दश हाथ हैं। उन दशों हाथों में माता अस्त्र धारण की हुयी है जिनके नाम खड्ग यानी तलवार, चक्र, गदा, बाण, धनुष, परिघ, शूल, भुशुण्डि, मस्तक और शंख हैं। माता दुर्गा के तीन नेत्र है। माता दुर्गा के समस्त अंग आभूषणों से सुशोभित है। इनके शरीर की कान्ति नील मणि के समान है। दुर्गा जी दस मुख और दस पैरों से युक्त है। माता दुर्गा के स्वरूपों पर विचार करते हुये सप्तशती के तीसरे अध्याय में कहा गया है कि-

उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरो मालिकां।
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्॥

हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं ।
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकूटां वन्दे अरविन्दस्थिताम् ।।

अर्थात् जगदम्बा के श्री अंगों की कान्ति उदयकाल के सहस्रों सूर्यों के समान है। माताजी लाल रंग की रेशमी साड़ी पहनी हुयी है। दुर्गा जी के गले में मुण्डमाला शोभा पा रही है। अपने कर कमलों में जपमालिका, विद्या और अभय तथा वर नामक मुद्रायें धारण की हुई है। तीन नेत्रों से सुशोभित मुखारविन्दों की अत्यन्त उत्कृष्ट शोभा हो रही है। माताजी के मस्तक पर चन्द्रमा के साथ ही रत्नमय मुकुट बधा हुआ है। माताजी कमल के आसन पर विराजमान है। ऐसी देवि दुर्गा को मै प्रणाम करता हूँ।

सिद्धि की इच्छा रखने वाले पुरुष जिनकी सेवा करते हैं, उनका जया नाम दुर्गा के रूप में ही जाना जाता है। माता दुर्गा का एक स्वरूप पद्मावती देवि का है जो सर्वेश्वर भैरव के अंक में निवास करती हैं। यह देवी नागराज के आसन पर विराजमान है। नागों के फणों में पायी जाने वाली मणियों की माला से माता दुर्गा का शरीर सुशोभित हो रहा है।

इस प्रकार विविध शब्दों से माता दुर्गा के स्वरूपों का वर्णन किया गया है परन्तु एक कवि ने तो कह दिया मातेश्वरी मैं आपकी वन्दना हेतु ऐसा कोई शब्द नही है जिसे नही पाता हूँ। उन्होने कहा हे जगदम्बिके संसार में कौन ऐसा वांग्मय है जिसमें तुम्हारी स्तुति नही है। क्योकि तुम्हारा शरीर तो शब्दमय है। संकल्पविकल्पात्मक रूप से उदित होने वाली एवं संसार में दृश्यरूप से सामने आने वाली सम्पूर्ण आकृतियों में आपके स्वरूप का दर्शन होने लगा है। हे समस्त अमंगलध्वंसकारिणी कल्याण स्वरूपे शिवे इस बात को सोचकर अब बिना किसी प्रयत्न के ही सम्पूर्ण चराचर जगत् में मेरी यह स्थिति हो गयी है कि मेरे समय का क्षूद्रतम अंश भी तुम्हारी स्तुति, जप, पूजा अथवा ध्यान से रहित नही है। अर्थात् मेरे सम्पूर्ण जागतिक आचार व्यवहार तुम्हारे ही भिन्न- भिन्न रूपों के प्रति यथोचित रूप से व्यवहृत होने के कारण तुम्हारी पूजा के रूप में परिणत हो गये है। संबंधित श्लोक इस प्रकार है-

तव च का किल न स्तुतिरम्बिके।
सकलशब्दमयी किल ते तनुः ।
निखिलमूर्तिषु मे भवदन्वयो।
मनसि जासु बहिः प्रसरासु च ।
इति विचिन्त्य शिवे शमिता शिवे।
जगति जातमयत्नवशादिदम् ।
स्तुतिजपार्चनचिन्तनवर्जिता।
न खलु काचन काल कलास्ति मे ।

इस प्रकार भगवती दुर्गा जी के स्वरूप के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा

है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों या संबंधित शब्दों को दिया गया है जिसके आगे दिये गये रिक्त स्थान को दिये गये विकल्पों से प्रपूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं । अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है । प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है -

प्रश्न **1-** माता दुर्गा जी को .....नेत्र है।

क- तीन, ख- चार, ग- पांच, घ-छः।

प्रश्न **2-** माता दुर्गा जी का आसन .....का है।

क- विल्व पत्र का, ख- कमल का, ग- कुशे का, घ- कम्बल का।

प्रश्न **3-** माता दुर्गा जी का .....वाहन है।

क- मूसे का, ख- मयूर का, ग- सिंह का, घ- बत्तक का।

प्रश्न **4-** माता दुर्गा जी के शरीर की कान्ति .....मणि जैसी है।

क- कृष्ण मणि, ख- रक्तमणि, ग- पीतमणि, घ- नीलमणि।

प्रश्न **5-** माता दुर्गा जी के .....हाथ हैं।

क- दस, ख- बारह, ग- पांच, घ-छः।

प्रश्न **6-** माता दुर्गा जी के सप्तशती में .....अध्याय हैं।

क- तीन, ख- तेरह, ग- पांच, घ-छः।

प्रश्न **7-** माता दुर्गा जी के सप्तशती में .....श्लोक हैं।

क- तीन सौ, ख- चार सौ, ग- सात सौ, घ- एक सौ।

प्रश्न **8-** माता दुर्गा जी के .....पैर हैं।

क- तीन, ख- चार, ग- पांच, घ-दस।

प्रश्न **9-** माता दुर्गा जी के .....मुख हैं।

क- तीन, ख- चार, ग- दस, घ-छः।

प्रश्न **10 -** माता दुर्गा जी के गले में .....मुण्डमाला है।

क- तीन, ख- चार, ग- पांच, घ-एक।

3.3.2 दुर्गा जी का माहात्म्य-

कलौ चण्डी विनायकौ के अनुसार कलियुग में चण्डी एवं विनायक दो ही साक्षात् देवता बतलाये गये हैं। कलियुग के समस्त प्राणी अपनी मनोकामना को पूर्ण करने के लिये देवी दुर्गा की उपासना

करते हैं। शक्ति अर्जन की प्रमुख स्रोत मातेश्वरी दुर्गा हैं। दुर्गा जी के माहात्म्य का वर्णन करते हुये शंकराचार्य जी आनन्द लहरी में इस प्रकार लिखते है-

भवानि स्तोतुं त्वां प्रभवति चतुर्भिर्न वदनैः।
प्ररजानामीशानस्त्रिपुरमथनः पंचभिरपि।।
न षड्भिः सेनानीर्दशशतमुखैरप्यहिपति-
स्तदान्येषां केषां कथय कथमस्मिन्नवसरः।।

अर्थात् हे भवानी प्रजापति ब्रह्मा जी अपने चारो मुखों से भी तुम्हारी स्तुति करने में समर्थ नही है। त्रिपुर विनाशक भगवान शंकर पांचों मुखों से तुम्हारा स्तवन नही कर सकते, कार्तिकेय जी तो छः मुख रहते हुये भी आपकी स्तुति करने में असमर्थ है। इन गणना में आनेवालों की बात तो छोड़ो , नागराज शेष हजारों मुखों से भी तुम्हारा गुणगान नही कर पाते है। जब इनकी यह दशा है तो किसी को और किस प्रकार स्तुति का अवसर प्राप्त हो सकता है।

घृतक्षीरद्राक्षामधुमधुरिमा कैरपि पदै,
र्विशिष्यानाख्येयो भवति रसना मात्रविषयः।।
तथा ते सौन्दर्यं परमशिवदृंग्मात्रविषयः,
कथंकारं ब्रूमः सकलनिगमागोचरगुणगणैः ।।

अर्थात् घी, दूध, दाख और मधु की मधुरता को किसी भी शब्द से विशेष रूप से नही बताया जा सकता। उसे तो केवल रसना यानी जिह्वा ही जानती है। उसी प्रकार तुम्हारा सौन्दर्य केवल महादेव जी के नेत्रों का विषय है उसे हम कैसे बता सकते है।

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जलकला,
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिकलता।
स्फुरत्कांची शाटी पृथुकटितटे हाटकमयी,
भजामि त्वां गौरीं नगपतिकिशोरीमविरतम् ।।

अर्थात् हे महादेवी दुर्गा तुम्हारे मुख में पान है। नयनों में कज्जल की पतली रेखा है। ललाट में केशर की बिंदी है। गले में मोती का हार सुशोभित हो रहा है। कटि तट में सुनहली साड़ी है, जिसपर रत्नमयी मेखला चमक रही है। ऐसी वेषभूषा से सजी हुयी गिरिराज हिमालय की गौरवर्णीया कन्या आपको मैं सदा भजता हूँ।

विराजन्मन्दारदुरमकुसुमहारस्तनतटी,
नदद्वीणानादश्रवणविलसत्कुण्डलगुणा।

नतांगी मातंगीरुचिरगतिभंगी भगवती,
सती शम्भो रम्भोरुहचटुलचक्षुविजयते ।।

अर्थात् जहां पारिजात पुष्प की माला सुशोभित हो रही है, उन उरोंजों के समीप बजती हुयी बीड़ा का मधुर नाद श्रवण करते हुये जिनके कानों में कुण्डल शोभा पा रहे है। जिनका अंग झुका हुआ है, हथिनी की भाति मन्द मनोहर चाल है। जिनके नेत्र कमल के समान सुन्दर और चंचल है, वे शम्भू की सती भार्या भगवती उमा सर्वत्र विजयिनी हो रही है।

इस प्रकार के अनेकों श्लोकों से शंकराचार्य जी ने भगवती दुर्गा की वन्दना की है। महादैत्यपति शुम्भ के मारे जाने पर इन्द्र देवता अग्नि को आगे करके उन कात्यायनी देवि की स्तुति करने लगे। उस समय अभीष्ट की प्राप्ति होने से उनके मुख कमल दमक उठे थे और उनके प्रकाश से दिशायंे भी जगमगा उठी थी। देवताओं ने कहा-

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद,
प्रसीदमातर्जगतोखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं,
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।
आधारभूता जगतस्त्वमेका,
महीस्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतद्-
आप्यायते कृत्स्नमलंघ्यवीर्ये।।
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या,
विश्वस्य बींज परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्,
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतुः।

अर्थात् हे देवि आप शरणागत की पीड़ा दूर करने वाली हैं। सम्पूर्ण जगत् की आप माता है। विश्व की ईश्वरी है। आप चराचर जगत् की अधिष्ठात्री देवि है। आप इस जगत् की आधारभूता है क्योकि पृथ्वी रूप में आपकी स्थिति है। आपका पराक्रम अलंधनीय है। आप बल सम्पन्न वैष्णवी शक्ति है। इस विश्व की कारणभूता परा माया है। आप ने इस समस्त जगत् को मोहित कर रखा है। आप ही प्रसन्न होने पर इस पृथ्वी पर मोक्ष की प्राप्ति कराती है।

विद्याः समस्ता तव देवि भेदाः,
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ।

त्वयैकया पूरितमम्बयैतत् ,
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः ।।

इस संसार की समस्त विद्यायें आपकी भिन्न- भिन्न स्वरूप है। जगत की सारी स्त्रियां आपकी ही मूर्तियां है। एकमात्र तुमने ही इस विश्व को व्याप्त कर रखा है। तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है? आप तो स्तवन योग्य पदार्थों से परे है अर्थात् आप परा वाणी हैं।

इस प्रकार भगवती दुर्गा जी के माहात्म्य के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों को दिये गये विकल्पों से उत्तरित करना है । प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं । अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** चार मुख से कौन माता दुर्गा जी की स्तुति नही कर पाते है?

क- ब्रह्मा जी, ख- शंकर जी, ग- कार्तिकेय जी, घ- नागराज शेष जी।

प्रश्न **2-** पांच मुख से कौन माता दुर्गा जी की स्तुति नही कर पाते है?

क- ब्रह्मा जी, ख- शंकर जी, ग- कार्तिकेय जी, घ- नागराज शेष जी।

प्रश्न **3-** छः मुख से कौन माता दुर्गा जी की स्तुति नही कर पाते है?

क- ब्रह्मा जी, ख- शंकर जी, ग- कार्तिकेय जी, घ- नागराज शेष जी।

प्रश्न **4-** हजार मुख से कौन माता दुर्गा जी की स्तुति नही कर पाते है?

क- ब्रह्मा जी, ख- शंकर जी, ग- कार्तिकेय जी, घ- नागराज शेष जी।

प्रश्न **5-** द्राक्षा शब्द का अर्थ है-

क- दाख, ख- जिह्वा, ग- पान, घ- माला।

प्रश्न **6-** रसना शब्द का अर्थ है-

क- दाख, ख- जिह्वा, ग- पान, घ- माला।

प्रश्न **7-** ताम्बूल शब्द का अर्थ है-

क- दाख, ख- जिह्वा, ग- पान, घ- माला।

प्रश्न **8-** हार शब्द का अर्थ है-

क- दाख, ख- जिह्वा, ग- पान, घ- माला।

प्रश्न **9-** प्रसीद शब्द का अर्थ है-

क- प्रसन्न होना, ख- जिह्वा, ग- पान, घ- माला।

प्रश्न **10-** युगल शब्द का अर्थ है-

क- दाख, ख- जिह्वा, ग- दो, घ- माला।

3.4.श्री दुर्गा जी की स्तुति एवं आरती -

इसमें श्री दुर्गा जी की स्तुति एवं आरती का ज्ञान आपको कराया जायेगा क्योकि बिना इसके परिचय के श्री दुर्गा जी का आधारभूत ज्ञान नही हो सकेगा। आधारभूत ज्ञान हो जाने पर श्रद्धा एवं समर्पण की भावना का उद्भव होता है। भावो हि विद्ते देवः के अनुसार भावना होने पर देवत्व को प्राप्त किया जा सकता है। इसलिये श्री दुर्गा जी की स्तुति एवं आरती इस प्रकार है-

3.4.1 श्री दुर्गा जी की स्तुति हेतु भगवती स्तोत्रम्-

माता दुर्गा का स्तवन हम विविध स्तोत्रों से करते हैं। भगवान व्यासकृत श्री भगवतिस्तोत्रम् इस प्रकार दिया गया है-

जय भगवति देवि नमो वरदे, जय पापविनाशिनि बहुफलदे।
जय शुम्भ निशुम्भ कपालधरे, प्रणमामि तु देवि नरार्ति हरे।।
जय चन्द्रदिवाकरनेत्रधरे, जय पावकभूषितवक्त्रवरे।
जय भैरवदेहनिलीनपरे, जय अन्धकदैत्यविशोषकरे।।
जय महिषविमर्दिनी शूलकरे, जय लोकसमस्तकपापहरे।
जय देविपितामह विष्णुनते, जय भास्करशक्रशिरोवनते।
जय षण्मुख सायुधईशनुते, जयसागरगामिनि शम्भुनुते।
जय दुखदरिद्रविनाशकरे, जयपुत्रकलत्रविवृद्धिकरे।

जय देवि समस्तशरीरधरे, जय नाकविदर्शिनि दुखहरे।
जय व्याधि विनाशिनि मोक्ष करे, जय वांछितदायिनि सिद्धिवरे।
एतद् व्यासकृतं स्तोत्रं यः पठेन्नियतः शुचिः।
गृहे वा शुद्धभावेन प्रीता भगवती सदा।।
इति श्री व्यासकृत् भगवती स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

इस श्री व्यासकृत् भगवती स्तोत्र में पराम्बा भगवती मां दुर्गा को प्रणाम किया गया है। मां दुर्गा कैसी है? कवि कहते हैं पापों का विनाश करने वाली तथा बहुत से फलों को देने वाली है। शुम्भ एवं निशुम्भ के कपाल को धारण करने वाली है। ऐसे मनुष्यों के संकट को हरने वाली देवी को नमस्कार है। चन्द्र और दिवाकर यानी सूर्य को अपने नेत्रों में धारण करने वाली, पावक या अग्नि के समान देदिप्यमान मुख से सुशोभित होने वाली, भैरव जी के शरीर में लीन रहने वाली तथा अन्धक दैत्य का शोषण करने वाली हे देवि तुम्हारी जय हो।

हे महिषासुर का विमर्दन यानी मर्दन करने वाली, त्रिशूल को हाथों में धारण करने वाली, समस्त लोकों के पापों को हरण करने वाली, पितामह ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, और इन्द्र से नमस्कृत् होने वाली, हे देवी तुम्हारी जय हो। सशस्त्र शंकर और कार्तिकेय जी के द्वारा वन्दित होने वाली, शिव के द्वारा प्रशंसित होने वाली, सागर में मिलने वाली गंगा के स्वरूप में विराजमान हे देवि आपकी जय हो।

दुख एवं दरिद्रता का नाश करने वाली, पुत्र एवं कलत्र यानी स्त्री सुख की वृद्धि करने वाली देवी आपकी जय हो।

समस्त शरीर को धारण करने वाली, नाक यानी स्वर्ग का दर्शन कराने वाली, व्याधि यानी रोगों का विनाश कर मुक्ति प्रदान करने वाली, वांछित फलों को प्रदान करने वाली, श्रेष्ठ सिद्धियों को प्रदान करने वाली आपकी जय हो।

यह श्री व्यास कृत् स्तोत्र जो शुद्ध होकर नित्य पठता है, उसके ऊपर भगवती प्रसन्न होती है।

इस प्रकार भगवती दुर्गा जी के भगवती स्तोत्र के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना। आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों को दिये गये विकल्पों से उत्तरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** दिवाकर शब्द का अर्थ है-

क-सूर्य , ख- अग्नि, ग- पान, घ- माला।

प्रश्न **2-** पावक शब्द का अर्थ है-

क-सूर्य , ख- अग्नि, ग- पान, घ- माला।

प्रश्न **3-** नाक शब्द का अर्थ है-

क-सूर्य , ख- अग्नि, ग- स्वर्ग, घ- माला।

प्रश्न **4-** व्याधि शब्द का अर्थ है-

क-सूर्य , ख- अग्नि, ग- पान, घ- रोग।

प्रश्न **5-** कलत्र शब्द का अर्थ है-

क-स्त्री , ख- अग्नि, ग- पान, घ- माला।

प्रश्न **6-** विमर्दन शब्द का अर्थ है-

क-सूर्य , ख- मर्दन, ग- पान, घ- माला।

प्रश्न **7-** पितामह शब्द का अर्थ है-

क-सूर्य , ख- मर्दन, ग- ब्रह्मा, घ- माला।

प्रश्न **8-** शक्र शब्द का अर्थ है-

क-सूर्य , ख- मर्दन, ग- पान, घ- इन्द्र ।

प्रश्न **9-** षण्मुख शब्द का अर्थ है-

क-सूर्य , ख-कार्तिकेय, ग- पान, घ- माला ।

प्रश्न **10-** ईश शब्द का अर्थ है-

क-सूर्य , ख- शंकर भगवान, ग- पान, घ- माला ।

3.4.2 श्री दुर्गा जी की आरती

इस प्रकरण में आप माता दुर्गा के आरती के विषय में जानेगें। बिना आरती के पूजन पूरा नही होता है। इसलिये आरती का ज्ञान अनिवार्य है। आरती इस प्रकार दी जा रही है-

ओं जग जननी जय जय, मां जग जननी जय जय ।

भयहारिणी भवतारिणि भवभामिनि जय जय ।। मां जग जननी जय जय ।।

तू ही सत् चित् सुखमय, शुद्ध ब्रह्मरूपा । मैया शुद्ध ब्रह्म रूपा ।

सत्य सनातन सुन्दर, पर शिव सुर भूपा ।। मां जगजननी जय जय ।

आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी । मैया अविचल अविनाशी ।

अमल अनन्त अगोचर अज आनन्द राशी । मां जग जननी जय जय ।

अविकारी अघहारी, अकल कलाधारी । मैया अकल कला धारी ।

कर्त्ता विधि भर्त्ता हरि हर संहार कारी । मां जग जननी जय जय ।

तू विधि वधू रमा तू उमा महामाया । मैया उमा महामाया ।

मूल प्रकृति विद्या तू तू जननी जाया । मां जगजननी जय जय ।

रामकृष्ण तू सीता व्रजरानी राधा । मैया व्रज रानी राधा ।

तू वांछाकल्पद्रुम , हारिणि सब बाधा । मां जगजननी जय जय ।

दश विद्या नव दुर्गा नाना शास्त्रकरा । मैया नाना शास्त्रकरा ।

अष्टमातृका योगिनि नव नव रूप धरा । मां जग जननी जय जय ।

तू परधामनिवासिनि महाविलासिनि तू । मैया महा विलासिनि तू ।

तू ही श्मशान विहारिणि , ताण्डवलासिनि तू । मां जग जननी जय जय ।

सुर मुनि मोहिनि सौम्या तू शोभा धारा । मैया तू शोभा धारा ।

विवसन विकट सरूपा प्रलयमयी धारा । मां जगजननी जय जय ।

तू ही स्नेह सुधामयि, तू अति गरलमना । मैया तू अति गरलमना ।

रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थितना । मां जग जननी जय जय ।

मूलाधार निवासिनि, इह पर सिद्धि प्रदे । मैया इह पर सिद्धि प्रदे।

कालातीता काली कमला तू वर दे। मां जग जननी जय जय।

शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभोद मयी। मैया नित्य अभेदमयी।

भेद प्रदर्शिनि वाणी विमले वेदत्रयी। मां जग जननी जय जय।

हम अति दीन दुखी मां विपत् जाल घेरे। मैया विपत् जाल घेरे।

है कपूत अति कपटी पर बालक तेरे। मां जग जननी जय जय।

निज स्वभाव वश जननी दया दृष्टि कीजै। मैया दया दृष्टि कीजै।

करुणा कर करुणामयि चरण शरण दीजै ।। मां जग जननी जय जय।

ओं जग जननी जय जय, मां जग जननी जय जय।

भयहारिणी भवतारिणि भवभामिनि जय जय।। मां जग जननी जय जय ।।

इस प्रकार भगवती दुर्गा जी की आरती के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना। आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों को दिये गये विकल्पों से पूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** भयहारिणी ..... भवभामिनि जय जय।। मां जग जननी जय जय ।।

क- भवतारिणि, ख- सुखमय, ग- सुन्दर, घ- अविचल।

प्रश्न **2-** तू ही सत् चित् ....., शुद्ध ब्रह्मरूपा। मैया शुद्ध ब्रह्म रूपा।

क- भवतारिणि, ख- सुखमय, ग- सुन्दर, घ- अविचल।

प्रश्न **3-** सत्य सनातन ....., पर शिव सुर भूपा।। मां जगजननी जय जय।

क- भवतारिणि, ख- सुखमय, ग- सुन्दर, घ- अविचल।

प्रश्न **4-** आदि अनादि अनामय ..... अविनाशी। मैया अविचल अविनाशी।

क- भवतारिणि, ख- सुखमय, ग- सुन्दर, घ- अविचल।

प्रश्न **5-** अमल अनन्त ..... अज आनन्द राशी। मां जग जननी जय जय।

क-अगोचर, ख- अकल, ग- हरि हर, घ- उमा।

प्रश्न **6-** अविकारी अघहारी, **.....** कलाधारी। मैया अकल कला धारी।

क-अगोचर, ख- अकल, ग- हरि हर, घ- उमा।

प्रश्न **7-**कर्त्ता विधि भर्त्ता ..... संहार कारी। मां जग जननी जय जय।

क-अगोचर, ख- अकल, ग- हरि हर, घ- उमा।

प्रश्न **8-**तू विधि वधू रमा तू ..... महामाया। मैया उमा महामाया।

मूल प्रकृति विद्या तू तू जननी जाया। मां जगजननी जय जय।

क-अगोचर, ख- अकल, ग- हरि हर, घ- उमा।

प्रश्न **9-**रामकृष्ण तू सीता ..... राधा। मैया व्रज रानी राधा।

क-अगोचर, ख- ब्रजरानी, ग- हरि हर, घ- उमा।

प्रश्न **10-** तू वांछाकल्पद्रुम **, ...** सब बाधा। मां जगजननी जय जय।

क-अगोचर, ख- अकल, ग- हारिणि, घ- उमा।

3.4.3 माँ दुर्गा जी की द्वितीय आरती-

माता दुर्गा जी के एक आरती को आपने जाना। अब हम आपको दूसरी आरती से भी परिचय कराना चाहते है। क्योंकि समय-समय पर भक्तों द्वारा इस आरती का भी प्रयोग किया जाता रहा है। दोनों आरतियों का ज्ञान कर्मकाण्ड के लिये अत्यन्त आवश्यक है। अतः यह आरती इस प्रकार है-

ओं जय अम्बे गौरी मैया जै श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव री। ओं जय अम्बे गौरी।
मांग सिन्दूर विराजत, टीको मृग मदको। मैया टीको मृगमदको।
उज्ज्वल से दोउ नयना, चन्द्रवदन नीको। मां जै अम्बे गौरी।
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे। मैया रक्ताम्बर राजे।

रक्त पुष्प गले माला, कण्ठन पर साजे । मां जै अम्बे गौरी।
केहरि वाहन राजत , खड्ग खप्पर धारी। मैया खड्ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी। ओं जै अम्बे गौरी।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। मैया नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर , राजत सम ज्येति। ओं जै अम्बे गौरी ।
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती। मैया महिषासुरघाती ।
धूम्र विलोचन नयना, निशि दिन मदमाती । ओं जै अम्बे गौरी ।
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे। मैया शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भय हीन करे। ओं जै अम्बे गौरी ।
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी। मैया तुम कमला रानी ।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी । ओं जै अम्बे गौरी ।
चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरो। मैया नृत्य करत भैरो ।
बाजत तालमृदंगा , और बाजत डमरू। ओं जै अम्बे गौरी ।
तू ही जग की माता, तुम ही हो भरता। मैया तुम ही हों भरता ।
भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता। ओ जै अम्बे गौरी ।
भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी। मैया वर मुद्रा धारी ।
मन वांछित फल पावत, सेवत नर नारी। ओ जै अम्बे गौरी ।
कंचन थाल विराजत, अगर कपुर बाती। मैया अगर कपुर बाती ।
श्री मालकेतु में रजत, विन्ध्याचल में विराजत, कोटि रतन ज्योती।
ओं जै अम्बे गौरी।
श्री अम्बे जी कि आरति, जो कोइ नर गावे। मैया जो कोइ नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी , सुख सम्पति पावे। ओं जै अम्बे गौरी ।।

इस प्रकार भगवती दुर्गा जी की आरती के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों को दिये गये विकल्पों से पूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** मांग सिन्दूर विराजत, **.....** मृग मदको। मैया टीको मृगमदको।

क- टीको, ख- चन्द्रवदन, ग-कलेवर, घ-कण्ठन।

प्रश्न **2-**उज्ज्वल से दोउ नयना, **.....** नीको। मां जै अम्बे गौरी।

क- टीको, ख- चन्द्रवदन, ग-कलेवर, घ-कण्ठन।

प्रश्न **3-** कनक समान ....., रक्ताम्बर राजे। मैया रक्ताम्बर राजे।

क- टीको, ख- चन्द्रवदन, ग-कलेवर, घ-कण्ठन।

प्रश्न **4-** रक्त पुष्प गले माला, **.....** पर साजे । मां जै अम्बे गौरी।

क- टीको, ख- चन्द्रवदन, ग-कलेवर, घ-कण्ठन।

प्रश्न **5-** केहरि वाहन राजत , **.....** खप्पर धारी। मैया खड्ग खप्पर धारी।

क- खड्ग , ख- तिनके, ग-नासाग्रे, घ- राजत।

प्रश्न **6-** सुर नर मुनि जन सेवत, **.....** दुख हारी। ओं जै अम्बे गौरी।

क- खड्ग , ख- तिनके, ग-नासाग्रे, घ- राजत।

प्रश्न **7-**कानन कुण्डल शोभित, **.....** मोती। मैया नासाग्रे मोती।

क- खड्ग , ख- तिनके, ग-नासाग्रे, घ- राजत।

प्रश्न **8-**कोटिक चन्द्र दिवाकर , **.....** सम ज्येति। ओं जै अम्बे गौरी।

क- खड्ग , ख- तिनके, ग-नासाग्रे, घ- राजत।

प्रश्न **9-**शुम्भ निशुम्भ विदारे, **.....** घाती। मैया महिषासुरघाती।

क- खड्ग , ख- महिषासुर, ग-नासाग्रे, घ- राजत।

प्रश्न **10-**धूम्र विलोचन .....,निशि दिन मदमाती । ओं जै अम्बे गौरी।

क- खड्ग , ख- तिनके, ग-नयना, घ- राजत।

3.4.4 माँ दुर्गा जी की द्वितीय आरती-

इस प्रकार माता दुर्गा जी के दो आरतियों को आपने जाना। अब हम आपको तीसरी आरती से भी

परिचय कराना चाहते हैं। क्योंकि समय-समय पर भक्तों द्वारा इस आरती का भी प्रयोग किया जाता रहा है। तीनों आरतियों का ज्ञान कर्मकाण्ड के लिये अत्यन्त आवश्यक है। अतः यह आरती इस प्रकार है-

ओ अम्बे तू है जगदम्बे काली , जै दुर्गे खप्पर वाली।
तेरे ही गुण गायें भारती, ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती।
तेरे भक्तजनों पे माता भीर पड़ी है भारी।
दानव दल पर टूट पडों मां करके सिंह सवारी।
सौ सौ सिंहो सी बलशाली , अष्ट भुजाओं वाली,
दुखियों के दुख को निवारती, ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती।
मां बेटे का है इस जग में बड़ा हि निर्मल नाता।
पूत कपूत सुने हैं पर ना माता सुनी कुमाता।
सब पर करुणा दरसाने, अमृत बरसाने वाली।
नैया भंवर से उबारती। ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती।
नहीं मांगते धन औ दौलत ना चांदी ना सोना।
हम तो मांगे मा तेरे चरणों में छोटा कोना।
सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लज्जा बचाने वाली,
सतियों के सत को सवांरती। ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती।
अम्बे तू है जगदम्बे काली, जै दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे हि गुण गावों भारती। हो मैया हम सब उतारे तेरी आरती।

इस प्रकार भगवती दुर्गा जी की इस आरती के विषय में आपने इस प्रकरण में विस्तार से जाना । आशा है इसके बारे में जानकारी हो गयी होगी। अब हम इसको आधार बनाकर कुछ प्रश्न बनाने जा रहे हैं जिससे आपका ज्ञान इस विषय में और प्रौढ़ हो जायेगा। इसमें प्रश्नों को दिये गये विकल्पों से पूरित करना है। प्रश्न अधोलिखित है-

अभ्यास प्रश्न-

उपरोक्त विषय को पढ़कर आप अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं। अधोलिखित प्रश्न बहु विकल्पीय है। प्रत्येक प्रश्नों में दिये गये चार विकल्पों में से कोई एक ही सही है, जिसका चयन आपको करना है-

प्रश्न **1-** तेरे ही गुण गायें ....., ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती।

क- भारती, ख- भीर, ग-टूट, घ-बलशाली।

प्रश्न **2-** तेरे भक्तजनों पे माता ..... पड़ी है भारी।

क- भारती, ख- भीर, ग-टूट, घ-बलशाली।

प्रश्न **3-**दानव दल पर ..... पडों मां करके सिंह सवारी।

क- भारती, ख- भीर, ग-टूट, घ-बलशाली।

प्रश्न **4-**सौ सौ सिंहो सी ..... , अष्ट भुजाओं वाली,

क- भारती, ख- भीर, ग-टूट, घ-बलशाली।

प्रश्न **5-**दुखियों के दुख को ....., ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती।

क- निवारती, ख- जग में, ग- कुमाता, घ- बरसाने।

प्रश्न **6-**मां बेटे का है इस ..... में बड़ा हि निर्मल नाता।

क- निवारती, ख- जग में, ग- कुमाता, घ- बरसाने।

प्रश्न **7-**पूत कपूत सुने हैं पर ना माता सुनी .....।

क- निवारती, ख- जग में, ग- कुमाता, घ- बरसाने।

प्रश्न **8-** सब पर करुणा दरसाने, अमृत ..... वाली।

क- निवारती, ख- जग में, ग- कुमाता, घ- बरसाने।

प्रश्न **9-**नैया भंवर से .....। ओ मैया हम सब उतारे तेरी आरती।

क- उबारती, ख- जग में, ग- कुमाता, घ- बरसाने।

प्रश्न **10-** नहीं मांगते धन औ ..... ना चांदी ना सोना।

क- निवारती, ख- दौलत, ग- कुमाता, घ- बरसाने ।

3.5 सारांश-

इस इकाई में श्री दुर्गा जी की आरती एवं स्तुति विचार संबंधी प्रविधियों का अध्ययन आपने किया। श्री दुर्गा जी की आरती एवं स्तुति विचार के अभाव में किसी नवरात्रादि के अवसर पर व्रतादि या पूजनादि का सम्पादन किसी भी व्यक्ति द्वारा ठीक ढंग से नही हो सकता है। क्योकि इसमें दुर्गा माता की ही उपासना की जाती है। जब असुरों का अत्याचार इतना बढ़ गया था जिसमें सामान्य जन का जीना दुभर हो गया था तब समस्त देवमण्डल में यह विचार किया जाने लगा कि किस प्रकार से इन दैत्यों से मुक्त हुआ जा सकता है। उस समय ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश को छोड़कर अन्य कोई शक्ति ऐसी नही थी जिससे दैत्य पराजित हो सके। ये तीनों महाशक्तियों का दैत्यों के साथ युद्ध में आना उचित नही था इसलिये विकल्प पर विचार किया जाने लगा। समस्त देवगणों ने ध्यान से अपनी

अपनी शक्तियों का थोड़ा थोड़ा अंश निकालकर एक जगह एकत्रित करने का प्रयास किया। वह प्रयास सफल हुआ तथा उस एकत्रित शक्तियों से महादेवी का प्राकट्य हुआ जिसे दुर्गा देवि के रूप में जाना जाता है। दुर्गा जी की सवारी का नाम सिंह है।

देवि पुराण में अनेकों श्लोकों में मातेश्वरी के विविध स्वरूपों को दर्शाया गया है। भगवती दुर्गा की उपासना में एक ग्रन्थ अत्यन्त प्रचलित है जिसे दुर्गा सप्तशती के रूप में जाना जाता है। इसमें दुर्गा जी के उपासना के लिये तेरह अध्यायों में सात सौ श्लोकों को दिया गया है। इसी में से प्रथम अध्याय में यह बतलाया गया है कि माता दुर्गा के दश हाथ हैं। उन दशों हाथों में माता अस्त्र धारण की हुयी है जिनके नाम खड्ग यानी तलवार, चक्र, गदा, बाण, धनुष, परिघ, शूल, भुशुण्डि, मस्तक और शंख हैं। माता दुर्गा के तीन नेत्र है। माता दुर्गा के समस्त अंग आभूषणों से सुशोभित है। इनके शरीर की कान्ति नील मणि के समान है। दुर्गा जी दस मुख और दस पैरों से युक्त है।

श्री व्यासकृत् भगवती स्तोत्र में पराम्बा भगवती मां दुर्गा को प्रणाम किया गया है। मां दुर्गा कैसी है? कवि कहते हैं पापों का विनाश करने वाली तथा बहुत से फलों को देने वाली है। शुम्भ एवं निशुम्भ के कपाल को धारण करने वाली है। ऐसे मनुष्यों के संकट को हरने वाली देवी को नमस्कार है। चन्द्र और दिवाकर यानी सूर्य को अपने नेत्रों में धारण करने वाली, पावक या अग्नि के समान देदिप्यमान मुख से सुशोभित होने वाली, भैरव जी के शरीर में लीन रहने वाली तथा अन्धक दैत्य का शोषण करने वाली हे देवि तुम्हारी जय हो।

3.6 पारिभाषिक शब्दावलियां-

खड्गं - तलवार, चक्र- चक्र, गद- गदा, इषु- बाण, चाप- धनुष, परिघ- एक प्रकार का अस्त्र, छूलं – त्रिशूल, शंखं- मुख से बजाने वाला वाद्य, संन्दधतिं- सम्यक् प्रकार से धारण करना, कर-हाथ, त्रिनयनां - तीन आखों वाली, सर्वांग- सभी अंग, भूषा- आभूषण, आवृताम्- आच्छादित, द्युति- प्रकाश, आस्य- मुख, पाददशकां- दस पैरों वाली, उद्यद्- उगते हुये, भानु- सूर्य, सहस्र- हजार, कान्ति- तेज, अरुण-लाल, क्षौमां-रेशमी वस्त्र, शिरो मालिकां- मुण्डमाला, पयोधरा- स्तन, अभीतिं - अभय, वरम्- श्रेष्ठ, हस्त- हाथ, अब्ज- कमल, दधतीं- धारण, त्रिनेत्र- तीनों नेत्र, विलसत्- सुशोभित, वक्त्र -मुख, अरविन्द- कमल, हिमांशु- चन्द्रमा, रत्नमुकुटां-रत्नों के मुकुट, वन्दे- वन्दना, अरविन्दस्थिताम्- कमल पर स्थित देवि, कान्ति-तेज, उदयकाल- उगने का समय, उत्कृष्ट- उच्च, सर्वेश्वर- सभी के ईश्वर, कल्पात्मक- कला के रूप में, दृश्यरूप- देखने का स्वरूप, सम्पूर्ण- सारा, अमंगलध्वंसकारिणी- अमंगल को विनाश करने वाली, क्षूद्रतम अंश- छोटा से छोटा अंश, जागतिक- जगत के, आचार- आचरण, यथोचित- जैसा उचित, परिणत- बदल जाना, तव- तुम्हारा, च- और, का- क्या, सकल- सम्पूर्ण, शब्दमयी- शब्दमय, तनुः- शरीर, मूर्तिषु - मूर्तियों में, मनसि- मन में, बहिः- बाहर, प्रसरासु- विस्तार, इति - ऐसा, विचिन्त्य- चिन्तन, शिवे - पार्वती, शमिता- शान्ति करने वाली, शिवे- कल्याण करने वाली, जगति- जगत में, स्तुति- प्रार्थना, जप - जप, अर्चन-

पूजा, चिन्तनवर्जिता- चिन्तन मुक्त, न- नही, काल- समय, अस्ति- है, प्रौढ़- पुष्ट, सप्तशती- सात सौ, मुण्डमाला- मुण्डों की माला, साक्षात् - प्रत्यक्ष, अर्जन - प्राप्त, भवानि- दुर्गा, स्तोतुं - स्तुति करने के लिये, प्रभवति - तैयार होते हैं, वदनैः- मुखों से, प्रजानां - प्रजाओं, ईशान- शंकर भगवान, त्रिपुरमथनः- त्रिपुरासुर को मारने वाले, पंचभिः- पांचों मुखों से, अपि- भी, षड्भिः- छ से, सेनानी- कार्तिकेय जी, दशशतमुखैः- हजार मुखों से, अहिपति- नागराज, तदा- तो, अन्येषां- अन्य, केषां- किसी का, कथय- कहिये, कथम्- कैसे, अस्मिन्- यह, अवसरः- अवसर, स्तवन- स्तुति, गुणों का गायन, घृत- धी, क्षीर- दुग्ध, द्राक्षा- दाख, मधु- शहद, नाख्येयो - जिसकी व्याख्या न की जा सके, रसना- जिह्वा, ताम्बूलं - पान, नयनयुगले - दोनों आंखें, कज्जल- काजल, विलसति - सुशोभित होता है, गले - गर्दन में, मौक्तिकलता- मोती की लता, शाटी- साड़ी, कटि- कमर, तटे - किनारा, नगपति - पर्वतराज, विराजन्- विराजमान, मन्दार- मदार, द्रुम- लता, कुसुम- पुष्प, हार- माला, स्तनतटी- स्तन के तट तक, द्वीणानाद- वीणा का स्वर, श्रवण- कान, नतांगी- नत अंग वाली, रुचिर- सुन्दर, विजयते- जय हो, भार्या - पत्नी, अभीष्ट- इच्छा के अनुसार, प्रसीद- प्रसन्न होवें, विश्वेश्वरि- विश्व की ईश्वरी, पाहि - रक्षा करें, आधारभूता- आधार, मही- पृथ्वी, अपां- जल, अनन्तवीर्या- अनन्त बलशाली, विश्वस्य बींज- बीज शक्ति, परमासि- श्रेष्ठतमा, शरणागत- शरण में आये हुये।

3.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

पूर्व में दिये गये सभी अभ्यास प्रश्नों के उत्तर यहां दिये जा रहे हैं। आप अपने से उन प्रश्नों को हल कर लिये होगें। अब आप इन उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कर लीजिये। यदि गलत हो तो उसको सही करके पुनः तैयार कर लीजिये। इससे आप इस प्रकार के समस्त प्रश्नों का उत्तर सही तरीके से दे पायेगें।

2.3.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**ग, **10-**घ।

2.3.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**क, **10-**ग।

2.4.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**ख, **10-**ख।

2.4.2 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**ख, **10-**ग ।

2.4.3 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**ख, **10-**ग।

2.4.4 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर-

1-क, **2-**ख, **3-**ग, **4-**घ, **5-**क, **6-**ख, **7-**ग, **8-**घ, **9-**क, **10-**ख।

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1-आरती संग्रह।

2-क्यों-भाग-**1**

3-क्यों- भाग-**2**।

4-शब्दकल्पद्रुमः।

5-आह्निक सूत्रावलिः।

6-प्रतिष्ठा मयूख।

7-पूजन- विधान।

8-संस्कार एवं शान्ति का रहस्य।

3.9- सहायक उपयोगी पाठ्यसामग्री-

1- दैनिक आरती स्तुति एवं स्तोत्र।

2- स्तोत्ररत्नावलिः।

3- श्रीदुर्गासप्तशती।

3.10 निबंधात्मक प्रश्न-

1- श्री दुर्गा जी का परिचय बतलाइये।

2- श्री दुर्गा जी का स्वरूप बतलाइये।

3- श्री दुर्गा जी का माहात्म्य लिखिये।

4- भगवती स्तोत्रम् नामक सूक्त लिखिये।

5- भगवती स्तोत्रम् का हिन्दी अनुवाद दीजिये।

6- दुर्गा जी की प्रथम आरती लिखिये।

7- दुर्गा जी की द्वितीय आरती लिखिये।

8- दुर्गा जी की तृतीय आरती लिखिये।

9- गंगालहरी के कुछ श्लोकों को लिखिये।

10- गंगालहरी के कुछ श्लोकों का हिन्दी अनुवाद लिखिये।